

# समय संकेत

## मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2019
## अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)

सौजन्य

















# राष्ट्र के लिए ऊर्जा समाधान

इंडियनऑयल में हम हर भारतीय के लिए नए उत्पाद और सेवाएं, आधुनिक तकनीकी और अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से उनकी जरूरत के मुताबिक ऊर्जा समाधान पेश करने के लिए प्रतिबद्ध है।

*संरक्षण, नवपरिवर्तन, लगाव* और *विश्वास* के अपने बुनियादी मूल्यों से समर्पित हम सदैव राष्ट्र की ईधन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नए और आकर्षक समाधान खोजते रहते हैं।

इसी आशय से हम इस वर्ष का स्वागत करते हैं और साल भर इस ओर समर्पित रहने का प्रण लेते हैं।




2019
**समाधान** को समर्पित वर्ष
जटिलता से सरलता की ओर

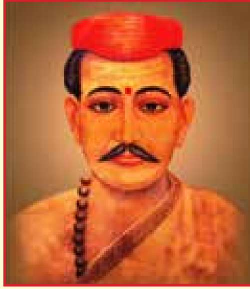


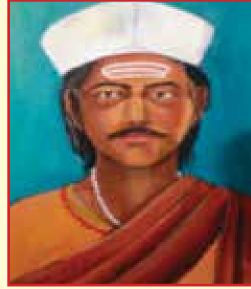
# मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2019

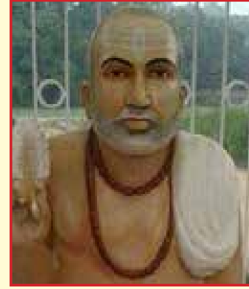
## अखिल भारतीय मिथिला संघ



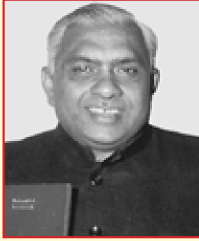
### (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, सलहेस, लोरिक, दीना-भद्री आ आओर प्रेरणा पुंज सबहक स्मृति)


विद्यापति


ज्योतिरीश्वर


वाचस्पति मिश्र


उदयनाचार्य


ललित ना. मिश्र


भोला पासवान शास्त्री


कर्पूरी ठाकुर

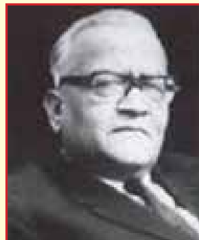

भोगेन्द्र झा


गुणानंद ठाकुर


यमुना प्रसाद मंडल


भागवत झा आजाद

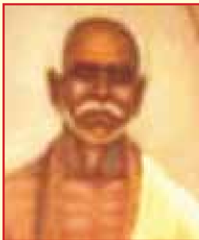

आर.पी. यादव


आदित्यनाथ झा

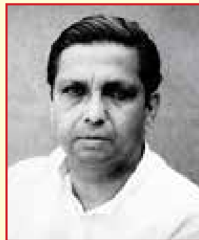

बाबा नागार्जुन


सुभद्र झा

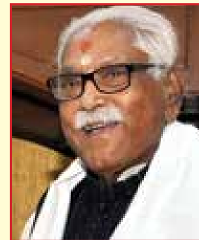

सुरेन्द्र झा सुमन

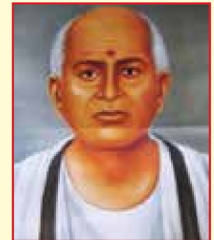

लाल दास


मणिपद्म


बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल


आद्या झा


ताराकांत झा


चंदा झा

**स्थायी पता**
एच-435, गली नं. 7, ई-ब्लॉक,
संगम विहार, नई दिल्ली-110062

**पत्राचार पता**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली-110001

**फोन:** 9650461788, 9717539000

**ईमेल**
abmssmarika@gmail.com
akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com

(सभटा पद मानद आ अवैतनिक अछिँ)


## की कतय अछि

# की कतय अछि






भारत के उपराष्ट्रपति
VICE-PRESIDENT OF INDIA

**संदेश**

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 24 नवंबर, 2019 को डॉ. भीमराव अंतरराष्ट्रीय सेंटर, नई दिल्ली में "मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह-2019" का आयोजन किया जा रहा है तथा इस सुअवसर को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है जो कि सराहनीय प्रयास है।

मिथिला राजा जनक की भूमि है-यह आध्यत्म और ज्ञान की भूमि है। मिथिला सीता जी की भूमि है जो हमारी संस्कृति में नारी मर्यादा का पूज्यनीय प्रतीक है। मुझे हर्ष है कि मैथिल समुदाय के लोगों के अथक प्रयास से मैथिली भाषा को संविधान की अष्टम सूची में स्थान मिला। देश की राजधानी में मैथिली अकादमी की स्थापना भी हुई। यह कदम तभी सार्थक हो सकेंगे, जब मैथिल भाषी नागरिक स्वयं मैथिल के समृद्ध लोक साहित्य और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करें।

मैं, अखिल भारतीय मिथिला संघ के समस्त कार्यकर्ताओं के सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और "मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह-2019" तथा प्रकाश्यमान "स्मारिका" हेतु अपनी अनंत शुभकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।

वेंकैया नायडु

**(एम. वेंकैया नायडु)**

**नई दिल्ली**
**10 अक्तूबर, 2019**

नित्यानन्द राय
**NITYANAND RAI**




गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली – 110001

**MINISTER OF STATE FOR HOME AFFAIRS**
**GOVERNMENT OF INDIA**
**NORTH BLOCK, NEW DELHI - 110001**



## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.), नई दिल्ली द्वारा "**मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह- 2019**" का आयोजन डॉ. भीमराव अंतर्राष्ट्रीय केंद्र, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका "**समय संकेत**" का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

मिथिला की पावन धरती ने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है। यहां पर अनेक विद्वानों जैसे- विद्यापति, बाबा नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु आदि ने जन्म लिया है, जिन्होंने भारतीय साहित्य, संगीत व ज्ञान को पूरे विश्व में फैलाया है। मिथिला पैंटिंग की प्रशंसा आज पूरी दुनियां में हो रही है।

मैं "**मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह- 2019**" के अवसर पर कार्यक्रम से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और स्मारिका के प्रकाशन की बधाई देता हूं।

आपका

(नित्यानन्द राय)

24 सितम्बर 2019
नई दिल्ली

Office Tel. : 011-23092870, 23092595, Fax No. : 011-23094896

फागू चौहान
PHAGU CHAUHAN






राज्यपाल, बिहार
GOVERNOR OF BIHAR

राज भवन
पटना–800022
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

03 अक्टूबर, 2019

## संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में आगामी 24 नवम्बर, 2019 को 'मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह–2019' का आयोजन दिल्ली में होने जा रहा है।

आशा है, समारोह में मिथिला की समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों पर व्यापक चर्चा होगी।

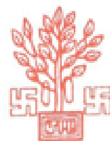
मैं सम्मेलन के आयोजन और इस अवसर पर 'स्मारिका' के प्रकाशन की समग्र सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

(फागू चौहान)

Phone : 0612-2786100-107, Fax : 0612-2786178
e-mail : governorbihar@nic.in

मुख्य मंत्री
बिहार





पटना

दिनांक 03.10.2019

## संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक **24** नवम्बर **2019** को **''मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2019''** का आयोजन डॉ भीमरॉव अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी प्रस्तावित है ।

मिथिला प्राचीन दर्शन के अध्ययन केन्द्र के रूप में सभी जगह प्रख्यात है। इस पावन धरती के संतों, दार्शनिकों, कलाकारों, शिल्पकारों और चित्रकारों ने पूरी दुनिया में अपनी विद्वता, ज्ञान तथा करूणा से जनमानस को प्रेरित किया है। यहाँ प्राचीन काल से लोक नाट्य, लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक चित्रकला एवं संस्कृति की परंपरा रही है। मिथिला–मैथिली गौरवशाली इतिहास और संपन्न विरासत से परिपूर्ण है। सरलता, सदभावना, सहनशीलता, मधुर वाणी, अतिथि–सत्कार, ईमानदारी एवं मेहनत मैथिली संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। मिथिला सदियों से राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक संघर्ष का केन्द्र भी रहा है। मुझे विश्वास है कि अखिल भारतीय मिथिला संघ अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मिथिला–मैथिली समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक जागरण एवं उत्थान हेतु निरंतर कार्य करता रहेगा।

**''मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2019''** के भव्य, गरिमामय व सफल आयोजन एवं प्रकाश्य स्मारिका की उपयोगिता एवं सार्थकता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ है ।

( नीतीश कुमार )

महाबल मिश्रा
पूर्व सांसद
(लोक सभा)

Mahabal Mishra
Ex. Member of Parliament
(Lok Sabha)






मकान नं. 86, गली नं. 2,
वैशाली डाबड़ी, पालम रोड़
नई दिल्ली-110045
फोन नं. (ऑ.) 25380005 (निवास) 253900

H.No.-86, Gali No.-2, Vaishali Dabri
Palam Road, New Delhi-110045
Cell. : 9811289600, 9958095781, 901318C

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी0) द्वारा प्रायोजित मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2019 क लेल हमरा तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामना। प्रस्तुत संस्था विगत तिरपन वर्ष सँ सांस्कृतिक धरोहर एवं उपकरणक संवर्द्धन लेल निरंतर विभिन्न कार्यक्रमांक आयोजन करैत आबि रहल अछि। ई नव पीढ़ीक लेल शिक्षाप्रद अछि। एहि वर्ष मिथिलाक बहुआयामी क्षेत्र में अनवरत कार्य कएनिहार व्यक्ति कँ मिथिला विभूति स्मृति 2019 सँ सम्मानित करब अखिल भारतीय मिथिला संधक दुरगामी सोच कँ द्योतक अछि। हमरा तरफ से " मिथिला विभूति स्मृति 2019" सँ सम्मानित होमए बाला सब गोटे कँ ढ़ेर रास बधाई एवं शुभकामना संगहि अखिल भारतीय मिथिला संधक सब सदस्य कँ कार्यक्रमक सफलताक लेल बहुत रास बधाई।






**Manoj Tiwari**
Member of Parliament
Lok Sabha- North East Delhi

दिनांक: 13.11.2019

## सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्ता हो रही है कि पिछले 52 वर्षों से अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.) द्वारा मिथिला स्मृति पर्व समारोह का आयोजन किया जा रहा है जो कि इस वर्ष दिनांक 24 नवंबर 2019 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र जनपथ, नई दिल्ली में मनाया जायेगा। इस अवसर पर संस्था के द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन एवं साहित्यिक, सांस्कृतिक, लोक नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम का आयोजन भी किया जायेगा|

इस के लिए मैं संस्था के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को स्मारिका के सफल प्रकाशन एवं सफल सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ |

(मनोज तिवारी)

श्री विजय चन्द्र झा
**अध्यक्ष, अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी.)**
**संगम विहार, नई दिल्ली**



अरूण कुमार, भा.पु.से.
महानिदेशक,
रेल सुरक्षा बल







भारत सरकार
रेल मंत्रालय, (रेलवे बोर्ड)
रेल भवन, नई दिल्ली-110001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF RAILWAYS
(RAILWAY BOARD)
RAIL BHAVAN, NEW DELHI-110001

## शुभकामना संदेश

जानि क मन हर्षित भेल कि अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 24 नवम्बर 2019 क मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह क आयोजन कयल गेल अछि । ओहि समय सरकारी कार्य से विदेश यात्रा पर होमय के कारण व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहि भय सकब। क्षमाप्रार्थी छी, मुदा आयोजन केर सफलता हेतु हमर मंगलकामना ।

श्री विजय चन्द्र झा जी के बहुत साधुवाद । हमर इहो अपेक्षा, जे मैथिल नवतुरिया लोकनि केर सेहो एहि मंच पर आनि, मिथिला मैथिली केर प्रचार प्रसार स जोड़ल जाए ।

शुभकामना सहित

(अरूण कुमार )

नई दिल्ली,
दिनांक 13/11/2019



# अखिल भारतीय मिथिला संघ



## संस्थाक गीत

**डॉ. चन्द्रमणि झा**

अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!
दशको पूर्व प्रवासी मैथिलकें एकठाम जुटौलनि
अपन माटि-पानिक दरेग, दिल्लीमे संघ बनौलनि
मिथिला-रत्न भोगेन्द्र प्रयासें, मैथिल भेलाह संग
अखिल भारतीय...2

संसद कें झकझोरि देलक मिथिलाक बेटा
मिथिला मैथिल मैथिलीक, आवाज़ उठौलनि नेता
भरि देशक मैथिल जागल, पटना दिल्ली आ बंग
अखिल भारतीय...2

अखिल भारतीय मिथिला संघक रहलै अथक प्रयास
दरभंगे की? गाम गाममे शिक्षा केर भेल विकास
कोशी डैमक मांग एखनधरि चलिये रहल नि:संग
अखिल भारतीय...2

खुलल जयन्ती जनता वैशाली, मिथिलापुरी धरि चललै
दिल्लीमे मैथिली अकादेमी, संघक बल पर बनलै
एहन कतेको काज भेल अछि, बनले छैक उमंग
अखिल भारतीय...2

जन आंदोलन बल सं सबटा, वस्तु संगोरल गेलै
अप्पन भाखा मैथिली भाखा, संविधानमे एलै
संघ सदा जीवनदानी, लड़िए रहल जंग
अखिल भारतीय मिथिला संघ!
अखिल भारतीय मिथिला संघ!!

## सफरनामा

**पहिल कार्यकारिणी (दिल्ली) 1967**
**(भोगेन्द्र झा जीक नेतृत्वमे दिल्लीमे अभियान शुरू)**

| | |
|---|---|
| पहिल सम्मलेन | : 1971 |
| पहिल अध्यक्ष | : चंद्रकांत झा |
| पहिल उपाध्यक्ष | : रामदेव झा |
| पहिल उपाध्यक्ष | : बलिराम ठाकुर |
| पहिल महासचिव | : गंगाधर झा 'शास्त्री' |
| पहिल संयुक्त सचिव | : विजय चन्द्र झा |
| पहिल कार्यकारिणी (कोलकाता) | : 1950-51 |

## अध्यक्षगण

| | |
|---|---|
| स्व. चंद्रकांत झा | : 1970-1974 |
| स्व. राजकुमार पूर्वे | : 1974-1975 |
| स्व. श्रीमती आद्या झा | : 1975-1977 |
| स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव | : 1977-1985 |
| श्री अजीतनाथ झा (कार्यकारी) | : 1985-1989 |
| स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव | : 1985-2001 |
| श्री शुभचंद्र झा | : 2001-2005 |
| स्व. राजेन्द्र प्रसाद यादव | : 2005-2010 |
| श्री रामचंद्र चौधरी (कार्यकारी) | : 2010-2013 |
| श्री विजयचंद्र झा | : 2013 सं पदासीन |



# अखिल भारतीय मिथिला संघ
# कार्यकारिणी



## अध्यक्ष

**श्री विजय चन्द्र झा (9650461788)**

## उपाध्यक्ष

| | |
|---|---|
| श्री पवन कुमार सिंह यादव | 9810553119 |
| डॉ. हेमचंद्र झा | 9835211953 |
| श्री अनिल झा | 9868410643 |
| डॉ. ममता ठाकुर | 9717258787 |

## महासचिव

| | |
|---|---|
| श्री विद्यानंद ठाकुर | 9717539000 |
| श्री राधानाथ झा | 9971034185 |
| श्री अखिलेश मिश्र | 9711991695 |
| डॉ. प्रकाश झा | 9811774106 |

## कोषाध्यक्ष

श्री शीतलकांत झा 9717241189

## सचिव

| | |
|---|---|
| श्री आशुतोष झा | 9313300533 |
| श्री नन्द कुमार झा | 9871462516 |
| श्रीमती कल्पना झा | 9873442999 |
| श्री ऋषि कुमार झा | 9560306681 |
| श्री शंकर झा | 8010545118 |
| श्री रवीन्द्र झा | 9871144858 |
| पंडित कौशल झा | 9999327551 |

## कार्यकारिणी सदस्य

| | |
|---|---|
| श्री जगन्नाथ झा | 9810835117 |
| श्री अमरनाथ झा (फ़रीदाबाद) | 9213367892 |
| श्री रौशन कुमार झा | 9350216092 |
| श्रीमती सांत्वना मिश्र | 9717414976 |
| श्री अर्जुन झा | 9873922128 |
| श्री गोविन्द कुमार झा | 8826320223 |
| श्री के. एन. झा | 9810073477 |
| श्री राजकिशोर झा (गुजरात) | 9227236855 |
| प्रेम कान्त चौधरी (गुवाहटी) | 7002605261 |
| श्री सरोज झा (मुंबई) | 9820785991 |
| श्री ऋतेश पाठक | 9213152822 |
| श्री विनीत उत्पल | 9911364316 |
| डॉ प्रवीण कुमार झा | 9868330336 |
| श्री प्रेम चन्द्र झा | 9934096140 |
| श्री गणेश झा | 8076196298 |
| श्री त्रिपुरारि ठाकुर | 9718608191 |
| श्री सर्वनारायण मिश्र | 9968737962 |
| श्री हरिशंकर झा (ललन झा) | 9899729512 |
| श्री प्रभाष चन्द्र झा | 9910305320 |
| श्री ओम चौधरी | 9958638604 |
| श्री अरुण कुमार यादव | 9810655246 |
| श्री रंजित झा | 8467049427 |
| श्री धीरेन्द्र कुमार झा | 8826770055 |

## विशेष आमंत्रित सदस्य

| | |
|---|---|
| भास्कर ज्योति | 9015753660 |
| घुरण झा | 9968098881 |
| लक्ष्मीश्वर तिवारी | 8826847709 |
| राजेश झा | 9771444799 |
| वीरेन्द्र मिश्र | 9315329505 |
| ज्योति झा | 9811906982 |

## स्वागत समिति

### मुख्य संरक्षक

**श्री प्रभात झा**

सांसद, राज्यसभा एवं
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा

### स्वागताध्यक्ष

**श्री देवेश चन्द्र ठाकुर**

सदस्य, बिहार विधान परिषद

### स्वागत समिति सदस्य

1. श्री विजय चन्द्र झा
2. डॉ. शकील अहमद
3. डॉ. संजीव मिश्र
4. श्रीमती रश्मिता झा
5. श्री इंदुशेखर झा
6. श्री अजित कुमार झा
7. श्री अरुण कुमार
8. डॉ. राजेश झा
9. डॉ. अमरनाथ झा
10. श्री विमलेन्दु झा
11. श्री डी. एन. ठाकुर
12. श्री संत चौधरी
13. श्री पी. एस. झा
14. श्री राजेश कुमार पाठक
15. श्री राजेश झा
16. डॉ. रूबी मिश्र
17. डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक
18. श्री सलिल कुमार झा
19. श्रीमती आभा झा चौधरी
20. श्री चंद कामत
21. जिया उल रहमान
22. श्री अरुण पंजियार
23. समस्त पदाधिकारी आ कार्यकारिणी सदस्य लोकनि स्वागत समिति के सदस्य हेता

### वित्तीय उपसमिति

1. अखिलेश कुमार मिश्र (संयोजक)
2. राधानाथ झा
3. विद्यानंद ठाकुर
4. जगन्नाथ झा
5. राजेश झा
6. रवीन्द्र कुमार झा

### सांस्कृतिक आयोजन हेतु उपसमिति

1. प्रकाश झा (संयोजक)
2. कल्पना झा
3. ओम चौधरी
4. गोविंद झा
5. संकेत शेखर
6. कौशल झा

### अतिथि सत्कार उपसमिति

1. ममता ठाकुर (संयोजक)
2. शीतल कान्त झा
3. शंकर झा
4. सतीश प्रसाद सिंह
5. रौशन झा

### स्मारिका उपसमिति

1. ऋतेश पाठक (संयोजक)
2. विनीत उत्पल
3. रमण कुमार सिंह
4. स्वाती शाकम्भरी
5. भास्कर ज्योति
6. मणिशंकर कुमार
7. रौशन कुमार झा (पत्रकार)
8. अरुण यादव

**स्वागतातुर: समस्त पदाधिकारी आ कार्यकारिणी सदस्यगण, अखिल भारतीय मिथिला संघ**

## प्रेरणा पुंज

# सूरज नारायण सिंह

महान क्रान्तिकारी नेता शहीद सूरज नारायण सिंहक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत नरपतिनगर गामक एकटा साधारण किसान परिवारमे 17 मई 1909 ई. मे भेल। बाल्यावस्थेसं स्वतंत्र भारतक सपना देखनिहार बलौर मिडिल स्कूलमे अंग्रेजक खिलाफ झंडा उठौलन्हि आ वाटसन स्कूल, मधुबनी अबैत देरी स्वतंत्रता आन्दोलनक क्रान्तिकारी गतिविधिस पूर्णत: जुटि गेलाह। स्कूलसं निष्कासित भेलोपरान्त जिला स्कूलमे नामांकन करौलन्हि, मुदा ओतहु पुलिस हिनक पाछां नञ छोड़लक, फलस्वरूप काशी विद्यापीठसं विशारदक उपाधि प्राप्त केलन्हि।

सूरजबाबूक जिनगीक अधिकांश भाग संघर्ष आ जहलेमे बितलन्हि, जाहिमे मुख्य रूपसं नमक सत्याग्रह, तार कटबाक अभियोग, मधुबनीमे विदेशी कपड़ा आ शरबखानाक विरूद्ध सत्याग्रह, 1932 ई. मे हाजीपुर रेल डकैती आ हथियार संग्रह करबाक अभियाग, 1934 ई. मे सी आई डी वेदानन्द झाक हत्याक प्रयाससं संबंधित अभियोगमे बनारसमे गिरफ्तारी सहित अनेको मामिलामे गिरफतार होइत रहलाह।

1934 ई. मे दरभंगा राजक विरूद्ध व कास्त जमीन वापसीक हेतु संघर्ष आ ओहिसं सम्बंधित अनेको मामिलामे जीत एक दिस सूरजबाबूकें एकटा महान् क्रान्तिकारी नेताक पहचान देलक त' दोसर दिस 1942क 'भारत छोड़ो आन्दोलन' शुरू भेलोपरान्त जयप्रकाश आ रामनंदन मिश्र जीक संग जहलक देबाल फानिक' भगनाइ आ हनुमाननगर जहल पर हमला केनाइ आदि घटना राजनीतिक हीरो बनौलक।

1946 ई. मे बिहार जहलसं रिहाइ भेलोपरान्त सूरज बाबू मुख्य रूपसं किसान - मजदूरक शोषणक विरूद्ध संघर्षमे जुटलाह जाहिमे रेलवे, चीनी मिल आ इंजीनियरिंग उद्योग आदिकें कार्य-क्षेत्र बनौलन्हि। जिनगीक अन्तिम क्षण धरि हिन्द-मजदूर सभाक अध्यक्ष रहलाह। 1962 ई. मे बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलोपरान्त विधानसभामें प्रभावशाली भूमिका निभौलन्हि। 21 अप्रैल 1973 ई. क' भारतीय जनतंत्रक एकटा शर्मनाक घटनान्तर्गत उषा मार्टिन कंपनीक गेट पर मजदूर सभक मांगक समर्थनमे अनशन पर बैसल एहि लोकप्रिय नेताक अन्त कम्पनी मालिकक लठैत आ पुलिस द्वारा भेल।

### पद्मश्री

# आदित्यनाथ झा

- जन्म : 18 अगस्त, 1911 (इलाहाबादमे)
- आरंभिक शिक्षा क्वीन्स कॉलेज, वाराणसीमे।
- बादक शिक्षा गवर्नमेट इंटर कॉलेज प्रयागमे।
- इलाहाबाद विश्वविद्याालय बी.एल. (आनर्स) अंग्रेजी परीक्षामे अपन ज्येष्ठ भाई डॉ. अमरनाथ झाक (पद्मभूषण) कीर्तिमान तोड़लनि।
- एम.ए. के बाद एल.ए.बी. के शिक्षा इलाहाबादमे।
- 1934मे तत्कालीन भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.सी. एस.)मे प्रथम स्थान प्राप्त केलनि।
- 1934मे विलायतक ऑक्सफोर्ड जाय प्रशासनिक व्यावहारिक शिक्षा (ट्रेनिंग) प्राप्त केलनि।
- 1936मे स्वदेश घुरलाह पर संयुक्त दंडाधिकारीक पद पर फैजाबादमे नियुक्ति।
- 1939मे बनारस नगर सह दंडाधिकारीक पद पर ओ पहिल भारतीय छलाह जे पदभार ग्रहण केलनि।
- तत्पश्चात् किछु कालक लेल पूर्वी राज्य सभक Political Agent नियुक्त भेलाह।
- 1948 सं 1954 धरि यू.पी.मे विभिन्न विभागक कार्य करैत तराईक विकास पर ध्यान देलनि। हुनका नाम पर रूद्रपुरमे इंटरमीडिएट कृषि महाविद्यालय अछि।
- 1954मे सब सं कम उम्रक उत्तर प्रदेशक मुख्य सचिवक कार्यभार ग्रहण केलनि।
- 1958मे देशक सर्वप्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसीमे उप-कुलपति क' पद केर सुशोभित केलनि।
- 1959मे केन्द्रमे नेशनल एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन मसूरीमे प्रथम निदेशक पद सुशोभित केलनि।
- 1963मे केन्द्रमे योजना आयोगक अतिरिक्त सचिव के पदभार ग्रहण केलनि।
- 1963मे रक्षा उत्पादनक सचिव पद सुशोभित कयलनि।
- 1964मे जखन इन्दिरा गांधी सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनली त' डॉ. झा कें सचिव बनौलनि।
- 1966मे डा. झा दिल्लीक चीफ कमिश्नर बनलाह आ ओही वर्ष केन्द्र शासित प्रदेश, दिल्लीक प्रथम उप राज्यपाल भेलाह।
- 18 जनवरी 1972 परलोकवासी भेलाह।
- 26 जनवरी 1972 मरणोपरान्त देशक दोसर सभ सं पैघ उपाधि पद्मविभूषण सं अलंकृत कएल गेल।

# प्रेरणा पुंज

## कर्पूरी ठाकुर

- जननायक कर्पूरी ठाकुरक जन्म समस्तीपुर जिलाक एकटा गाम पितौंझिया, जेकरा आब कर्पूरीग्राम कहल जायत अछि, मे 24 जनवरी, 1924 के भेल छल।
- ओ स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आ बिहार राज्यक दोसर उपमुख्यमंत्री संग दू बेर मुख्यमंत्री रहल छलाह।
- भारत छोड़ो आन्दोलनक समय ओ 26 मास जेलमे बितौने छलाह।
- सामाजिक रूपसं पिछड़ल मुदा सेवा भाव जेहन महान लक्ष्यकें चरितार्थ करय बला नउवा जाइतमे जन्म लहि बला एहि महानायक राजनीति के सेहो जन सेवाक संग जीलक।
- मुख्यमंत्री रहैत श्री कर्पूरी ठाकुर पिछड़ा वर्गके 27 प्रतिशत आरक्षण देलक।
- हुनक निधन 17 फरवरी 1988 के भेल।

## ताराकांत झा

- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी अनुमंडलक शिवनगर गाममे 1927 मे जन्म।
- बिहारक महाधिवक्ताक पदकें सुशोभित केलाह आ बिहार विधान परिषद् के अध्यक्ष सेहो भेलाह।
- वर्ष 1952 सं आरएसएस आ जनसंघ सं जुटल रहल। ओ भाजपाक संस्थापक सदस्य छलाह।
- मैथिली कें आठम अनुसूचीमे आनब लेल संघर्ष कयलाह।
- बिहार प्रदेश भाजपाक अध्यक्ष रहलाक बाद ओ बादमे जनता दल मे शामिल भेलाह।
- 1956 सं ल' क' जीवन पर्यंत वकालत करैत रहलाह। बिहार बार काउंसिल मे 22 बरख धरि सदस्य रहलाह। अध्यक्ष सेहो भेलाह। नेशनल स्कूल ऑफ़ लॉ, बेंगलुरु के एग्जीक्यूटिव काउंसिलक सदस्य छह बरख धरि रहलाह।
- हुनक निधन 2014 मे भेल।

## मिथिला केशरी : जानकी नंदन सिंह

जन्म स्थान: इन्दरपुर डेयोढ़ी (प्रसाद), मधुबनी
जन्म तिथि: 14 जनवरी 1907, पुण्य तिथि: 2 मई, 1969
गिरफ्तारी: मिथिला राज्यक लेल आंदोलन करैत आसनसोलमे 22 जनवरी, 1954 कें
विधायक: 1952-1956, विधान पार्षद: 1957-1962



**सांसद श्री अशोक यादव संग भेट वार्ता**



# अखिल भारतीय मिथिला संघ
# विविध वार्षिक सम्मान



अखिल भारतीय मिथिला संघ हर साल मिथिला विभूति स्मृति सम्मान समारोहक आयोजन करैत आबि रहल अछि। वर्ष 2015 सं एहि समारोह कें किछु विशिष्ट स्वरूप देबय कें प्रयास शुरू कएल गेल। एहि क्रममे तीन टा विशिष्ट सम्मान, नामतः, सर गंगानाथ झा सम्मान, बाबू साहेब चौधरी सम्मान आ भोगेन्द्र झा सम्मान आरंभ कएल गेल। अगिला वर्ष अर्थात् 2016 मे एहि कड़ीमे यात्री सम्मान सेहो जुटि गेल। एहि चारु पुरस्कार सं एखन धरि सम्मानित विभूति सबहक सूची नीचा प्रस्तुत अछिः

| | |
|---|---|
| सर गंगानाथ झा सम्मान | अकादमिक क्षेत्रमे उत्कृष्ट योगदानक लेल (वर्ष 2015 सं आरंभ)<br>2015 : श्री संदीप झा, संदीप फाउंडेशन, मुम्बई<br>2016 : श्री उदयनारायण सिंह नचिकेता, कोलकाता<br>2017 : श्री मानस बिहारी वर्मा, दरभंगा<br>2018 : पं. गोविन्द झा, पटना<br>2019 : श्री मंत्रेश्वर झा (पूर्व आईएएस), दिल्ली |
| बाबू साहेब चौधरी सम्मान | मिथिला-मैथिलीक लेल संघर्षरत व्यक्तिक सम्मान (2015 सं आरंभ)<br>2015 : श्री अशोक झा, कोलकाता<br>2016 : श्री कमलेश झा, मधुबनी<br>2017 : श्री लक्ष्मण झा 'सागर', कोलकाता<br>2018 : श्री मनीष कुमार झा, रायपुर (छत्तीसगढ़)<br>2019 : श्री चंद्रेश, दरभंगा |
| भोगेन्द्र झा सम्मान | राजनीति आ समाजमे उल्लेखनीय योगदानक लेल (2015 सं आरंभ)<br>2015 : मैथिली पुत्र प्रदीप, दरभंगा<br>2016 : श्री एन. के. झा, सीए, पटना<br>2017 : श्री वीरेन्द्र मल्लिक, दिल्ली<br>2018 : प्रो. सुभाषचंद्र यादव, सहरसा<br>2019 : श्री हुकुमदेव नारायण यादव (पूर्व केंद्रीय मंत्री) |
| यात्री सम्मान | मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट योगदानक लेल (2016 सं आरंभ)<br>2016 : श्री जगदीश मंडल, दिल्ली,<br>2017 : श्री भीमनाथ झा, दरभंगा<br>2018 : -<br>2019 : श्री रामचंद्र मिश्र 'मधुकर' |

# संपादकीय





वर्ष धरि प्रतीक्षाक उपरांत पुनः मिथिला विभूति सभकें स्मरण करबाक बहन्ने अपने सभ सं गपशप करबाक अवसर आयल। साल अंत होइत धरि मिथिला विभूति कार्यक्रम सब आब देशक कोने कोने होयत अछि। सांस्कृतिक चेतनाक ई प्रसार निश्चित रूपें सुखद अछि। तथापि हिंगलिश माध्यमक मैथिली मंच वा विशुद्ध शास्त्रीय मैथिली माध्यमक मंच सबसं फराक ई चेतना जन जन धरि पहुंचब प्राथमिक आवश्यकता अछि। प्राथमिक शिक्षा हो वा उच्च शिक्षा वा कोनो सरकारी अनुदान-प्रदान मैथिलीक हिस्सामे आबय, भाषा तखने जियत जखन ई जन-जन केर काजक भाषा अर्थात सम्पूर्ण समाजक भाषा नञ बनि जाए।

जन-जन केर भाषा बनबाक लेल कोनहु अभियान वा प्रावधान सं बेसी जनमानसमे अपन भाषा आ अस्मिताक स्वाभिमान आवश्यक अछि। जखन कॉन्वेंटमे पढ़य बला अहांक बच्चा कहय "मैडम बोली है, घर में भी हिंदी बोलने के लिए नहीं तो मार लगेगा'' तखन ई स्वाभिमान अवश्य जागबाक चाही। बच्चा अंग्रेजी माध्यम मे पढ़ब जरूरी मुदा ओ अंग्रेजे टा नञ होय अपितु बहुभाषी बनय से जरूरी आ समाज-सम्पर्क मे मातृभाषाक प्रयोग करय, से जरूरी। खास क चंपारण सं चंपा नगरि धरि आ गोपालगंज सं किशनगंज धरि मिथिला क्षेत्रमे बजार-दोकान, रेल-बस, रस्ता-पैरामे मैथिली एना अनुगुंजित हेबाक चाही जे ओहिठाम से गुजरैत हरेक अजनबीकें हमर भाषाक फराक पहिचान भ जाए।

एहि तरहक स्वाभिमानक जागरण लेल आ कोनहु भाषाक समृद्धिक लेल आवश्यक अछि जे ओ भाषा नवतुरियाक हृदय सं जुटल रहय। आजुक परिस्थिति मे नवतुरिया लोकनि अपन मातृभाषा सं विलग बेशी छथि। एहन स्थितिमे युवा लोकनिकें मातृभाषा सं जोड़बाक अ.भा.मि. संघक प्रयास सतत जारी अछि। मैथिलीक नव प्रतिभा कें प्रथम मंच देबाक क्रम एहि स्मारिकामे लगातार तेसर वर्ष विद्यमान अछि। समस्तीपुर निवासी शेफालिका झा आ चंडीगढ़ प्रवासी स्वाती ठाकुर पहिलुक बेर मैथिलीमे कविता लिखलीह जे एहि स्मारिकामे अपने सभक समक्ष प्रस्तुत अछि। संगहि, भोला पासवान शास्त्री एहन प्रतिबद्ध राजनेता सं ल' क' डॉ. जयकांत मिश्र एहन समर्पित भाषाविद् धरि लोकनिक जीवन सं जुड़ल विविध प्रसंग अपने सबहक सोझां प्रस्तुत अछि।

वरिष्ठ मैथिली अभियानी लक्ष्मण झा 'सागर' स्व. बाबू साहेब चौधरी जीक विषयमे लिखैत छथि ''एहि सं पूर्व चौधरी जी पर हमर तीन टा आलेख छपि चुकल अछि जे संपूर्ण रूपें संस्मरणात्मक आलेख अछि। चौधरीजीक परिचायात्मक आलेख आंखिमे नहि अभरल अछि आयधरि, जहन कि एकर बेगरता अछि हरेक मैथिली सेवा आ मैथिली प्रेमी कें।'' एहि बेगरता कें स्वंय सागरजी पूर्ण कयलन्हि अछि एहि स्मारिकामे। अहिना स्व. आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', आनंद झा न्यायाचार्य आ ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र एहन महान विभूति सभ पर डॉ. शंकरदेव झा, ललितेश मिश्र, अरविन्द मिश्र 'नीरज', नारायण झा, डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा, सदृश विद्वान लेखक लोकनि विस्तृत परिचयात्मक आलेख एहि अंकमे लिखलनि अछि।

उमेद अछि जे सब गोटे प्रस्तुत सामग्री सभ मन सं पढ़ब, गुनब आ नीक-बेजाय सं अवगत कराएब। abmssmarika@gmail.com पर अपनेक प्रतीक्षा रहत।

– ऋतेश पाठक

# अध्यक्षक दूटप्पी

समय सतत गतिशील अछि आ समय केर गति संग कोनहु व्यक्ति वा संस्थामे सेहो गतिशीलता, परिवर्तनशीलता रहब आवश्यक अछि। अहिना गतिशील अखिल भारतीय मिथिला संघ एहि वर्ष फेर सं नव कार्यकारिणीक गठन क मिथिला-मैथिली-मैथिल केर सेवामे पुनश्च उपस्थित अछि। नव कार्यकारिणी पर एखन धरि सम्पन्न वा आहूत काज सबकें आगु ल जेबाक आ नव प्रतिमान स्थापित करबाक महत्वपूर्ण दायित्व अछि आ अहां सबहक सहयोगक बल पर हमरा भरोस अछि जे एहि दायित्वकें हम सब निश्चित रूपें पूर्ण क सकब।

कार्यकारिणीक पुनर्गठनक ई संक्रमण काल संघ लेल कनेक चुनौतीपूर्ण रहल अछि आ स्वयं हमरा समक्ष स्वास्थ्य एकटा पैघ चुनौती बनि गेल अछि मुदा ताहूक बीच देश भरिक मैथिल लोकनिक स्नेह हमर सम्बल बनल अछि। आ एहि बल पर अ.भा.मि.सं. नव नव डेग सेहो उठा रहल अछि आ अपन पारम्परिक भूमिका सेहो निबाहि रहल अछि।

मैथिलजन केर पीड़ामे सदैव समानुभूत अ.भा.मि.सं. एहि साल आयल भीषण बाढ़िमे सुपौल-मधुबनी-दरभंगा-सीतामढ़ी समेत अनेकानेक ठाम राहत सामग्रीक वितरण कयलक। एहि पुनीत काजमे शाश्वत मिथिला (गुजरात) समेत अनेक संगठन आ व्यक्ति दिश सं खुजल हिय सं सहयोग भेटल। संघक महासचिव अखिलेश मिश्र आ आन पदाधिकारीगण एहिमे बढ़ि-चढ़ि शरीक भेलाह।

संगम विहार स्थित मिथिला भवन आब मूर्त रूपमे आबि गेल अछि। हम सब दिल्ली-एनसीआरमे रहनिहार मैथिलजन लेल एकर द्वारि खोलि चुकल छी आ हुनके सबहक सहयोग सं एकरा दुतल्ला सं चारितल्ला धरि पहुंचाबय केर उद्यम शुरू केलहुं। मिथिला भवन एकटा स्वप्निल यज्ञक पूर्णाहुति थिक। एहन अनेको यज्ञ करबाक अछि।

संघक प्रकाशन तीरभुक्ति कें आईएसएसएन भेटब एहि बर्खक पैघ सबसं उपलब्धिमे गानल जाएत। एहि लेल सम्पादकद्वय विनीत उत्पल आ ऋतेश पाठक संग हुनक टीम केर सभ साथी तथा तीरभुक्तिक लेखकलोकनि बधाइ केर पात्र छथि। दुनू संपादक केर विशेष धन्यवाद एहि लेल जे गत दू बरख सं बेशी समय सं ई दुनू संघ सं एक पैसा कोनो रूप मे लेने बिना पत्रिका, स्मारिका आ आन प्रकाशन संबंधी काजक संपादन पूर्ण मनोयोग सं क रहल छथि। पत्रिका सम्प्रति अपन स्तरीय सामग्रीक लेल मैथिली जगतमे बेश चर्चित अछि। शीघ्रहि एकरा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अधिमान्य शोध-पत्रिका सबहक सूची आनबाक प्रयास अछि। पुस्तक प्रकाशन श्रृंखला सेहो शनैः शनैः आगु बढ़ि रहल अछि।

दुनिया भरिमे पसरल मैथिलजनकें एक ठाम एकत्र क मिथिलाक विकास आ संस्कृतिक संरक्षणमे हुनक योगदान पर मंथन लेल विश्व मैथिल सम्मेलन शीघ्रहि आहूत अछि। एहि दिशामे कोनहू मंच सं एखन धरि किछु ठोस पहल नहि देखल। ताहि सं एहि सम्मेलनक बेश बेगरता अछि। अ.भा.मि.सं. देश आ विदेश दुनु ठाम पसरल सब मैथिलजन सं आह्वान करैत अछि जे एहि महायज्ञ मे तन-मन-धन अर्पण क एहि स्वप्नकें साकार करथु।

विश्व भरिमे पसरल मैथिल सबकें मध्य समेकित सम्पर्क स्थापित कयनाय हमरा सबहक अभिभावक आ मुख्य संरक्षक, माननीय सांसद श्री प्रभात झाजीक हृदय सं जुड़ल विषय अछि। डेग डेग पर हमरा सबकें हिनक संरक्षण, सहयोग आ समर्थन भेटैत अछि। एहि लेल समस्त मिथिला संघ हृदय सं हिनक आभारी अछि। संगहि हम संघक गतिविधि सबहक सफल संचालन लेल महासचिव विद्यानंद ठाकुर, प्रकाश झा, राधानाथ झा, संघक अन्य पदाधिकारीगण, समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण, विशेष आमंत्रित सदस्यगण आ शुभचिंतकगण केर प्रति आभारी छी। एहि प्रवाह कें सतत बनल रहबाक कामना अछि।

एहि बरख दिल्लीक पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित आ बिहारक पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र के निधन भ' गेल। दुनू लोकनि मिथिला-मैथिलीक प्रति सदैव सहज उपलब्ध आ स्नेहिल छलखिन। मिश्रजी अ.भा.मि. संघक कार्यकारिणी सदस्य सेहो रहल छलाह ओतहि दीक्षित जी संघक मंचसं मैथिली अकादमी केर गठनक घोषणा क' मिथिला मैथिली पर अद्वितीय उपकार कयने छलीह। संघक प्रत्येक सदस्य दिश सं एहि दुनू विभूति कें कोटि कोटि नमन।

धन्यवाद

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मैथिल

**– विजय चन्द्र झा**

# महासचिवक प्रतिवेदन



अखिल भारतीय मिथिला संघक आय मिथिला सहित धरती के कोनो कोन मे रहय बला मैथिल के लेल गर्व करय बला संस्था अछि। अपन स्वर्ण जयंती मना चुकल ई संस्था के अतीत जतेक गर्व करय बला अछि ओतबैये एकर वर्तमान दुनिया के तमाम संस्थाक आगू एकटा प्रतिमान बनि के उपस्थित अछि आ सदिखन मिथिला समाजक चौमुखी विकासक लेल सड़क सं संसद धरि लडैत रहल अछि। स्थानीय नेता सं प्रधानमंत्री आ राष्ट्रपति धरि मिथिला आ एही धरा सं जुड़ल लोकक मुद्दा उठाबैत रहल अछि आ ओहि मे बड रास सफलता सेहो भेटल अछि। एकरे परिणाम अछि जे आय मैथिली भाषा संविधान के आठम अनुसूची मे अछि, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली मे मैथिली-भोजपुरी अकादमी काज क' रहल अछि, जगत जननी सीता के जन्मस्थली सीतामढी के पुनौराधाम के पुनरुद्धार भ' रहल अछि, दरभंगा हवाई अड्डा परिचालनक लेल तैयार भ' रहल अछि।

एही बरख अखिल भारतीय मिथिला संघक चुनाव भेल आ श्री विजय चन्द्र झा के फेर सं संघ के सभ सदस्य अध्यक्षक भार देलनि, जखन कि हुनकर एखने किछु मास पहिने हृदय के बायपास सर्जरी भेल छलैन। मैथिली आ मिथिलाके उत्थानक प्रति हुनकर काजक परिणाम अछि जे हुनकर तमाम विरोधी हुनका लग नतमस्तक रहैत अछि। श्री विजय चन्द्र झा के अथक श्रम के परिणाम अछि जे बहुत बरख सं प्रतीक्षित अखिल भारतीय मिथिला संघ के अपन भवन बनि गेल आ एही बरख अनावरण सेहो भेल। ई हमरा सभक वास्ते गर्वक विषय अछि। ई बरख अखिल भारतीय मिथिला संघक बड महत्वपूर्ण रहल आ कतेक रास कीर्तिमान स्थापित केलक।

शिक्षा के क्षेत्र में अखिल भारतीय मिथिला संघ एकटा नव कीर्तिमान स्थापित केलनि। संघक स्वर्ण जयंती के अवसर पर शुरू भेल मैथिली भाषाक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' के एही बरख आईएसएसएन संख्या सेहो भेट गेल आ आब एकरा मे प्रकाशित सभटा शोध पत्र ब्लाइंड पेपर रिव्यू के बादे प्रकाशित भ' रहल अछि। भविष्यमे जहिया भी मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल जायत, तीरभुक्ति के नाम जरूर दर्ज होयत क्याकि पहिलुक बेर कोनो मैथिली पत्रिका पूर्ण रूप सं 'समीक्षा अंक' निकलने अछि, एही लेल 'तीरभुक्ति' के संपादक श्री विनीत उत्पल आ श्री ऋतेश पाठक बधाई के पात्र छथि। अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' एही बरख राष्ट्रीय राजधानी में स्थित केन्द्रीय विश्वविद्यालय जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग के संग मिलके 'विद्यापति : समयसं संवाद' विषय पर एकटा संगोष्ठी सेहो आयोजित केलक।

स्वास्थ्य के क्षेत्र मे अखिल भारतीय मिथिला संघ महिला सभके हुए बला कैंसर के लेल राष्ट्रीय राजधानी के महिला के जागरूक केलक आ बहुत रास ठाम शिविर लगा के निशुल्क जांच केलक आ गरीब जरूरतमंद महिला के बीच दवा बांटलक।

मिथिला के संस्कृति के राष्ट्रीय राजधानी मे बचाबैक लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ कृतसंकल्प अछि आ ओही श्रृंखला मे संघक मिथिलानी समूह एक बेर फेर 'सामा-चकेबा' के आयोजन मंडी हाउस मे केलक।

एही बरख एक बेर फेर मिथिला बाढ़ सं त्रस्त रहल आ पीड़ित लोक लेल मिथिला के तमाम जिला सहरसा, सुपौल, मधुबनी, दरभंगा आदि मे अखिल भारतीय मिथिला संघ दिस सं वस्त्र, सुखा राशन आदि वितरण कल गेल। एही बरख बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र, दिल्लीक पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, समस्तीपुर के निवर्तमान सांसद रामचंद्र पासवान, दिल्ली प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष मांगेराम गर्ग सहित भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ अखिल भारतीय मिथिला संघक संरक्षक आ अभिभावक आदरणीय श्री प्रभात झा जी के मां केर निधनक उपरांत अ.भा.मि. संघक दिशसं सबहक श्रद्धांजलि सभा आयोजित कयल गेल आ साहित्यकार हरिमोहन झाक स्मृति मे सेहो कार्यक्रम आयोजित भेल।

धन्यवाद।

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मैथिल

**– विद्यानंद ठाकुर**


मिथिला संघ ने मनाया सामा-चकेवा


पंडित गोविंद झा को सम्मान


अखिल भारतीय मिथिला संघ ने संगम विहार में किया 'मिथिला भवन' का अनावरण


समाज के विकास के लिए एकता जरूरी : विजय झा

अखिल भारतीय मिथिला संघ के कार्यक्रम में लाखों ने की शिरकत


हुकुमदेव होंगे सम्मानित

अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 24 नवंबर को, आंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ में आयोजित हो रहे मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह में सर गंगानाथ झा सम्मान से मंत्रेश्वर झा को, भोगेंद्र झा सम्मान से पूर्व सांसद हुकुमदेव यादव को, यात्री सम्मान से रामचंद्र मिश्र 'मधुकर' को और बाबू साहेब चौधरी सम्मान से चंद्रेश जी को सम्मानित किया जाएगा। यह जानकारी संघ के अध्यक्ष विजयचंद्र झा ने दी।

## जामिया में 'विद्यापति : समय से संवाद' विषय पर संगोष्ठी आयोजित

नई दिल्ली (एसएनबी)। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग में 'विद्यापति : समय से संवाद' पर संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका आयोजन अखिल भारतीय मिथिला संघ की मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' एवं आलोचना की अर्धवार्षिक पत्रिका 'हस्तांक' के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। संगोष्ठी में जयदेव कृत गीतगोविन्दम तथा विद्यापति पदावली के परिपेक्ष में विचार-विमर्श किया गया।

## जामिया में 'विद्यापतिः समय से संवाद' पर गोष्ठी आयोजित

■ नई दिल्ली: अखिल भारतीय मिथिला संघ की मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' एवं आलोचना की अर्धवार्षिक पत्रिका 'हस्तांक' के संयुक्त तत्वावधान में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग में 'विद्यापतिः समय से संवाद' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मिलता है। प्रो. देवशंकर नवीन ने कहा कि विद्यापति का कृतित्व इतना व्यापक है कि उन पर आधारित दन्त कथाओं कहानियां उनसे कहीं आगे बढ़ गईं।

अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा ने विद्यापति से शिवभक्ति और श्रृंगार पर अपने विचार रखे। प्रो.

## मिथिलाक्षर जानते हैं तो जीत सकते हैं पुरस्कार

अखिल भारतीय मिथिला संघ की शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' ने मिथिलाक्षर जानने वालों को सम्मानित करने के लिए 'मिथिलाक्षर ज्ञान प्रतियोगिता' की शुरुआत की है। पत्रिका के हर अंक में मिथिलाक्षर में लिखी एक रचना को देवनागरी

9:31 PM

पंजाब केसरी 5/16

## 'विद्यापति समय से संवाद' पर संगोष्ठी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग में 'विद्यापतिः समय से संवाद" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय मिथिला संघ की मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति" एवं आलोचना की अर्धवार्षिक पत्रिका 'हस्तांक" के संयुक्त तत्वावधान में यह आयोजन हुआ। संगोष्ठी में जयदेव कृत गीतगोविन्दम तथा विद्यापति पदावली के परिपेक्ष में विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी में विषय को लेकर बीज व्यक्तव्य देते हुए जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हिन्दी विभाग के प्रो. चंद्रदेव यादव ने कहा कि विद्यापति को लेकर काफी शोध हुए हैं और हर बार उनके रचना कर्म का नया रूप पाठकों को मिलता है। विद्यापति से जुड़े कई मिथक भी लोगों के सामने हैं। इस अवसर पर जेएनयू के प्रोफेसर एवं प्रतिष्ठित आलोचक प्रो. देवशंकर नवीन ने कहा कि विद्यापति का कृतित्व इतना व्यापक है कि उन पर आधारित दन्त कथाओं कहानियां उनसे कहीं आगे बढ़ गईं। जबकि यथार्थ में उनकी गीत और कविताओं पर बातचीत

NBT नवभारत टाइम्स

## जामिया में 'विद्यापतिः समय से संवाद' पर गोष्ठी आयोजित

■ नई दिल्ली: अखिल भारतीय मिथिला संघ की मैथिली शोध पत्रिका 'तीरभुक्ति' एवं आलोचना की अर्धवार्षिक पत्रिका 'हस्तांक' के संयुक्त तत्वावधान में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के संस्कृत विभाग में 'विद्यापतिः समय से संवाद' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में जयदेव कृत गीतगोविन्दम तथा विद्यापति पदावली के परिपेक्ष में विचार-विमर्श किया गया। संगोष्ठी में विषय को लेकर बीज व्यक्तव्य देते हुए

मिलता है। प्रो. देवशंकर नवीन ने कहा कि विद्यापति का कृतित्व इतना व्यापक है कि उन पर आधारित दन्त कथाओं कहानियां उनसे कहीं आगे बढ़ गईं।

अखिल भारतीय मिथिला संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा ने विद्यापति से शिवभक्ति और श्रृंगार पर अपने विचार रखे। प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने कहा कि विद्यापति से जुड़े तमाम पक्षों के लेकर विभिन्न वक्ताओं ने अपनी बात रखी, इससे शोध छात्रों और शिक्षकों को विद्यापति को लेकर नए सिरे से

10:38 PM

आधुनिक और पारंपरिक विद्वा...
From forwardpress.in – delivered

**जामिया में होगा समय से संवाद**

वरिष्ठ आलोचक और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के हिंदी विभाग के प्रोफेसर चंद्रदेव यादव के मुख्य भाषण और प्रसिद्ध साहित्यकार अब्दुल बिस्मिल्लाह की अध्यक्षता में 'तीरभुक्ति' और 'हस्तांक' ने मिलकर 'विद्यापति- समय से संवाद' विषय को लेकर 5 सितंबर को संगोष्ठी आयोजित की है। यह संगोष्ठी प्रेमचंद

## विस्थापित परिवारों के बीच बाढ़ राहत का वितरण

सरायगढ़। बनैनिया पंचायत के बनैनिया पलार पर रविवार को मिथिला संघ और शाश्वत गुजरात संस्था के सौजन्य से बाढ़ से विस्थापित परिवारों के बीच बाढ़ राहत

## जेएमआई में विद्यापति समय से संवाद पर संगोष्ठी का आयोजन

नई दिल्ली,6 सितम्बर(नवोदय टाइम्स): जामिया मिल्लिया इस्लामिया(जेएमआई) के संस्कृत विभाग में विद्यापति "समय से संवाद" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अखिल भारतीय मिथिला संघ की मैथिली शोधपत्रिका 'तीरभुक्ति' एवं आलोचना की अर्धवार्षिक पत्रिका


नवोदय टाइम्स

'काफी पुराना है मिथिला का इतिहास'

नया इंडिया

दिल्ली में मैथिली गायकों ने समां बांधा

दैनिक जागरण


हिन्दुस्तान

मैथिली में प्राथमिक शिक्षा की पढ़ाई जरूरी : हिंद

देशबन्धु

अखिल भारतीय मिथिला संघ का मिथिला विभूति स्मृति पर्व आयोजित

NBT नवभारत टाइम्स

मिथिला विभूति पर्व समारोह में जुटे मैथिल, हुआ विभूतियों का सम्मान

## मिथिलांचलियों ने दी दीक्षित और पासवान को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा गांधी शांति प्रतिष्ठान में दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित सहित पूर्व भाजपा अध्यक्ष दिल्ली मांगेराम गर्ग तथा सांसद रामचंद्र पासवान को दी गई श्रद्धांजलि। जिसमें मुख्य अतिथि एवं सांसद हुकुमदेव नारायण यादव, तथा पूर्व सांसद महाबल मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार आलोक कुमार एवं लोक जनशक्ति पार्टी के प्रवक्ता अजय कुमार सम्मिलित हुए अखिल भारतीय मिथिला संघ की ओर से विजय चंद्र झा, विद्यानंद झा, अखिलेश मिश्र ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर अखिल भारतीय मिथिला संघ के मीडिया प्रभारी आशुतोष झा भी मौजूद थे।

## महापौर अंजू कमलकांत ने कैंसर जागरूकता एवं निःशुल्क जांच शिविर का किया उद्घाटन




बाढ़ पीड़ितों के बीच वस्त्र व सूखा राशन का किया गया वितरण

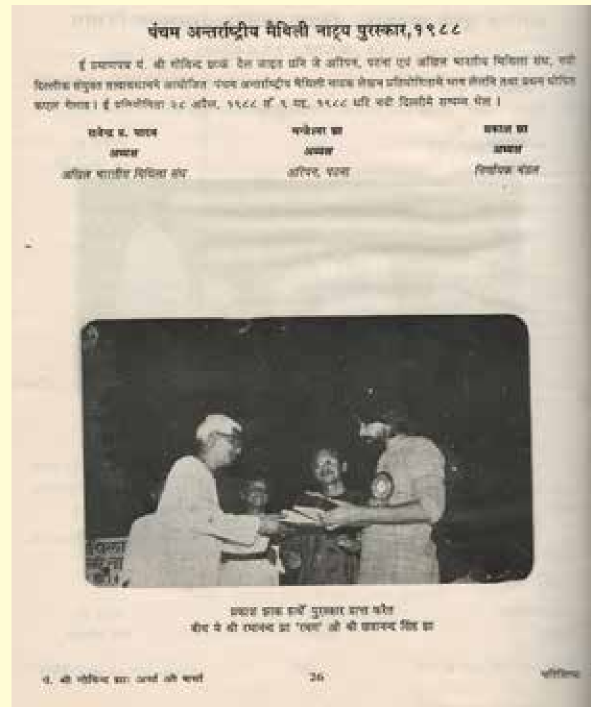
# अतीतक झलकी





वर्ष 1988 मे अखिल भारतीय मिथिला संघक समारोहमे उपस्थित दर्शक गण आ मुस्तैद कार्यकर्ता



पंचम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य पुरस्कार,१९८८

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | अध्यक्ष | अध्यक्ष |

26

इतिहासक झलक: दस्तावेजक नजरिमे



स्वर्ण जयंती समारोह : तीरभुक्ति शोध पत्रिकाक प्रवेशांकक लोकार्पण

# Airports at Darbhanga, Purnia soon for better connectivity: CM

**MITHILA SANGH JUBILEE** Says Mithila art has gained popularity globally and government planning a Mithila Chitrakala Institute in Madhubani

PATNA: Chief minister Nitish Kumar said development of the state was not possible without developing the Mithila region. "Our government is committed to its development and airports have been planned at Darbhanga and Purnia to improve connectivity in the region," he said, while addressing a gathering at the golden jubilee celebration of Akhil Bharatiya Mithila Sangh at Tal Katora stadium in Delhi on Sunday.

"These airports will also showcase the beauty of Mithila painting. Even the terminal being developed at Patna airport will have its interiors done in Mithila ...



Chief minister Nitish Kumar being felicitated at the golden jubilee celebration of Akhil Bharatiya Mithila Sangh at Tal Katora stadium in Delhi on Sunday.

> These airports will also showcase the beauty of Mithila painting. Even the terminal being developed at Patna airport will have its interiors done in Mithila art
> NITISH KUMAR, chief minister

... of the region also had a distinct charm, Kumar said. "Makhana is a major river crop of Mithila and we plan to promote it on a large scale. As part of the agri roadmap, it has been planned to improve makhana production so that it can be made available in the ...

# 'मिथिलांचल के लोगों का हर क्षेत्र में योगदान'

## अखिल भारतीय मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह

■ प्र. नई दिल्ली : मिथिला और मैथिली के बिना न तो बिहार और न ही भारत के समृद्ध सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य की कल्पना की जा सकती है। मिथिलांचल के लोगों का हर क्षेत्र में अहम योगदान रहा है और अखिल भारतीय मिथिला संघ का स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन इसका प्रमाण है कि मैथिल समाज के लोग भी एकजुट और जागरूक हैं। ये बातें विभिन्न क्षेत्रों की तमाम बड़ी हस्तियों ने अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयंती समारोह में कहीं। इस मौके पर गृहमंत्री राजनाथ सिंह, लोकसभा की अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, ...



कार्यक्रम में गृहमंत्री राजनाथ सिंह और लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन भी मौजूद रहीं

# आखिल भारतीय मिथिला संघ ने डा० आदित्यनाथ झा की २८वीं पुण्य तिथि मनायी

# मिथिलांचल विकास बोर्ड का गठन जरूरी

# दिल्ली के विकास में बिहारियों का योगदान सर्वाधिक : शीला

# मैथिली पुत्र प्रदीप भोगेंद्र झा सम्मान से विभूषित

उद्घाटन करते कामेश्वर सिंह संस्कृत विवि के वीसी डॉ देवनारायण झा व अन्य.

दरभंगा. अखिल भारतीय मिथिला संघ की दिल्ली तथा दरभंगा इकाई के तत्वावधान में आयोजित समारोह में मंगलवार को मैथिली पुत्र प्रदीप को भोगेंद्र झा सम्मान से नवाजा गया. संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र झा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह का उद्घाटन कामेश्वर सिंह संस्कृत विवि के कुलपति डॉ देवनारायण झा ने इसका उद्घाटन किया. उन्होंने मैथिली साहित्य के क्षेत्र में ... चर्चा करते हुए उन्हें संत कवि का दर्जा दिया. अभिनंदन पत्र भीमनाथ झा ने प्रस्तुत किया. समारोह को प्रजानाथ मिश्र, डॉ प्रेम मोहन मिश्र, डॉ ... कुमार, डॉ हेमचंद्र झा, राम कु... झा, उदयशंकर मिश्र आदि ने विचार व्यक्त किये. स्वागत कार्य... के संयोजक सुरेंद्र नाथ मिश्र ने कि... मौके पर डॉ ममता ठाकुर ने प्र... मैथिल गीतों की प्रस्तुति दे माहौल भक्तिमय बना दिया. संचालन ...

# मिथिला, मैथिली के विकास के लिए जागरूकता की आवश्यकता

(मधुबनी कार्यालय)

## दहेज हत्या का अभियुक्त गिरफ्तार



मिथिलांचलका विकास–राष्ट्रपतिको ज्ञापन

## अलग मैथिली अकादमी बनाने की मांग

## मैथिलीकोसंविधानकीअष्टम सूचीमें स्थान देनेकी मांग

अखिल भारतीय मिथिला संघ स्मारिका 2015 61

# मैथिल संगठन की स्वर्ण जयंती 24 दिसंबर को

■ प्रस, नई दिल्ली : मिथिला और मैथिली के लिए संघर्ष करने वाले अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन 24 दिसंबर को तालकटोरा स्टेडियम में होगा। इसमें बड़ी संख्या में मैथिलीभाषी शिरकत करेंगे। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए इस संघ के अध्यक्ष विजय चंद्र

अ.भ.मि. संघक किछु गतिविधि : मीडियाक नजरि मे

## अ.भा.मि.सं. दरभंगा : मीडिया मे


एम्स निर्माण में गतिरोध दूर नहीं हुआ तो होगा जनांदोलन

हर हाल में एम्स की स्थापना : संजय

डॉ. वर्मा को सर गंगानाथ झा सम्मान

युवा

राज मैदान को बनवाएंगे अंतरराष्ट्रीय खेल मैदान : सांसद

मैथिली में शपथ लेने वाले सांसद को किया सम्मानित

पोखर, तालाब और कुएं की उड़ाही को चले सघन अभियान

स्मार्ट सिटी की तरह बनेगा शहर: मेयर

आयकर चौराहा के पास स्थित चौक पर पूर्व सांसद भोगेंद्र झा की प्रतिमा का किया गया अनावरण

5 बार सांसद रहे स्वतंत्रता सेनानी भोगेंद्र झा के पास नहीं था रहने के लिए अपना घर : विनय

चौक का सौंदर्यीकरण करे सरकार : सुरेंद्र

# तीरभुक्ति

**अखिल भारतीय मिथिला संघक शोध पत्रिका**

## पाठकगणसं अनुरोध

'तीरभुक्ति' मिथिला आओर अहि सं जुड़ल मुद्दा पर मैथिलीमे प्रकाशित शोध पत्रिका अछि। अहिमे मैथिली आओर मिथिला सं जुड़ल अकादमिक विशेषज्ञ, लेखक, पत्रकार आ विश्लेषक के शोध रचना पढ़ल जा सकैत अछि। 'तीरभुक्ति' के अहां के सहयोग आ समर्थन भेटैत रहय, अहिमे 'तीरभुक्ति' के सफलता अछि। एहि शोध पत्रिका कें आओर बेसी लोकप्रिय बनाबैक लेल मिथिला, मैथिली आ अहि सं जुड़ल विषय पर रूचि राखय बला पाठक के 'तीरभुक्ति' केर पांच वार्षीय सदस्यता लेबाक लेल प्रेरित करी। 'तीरभुक्ति' के सालमे चारि टा अंक प्रकाशित होयत।

**मूल्यः एक प्रतिः 25 टाका,**
**नियमित सदस्यताः**
**पांच वर्ष (20 अंक): 500 टाका**

*(पत्रिका डाक वा कूरियर माध्यमे वा रजिस्टर्ड एयरमेल सं पठाओल जायत, जेकर शुल्क अहि मूल्यक संग जुड़ल अछि) सदस्यता लेल अपन पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नंबर चेक/ ड्राफ्ट सहित **'अखिल भारतीय मिथिला संघ'** केर नामे कार्यालयक पता पर पठाबी वा*
teerbhuktimaithili@gmail.com
*पर मेल करी।*

**पत्राचार पता :**
**तीरभुक्ति,** 20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस,
नई दिल्ली-110001

सदस्यता क्रमांक ..........................................

दिनांक ........................................................

(केवल कार्यालय प्रयोग हेतु)

## हम तीरभुक्तिक नियमित सदस्य बनय चाहैत छी। हमर विवरण निम्नलिखित अछि–

नाम : ..................................................................

पता : ..................................................................

..................................................................

..................................................................

मोबाइल नं. ..................................................................

उम्र : ........................ पेशा: ..........................................

शिक्षा : ..................................................................

शुल्क विवरण :

☐ पांच वर्ष (500 टाका मात्र)

**भुगतान :**

☐ नगद (विवरण) ................................................

..................................................................

☐ चेक/बैंक ड्राफ्ट (विवरण) ..................................

..................................................................

☐ नेफ्ट (NEFT) (विवरण) ..................................

..................................................................

**नोट :** चेक/ड्राफ्ट **अखिल भारतीय मिथिला संघ** केर नामे बनाबी। NEFT करबाक लेल बैंक विवरण निम्नलिखित अछि–

**बैंक खाता विवरण**

नाम : अखिल भारतीय मिथिला संघ

(A khil Bhartiya Mithila Sangh)

खाता संख्या : 11084229861,

आईएफएससी कोड : SBIN0000691

एमआईसीआर कोड : 110002087

बैंक : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया

शाखा : पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली

## तीरभुक्ति प्राप्ति स्थल

**दिल्ली** : **विजय चन्द्र झा / विद्यानंद ठाकुर**
20, कोपरनिकस लेन, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9650461788, 9717539000

: **प्रकाश झा**
'रंगप्रसंग', राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भगवान दास रोड, मंडी हाउस, नई दिल्ली, मो. 9811774106

: **भास्कर ज्योति**
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, मो. 9015753660

**गाजियाबाद** : डॉ. ममता ठाकुर, मो. 9717258787

**गुवाहाटी** : प्रेमकांत चौधरी, मो. 9435342658

**हैदराबाद** : मनोज शांडिल्य, मो. 9866077693

**दरभंगा** : प्रो. भीमनाथ झा, छपकी परड़ी, लक्ष्मीसागर, मो. 9430827936

**झंझारपुर** : आनंद कुमार झा, मो. 9939041881
: सोनू बुक कॉर्नर, मो. 9931291259

**मधुबनी** : सुनील कुमार झा, जानकी मैथिली पुस्तक भंडार, मो. 9473115956

**मुंबई** : विभा रानी, मो. 887970891

**पटना** : शिव पुस्तक भंडार, विद्यापति भवन, पटना, मो. 9905281145
: किताब कोनचर, लगिच: सदाकत आश्रम, गोसाईं टोला मुंहपर, पटना– 800010 संपर्क: 9955995509

**भागलपुर** : प्रो. केष्कर ठाकुर, मो. 9430457204

**सहरसा** : अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज' मो. 9771006810

**मधेपुरा** : अरविन्द श्रीवास्तव, मो. 9431080862

**समस्तीपुर** : नरेश कुमार 'विकल', मो. 9430244114

**कोलकाता** : लक्ष्मण झा सागर, मो. 9903879117

**सिलचर** : स्वाती शाकम्भरी, मो. 9213152822

**सुपौल** : केदार कानन, मो. 7004917511

**रायपुर** : मनीष कुमार झा, मो. 9425517092



# फोटो फीचर







मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह 2018 केर किछु दृश्य





समारोह मे अपन गायन के प्रस्तुति करैत गायिका श्रीमती रंजना झा (बामा कात) आ गायक श्री हरिनाथ झा (दहिना कात)




अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा प्रकाशित दू गोट पोथी 'मैथिली शोध संचय' 'नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान', आ संघक स्मारिका 'समय संकेत' केर लोकार्पण



# फोटो फीचर






दिल्लीक पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित, पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मांगेराम गर्ग आ समस्तीपुर (सु.) लोकसभा क्षेत्रक सांसद रामचन्द्र पासवान केर श्रद्धांजलि समारोह मे उपस्थित गणमान्य लोकनि (1 आ 2)






प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. हरिमोहनझाक पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम



अ.भा.मि.सं. केर मुख्य संरक्षक श्री प्रभात झा (सांसद) केर स्व. माताजी कें श्रद्धासुमन अर्पित करैत संघक सदस्यगण



मिथिला चित्रकलाक प्रसिद्ध कलाकार स्व. कर्पूरी देवी कें श्रद्धासुमन अर्पण













सुपौल सं सीतामढ़ी धरि आयल भीषण बाढ़ि मे अ.भा.मि. संघ द्वारा राहत कार्य (फोटो 1-6) आ संगम विहार मे संघक नवनिर्मित भवन (7)





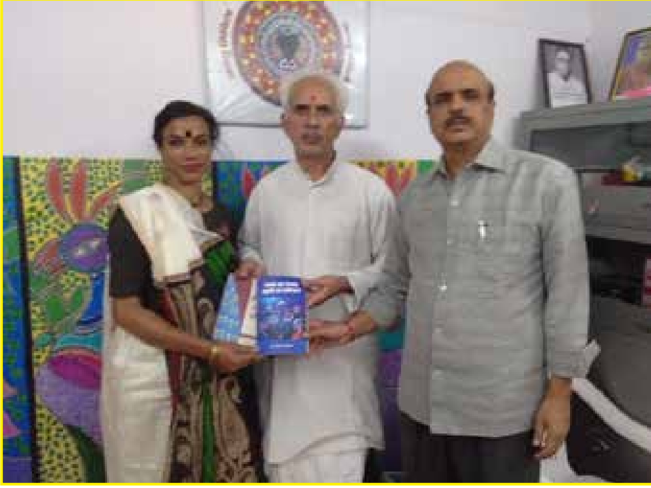






# फोटो फीचर







प्रसिद्ध रंगकर्मी आ लेखिका विभा रानी एवं युवा साहित्यकार रूपेश त्योंथ केर तीरभुक्ति कार्यालय मे अभिनन्दन



वयोवृद्ध भाषाविद् पं. गोविन्द झा कें सरगंगानाथ झा सम्मान - अर्पण (हुनक पटना आवास पर)




जामिया मिलिया इस्लामिया मे तीरभुक्तिक आयोजन



मिथिला विभूति स्मृति पर्व समारोह मे पूर्व सांसद श्री महावल मिश्राक स्वागत

# मिथिलाक युगद्रष्टा बेटा : भोगेन्द्र झा

✍ डॉ. हेमचन्द्र झा



लेखक अखिल भारतीय मिथिला संघक उपाध्यक्ष आ दरभंगा स्थित महाराजा महेश ठाकुर मिथिला महाविद्यालय केर दर्शन शास्त्र विभाग मे व्याख्याता छथि।

**सम्पर्क:**
*ग्राम+पो.: ककरौल, जिला: मधुबनी (बिहार)*
*मो. 9939346718*
*ईमेल: drhcjha.4u@gmail.com*

9 अगस्त, 1922 ई. तदनुसार भादव कृष्ण षष्ठी, दरभंगा जिला (वर्तमान मे मधुबनी जिला) के ऐतिहासिक भूमि बेनीपट्टी प्रखण्ड (वर्तमान मे विस्फी प्रखंडक जकर स्थापना स्वयं भोगेन्द्र झा जी के प्रयास सं भेल) अन्तर्गत बाबा विद्यापति के डीह पर बरहा गांव मे पंडित वंशमणि झा एवं माता कामेश्वरी देवी के कोखि सं एक 'लाल' के उदय भेल एवं नाम पड़ल- भोगेन्द्र झा। बाल-काल सं प्रतिभा के धनी एवं होनहार मेधावी बालक के रूपमें हिनक पहचान बनल।

एक प्रतिष्ठित लेकिन आर्थिक रूपसं सामान्य परिवार मे जन्मलेबाक कारणे सामाजिक आर्थिक परिवेश के बहुत नजदीक सं अध्ययन करबाक अवसर प्राप्त भेलनि। ज्ञान वृद्धि के संग-संग सामाजिक कुरीति, जाति-पाति, छूआ-छूत, भूत-प्रेत, टोना-टापर आदि सं भरल सामाजिक परिवेश के विरुद्ध हिनक मोन मे धारणा बनल एवं एहि विडम्बना सं मुक्ति वास्ते संकल्पित भेला।

सत्य कें हथियार बना कए चलयवला भोगेन्द्र झा जी झूठक जीवनपर्यन्त सहारा नहिं लेला। विद्वानक एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण ाक गांव के रूप मे पहचान हेवाक कारणें वरहागांव मे छूआछूत के विरुद्ध तार्किक आधार पर बाजैवला भोगेन्द्र झा जी पर एक वेर पासवान जाति के बालकक हाथ सं किछु खाय के आरोप मे हिनक पिता के ऊपर सामाजिक पंचायत बैसायल गेल। भरल पुचायत मे हिनका बजाओल गेल एवं कहल गेल जे जुर्म अहां कबूल कए लियौ, प्रायश्चित के संग अहांके दोष मुक्त कर देल जायत। मुदा भोगेन्द्र जी कहियो झूठ नहि बजैत छला। सच्चाई छल जे ओई पासवान बालक के हाथसं किछु खेने नहिं छलाह केवल तार्किक बात के कारणें ई इल्जाम हिनका पर लगाओल गेल छल। मुदा एहि सोच के संगकि अगर हम कहि देबैजे हम नहिं खेने छलौं त' समाज बुझत जे सजा के डर सं स्वीकार कए रहल छथि। सत्य कायम करवाक लेल भोगेन्द्र जी कहलखिन जे हमरा एखने खुआएल

## भोगेन्द्र जीक जीवन : एक नजरि

- जन्म: 1923 ई.
- पैतृक गांव: बरहा (मधुबनी)
- शिक्षा: सी. एम. कॉलेज, दरभंगा
- 1941-48: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1954-57: संगठन सचिव, एआईएसएफ, दरभंगा जिला
- 1967: चारिम लोकसभामे सांसद
- 1971: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1971-78: सदस्य, सार्वजनिक उपक्रम संबंधी लोकसभा समिति
- 1989: पुन: सांसद निर्वाचित
- 1990: सदस्य, संसदीय विशेषाधिकार समिति, राजभाषा समिति
- प्रकाशित पोथी:
  - भारतीय दर्शनक क, ख, ग (मैथिली)
  - बहुद्देश्यीय बांध परियोजना (मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी)
  - भारत का स्वतंत्रता संग्राम (हिन्दी)
  - प्राचीन भारतीय परंपरा आ साम्यवाद (मैथिली आ अंग्रेजी)
  - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आइडियोलॉजी, एक्सरेड (अंग्रेजी)
  - रिवर मैनेजमेंट (अंग्रेजी)
- निधन: सन् 2009



जाए हमखाइत छी कि नई? अर्थात झूठ के इल्जाम ऐहो कबूल नहिं केलनि एवं सत्य स्थापित करवाक लेल रास्ता अख्तियार केलनि ताकि छुआ–छूत माननाइ गलत अछि से संकल्प आगा बढ़त।

गांव के विद्वान एवं प्रतिष्ठित पंडित बाबा के संग एक अदना बालक तार्किक रूप सं सवाल जवाब करैत अपन ज्ञान के वृद्धि एवं समाज मे होनहार बालक के रूप मे स्थापित भेला।

बेनीपट्टी राजकीय मध्यविद्यालय सं प्रारंभिक शिक्षाप्राप्त केलाक बाद मधुबनी स्थित स्थित सूड़ी उच्च विद्यालय मे नामांकण कराओल गेलनि। अध्ययन काल मे श्रीमोहन झा, चतुरानमिश्र, तेजनारायण झा, राजकुमार पूर्वे, गंगाधर दास एवं माझी साहु आदि अनेको छात्र के संग एकट्ठा कए अखिल भारतीय छात्रसंघ (एआईएसएफ) के स्थापना केलनि एवं 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन मे अंग्रेज के लिखफ कुदि पड़ला। अंग्रेजी शासन के सहयोग करबाक वास्ते एक पाई एवं एक भाई के नारा विद्यालय प्रशासन द्वारा राखल गेल छल। मुदा भोगेन्द्र जी एहि नारा के खिलाफ एवं अंग्रेजी शासन के विरोध करैत विद्यालय सहित आम छात्र के बीच नारा देलनि– ''ना एक पाई, ना एक भाई, लड़ना है जापान से देश के खातिर–आन के खातिर खूब लड़ेंगे शान से।'' एहि नारा के लेल विद्यालय प्रशासन द्वारा सजा देल गेलनि एवं विद्यालय ससं बर्खास्त कए देल गेलनि।

मिथिलांचल के सर्वांगीण विकास हेतु मैथिली भाषा के विकास आवश्यक बुझि जन्मकाल सं माए के दूध सं भेटयवला भाषा के प्रति समर्पित भोगेन्द्र झा जी सामाजिक–राजनीतिक मंच पर सतत आमलोक के भाषा के रूप मे केवल मैथिली बजैत रहला। 1957 सं संसदीय चुनाव मे भाग लेबय वाला भोगेन्द्र जी चुनाव प्रचार के लेल केवल मैथिली भाषा के पर्चा–पोस्टर–अपील आदि प्रसारित करैत रहला जाहि के लेल बहुत स्तर पर आलोचना के पात्र बनला के वादो एहि लक्ष्य के विरुद्ध समझौता नहिं केलनि। फलस्वरूप आइ अन्य राजनीतिक दल के नेता सेहो मैथिली अपनावय के लेल मजबूर भए रहल छथि एतय तक की गैर मैथिली भाषी राष्ट्रीय नेता, प्रधानमंत्री – मुख्य मंत्री तक मिथिलांचल मे टूटलो–फूटलो रूप मे किछुओ शब्द मैथिली भाषा मे बाजय पर मजबूर भए रहल छथि एवं भीषण संघर्ष के बाद मैथिली भाषा संविधान के अष्टम अनुसूची मे अपन स्थान बनौलनि।

अखिल भारतीय पैमाना पर भोगेन्द्र जी मैथिली भाषा के जन जागृति केलनि फलस्वरूप इ केवल देशे नहिं विदेशो मे मां मैथिली सम्मानित भए रहल छथि। एहि भाषा के माध्यम सं आइ युवा पीढ़ी आगा बढ़ि रहल छथि, आई.ए.एस., आई.पी.एस. बनि मिथिला के मान बढ़ा रहल छथि।

52 वर्ष पहिने अखिल भारतीय मिथिला संघ के स्थापना भेल एवं राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एकर पहचान कायम भेल जाहि मे भोगेन्द्र जी के सबसं महत्वपूर्ण योगदान अछि आ पंजीकृत संस्था के रूप मे अपन केंद्रीय कार्यालय राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली मे अवस्थित अछि।

अपन एहि विभूति के अन्य संस्मरण एवं आगा बढ़ाबय के जवाबदेही आइ के पीढ़ी पर अछि जाहि सं हमर समाज आगा बढ़य, सामाजिक समरसता कायम हुअए। ■

# भारतीय राजनीति केर एकटा तपस्वी
# भोला पासवान शास्त्री

✍ सत्यनारायण प्रसाद यादव



लेखक मैथिली साहित्यक विशिष्ट अध्येता छथि। हालहि मे यू.जी.सी. नेट-जे.आर.एफ. परीक्षा उत्तीर्ण भेलथि अछि। मैथिली साहित्यक अध्ययन आ अध्ययनोपरांत लिखब हिनक व्यसन छनि।

संपर्क :
*पितामह-श्री पुलकित यादव,*
*ग्राम+पोस्ट: भौर (राजग्राम),*
*भाया: लोहट, प्रखंड-पंडौल,*
*जिला: मधुबनी, बिहार,*
*पिन कोड: 847231*
*मो. 9599303002*
*ईमेल :*
*spyadav03021995@gmail.com*

भारतीय राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे कहल जाइत अछि जे एकबेर विधायक,सांसद वा मंत्री बनि जाएब तं पुश्त-दर-पुश्त उद्धारे बुझू आ से नीक जकां फलिभूत सेहो भए रहल अछि, मुदा मिथिलाक धरती पर किछु एहनो महान आत्मा अवतरित भेलाह जे सम्पूर्ण जीवन भरिमे अपना आ अपन परिवारक लेल फूटल कौड़ियो धरि नै सहेजि सकलाह। जतय आन राजनीतिज्ञ व्यक्तिक परिवार एहि संसारक सभ भौतिक सुख-सुविधा आ शानो-शौकतसं सम्पन्न अछि ओतहि गुदरीक लाल भोला पासवान शास्त्री अपना लेल किछु हासिल नै कए सकलाह सिवाय एकटा धुंधलाइत स्मृतिक अलावा।

## प्रारंभिक जीवन आ शैक्षणिक परिवेश

एक दिस देश ब्रिटिशक शासनमे जकड़ल छल आ दोसर दिस प्रथम विश्व युद्धक बिगुल बाजि उठल छल। ओहि वर्ष ई महान आत्मा एहि पृथ्वीलोक पर आयल छलाह। गुदरीक एहि लालक जन्म 21 सितम्बर 1914 ई. मे पूर्णियां जिलाक किरतनिया नगर प्रखंडक अन्तर्गत बैरगाछीमे अति निर्धन दलित परिवारमे भेल छल। हिनक पिता धूसर पासवान, दरभंगा महाराजक "काझा कोठी" कचहरीक एकटा सिपाहीक रूपमे काज करैत छलाह। एहिसं हिनक घर परिवारक लालन-पालन होइत छल।

भोला बाबू नेनपनेसं बड़ संस्कारी रहैथ। ओहि समयमे दलित आ पिछड़ल समाजमे पढनाइ की होइत छैक से कतेक गोटे जनिते छल? मुदा तैयो हिनक पिता हिनका पढबाक लेल प्रेरित कयलनि। बादमे भोला बाबूकें आओर किछु गोटेक मदद भेटलनि। हिनक प्रारंभिक शिक्षा गामेमे घास फूससं बनल एकटा प्राथमिक विद्यालयमे भेलनि। पढबा-लिखबाक प्रबल इच्छा आओर प्रखर मेधाशक्तिकें परखैत स्थानीय नेता श्री राममोहन चौधरी हिनक नामांकन मध्य विद्यालय काझामे करबा देलथिन। ओहिठामसं ई मिडिल क्लासक शिक्षा प्राप्त कयलनि। एहि समयमे गांधी जीक आजादीक लेल बिहाड़ि चलल। भोला बाबू ओहि बिहाड़िमे सम्मिलित भए क' स्वतंत्रता आन्दोलनमे कूदि पड़लाह। संस्कारी रहितो अपन विद्रोही प्रवृत्ति आ उत्कट देशभक्तिक कारण दू बेर जहल भेजल गेलाह। जाहि कारणसं हिनक शिक्षासं नाता टुटि सन गेल रहनि मुदा तत्कालीन प्रसिद्ध नेता आ स्वतंत्रता सेनानी वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी हिनक आंतरिक प्रतिभासं अत्यन्त प्रभावित भेलथि। ओ हिनका आगुक पढाइक लेल मात्र प्रेरितेटा नै कयलनि बरू गांधी विद्यालय रहटामे हिनक नामांकन सेहो करबा देलथिन। आगुक पढाइक लेल ओ पटना अयलाह आ सदाकत आश्रम स्थित बिहार विद्यापीठमे अपन नामांकन करौलनि मुदा किछुए मासक बाद ओहिठामसं काशी विश्वविद्यालय, बनारस चलि गेलाह। ओहिठामसं भोलाबाबू सन् 1938 मे "शास्त्री"क उपाधि प्राप्त कयलनि। ताहि समयमे ई उपाधि एतेक आसान नहि छल एहि वर्गक लेल। ई तं हिनक ओजस्वी प्रतिभाक परिणामे छल जे भोलाबाबू एहिठाम धरि पहुंच सकलाह। हं... राममोहन चौधरी आ वैद्यनाथ बाबुक सन् महान आत्मीय व्यक्तिक प्रेरणा आ मददि जरूर हिनका भेटैत रहलनि। गहन अध्ययनक संग शास्त्रीजीमे कला, संगीत आओर अभिनयक प्रति बड़ अनुराग रहनि। लोकमंच पर दर्शक हिनक अभिनय आ

# भोला पासवान शास्त्री




- जन्म: सन् 1914 ई.
- स्थान: गांव बैरगाछी, जिला-पूर्णियां, बिहार
- पिता: श्री धुसर पासवान
- माता: श्रीमती देवकी देवी
- शिक्षा: प्राथमिक शिक्षा गामक स्कूलमे
- माध्यमिक शिक्षा : धर्मपुर गांधी विद्यालय रहटा।
- बिहार विद्यापीठ पटना सं स्नातक
- काशी विद्यापीठ बनारस सं शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण।
- राजनीतिक कार्यकतर्त्ता एवम स्वतंत्रता आन्दोलनमे सहभागी। परिणामत: जेल गेलाह।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा संचालित हरिजन कल्याण कार्यमे पूर्ण दिलचस्पी।
- जिला बोर्ड एवम् लोकल बोर्ड पूर्णियां केर सदस्य एवम् बिहार विधान सभाक सदस्य।
- बिहार सरकारमे मंत्री : 1952-1963 धरि।
- बिहार प्रदेशक मुख्य मंत्री, पूर्वमे बिहार प्रदेश लोकतांत्रिक कांग्रेससं जुटल रहलाह। बादमे ओकर नेता चुनल गेलाह।
- केन्द्रीय मंत्रीक रूपमे वर्कर्स हाउसिंग एवं शहरी विकास मंत्रालय कें फरवरी 1973 सं अक्टूबर 1974 धरि।
- जुलाई 1972मे राज्य सभाक सदस्य निर्वाचित, पुन: अप्रैल 1976 मे निर्वाचित।
- विदेश यात्रा : मारीशस।
- प्रकाशन : दैनिक एवं साप्ताहिक समाचार सम्पादन।
- देहावसान: अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा अहि महान विभूतिक सम्मानमे श्रद्धा सुमन अर्पित।

स्वांग देखिक' प्रशंसा करैत नहि थकैत छल। शास्त्रीजी एकटा लेख सेहो लिखने रहथि जकर शीर्षक छल- "मेरी वियतनाम यात्रा", जाहिमे 'हो ची मिन्ह' केर साधारण जीवनक बखान कएल गेल अछि। भोलाबाबू हुनका जीवनसं बड़ प्रभावित रहैथ। हो-ची-मिन्हक व्यक्तित्वसं हिनक व्यक्तित्व मेल होएबाक कारण हिनका "बिहारक हो-ची-मिन्ह" कहल जाइत छैन्हि।

रोजी-रोटीक लेल भोला बाबू एकबेर किशोरेवस्थामे कलकत्ता चलि गेल रहैथ, मुदा वैद्यनाथ बाबूक आग्रह पर ओ फेर पूर्णियां वापस आबि गेलैथ। वैद्यनाथ बाबूक संग गाम-गाम घूमि कए खादीक कपड़ा बेचैत आ एहि बहाने जनमानसक बीच आजादीक आन्दोलन लेल सेहो जागरूकता पसारैथ। एहि तरहें शास्त्रीजी छात्रे जीवनसं अंग्रेजी हुकुमतक विरुद्ध सक्रिय भए गेल रहथि।

### राजनीतिक जीवन

शास्त्रीजी गांधी, नेहरू आ बाबा साहेब अम्बेडकरक संग खूब नीक जकां सामंजस्य स्थापित कयलनि। गांधीजीसं तं बचपनेसं प्रभावित रहैथ, बादमे नेहरू आ अम्बेडकरजीक सानिध्य सेहो भेटलनि। नेहरूजी आ बाबा साहेबक बीच मतान्तर रहलाक बाबजूदो नेहरू जीक निकटतम रहलथि। बाबा साहेबसं सेहो सभ दिन नीके संबंध रहलनि। शास्त्रीजी 1939-41 धरि पूर्णियां जिला परिषदक सदस्य रहलाह। सन् 1942 ई. भारत छोड़ो आन्दोलन मे सक्रिय भागीदारी रहलनि। एहि क्रममे पुन: जहल सेहो गेलैथ। जुलाई 1945 धरि हिनका "नजरबन्न" कए क' राखल गेलन्हि। कालांतर मे डॉ. श्री कृष्ण सिंहके मंत्रिमंडलमे 1947 मे संसदीय सचिव बनाओल गेलाह। एहि पद कें ओ 1951 ई. धरि सुशोभित कयलनि। सर्वप्रथम सन 1967 ई. कांग्रेस पार्टीकें टिकट पर बिहार विधानसभा पहुंचलाह। सौभाग्यवश अगिले साल राजनीति अस्थिरताक कारण हिनका बिहारक मुख्यमंत्रीक दायित्व सम्हारबाक अवसर भेटलनि। जाहि दौरमे हिनका ई पद संपल गेलनि ओ समय सामंतवाद आ जातीय उभारक छल। एहि सभक बीच एकटा गरीब अनुसूचित परिवारसं आब' वला व्यक्तिकें मुख्यमंत्रीक कुर्सी धरि पहुंचनाई हुनक योग्यता आ कुशल नेतृत्व क्षमताक गबाही अछि। शास्त्री जी छोट-छोट मुदा तीन बेर बिहारक मुख्यमंत्री पदकें कार्यभार समहारलनि। ई बिहारक आठम आ पहिल दलित मुख्यमंत्री बनलाह। हिनक मुख्यमंत्री पदक कार्यकाल 22 मार्च 1968 सं 29 जून 1968 ई., 22 जून 1969 सं 4 जुलाई 1969 ई., आ तेसर 2 जून 1971 सं 9 जनवरी 1972 ई., रहलनि। हिनक कार्यकाल एकदम निर्विवाद रहल छलनि। चारि बेर पटना विधानसभामे नेता प्रतिपक्ष रहलाह। इंदिरा गांधीक केन्द्र सरकारमे 1973-74 मे केन्द्रीय शहरी विकास मंत्रीक पद पर सेहो आसीन भेलाह। सन् 1979 ई. मे राज्य सभाक सदस्य चुनल गेलाह आ जनता दलक सरकार द्वारा "अनुसूचित जाति आ जनजाति कल्याण आयोग" क अध्यक्ष बनाओल गेलाह। बादमे शास्त्रीजी राजनीतिसं संन्यास लए लेलनि।

**व्यावहारिक जीवन**

भोला पासवान शास्त्री जीकें बिहारक राजनीति केर "विदेह" कहल जाइत छैन्हि। विदेहक अर्थ होइत अछि – सार्वजनिक जीवन आओर सांसारिक जीवनमे रहितो व्यक्तिगत स्वार्थसं फराक रहब यानि देह रहितो देहक चिन्ता नहि करब। भोला बाबू निजी तौर पर कहियो धन नै इकट्ठा कयलनि। सदिखन सादा जीवन आओर उच्च विचारकें जीबैत रहि गेलाह। कहल जाइत अछि जे भोला बाबूक समकालीन पूर्णियांक सासंद फणी गोपाल सेन सेहो सादगी भरल जीवन शैलीक लेल जानल जाइत छथि। मुख्यमंत्री पद पर रहितो भोलाबाबू हिनका संग गाछक नीचां जमीन पर कंबल बिछा ओहि पर बैसि क' निसंकोच अपन मिटिंग करैत छलैथ।

सीएम, सासंद, केन्द्रमे मंत्री आ कतेको अन्य पद पर रहलाक बाबजूदो शास्त्रीजी एको कट्ठा जमीन नहि अरजलनि। शास्त्रीजी अपन कर्त्तव्य पालनमे ततेक रमल रहैत छलाह जे परिवारो केर लोककें कतेको बरिखक बाद भेंट होइत छलथि। अपन सम्पूर्ण जीवन आम लोक, राज्य आ देशककें समर्पित कए देलनि। राजनीतिए जीवनक कारण हिनक पत्नी शान्ति देवी हिनकासं अलग भए क' रहए लगलीह। जाहि कारणसं हिनका कोनो अपन उत्तराधिकारी संतान नहि भेलनि मुदा अखन परिवारमे भतीज,पोता सभ सपरिवार छैन्हि। हिनक बेटाक समान भातिज कहैत छथि जे जखन हिनका अपन गामक विकासक लेल कहल गेलैन तं कहलथिन जं एखन राज्य आ देशमे दोसरठाम बड़ काजक बेगरता छैक। हम पद पर रहैत जं एहिठामक विकासक काज करब तं सभ कहता जे अपन गामक लेल जोगार लगाए लेलक। केओ ने केओ तं एहिठामक विकास करबे न करत, चाहे हम रहि वा नहि रहि। शास्त्रीजी दुनियांसं कहिया ने चलि गेलाह मुदा आइयो हिनक गाममे कोनो बड़ बेसी परिवर्तन नहि भेल अछि।

शास्त्रीजीक जीवनक अंतिम समय बड़ कष्टकर रहलनि। ओ कैंसरसं पीड़ित भए गेलाह आ अन्तोगत्वा 9 सितम्बर 1984 ई. क' एहि मर्त्यभुवनसं सदाक लेल विदा भए गेलाह। भातिज बिरंचि पासवान कहैत छथि जे, ''जखन भोलाबाबू दुखित पड़लाह तखन हम पूर्णियांक कलक्टर ओतय गेलहुं आ दिल्ली जएबाक बात कहलियनि, ताकि काकाजीसं भेट कए सकी, कारण हमरा लग ओतय पहुंचबाक सामर्थ्य नै छल। कोनो तरहें हम दिल्ली पहुंचलहुं आ तखन रामविलास पासवानक डेरा पर रुकल रहि। मुदा किछुए दिनक बाद काकाजी एहि दुनियांसं दिवंगत भए गेलाह।'' हिनक ईमानदारीक अंदाजा एहिसं लगाओल जा सकैत अछि जे जखन हिनक मृत्यु भेलनि तं हिनक परिवार अंतिम संस्कारो करबाक ओरियान नहि भए पाओलन्हि। हिनक अंतिम क्रिया-कलाप फकीरक भांति दोसरक रहम करम पर भेल। तत्कालीन जिलाधिकारी ओहि क्रिया-कलापक जिम्मा उठएलनि कारण मुखाग्नि देब' वला भतीजा बिरंचि पासवान लग ई सामर्थ्य नहि छलनि। बिरंचिकें तीन गोट पुत्र छैन्हि। आइयो हिनक परिवार बस मजदूरी कए  क' अपन गुजर बसर कए रहल अछि।

उपलब्धिक तौर पर टटोलब तं पाएब जे गामसं सटले ऐतिहासिक काझा कोठी डाकबंगलामे किछु बरिख पहिने शास्त्रीजीक प्रतिमा लगाओल गेल। हिनक यादमे पूर्णियां शहरक डीआईजी चौकक नाम बदलि क' शास्त्रीजीक नाम जोड़ल गेल आ अहुठाम हिनक एकटा प्रतिमा लगाओल गेल। सन् 2011 ई. मे जखन पूर्णियांमे कृषि विश्वविद्यालयक स्थापना भेल तखन ओकर नामकरण भोला पासवान शास्त्री कृषि विश्वविद्यालयक कएल गेल।

राजनीतिक छोट-पैघ सभ अवसर पर कतेको राजनीति पार्टी केर पोस्टर बैनर पर शास्त्रीजी अवश्य अभरैत छथि मुदा सत्यता ई अछि जे सभ केओ हुनका मृत्युक संगहि बिसरि गेल। हिनक 100म् जयंती पर कार्यक्रममे नै तं नीतिश अयलथि, नै लालू, नै सुशील मोदी आ नै तं कोनो कांग्रेसक बड़का नेतागण। खेद अछि जे बिहार आ भारतक राजनीतिमे एहेन ''विदेह''क उपस्थिति केवल फूल, माला, आयोजन, किछु मुंह भरि शब्द कहबाके धरि सिमटि क' रहि गेल अछि।

बेगरता अछि एहि महान व्यक्तित्वकें चिन्हबाक, हुनका जकां जीवन बिताएब तं आजुक नेता लोकनिकें संभव नै होयत मुदा किछुओ दूर धरि जं हिनक बनाओल बाट पर चलि पाओत तं ई हिनका प्रति सुच्चा श्रद्धांजलि होयत। खगता अछि ओहि परिवारकें सम्हारब जाहि कुलमे जन्म लए ई गुदरीक लाल बिहारक संबोधक बनलाह। भारत सरकार आ राज्य सरकारकें चाही जे एहेन तरहक महान आत्मा सभकें पाठ्यक्रममे शामिल करैए ताकि नौनिहाल बच्चा जे भविष्यमे भारतक आ राज्यक नेतृत्वकर्ता बनता ओ सभ एहि तरहक व्यक्तित्वसं ईमानदारी, उत्तरदायित्व, त्याग आओर अपन कर्मक प्रति समर्पणक भाव सीखि सकताह। ■

**संदर्भ**


1. https://youtu.be/2JD993kJYk
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/»E0»A 4»A D» E0»A 5»8B»E0
3. https://en.wikipedia.org/wiki/Bhola_Paswan_Shastri
4. आधुनिक हरिश्चन्द्र थे भोला पासवान शास्त्री: गोपेन्द्र सर
5. https://hindi.news18.com/news/bihar/purnia&former&chief&minister&of&bihar&bhola&paswan&shastri&was&famous&for&his&simplicity&and&honesty&bramk&2442664.html
6. https://aajtak.intoday.in/story/former&chief&ministers&family&living&in&poor&condition&1&742764.html
7. https://hindi.news18.com/news/bihar/purnia&former&chief&minister&of&bihar&bhola&paswan&shastri&known&for&his&simplicity&1523306.html
8. https://www.livehindustan.com/bihar/muzaffarpur/story&former&chief&minister&bhola&paswan&shastri&s&birth&anniversary&money&2758732.html

# सांगठनिक दधिचि : बाबू साहेब चौधरी

✍ लक्ष्मण झा 'सागर'



लेखक वरिष्ठ मैथिल अभियानी छथि। मिथिला-मैथिली अभियानक अगुआ बाबू साहेब चौधरीक अनन्य संगी रहलाह। हुनक संगे 1964 सँ 1983 धरि काज करैत रहलाह। कोलकाता आ गुवाहाटी दुनू ठाम हिनक सक्रियता चर्चित अछि। मैथिलीमे हिनक अनेकानेक कथा, कविता, निबंध आ रिपोर्ताज प्रमुख पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित छनि। अ.भा. मि.सं. द्वारा बाबू साहेब चौधरी सम्मान 2018 सँ सम्मानित।

**संपर्क :**
*3बी, तिस्ता अपार्टमेंट, 94 एवेन्यू साउथ, संतोषपुर, कोलकाता-700075, मो. 9903879117*



हि सं पूर्व चौधरीजी पर हमर तीन टा आलेख विभिन्न पत्रिका आ स्मारिका सभ मे छपि चुकल अछि जे सम्पूर्ण रूपें संस्मरणात्मक आलेख अछि। चौधरीजीक परिचयात्मक आलेख आंखि मे नहि अभरल अछि कतहु आइधरि जहन कि एकर बेगरता अछि प्रत्येक मैथिली-सेवी आ मैथिली-प्रेमी कें। ई काज सच्चे बड़ दुरुह अछि मुदा जें कि एक दशक धरि (1964 सं 1984) हुनका सान्निध्य मे रहलहुं तें जे किछु जानकारी भेटल छल ताहि आधार पर ई आलेख लिखबाक हम धृष्टता क' रहल छी।

## पारिवारिक पृष्ठभूमि

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गाम मे 26 अगस्त, 1916 ई. कें श्री रामप्रसाद चौधरीजीक घरमे एकटा बालक जन्म लेलनि। ओहि बालकक दुलारक नाम पड़ल-'बुच्ची'। वैह बुच्ची आगू चलि कें बाबू साहेब चौधरी नामे विख्यात भेलाह। ओना गामक हुनक संगी तुरिया हुनका अन्तो धरि बुच्चीये कहिकें सम्बोधित करैत रहलनि। हुनक मातृक छलनि डरहार (दरभंगा)। हुनक प्रारंभिक शिक्षा श्री कामेश्वर उच्च विद्यालय, पंडौल (दरभंगा) मे भेलनि। ओहि ईसकुल सं ओ आठमा पास क' कें नौमा मे नाम तं लिखौलनि मुदा, पिताक आर्थिक तंगी कें देखैत आजू पढ़बाक लेल ओ कलकत्ता चल गेलाह। हुनक बियाह चौहटा (अहिल्या स्थान) गामक श्री रामसकल चौधरीजीक पुत्री सोनदाइ सं भेलनि। ओ आठ टा संतानक पिता बनलाह जाहिमे तीनटा पुत्र आ पांच टा पुत्री भेलनि। दू टा पुत्र आठ-नौ सालक वयस मे गत भ' गेलनि। पुत्र रहि गेलथिन विद्यापति चौधरी टा मात्र जिनका सं हुनक वंश आबाद छनि। विद्यापतिक जन्म 1958 ई. क नवंबर मास मे भेल रहनि जिनका दू टा बेटा आ चारि टा बेटी छनि। पांचो बेटीक कन्यादान नीक घर-वर मे चौधरीजी अपने सं केलनि। जेठ बेटी इन्द्रपरीक वियाह कोर्थु गाम मे मधुपजीक बालक सं भेल रहनि। ई बेटी आब नहि छथिन। पानदाइक वियाह मुरलियाचक, सुशीलाक बियाह कोइलख, शांतीदाइक बियाह कैथिनियां आ सब सं छोट बेटी कान्तीदाइक बियाह कछुआ चकौती मे भेलनि। सब बेटी नाति-पोता वाली भेलि खुश छथिन।

## जे नन्हू से गर्भे नन्हू

ई उक्ति बाबू साहेब चौधरी जी पर 'फिट' बैसैत अछि। ओ बचपने सं संस्कारी छलाह। मृदुभाषी सान्निध्य मे एहि हुनका सं किछु सीखी प्रेरणा ग्रहण करी आ तदनुरुप गाम-समाजक लेल किछु कल्याणमूलक काज करी। ओ बैसैत छलाह नरपतिनगरक स्वतंत्रता सेनानी बाबू सूरज नारायण सिंह लग। गन्हवारि के रमाकान्त झा लग। सोहराइक देवतुल्य प्राचार्य लग। राजेश्वर चौधरी आ यमुना सिंह लगा एहि बैसकी सब सं प्रभावित भ' 16-17 बर्खक उमेर मे बेहरी क' कें अपना गाम मे ईसकुल खोलबौलनि। गामक नव कनियां सभकें अक्षरक बोध करबौलनि जाहि सं ओ लोकनि परदेशिया पिया कें अपने सं चिट्ठी लिखि सकथि। एतबे नहि। गामक बीचोबीच 'मंगल भवन' जकरा गामक जमींदार छथिऔने छल तकरा गांधीगिरिक बल पर दखल केलनि आ ओहि भवन मे एकटा पुस्तकालय बनौलनि। भवनक कात मे 'शिव मंदिर'क स्थापना सेहो केलनि जतय प्रति बर्ख शिवरात्रि पर्व धुमधाम सं मनौल जाइत अछि। ओ भजन-कीर्तनक प्रेमी लोक छलाह। नाटक देखैत-देखैत

नाटक सेहो खेलाय लगलाह। पर्दा मे नुआ टंगैत छलाह। एहि काज मे सहयोगी रहथिन गामे क ठक्कन मिश्र आ रामचन्द्र मिश्र। पढ़ाइ सं बेसी हुनका अही काज सभ मे मोन लागय लगलनि। ओना ओ स्वतंत्रता सेनानी बनय चाहैत छलाह मुदा अभिभावक लोकनिक हिदायत सं से नहि बनि सकलाह। हुनका भाग्य मे तं विधाता हुनका 'मैथिली सेनानी' बनब लिखि देने छलखिन।

### कलकत्ता आगमन

अनुमानतः 1930 ई. क लकधक गामक आठमा पास बुच्ची आगां पढ़बाक लेल बाबू साहेब चौधरीक रूप मे कलकत्ता अबैत अछि। देश अंग्रेजक गुलामी सं त्रस्त छल। एकटा अनजान शहर। एकटा क्रांच वयसक युवक कें कलकत्ता अबिते अदंक ल' लेलकैक। टौआइत-बौआइत ओ युवक राजाबाजार ट्राम डिपो पहुंचैत अछि। औहिठाम गजगज करैत ट्रामक ड्राइवर, कन्डक्टर, खलासी, स्टार्टर अगबे मैथिल। डिपोक अन्दर कर्मचारी आवास मे ओहि युवक कें अस्थाइ रहबाक आ भोजनक व्यवस्था मैथिल बन्धुक प्रयाससं तत्काल भ' गेल। ओहिदिन मंगल रहैक। सांझखन डिपोक अंदर बजरंगबलीक मंदिर मे भजन-कीर्तन भेल। ओ युवक सेहो भजन-कीर्तन केलनि आ सभ गोटे कें प्रभावित केलनि। बाद मे हुनकर बासा बागुइहाटी भ' गेलनि। ओ बिसरि गेलाह जे आगां पढ़बाक लेल ओ कलकत्ता आयल छथि। तकर बाद ओ ट्राम डिपो सभकें अपन अड्डा बनौलनि मुख्य रूपें एहि लेल जे सभ ठाम मैथिल समाज छथि आ सब ठाम भजन-कीर्तन होइत अछि। तें कहियो बेलगछिया डिपो, कहियो श्यामाबाजार डिपो तं कहियो कालीघाट डिपो आ टालीगंज डिपो जायब-आयब शुरु केलनि।



ओही ठाम कतहु पता लगलनि जे 'गिरीश पार्क' मे सब रवि कें मैथिल सभक जुटान होइत लगलाह। ओत्तहि सं हुनका 'बस' मे सुपरवाइजरीक नोकरीक जोगार लागि गेलनि। आब ओ अपना कमाइ पर भाड़ा घर मे रहय लगलाह। खाय-पीबय लगलाह। जें कि हुनका कलकत्ता मे नवागन्तुक क कष्ट अपना भोगल छलनि तें ओ नहि चाहैत छलाह जे दोसरा कें कष्ट हो। एहन कतेको लोक कें ओ बस मे नोकरी लगबौलनि। एहि अवधि मे ओ युवक बाबू साहेब चौधरी बनि गेल छलाह। अहिना एक दिन दक्षिण कलकत्ताक कोनो पार्क मे हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथलेन्दुजीक' भाषण सुनय गेलाह। मिथिलेन्दुजीक भाषण सं ततेक ने प्रभावित भेलाह जे बसक नोकरी कें लात मारि लागि गेलाह मिथिला-मैथिली कर'।

### अखिल भारतीय मिथिला संघक स्थापना

द्वितीय विश्वयुद्धक समय हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु' जी 'मैथिल संघ'क स्थापना केलनि। बाद मे यैह संस्था 'आल इंडिया मैथिल संघ' भ' गेल। एकरे समानान्तर एकटा आर संस्था छल- 'मिथिला लोक मंच'। दुनू संस्था मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक हितक काज सभ करय लागल। दरभंगा महाराज मैथिल महासभा मे घोषणा क' देने छलथिन जे मैथिली मात्र ब्राह्मण आ कायस्थक भाषा थीक जकर दुष्परिणाम भेल जे मिथिलाक आन जाति सभ अपना कें मैथिल नहि मानय। उपरोक्त दुनू संस्था एकटा नारा देलक- ''मिथिला मे रहनिहार सब जाति आ सम्प्रदायक भाषा मैथिली थीक आ सभ गोटे मैथिल छथि।''

एहि नायक असरि प्रवासी मैथिल पर पड़लैक आ उक्त दुनू संस्था मे आन-आन जातिक लोक सभक सहभागिता बढ़य लागल। ओहि बीच डॉ. लक्ष्मण झा (दरभंगा सं) पृथक मिथिला राज्यक मांग लेल विगुल बजौलनि। ओहि बिगुलक आवाज कलकत्ता आयल। ई बात थीक 1956 ई.क उत्तरार्द्धक। दुनूं संस्था मे एकर घोर प्रतिक्रिया भेल। मिथिलेन्दुजी वला गुटक लोक सभ मिथिला राज्यक विरोध मे आबाज उठौलनि। बाबू साहेब चौधरी आ प्रबोध नारायण सिंह बला गुटक लोक मिथिला राज्यक पक्षधर छलाह। विवाद बढ़ैत देखि चौधरी जी डॉ. लक्ष्मण झा, प्रो. हरिमोहन झा आ डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' कें आग्रह केलनि जे ओ लोकनि कलकत्ता आबथि आ मध्यस्थता क' कें विवादक समाधान निकालथि। ओ तीनूं विद्वान एलथि कलकत्ता आ निर्णय सुनौलनि जे दुनूं संस्था एक भ' जाउ आ 1958 ई. मे 'अखिल भारतीय मिथिला संघ, कलकत्ता' क जन्म भेल। ओही साल चौधरीजीक एकटा पुत्रक जन्म भेल जकर नामकरण 'विद्यापति' मणिपद्मे जी केलनि। 1959 ई. मे संस्था सं किछु लोक जेना किशोरीकान्त मिश्र वगैरह-वगैरह निकलि गेलाह आ 'मिथिला

सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता'क नाम सं एकटा संस्था खोलि लेलनि। ई लोकनि हिन्दीक समर्थक छलाह।

### अ.भा. मिथिला संघक असार-पसार

अपन स्थापनाक बाद संघक वाजाप्ता एकटा कार्यकारिणी समिति बनल जकर अध्यक्ष बाबू साहेब चौधरी आजन्म रहलाह से निर्विरोध रूपें। सचिव आ कोषाध्यक्ष बदलैत रहैत छलाह। अपन संगठनात्मक क्षमताक बल पर आ अपन काजक एजेंडाक बदौलत मिथिला संघ कलकत्ताक समकालीन संस्था सब भर भारी पड़य लागल। एहि संस्था मे बाबू साहेब चौधरीक अतिरिक्त जुड़ल छलाह। डॉ. प्रबोध नारायण सिंह, महावीर झा, पं. देवनारायण झा 'देवन', राजनन्दन लाल दास, पीताम्बर पाठक, चक्रधर झा, कुशेश्वर झा, घुरन झा, सुखदेव ठाकुर, गौरीकान्त झा, कुशेश्वर ठाकुर, कामदेव झा, प्रेमानन्द दास, शिवनाथ झा, सतीशचन्द्र झा, रघुवीर मिश्र 'राकेश', विन्देश्वर मंडल, सुरेन्द्र ठाकुर, विष्णुदेव झा 'विकल', सियाराम झा 'सरस', रामेश्वर ठाकुर, रामकृष्ण ठाकुर, विजयचन्द्र झा (दिल्ली), शारदानन्द झा (रांची), कृष्णकान्त झा आ उदयचन्द्र लाल दास (धनबाद), वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' (दरभंगा), सत्येन्द्र मिश्र, नरेन्द्र झा (सी.ए.) प्रभृतिक संग एहि पांतीक लेखक सेहो।

### अ.भा. मिथिला संघक काजक एजेंडा

अपन स्थापने काल सं मिथिला संघ, मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक एकटा प्रमुख मंच बनि गेल। एकर मुखिया बाबू साहेब चौधरी जे गांधीवादी विचारधाराक लोक छलाह अपन दृष्टिसम्पन्नता, दूरदर्शिता आ निःस्वार्थ सेवा भावना क कारणें मैथिलीक एकटा सर्वमान्य आ लोकप्रिय अभिभावक बनल रहलाह से ओहिना नहि अपन काजक बल पर। किछु प्रमुख काजक सूची हम एतय प्रस्तुत क' रहल छी:

1. मैथिली हमर मातृभाषा थीक। सरकार एकरा संविधानक आठम् सूची मे शामिल करय।
2. हमरा पृथक मिथिला राज्य चाही। तखने मिथिलाक सर्वांगीण विकास होयत।
3. हम विद्यापतिक संतान छी। हमर साहित्य भारतक कोनो भाषाक साहित्य सं बेसी समृद्ध अछि। मैथिली कें साहित्य अकादमी, दिल्लीक भाषा सूची मे शामिल कैल जाय।
4. पटना मे मैथिली अकादमीक स्थापना हो।
5. संघ लोक सेवा आयोग आ बिहार लोक सेवा आयोग मे मैथिली विषय कें शामिल कैल जाय।
6. प्राथमिक विद्यालय सं मातृभाषा मैथिली मे पढ़ौनीक व्यवस्था हो।
7. आकाशवाणी, दरभंगा आ भागलपुर सं मैथिली मे समाचारक प्रसारण हो।
8. हावड़ा सं 'मिथिला एक्सप्रेस' रेल सेवा चालू हो।
9. समस्तीपुर सं दरभंगा धरि बड़ी रेल लाइनक निर्माण हो।
10. मिथिलांचलक बन्न पड़ल चीनी मिल, कागज मिल आ जूट मिलक पुनरुद्धार हो।

**चौधरीजीक प्रेस हुनक जीविकाक एकमात्र आधार छलनि कलकत्ता मे। कैलेंडर छपैत छलाह ताहि सं प्राप्त आमदनी पहिने 'मैथिली दर्शन' पत्रिकाक प्रकाशन आ वितरण मे खर्च करैत छलाह। जं किछु बांचि जाइन तं आश्रमक राशन-पानी किनैत छलाह नहि तं भगबन भरोसे परिवार (पत्नी मात्र) चलैत छलनि।**

आब, प्रबुद्ध पाठक लोकनि स्वयं निर्णय करथु जे उपरोक्त काज मे कएटा काज भ' गेल अछि आ ताहि लेल की मैथिल समाज कें हिंसाक रास्ता अपनाबय पड़लनि? तें जं हम बाबू साहेब चौधरीकें महात्मा गांधीसं तुलना कैल तं की कोनो अनर्गल कैल?

### राजनीति आ राजनेता सं सम्पर्क

चौधरी जी कोनो राजनीतिक पार्टीक लोक नहि छलाह। ओ कट्टर मैथिलीस्ट छलाह। हुनका लेल वैह नेता बढ़ियां जे मैथिलीक हितक काज करय। यैह कारण छल जे हुनक सम्पर्क मिथिलाक विभिन्न राजनैतिक पार्टी नेता सभसं छल जेना ललित नारायण मिश्र, जगन्नाथ मिश्र, भागवत झा आजाद, हरिनाथ मिश्र, यमुना प्रसाद मंडल (कांग्रेस), कामरेड भोगेन्द्र झा, तुरानन मिश्र (सीपीआई), धनिक लाल मंडल, हुकुमदेव नारायण यादव (संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी) आदि। ई नेतालोकनि चौधरीजीकें बहुत सम्मान दैत छलाह। आदरक दृष्टि सं देखैत छलाह।

### पोथी आ पत्रिकाक प्रकाशन

चौधरीजी पहिने प्रबोध बाबूक 'सिंह प्रेस' सं प्रकाशित 'मिथिला दर्शन' मे सम्पादकीय सहयोग दैत छलाह। पछाति प्रबोध बाबूसं मतान्तर भेलाक बाद अपन फराक् 'मैथिली आर्ट प्रेस' (911 खेलात घोष लेन, कलकत्ता-600006) खोलि लेलनि। आ 'मैथिली दर्शन' नाम सं पत्रिका बहार कराय लगलाह जे मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहास मे मीलक पाथर साबित भेल। एतबे नहि ओ मैथिलीक प्रमुख साहित्यकार सभक मैथिलीक पहिल कृतिक प्रकाशन सेहो केलनि जाहि सं मैथिलीक साहित्यकार सभक बीच चौधरीजी श्रद्धेय बनि गेलाह। जाहि प्रमुख साहित्यकारक पहिल मैथिली पोथीक प्रकाशन केलनि ओ छथि- काशीकान्त मिश्र 'मधुप', ललित, राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, हरिमोहन झा, राधाकृष्ण चौधरी, विन्देश्वर मंडल आदि। चौधरीजीक प्रेस हुनक जीविकाक एकमात्र आधार छलनि कलकत्ता मे। कैलेंडर छपैत छलाह ताहि सं प्राप्त आमदनी पहिने 'मैथिली दर्शन' पत्रिकाक प्रकाशन आ वितरण मे खर्च करैत छलाह। जं किछु बांचि जाइन तं आश्रमक राशन-पानी किनैत छलाह नहि तं भगबन भरोसे परिवार (पत्नी मात्र) चलैत छलनि। वियाह आ उपनयनक कार्ड सेहो छपैत छलाह। ग्राहक कें कहैत छलखिन जे जं

मैथिली मे छपायब तं छपाइक शुल्क नहि लागत। ओ प्रेस बुझू तं मैथिलक दलान छल। लोकक आवाजाही लागल रहैत छल। सभ गोटेकें चाय पिअवथिन। प्रेसक कमाइ प्रेसे मे खर्च भ' जाइत छलनि। तथापि चेहरा पर सदिखन मुस्की पसरल रहैत छलनि। जं कोनो मैथिलीक साहित्यकार भेंट करय किंवा आशीर्वाद लेबय पहुंच जाइत छलनि। तहन तं बुझू जेना हुनका हर्षक पारावार नहि रहैत छलनि। साहित्यकारक प्रति एहन सम्मान आर कतय पानी?

## नाटककार, अनुवादक आ कवि

चौधरी जी 'कुहेस' नाम सं एकटा नाटक लिखलनि जे दहेज समस्या पर आधारित छल। ओ नाटक सर्वत्र प्रसंशित आ चर्चित भेल। एकर मिथिलांचल आ प्रवास मे कतेक ठाम आ कैक बेर मंचन भेल तकर सही आंकड़ा ककरो लग नहि अछि। ओ स्वयं नाटक खेलाइत छलाह। 'कुहेस' मे जनकक भूमिका मे वैह रहैत छलाह। बम्बइ आ दामोदरपुर मे ई नाटक देखलाक बाद लड़का-लड़की गार्जनक विरुद्ध बिना दहेजक वियाह केलक से सूचना अछि। ओ 'चाणक्य' नाम सं बंगलाक मूल पोथी 'चन्द्रगुप्त' (डी.एल. राय रचित)क अनुवाद केलनि जकरा बंगलाक साहित्यकार सभ खूब सराहलक। एकटा कवि गोष्ठी मे हुनका हम कविता पाठ करैत सेहो देखने छी।

## विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन

अ.भा. मिथिला संघक तत्वावधान मे ओ प्रति वर्ख 'विद्यापति स्मृति पर्वक' आयोजन खूब धूमधाम सं करबैत छलाह। तीन मास पूर्वहि हॉल बुक भ' जाइत छलैक। उद्घोषक मे मायानन्द मिश्र फिक्स्ड छलाह। मिथिलांचल आ प्रवासी कवि लोकनि कें हकारि कें बजौल जाइत छल। मनोरंजनक लेल झरिया सं करिक्का महेन्द्र कें बजौल जाइत छल। रवीन्द्र-महेन्द्र, सरस-रमेश, शशिकान्त-सुधाकान्त, पवन-गोविंद आ चन्द्रमणि तं अबिते टा छलाह हकार पर। ओहि अवसर पर एकटा भव्य 'स्मारिका'क प्रकाशन आ वितरण सेहो होइत छल। पहिने तं ओहि अवसर पर एकटा नाटकक प्रस्तुति सेहो होइत छल जे लोक टिकट कटाय कें देखैत छल।

## मैथिली महासंघ

चौधरीजी कें धनबाद, बोकारो, जमशेदपुर, रांची, पटना, भागलपुर, बम्बई, दिल्ली, दरभंगा आदि जगह सं विद्यापति पर्वक अवसर पर बजौल जानि कत्तहु मुख्य अतिथिक रूप मे तं कतहु मुख्य वक्ताक रूप मे। हुनक भाषण बड़ ओजस्वी होइत छल। सब ठाम गेलाक उपरान्त हिनका मोन मे एकटा विचार अयलनि जे सब संस्था एक छाताक तर मे आबि जाइतय तं हमर आबाज बुलंद होइतय आ दिल्लीक सरकार चेति जइतय। पीताम्बर पाठक लत्र बजलाह अपन विचार। पीताम्बर पाठक पटना जाएकें मृत्युंजय नारायण मिश्र (तत्कालीन निदेशक, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया आ ललित बाबूक छोट भाय) सं संपर्क केलनि आ 'मैथिली महासंघ'क गठन भेल। प्रारंभिक दौड़ मे किछु काज भेलैक मुदा पछाति ओहू मे शिथिलता आबि गेलैक। पदलोलुप्ता सं संस्थाक पदाधिकारी सभ उबरि नहि पौलनि। ई सोच आइयो प्रासंगिक अछि... मुदा?

## पैतृक गाम दुलारपुर वापसी

चौधरी जीक अपन इच्छा रहनि जे कोलकाते मे जीवनक अन्तिम क्षण तक रही। मुदा एक तं आर्थिक तंगी ऊपर सं अपन खोंखीक व्याधि, पत्नीक अस्वस्थता आ असुरक्षाक बोध हुनका विवश क' देलकनि कोलकाता छोड़ैक लेल। आओ 125000/- टाका मे प्रेस कें बेचि 1995 ई. मे सपत्नी गाम चल गेलाह। गाम मे दलान पर हरदम दस टा लोक जिज्ञासा मे अबनि। अपन बालसंगी रूचौलक बच्चा ठाकुर, देवेन्द्र कुमार आ पुबारि टोलक ताराकान्त बाबू सदिखन खोज-खबरि लेल करथिन। कने हूबा भेलनि। गाम मे वैह साबिकवाला चारक घर छलनि। विद्यापति कें घरक समस्या छलनि। धिया-पुता सभ छेंटगर भ' गेल छलनि। चौधरीजी प्रेसक दाम पौत्री सभक कन्यादान ले राखय चाहैत छलाह। पत्नीक कहला पर ओ 50000/- टाका विद्यापति कें देलखिन घर बनेबा लेल। विद्यापति तीन कोठलीक पक्का मकान बरामदाक संग बना लेलनि। बंचि गेलनि 65000/- टाका। चौधरीजी बंगाल मे रहि कें बंगाली जेकां मांछक भक्त भ' गेलाह। भोजन मे हुनका मांछ नहितं मुर्गीक अंडा, तिलकोरक तरूआ चाहबे करी। से भेटैत छलनि। चौधरी जी दू भाय। हुनका पिता कें 10 बीघा जोता जमीन छलनि। चौधरी जी कें माथ पर पड़लनि 5 बीघा। 20 अगस्त 1998 कें बेरू पहर चौधरीजी गाछ सं तोखाय कें लताम खाय लेलनि। राति मे उकासी तबाह क' देलकनि। 21 अगस्त 1998 कें विद्यापति कहलकनि जे चलू आइ नवका घर मे आराम करब। ओ नहि मानथिन। चौधरीजी नहाइ सं डेराइत छलाह। विद्यापति आ हुनक माय जिद्द टोपि देलखिन जे देह गन्हाइत अछि। लोक सभ की कहत। चलू स्नान क' लिअ। चौधरीजी स्नान केलनि। भोजन केलनि। आने दिन जेकां दबाइ सब खेलनि। आ नवका घरक वरंडा पर सूति रहलाह से फेर तीनबजिया चाही पीबय लेल कहां उकलाह। की चौधरीजी आब नहि रहलाह। कन्नारोहट शुरु। अंतिम संस्कार भेलनि। विद्यापति सामर्थ्यक हिसाबें श्राद्ध केलकनि। एहि सभक उपरांत देखल गेल जे चौधरीजीक पासबुक पर 6000/- टाका बांचल छलनि। विद्यापतिक दुनूं बेटा कें माथ पर आठ कट्ठाधरारी टा मात्र छनि। चौधरी जी कोनो पोतीक कन्यादान नहि देख सकलाह।

## उपसंहार

आइ हमरा लोकनि मोहनदास करमचंद गांधी क 150म जयंती वर्ष मना रहल छी किएक तं ओ सत्य आ अहिंसाक बल पर भारत कें अंग्रेजी शासन सं मुक्त करौलनि। मिथिलाक गांधीक लेल हमरा लोकनि की क' रहल छी जे अपन सर्वस्व मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक लेल न्योछावर क' देलनि। कृतज्ञ अछि अ.भा. मिथिला संघ, दिल्ली जे हुनका नाम पर साल मे एकटा मैथिली सेवी के सम्मानित करैत अछि। प्रत्येक मैथिली-प्रेमीक लेल ई आत्मचिंतनक विषय अछि। ■

# भारतीय ऋषि परम्पराक अद्यतन कड़ी
# आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'

✍ डॉ. शंकरदेव झा



शिक्षाः एम.ए., पी.एचडी. (इतिहास), एल.एल.बी., बी.जे.एम-सी। वृत्तिः पत्रकारिता, शोध एवं स्वतंत्र लेखन। प्रकाशित कृतिः संधि-समास (कथा-संग्रह); अमरजीव परिचय-संसार ओ पत्राचार (पत्र साहित्य); व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहन झा (जीवनी); स जीवति गुणा यस्य (जीवन-रेखांकन); प्ररोचना, मैथिली नाटक ओ रंगमंचक विश्लेषणात्मक अध्ययन (समालोचना); अठारहवीं शताब्दी की मिथिला का इतिहास (इतिहास); छाहक डड़ीर, नव-नीता (अनुवाद); कवीरश्वर-स्मरणिका, संत लक्ष्मनाथ गोसाई मैथिली पद-संचय, धमधकेलानन्दजीक जल-धिङरो, 'अमर' कविता-पुंज, हरिमोहनझाः व्यक्ति ओ रचनाकार (संपादन); सुरेन्द्र झा 'सुमन' रचना संचयन, तर्पण, मां श्यामा संदेश (संग-संपादन)। सम्मान : जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान-2004 एवं कवीश्वर चन्दाझा राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान 2013, आदि।

**सम्पर्कः**
*कबिलपुर, लहेरियासराय,*
*दरभंगा-846001*
*मो. 8210912761, 9430639249*
*ईमेल :*
*dr.shankardeojha@gmail.com*



मैथिली भाषा ओ साहित्यक संग ई दैवी संयोग रहलैक अछि जे प्रत्येक कालखण्डमे एकरा एकटा कोनो विशिष्ट महापुरुषक नेतृत्व ओ अभिभावकत्व प्राप्त होइत रहलैक अछि आ मैथिली अपन प्रगति-यात्रा पर आगू बढ़ैत रहलीह अछि। मैथिलीक आधुनिक कालक नेतृत्व फणीश्वर चन्दा झासं प्रारम्भ भेल। 1907 मे हुनक मृत्युसं पूर्वहि 1905 मे मिथिला-मोदक माध्यमसं मैथिली कें म.म. मुरलीधर झा सन प्रखर-मुखर व्यक्तित्वक नेतृत्व भेटलैक। 1930 मे मुरलीधर झाक मृत्युक बाद किछु वर्ष शून्यक स्थिति रहल। मुदा 1935 मे मैथिलीक मंच पर तेहन प्रखर तेजोमय व्यक्तित्वक अवतरण भेल जनिक बहुआयामी व्यक्तित्वसं मैथिली कतोक दशक धरि उर्जस्वित-प्रकाशित होइत रहलीह, जनिक व्यक्तित्व ओ कर्तृत्व मैथिलीक एकटा युगक सर्जन कयलक। ओ विराट् व्यक्तित्व दोसर केओ नहि आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' छलाह।

आचार्य सुमनक जन्म आश्विन शुक्ल पंचमी तदनुसार 9 अक्टूबर, 1910 ई. कें तत्कालीन दरभंगा जिलाक बल्लीपुर गाममे पं. भुवनेश्वर झा भुवनेश ओ गोसाउंनि देवीक ज्येष्ठ संतानक रूप मे भेलनि। हिनक शिक्षा-दीक्षा अपन गाम, कोइलख, पटना, राजनगर एवं मुजफ्फरपुर मे भेलनि। 1929 मे काव्यतीर्थ ओ 1932 मे साहित्याचार्यक परीक्षा प्रथम श्रेणीक संग उत्तीर्ण कयलनि।

अध्ययन समाप्तिक बाद परिवारक इच्छा रहनि जे सुरेन्द्र शिक्षक वृति मे जाथि। किछु दिन मनियारी मे शिक्षकक कार्य कयलनि। मुदा सुरेन्द्र कें तें मुजफ्फरपुर निवासक क्रममे साहित्य आ पत्रकारिताक से चसक लागि गेल छलनि जे विद्यालयक शिक्षण-वृत्तिमे मोन नहि लगलनि। अपन अध्ययन कालमे ई 'त्रिवेणी', 'जागृति' आ 'क्रांति' नामसं तीन गोट पत्रिकाक सम्पादन-संचालन क' चुकल छलाह। 1927-28 मे अपन मुजफ्फरपुरक अध्ययन कालमे कविशेखर बदरीनाथ झा, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', हरिमोहन झा, रमानाथ झा, रामचन्द्र मिश्र सन अग्रज ओ अवरज वृन्द लोकनिक सानिध्य पाबि साहित्य मे रमि गेल छलाह। अतः पत्रकारिता आ साहित्यकें अपन जीविका बनयबाक जेना ओ मानसी संकल्प ल' लेलनि। संयोगवश 1935 मे मैथिल महासभाक रोसड़ा अधिवेशनमे नवयुवक सुरेन्द्रक परिपक्व पांडित्य, साहित्यिक दक्षता ओ शालीनता सं सिक्का जमल जाहिसं हिनका मैथिली सेवाक क्षेत्र मे अनबाक पक्ष मे स्वतः एकटा वातावरण तैयार भ' गेल। डॉ. सर गंगानाथ झा, राजपंडित बलदेव मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह प्रभृति विभूति लोकनिक अनुशंसाकें देखैत महाराज कामेश्वरसिंह द्वारा हिनका तत्काले दरभंगा राज द्वारा संचालित मिथिला मैथिलीक प्रखर स्वर 'मिथिला-मिहिर'क सम्पादक नियुक्त कयल गेलनि।

एहि प्रकारें म.म. मुरलीधर झाक निधनक पश्चात मैथिली कें मिथिला-मिहिरक युवा सम्पादक सुरेन्द्र झा 'सुमन'क रूप मे एकटा सशक्त नेतृत्व प्राप्त भ' गेलैक। सम्पादनक दायित्व ग्रहण करिते आचार्य सुमन मिहिरक स्वरूपकें सर्वथा परिवर्तित क' देलनि। पत्रमे मिथिला-मैथिलीक स्वरकें जं एक दिस प्रमुखता देल गेल तं दोसर

दिस साहित्यकें। 1935 सं 1954 धरि आचार्य सुमनक सम्पादकत्व मे प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' जं मैथिली मे विभिन्न विधाक रचनाकार लोकनिक एकटा सशक्त पीढ़ी तैयार कयलक तं भाषा ओ राज्य आन्दोलनक प्रमुख प्लेटफार्म बनल ई पत्र। एहि दू दशक मे आचार्य सुमन लिखित सम्पादकीय अग्रलेख ओ विभिन्न टिप्पणी मैथिली गद्यक अभिव्यक्ति सामर्थ्य ओ हुनक प्रखर बौद्धिकता ओ चिंताधाराक जीवन्त दस्तावेज अछि। खेदक विषय जे आचार्य सुमनक पत्रकारिताक ई गद्य जे दू दशक धरिक मिथिला-मैथिलीक दशा-दिशाक इतिहास अछि, तकर संकलन-प्रकाशनक दिशा मे आइ धरि कोनो प्रयास नहि कयल जा सकल अछि।

सम्पादकक रूप मे आचार्य सुमन मिहिर कें ऐतिहासिक धरोहरक रूप कोना प्रदान करैत रहलाह, तकर सबसं पैघ प्रमाण अछि 1936 मे मिहिरक 'मिथिलांक' नामक विशेषांक, जे मिथिला-मैथिलीक विश्वकोष थिक, जकर जोड़ा आइयो धरि मैथिली-पत्रकारितामे देखबा मे नहि आयल अछि। एहिसं भिन्न समय-समय पर शरद वसंत आदि अवसर सब पर अभिनव वस्तु आ साज-सज्जासं युक्त मिहिरक विशेषांक सभक जे आयोजन होइत रहल से आचार्य सुमनक नेतृत्व मे मैथिली पत्रकारिताक स्वर्ण-युगक प्रमाण सब थिक।

आचार्य सुमनक पत्रकारिता मिथिला-मिहिरहि धरि सीमित नहि रहलनि। मैथिली भाषाकें अपन एकटा सुव्यवस्थित प्रेस होइक, ताहि निमित्त ओ 1948 मे दरभंगाक राजकुमारगंज स्थित आवास मे 'मिथिला प्रेस' नामसं एकटा छापाखाना बैसौलनि। 1948 मे अपन एहि प्रेससं 'स्वदेश' नामक नयनाभिराम मासिक मैथिली पत्रक प्रकाशन आरंभ कयलनि। यद्यपि ई स्वदेश वर्षाभ्यन्तरे शिथिल पड़ि गेल, मुदा हरिमोहन झाक प्रसिद्ध साहित्य-पात्र खट्टरकाका कें जन्म देबाक श्रेय एही स्वदेशकें छैक। 1955 मे मैथिलीके दैनिक पत्रक प्रकाशनक आवश्यकताकें देखैत आचार्य सुमन अपन पूर्व कथित मासिक स्वदेशकें दैनिक अखबारक रूप प्रदान कयलनि। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे प्रथम दैनिक पत्रक रूपमे स्वदेशक प्रकाशन भेल जकर एकमात्र श्रेय आचार्य सुमनकें छनि। पुनः दोसर बेर आचार्य सुमन 1981 सं 1983 धरि दैनिक स्वदेशक प्रकाशन कयलनि। मुदा समाजक उदासीनता ओ असहज आर्थिक भारक कारणे लाचार होइत एकर प्रकाशनपर विराम लगा देलनि।

यद्यपि अपन प्रेस होइतो आचार्य सुमन मैथिली पत्रकारिताक धारकें जे तीक्ष्णता देब' चाहैत छलाह से नहि द' सकलाह, जकर अनेक कारण छल। मुदा हिनक ई 'मिथिला-प्रेस' मैथिली साहित्य ओ आन्दोलक प्रमुख केंद्र बनि गेल।

**अपन प्रेस होइतो आचार्य सुमन मैथिली पत्रकारिताक धारकें जे तीक्ष्णता देब' चाहैत छलाह से नहि द' सकलाह, जकर अनेक कारण छल। मुदा हिनक ई 'मिथिला-प्रेस' मैथिली साहित्य ओ आन्दोलक प्रमुख केंद्र बनि गेल।**

लगभग पांच दशक धरि मिथिला-प्रेससं कतोक पोथी, पत्रिका, मैथिली आन्दोलनसं सम्बद्ध स्मारपत्र, परचा, पोस्टर, बुकलेट आदि प्रकाशित होइत रहल, तकर एत्ता नहि। आचार्य सुमनक जीवनक ई अवधि गार्हस्थ्य जीवनसं अधिक सामुदायिक जीवनक रहलनि। व्यावहारिक साम्यवादक अनुपम दृष्टांत बनि गेल छलाह आचार्य सुमन। अपन प्रेसक कर्मचारी लोकनिक संग एक पांतीमे बैसि एक समान भोजन करैत छलाह।

आचार्य सुमन 1928 मे अपन मुजफ्फरपुर निवासक क्रममे मैथिली मे लेखन आरम्भ कयलनि। मिथिला-मिहिरसं सम्बद्ध भेलाक बाद अपन नामक संग-संग छद्म नामसं सेहो लेखन करबाक विवशता भ' गेलनि। फलतः मधुकर, द्विरेक, काश्यप, भ्रमर, माधवी आदि छद्मनामसं ई कतोक कथा, कविता, अनुवाद आदि करैत रहलाह, जे मिहिरमे प्रकाशित होइत रहलनि। मिहिरक सम्पादन, साहित्यिक, सांस्कृतिक ओ आन्दोलनात्मक गतिविधि सबमे निरन्तर संलिप्त रहबाक कारणे अपन रचनाकें पुस्तकाकार करबाक पलखतिये नहि भेटनि। मुदा जखन 1948 मे ई मिथिला प्रेसक स्थापना कयलनि तकर बाद एके संग अपन कविताक तीन गोट संग्रह 'प्रतिपदा', 'साओन-भादव' ओ 'अर्चना'क प्रकाशन कयलनि। एकर बादसं हिनक पुस्तक सभक प्रकाशनक जे एकटा क्रम आरम्भ भेल से हिनक मृत्यु पर्यन्त चलैत रहल। पद्य ओ गद्य दुनू मे समान भावसं ई रचना करैत रहलाह।

आचार्य सुमनक पद्य-रचनामे मौलिक आ अनूदित दुनू छनि। मौलिक मे मुक्तक कविताक संग्रहक रूप मे पूर्व कथित प्रतिपदा, साओन-भादव एवं अर्चनाक अतिरिक्त पयस्विनी, अन्तर्नाद, कथा-यूथिका, मुक्तावली, अन्योक्तिका, प्रकृतिशतक, प्रकीर्णशतक, श्रृंगारहार, ललना लहरी, गाम-धरती, सनेस, जतरा चारूधाम 'भारत वन्दना, अलंकार-मालिका, नीतिका आदि छनि। चारि गोट प्रबंधात्मक काव्य छनि। एहिमे 'दत्तवती' महाकाव्य तं राष्ट्रीय चेतनाक दर्पण थिक जे आधुनिक भारतीय आर्य भाषाक एकटा श्रेष्ठ कृतिक रूपमे परिगणनीय थिक। हिनक दोसर महाकाव्य थिकनि 'कृष्णावतरण' जकर रस-निरुपण अद्भुत अछि। एहिसं भिन्न 'उत्तरा' ओ 'बुद्धबोध' दू गोट खण्डकाव्य छनि। अनुदित काव्य मूलतः संस्कृत सं छनि जाहिमे श्रृंगार-तिलक, चण्डीचर्या, पुत्रोहं पृथिव्याः, ऋतु श्रृंगार, शक्ति एतवक शिव महिमा, आनन्द लहरी, हरि स्मरणिका, ऋचालोक, रघुवंश, संदर्य लहरी, मेघदूत, कुमारसम्भव आदि छनि। एहिसं भिन्न बाङ्लासं रवीन्द्र नाथ टैगोरक गीतांजलि एवं तुलसीदासक हनुमान बाहुकक मैथिली अनुवाद कयलनि।

आचार्य सुमनकें मैथिली मे कविक कवि कहल गेलनि अछि। हिनक

प्रतिद्वंद्विता अपन पूर्ववर्ती किंवा समकालीन कोनो मैथिली कविसं नहि छलनि। हिनक प्रतिद्वंद्विता कालीदास, भर्तृहरि, शंकराचार्य प्रभृति संस्कृतक मनीषी लोकनिसं छलनि। अपन कविताक माध्यमसं संस्कृतक एहि मनीषी लोकनिकें साहित्यिक उत्तर देब हिनका विशेष प्रिय छलनि। संस्कृत मे शिव पंचाक्षर नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय' सन प्रसिद्ध स्त्रोतक रचना तं शकराचार्य कयलनि अवश्य। मुदा हिनक पंचाक्षरक पांचो श्लोकक मात्र आरम्भक प्रथम शब्द 'न', 'म', 'श', 'व', 'य' (नमः शिवाय) अछि। मुदा आचार्य सुमन शंकराचार्यक उत्तरमे मैथिलीमे जे शिवपंचाक्षरक रचना कयने छथि तकर प्रत्येक श्लोकक प्रत्येक शब्दमे ओही वर्णक जेना निर्वाह भेल अछि से चमत्कृत करैत अछि। यथा–

नन्दी निकटे नागेश नटेश्वर,  
नाथ नित्य नाचथि नङटे  
नयनानल नियमित निशानाथ,  
नटवर नकारमय नमस्कार।

निश्चित रूपसं शंकराचार्यक तुलनामे आचार्य सुमन रचित शिव पंचाक्षर बेसी काव्यमय अछि।

कहल गेलनि अछि जे आचार्य सुमन संस्कृतकें गला क' मैथिलीक श्रृंगार कयलनि। मुदा तकर अर्थ ई नहि जे ओ अपन युगक घाटसं निरपेक्ष रहलाह। हिनक कवितामे जतबे प्राचीनता अछि ततबे आधुनिकता सेहो। विगत शताब्दीक पांचम दशक मे जखन मैथिली मे राजनीतिक झंडा-पताका लगा क' एकटा विशेष धाराक कविता लिखल जाय लागल छल। ताहिसं पूर्वे आचार्य सुमन अपन कविता सबने लोकपीड़ाक स्वरकें मुखरित क' चुकल छलाह। हिनक 'हलधर' कवितामे कृषकक पीड़ाक मार्मिक किन्तु आक्रोशपूर्ण अभिव्यक्ति भेल अछि–

धरती सुत अहींक कवितासं  
हरित-भरित संसार।  
गढ़ि आखर दस-पांच धन्य कवि,  
कहबी अहा गमार।  
जे अणु गढ़ि विध्वस्त करथि जग,  
धन्य हुनक विज्ञान।  
कण-कण आविष्कार जीव-हित  
अहिंक तिरस्कृत ज्ञान।

विगत शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे साम्यवादक नामपर जे वितण्डा ठाढ़ कयल गेल छल, तकरा आचार्य सुमनक अंतरक चिन्तक-कवि चिन्हबमे देरी नहि कयलक। पद-पद पर जगत-नियंताक द्वारा निरूपित विषमताकें भेटा क' सर्वत्र समानताक स्थापना हुंकार सर्वथा मिथ्या ओ असम्भव अछि। आचार्य सुमनक दृष्टिमे साम्यवाद जं कतहु संसारमे अछि तं ओ थिक 'श्मशान', जत' ककरो संग भेदभाव नहि होइत छैक–

पूंजी-श्रम मे नहि भेदभाव,  
अछि अहंक राज्यमे साम्यवाद।  
राजा रंकक अछि तुल्यमान,  
अछि साम्य एतहि व्यवहारवान।  
छी समता तत्वक मूर्तिमान,  
आचार्य प्रवर अहं हे श्मशान।

**कहल गेलनि अछि जे आचार्य सुमन संस्कृतकें गला क' मैथिलीक श्रृंगार कयलनि। मुदा तकर अर्थ ई नहि जे ओ अपन युगक घाटसं निरपेक्ष रहलाह। हिनक कवितामे जतबे प्राचीनता अछि ततबे आधुनिकता सेहो।**

आचार्य सुमनक 'कविताक आह्वान' शीर्षक कविता तं मैथिली कविताक ओहि लोकवादी धारा ओ लोकपक्षधरताक मेनिफेस्टो थिक, जाहि लोकवादी धाराक भगीरथ मिथिला-पुनर्जागरणक अग्रदूत कवीश्वर चन्दाझा छलाह। वस्तुतः आधुनिक मैथिली कविताक गौरव ओ गाम्भीर्यक प्रतीक छनि आचार्य सुमनक काव्य-साहित्य जाहिमे प्राचीनताक प्रगाढ़ रंग अछि तं आधुनिकताक मादक सुगंध अछि। परम्पराक संवर्द्धना अछि तं नवीनताक चेतना अछि। संदर्य ओ बौद्धिकताक समतल समन्वय सं गढ़ल-मढ़ल मैथिली कविताक ई स्वरूप शाश्वत, सार्वभौम ओ चिरकालिक अछि जकरा कहियो कालक कलेप नहि लागि सकैत छैक।

मुदा आचार्य सुमन रचित मैथिली कविताक ई तेज हुनका लोकनिकें कोना सहज भ' सकैत छलनि जे स्वयं काव्य-प्रतिभा सं हीन छलाह, मुदा कवि बनबाक लौल करैत राजनीतिक प्रतिबद्धतासं ग्रस्त भेल समसामयिक नारा लिखि धन्य भेल रहैत छलाह। आचार्य सुमनपर हुनक जीवनकालहुमे प्रहार होइत रहलनि आ मृत्युक बाद तं बहुतो गोटा अपना ढंगसं ओलि सधा रहलथिन अछि। हम एत' मात्र एकटा दृष्टान्त देब' चाहब। 2002 मे आचार्य सुमनक निधन भेलनि। 2003 मे मैथिलीकें संविधानमे स्थानक संग एहि भाषाक हेतु अवरुद्ध अनेक द्वार खुजल। 2005 मे नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली दिससं गंगेश गुंजनक सम्पादनमे एकटा संग्रह 'मैथिली कविता संचयन' प्रकाशित भेल अछि। एहि संग्रह मे एकावन गोट कविक एक सय सतासी गोट कविता संकलित अछि। दुर्भाग्यक विषय जे आजुक जनमल अकवि-कुकवि लोकनिकें संग्रहमे प्रतिष्ठाजनक स्थान भेटलनि अछि। मुदा मैथिली कविताक शिखर-पुरुष महाकवि सुमनक एकमात्र कवितामें खानापुरीक रूप मे संग्रहमे स्थान देल गेलनि अछि। जें प्रतिशतक हिसाब सं देखल जाय तं सम्पादकक दृष्टिमे मैथिली कवितामे आचार्य सुमनक अवदान 0.54 प्रतिशत मात्र छनि। एकरा की कहल जाय से हम मैथिलीक चिकिर्षु लोकनिपर छोड़ि दैत छियनि।

आचार्य सुमन जेहने विशिष्ट कवि छलाह तेहने विशिष्ट गद्यकार सेहो। रचनात्मक गद्यक रूपमे हिनक औपन्यासिक कृति छनि 'उगनाक दिया दवाद'। एहि उपन्यासक मूल स्वर अछि जातीय बटुआसं रहित एकटा समरस सौहार्दपूर्ण मैथिली समाजक निर्माण। 'मन पड़ैत अछि' हिनक संस्मरण ाात्मक कृति थिकनि जे वस्तुतः आधुनिक मिथिलाक एकटा विशेष कालखण्डक रोचक सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास थिक। आचार्य सुमन एकटा निविष्ट कथाकार सेहो छलाह। जं मैथिलीक प्रसिद्ध कथाक रूपमे हिनक 'बृहस्पतिक शेष'क गणना कयल

जाइत छनि तं 1937 मे प्रकाशित हिनक 'विपरीत घटना' मैथिलीक प्रथम लघुकथा थिक। तहिना हिनक लिखल अनेकशः ललित निबंध ओ गद्य-काव्य सब छनि जे पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल पड़ल छनि। ओना हिनक असंकलित कतोक कथा ओ ललित निबंध सब साहित्य अकादेमी द्वारा 2012मे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एवं शंकरदेव झाक सम्पादनमे प्रकाशित 'सुरेन्द्र झा 'सुमन'' रचना संचयन मे संकलिक भ' सकलनि अछि।

आचार्य सुमनक आलोचनात्मक कृति मे 'मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव' प्रकाशित छनि। एहिसं भिन्न कुमार गंगानन्द सिंह ओ मुंशी रघुनन्दनदासक व्यक्तित्व ओ कर्तृत्व आधारित दूय विनिबंध प्रकाशित छनि। आचार्य सुमनक समालोचकीय गद्यक एकटा विशिष्ट आयाम छनि भूमिका लेखन। ई शताधिक पुस्तकक भूमिका लिखने छथि। 2005 मे हिनक भूमिका गद्यक एकटा संग्रह डॉ. सुरेश्वर झाक सम्पादनमे बिंदु विसर्ग नाम सं प्रकाशित भेल। बिंदु विसर्गक रूपमे भूमिका-गद्य समस्त रूपमे एकठाम अयलाक बाद आचार्य सुमनक आचार्यत्व एहिसं सिद्ध होइत छनि। आचार्य सुमनक बिंदु विसर्गक अवलोकनसं ई प्रमाणित होइत अछि जे भूमिका लेखन कतेक गूढ़ ओ गंभीर विषय होइत अछि आ जे संक्षेप मे साहित्यशास्त्रक प्रतिपादनक एकटा माध्यम होइत अछि, नहि कि शब्दक फुलझड़ी ओ लहरक छोड़बाक अवसर।

आचार्य सुमन एकटा सिद्धहस्त अनुवादको छलाह। संस्कृत सं ई रघुवंश, हितोपदेशः मित्रलाभ एवं पुरुष परीक्षाक मैथिली अनुवाद कयने छथि। बाङ्लासं शरदचन्द्रक 'बड़ दीदी' उपन्यासक अतिरिक्त सम्पूर्ण रवीन्द्र वाङ्मयक अनुवाद कयने छथि।

मैथिलीक प्राचीन साहित्यक अन्वेषी विद्वान आचार्य सुमन कतोक कृतिक पाठ-संशोधन, अर्थ-निर्वचनक संग सम्पादन कयने छथि। हिनक सम्पादित कृति मे परिजातहरणनाटक, आनन्द विजयनाटिका, कृष्णजन्म, वर्णरत्नाकर, मिथिला भाषा रामायण संक्षेपिका, रमेश्वरचरित मैथिली रामायण संक्षेपिका, गोविन्द गीतांजलि आदि प्रमुख छनि।

आचार्य सुमन विशुद्ध सनातनी परिवारमे जन्म लेने छलाह। सनातन परम्पराक संरक्षण-संवर्द्धन हेतु ई जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहलाह। ई अपन प्रेससं प्रतिवर्ष नियमित रूपसं 'मिथिला-पंचांगक' प्रकाशन करैत रहलाह। वर्ष भरिक पावनि-तिहारक सहजताक संग सम्पादन क' सकबाक उद्देश्यसं 'वर्षकृत्य' नामक कर्मकाण्डीय ग्रंथक रचना कयलनि। तहिना छान्दोग्य ओ वाजसनेय संध्या-वंदन पद्धतिकें सेहो ई सरल मैथिली-निर्देशक संग प्रस्तुत कयलनि।

संस्कृतक पंडित होइतो आचार्य सुमन सर्वात्मना मैथिलीक हेतु समर्पित रहलाह। तथापि अपन छात्र जीवनकाल मे ई 'स्नेहवर्षिणी' नामक एकटा टीका ग्रंथक रचना क' क' अपन सामर्थ्यक परिचय द' देने छलाह। पुनः अपन जीवनक सांध्यवेलामे आबि क' वाल्मीकक रामायण पर आधारित 'प्राचेतस राजशास्त्र' नामक ग्रंथक रचना कयलनि, जे हिनका संस्कृत क्षेत्र मे सेहो विशेष ख्याति दिऔलकनि।

**आचार्य सुमन एकटा सिद्धहस्त अनुवादको छलाह। संस्कृत सं ई रघुवंश, हितोपदेशः मित्रलाभ एवं पुरुष परीक्षाक मैथिली अनुवाद कयने छथि। बाङ्लासं शरदचन्द्रक 'बड़दीदी' उपन्यासक अतिरिक्त सम्पूर्ण रवीन्द्र वाङ्मयक अनुवाद कयने छथि।**

1935 सं 1954 पर्यन्त आचार्य सुमन मैथिलीक पत्रकार, साहित्यकार, अध्येता, संगठनकर्ता आदिक रूपमे ततबा प्रख्यात भ' गेलाह जे कहियो शिक्षण वृत्ति छोड़ि साहित्य वृत्ति मे आयल छलाह तनिका पुनः मैथिली सेवाक कारणे शिक्षण वृत्ति ग्रहण कर' पड़लनि। 1959 मे हिनक नियुक्ति चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा मे मैथिली प्राध्यापक पद पर भेलनि। एकटा विद्वान प्राध्यापकक रूपमे पर्याप्त यश ओ प्रतिष्ठा अर्जित करैत, मैथिली-प्रेमी छात्रक पीढ़ी तैयार करैत 1975 मे ई ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक अध्यक्ष पदसं सेवानिवृत्त भेलाह। अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक संस्थादि मे विभिन्न पदकें सुशोभित कयनिहार आचार्य सुमन 1983 सं 1992 पर्यन्त दू खेप साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रतिनिधित्व कयलनि।

आचार्य सुमनक जे व्यक्तित्व ओ कृतित्व छलनि ताहि आगूमे कोनो सम्मान आ पुरस्कार झूस पड़ैत छलनि। तथापि 1971 मे हिनका पयस्विनी हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि। 1995 मे बाङ्लासं मैथिली मे अनुदित 'रवीन्द्र नाटकवली (प्रथम खंड) पर साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार देल गेलनि। 1979 मे राष्ट्रभाषा सेवा हेतु बिहार सरकार द्वारा हिनका सम्मानित कयल गेलनि। 1982 मे मैथिली अकादमी, पटना हिनका 'उत्तरा' खण्डकाव्य हेतु विद्यापति पुरस्कार प्रदान कयलकनि। 1994 मे हिनक चौरासिम जन्मदिवसक अवसरपर 'श्रीसुमन साहित्य सौरभ' नामसं अभिनन्दन ग्रंथ प्रदान कयल गेलनि। 1995 मे साहित्य अकादमी हिनक सम्मानमे 'रचनाकारसं भेट' नामक विशेष कार्यक्रम आयोजित कयलक। 1998 मे बिहारक तत्कालीन राज्यपाल सुंदर सिंह भंडारी हिनक पैतृक ग्राम बल्लीपुर आबि हिनक नागरिक अभिनन्दन कयलथिन।

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क व्यक्तित्वक जे एकटा आरो महत् आयाम छलनि से छल राजनीति। पत्रकार, साहित्यकार, प्राध्यापक होयबाक संग-संग एकटा सुचिंतित ओ सोझरायल राजनीतिक पुरुष सेहो छलाह। अपन छात्र जीवनहि कालमे ई स्वतंत्रता आन्दोलनसं अनुप्राणित छलाह। गुरु गोलवलकर, महात्मा गांधी सं प्रभावित छलाह तं मिथिलाक प्रख्यात समाजवादी चिंतक पं. रामनन्दन मिश्रक सान्निध्यमे रहबाक कारणे हिनक राजनीतिक चिंताधारा

मे राष्ट्रचिंताक संग लोकचिंताक भावक समावेश भेल। हिनक राजनीतिक मूल्यक अवक्षेपण हिनक पत्रकारिताक गद्यमे भेल अछि जकर मूल भाव एतबे जे जखन लोकोदय होयत तखने राष्ट्रोदय भ' सकत।

जीवन पर्यन्त खादी वस्त्र धारण कयनिहार, स्वावलंबन ओ स्वाभिमानक संग सरल जीवन जिवनिहार, राष्ट्रभक्तिक प्रतिमूर्ति आचार्य सुमन एकटा प्रतिष्ठित नागरिक ओ प्रखर पत्रकार होयबाक कारणे 1954 मे मिथिला-मिहिरक सम्पादनक दायित्वसं मुक्त भेलाक बाद प्रत्यक्ष रूपसं जनसंघसं सम्पृक्त भेलाह। मिथिलामे जनसंघक संगठन तैयार करबामे अपन ऐतिहासिक योगदान देनिहार आचार्य सुमन 1962 ओ 1969 मे दरभंगा शहरी विधानसभासं ओ 1971 मे दरभंगा लोकसभा क्षेत्रसं जनसंघक प्रत्याशी बनाओल गेलाह, किन्तु सफलता नहि भेटलनि। मुदा 1972क विधानसभा चुनाव मे हिनका विजय प्राप्त भेलनि। 1975 मे देशमे आपातकाल लगाओल गेल। लोकतंत्र ओ संविधानक एहि हत्याक विरोधमे जयप्रकाश नारायणक सम्पूर्ण क्रांतिक समर्थन मे विधानसभाक सदस्यतासं त्यागपत्र देनिहार पहिल विधायक भेलाह आचार्य सुमन। तदुपरांत हिनका मीसाक अन्तर्गत गिरफ्तार क' क' जेलमे बन्द क' देल गेलनि आ कतोक मास धरि राजनीतिक यातना भोग' पड़लनि। आपातकालक समाप्तिक बाद 1977 मे देशमे लोक सभा चुनाव भेला एहिमे ई जनता पार्टीक दिससं दरभंगा लोकसभा क्षेत्रसं प्रत्याशी बनाओल गेलाह आ अपार बहुमतक संग विजय प्राप्त कयलनि। एकटा सांसदक रूपमे संसद मे ई मिथिला-मैथिलीक स्वरकें मुखर करबामे कखनो पाछू नहि रहलाह। मुदा मतभेदक कारणे जनता पार्टीक सरकार बेसी दिन नहि चलि सकल। 1980क मध्यावधि चुनावमे पुन: भारतीय जनता पार्टी दिससं हिनका प्रत्याशी बनाओल गेलनि। मुदा एहि बेर कांग्रेस प्रत्याशी पं. हरिनाथ मिश्रसं ई पराजित भेलाह। एकर बाद आचार्य सुमन यद्यपि प्रत्यक्ष राजनीतिसं फराक भ' गेलाह, किन्तु भाजपासं संबद्धता बनल रहलनि ओ पार्टीक सशक्त संगठनक दिशामे ई मृत्यु पर्यन्त कार्य करैत रहलाह।

भारतीय राजनीतिमे शुचिता ओ ऋषित्वक प्रतिमूर्ति छलाह आचार्य सुमन। अपन सौम्य आचरण, निष्ठा ओ सच्चरित्रताक कारणे जनसंघसं ल' क' भाजपा धरि मे ई सभक प्रिय ओ आदरणीय बनल रहलाह। अटल बिहारी वाजपेयी ओ लालकृष्ण आडवाणी भाजपाक शीर्ष नेतृत्वक हृदयमे आचार्य सुमनक प्रति कतेक सम्मान छलनि तकर असंख्य प्रत्यक्षद्रष्टा लोकनि एखनहुं वर्तमान छथि। मार्च 2002 मे आचार्य सुमनक निधन भ' गेलनि आ 2003 कें



दिसंबर मे मैथिलीकें संविधानमे स्थान प्राप्त भेल। एहि मध्य मैथिलीक प्रतिनिधि मण्डल जखन-जखन तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी सं जा क' भेट कयलक तखन-तखन ओ आचार्य सुमनक श्रद्धाक संग चर्च करैत कहल करथिन जे 'सुमनजीक प्रति हमर ई ऋण अछि, हम हुनका कहियो मैथिलीकें संवैधानिक मान्यता दिअयबाक वचन देने छलियनि, तें हमर ई दायित्व अछि। ' वस्तुत: मृत्युक बादो संविधानमे मैथिलीक स्थान प्राप्ति सदृश ऐतिहासिक उपलब्धिक दिशामे आचार्य सुमनक व्यक्तित्व प्रभावी बनल रहल ताहि मे संदेह नहि।

वास्तवमे राजनीति आचार्य सुमनक साध्य छलनि, साधन नहि। राजनीतिक कारी कोठरी मे ओ देश तथा लोक सेवाक उद्देश्यसं प्रवेश कयलनि आ बेदाग भ' क' ओहिसं बहरा गेलाह। वैयक्तिक स्वार्थ सिद्धि हेतु राजनीतिकेर प्रयोगक गप्प तं कहियो हिनक सपनो मे नहि अयलनि। तहिना राजनीतिमे वैचारिक मतभेद रहितो ई कहियो मतभेद नहि आब' देलनि। हिनका जतबे आपकता अपन पार्टीक नेता-कार्यकर्ताक संग छलनि, ततबे अपन राजनीतिक विरोधी दलक नेताक संग सेहो। से चाहे कांग्रेसक ललितनारायण मिश्र की सत्यनारायण सिंह होथु, समाजवादी बी.पी. मंडल होथु की कर्पूरी ठाकुर अथवा वामपंथी चतुरानन मिश्र होथु की भोगेन्द्र झा; सभक संग हिनक आत्मिक संबंध छलनि। मिथिला-मैथिलीक हितमे दलीय प्रतिबद्धतासं ऊपर उठि सभक एकजुट सहयोगक ई पक्षधर छलाह। दू परस्पर विरोधी ध्रुवकें एक संग साधि सकबाक अपन अद्‌भुत क्षमताक कारणे आचार्य सुमनक छवि मिथिलाक राजनीतिमे अजातशत्रुक छलनि।

निष्कर्षत: कहल जाय तं आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' एकमे अनेक वा अनेकमे एक छलाह। स्वयंमे एकटा विराट संस्था छलाह। एकटा अप्रतिम साधक छलाह जनिकामे एकहि संग पत्रकारिता, साहित्य, अध्यापन, समाजसेवा ओ राजनीति सबकें साधि सकबाक क्षमता छलनि। भारतीय चिंतक परम्पराक अद्यतन कड़ी छलाह जनिक राष्ट्रनीति ओ धर्मनीति, राजनीति ओ समाजवादी चारू पक्ष-चद्‌दरिक चारू खूट जकां समतूल छलनि आ यैह हिनक पुरुषार्थ चतुष्ट्य छलनि। जनक सन वीतरागी छलाह जे जीवन पर्यन्त निर्लोभ बनल परमार्थमे लागल रहलाह। मैथिली-गंगाक भागीरथ छलाह जे वज्रकपाटमे बंद मैथिलीकें बाहर निकलि ओकरा लोक भूमि पर चतरौलनि। दधीची-पुरुष छलाह जे अपन मातृभाषाक हेतु जीवन-पर्यन्त सर्वस्व अर्पित करैत रहलाह। चाणक्य सन नीतिज्ञ, दूरदर्शी ओ कुशल संगठनकर्ता छलाह जाहि कारणे मैथिली भाषा ओ साहित्यमे हुनक कालखण्ड सुमन-युग (1935-2002)क संज्ञासं अभिहित होइत अछि। मुदा खेदक विषय ई जे मैथिलीक आजुक नेतृत्वविहीन अराजक पीढ़ी अपन एहि अनमोल रत्नक महत्वकें नहि जानि पाबि रहल अछि आतें संवैधानिक मान्यता भेटलाक बादो मैथिली क्रमश: क्षरण ओ पतन दिस अग्रसर अछि। ■

# बहुमुखी प्रतिभाक धनी मायानन्द मिश्र

✍ प्रो. अरविन्द कुमार मिश्र 'नीरज'



लेखक आर.एम. कॉलेज, सहरसाक मैथिली विभागमे कार्यरत व्याख्याता छथि। विविध साहित्यिक सांस्कृतिक मंच सं जुरल साहित्य जगतमे अरविंद नीरज कें नाम सं ख्यात विविध पत्र-पत्रिकामे छपैत मैथिली मंचक जानल-मानल कवि छथि। हिनका द्वारा प्रणीत अनेको पोथी प्रकाशित आ प्रकाशनाधीन छन्हि। हिनक 'परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाईं महाकाव्य' बहुत चर्चित भेल।

*संपर्क :*
*हटिया गाछी, मानस नगर,*
*वार्ड नं.-32, सहरसा-852201*
*मो. 9771006810*

मैथिली साहित्यक सलाका पुरुष महनीय माया बाबूक नाम साहित्य जगत मे अप्रतिम रूपमे रहल अछि। ओजस्वी साहित्य मंचक संचालक के रूपमे ख्यात माया बाबू बेलपातक तीन पात मे एक ख्यात नाम मैथिली साहित्यक प्रयोगवादी कवि राजकमल सं, दोसर सहज सुविख्यात ललित जिनक प्रणीत पृथ्वीपुत्र उपन्यास एवं आओर अनेको रचना रचि साहित्य निधि कें श्रीवृद्धि मे अपन योगदान द' ख्यात भेलए। राजकमल तं चढ़ै जुआनिये मे मैथिली बंगला हिन्दीक साहित्य भंडार के भरि अहि लौकिक संसार सं विदा भ' गेलाह तं तेसर पात छथि माया बाबू। बहुमुखी प्रतिभाक धनी, आकर्षित व्यक्तित्व, प्रभावित प्रतिभा, बाग्वैभव बनि, हंसमुख सभरोशन, मंचक आशु कवि, उद्घोषक, वक्ता आ श्रोताक सफल सूत्रधार मिथिलांचलक जनमनमे बसनिहार माया बाबू कें केनहि जनैत छन्हि। मिथिलांचक बादहु भारतक समग्र प्रांत मे मैथिली मंचक एहन संचालक छलाह जे उपस्थित दर्शक आ श्रोताक मन चाहना जानि मंच से एहने प्रस्तुति करबाबैत छलाह जाहि प्रस्तुति सं आनहु आन भाषा भाषी मैथिली गीत, कविता, प्रहसन, नाटक देखि आ सुनि गद-गद भ' पंडाल आ प्रसाल कें भरने रहैत छल। कवि केहनो हो कलाकार केहनो हो मुदा माया बाबूक उद्घोषणा आभावहुं मे भाव भरैत छल। धब-धब धोती कुर्ता बाम कन्हा सं लटकैत चादर भाल पर ललका ठोप आ सदैव ठोरक इशितहास नमगर आ गोरगर देह, हुनक व्यक्तित्व अलगे छाप छोड़ै छल। व्यंग्य विनोद मे प्रबल पटु, तत्क्षण सभाक नब्ज पकनिहार माया बाबूक सहज संस्कार छल। हिनक जन्म वर्तमान सुपौल जिलाक अन्तर्गत कोशी बान्हक भीतर बनिनिया नामक गाम मे 17 अगस्त 1934 मे भेल छल, जे गाम कोसीक बेसुमार धार सं कैक बेर उपटारल, उजाड़ल आ अंत मे कोशीक पेट मे समायल गाम सं पलायन भ' एहि गामक लोक अपन अपन आश्रितक आश्रय पाबि अनेको जिला सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णिया, दरभंगा, मधुबनी आदि शहर आ गाम मे बसि बनिनियावासी कहबैत छथि ताहि मे मायाबाबू सहरसा शहरक अन्तर्गत विद्यापति नाम सं अवहित मोहल्ला मे अपन आवास बना व्यवस्थित भेलाह।

साहित्यक संस्कार मे सहज-प्रभाव हिनक मातृक पक्षक कहल जा सकैत अछि। हिनक माम छलाह मैथिली साहित्य जगतक ख्यात नाम पं. रामकृष्ण झा किशुन जिनक पुत्र अर्थात् मायाबाबूक ममिऔत मैथिली जगतक वर्तमान लेखक कवि समालोचक केदार कानन छथि। जानल जाइत अछि जे माया बाबू बालकाल से प्रौढ़ाकाल धरि मातृक सुपौल मे मामाक सान्निध्य मे बीतल छलन्हि। हिनक पहिल रचना गल्प के रूप मे आयल जे स्कूलक पत्रिका मे 'हम रेल देखब' शीर्षक सं छपलन्हि 1949 मे। हिनक एकटा 1950 मे गीत *बुढ़बा* मिथिला मिहिर मे छपल छल। पढ़ाईक बाद पहिल-पहिल ई आकाशवाणी पटना मे सांझुक चौपाल कार्यक्रम केर एकटा पात्र छलाह। हमरा जनैत छुटर भाइक नाम से जानल जाइत छलाह जे निछछ देहाती पात्रक रूप मे गाम घर टोल टापर केर समस्या किसानक बात आदि रखबाक एक अद्भुत कला कौशल के परिचय द' ख्यात भेलाह। सांझक पहर साढ़े सात बजे केर प्रादेशिक समाचारसं पहिने चौपाल कार्यक्रम होइत छल। सायंत एखनो होइत अछि, लोक चौपालक पात्र मुखिया जी आनि मुहलग्गू पात्र छुटर भायके गप सुनवाक लेल लोक रेडियो खोलैत छलाह। ओहि समय रेडियो रूपक अनेको रचना मायाबाबू केलनि, एकटा रेडियो नाटक हिनक खूब ख्याति पौलक ओ नाटक छल 'एके बापक बेटा'। मैथिली कथा साहित्य कें एक ऊंचाई तक बल जेबा मे माया बाबूक स्थान राजकमल आ ललित संग

त्रिमूर्तिक रूप मे अबैत अछि। युवावस्था मे मधुर स्वर सं कीर्तन मंडलीक बीच गीत कीर्तन गाबि भक्त लोक कें अपन कीर्तन सं भाव विभोर क' दैत छलाह। संगहि संस्करण रूप मे सेहो विख्यात भेलाह। बाद मे जखन राजकमल केर साथ के सान्निध्य सामीप्य मे एलाह तं गम्भीर रचना दिश अग्रसर भेलाह। हिनक लिखल बात अनेको उपन्यास कविता संगह, गद्य, गल्प, कथा नाटक आदि प्रकाशित आ पुरस्कृत अछि। एखन धरि किछु अप्रकाशित सेहो छन्हि। प्रकाशित पोथीक श्रृंखला देखल जाऊ–

'भांगक लोटा' कथा संग्रह जे 1951 मे प्रकाशित भेल छल। 'आगि मोम पाथर' कथा संग्रह 1961 मे आयल। तं कथा संग्रह 'चन्द्रबिन्दु' 1983 मे 'अभिनन्दन' कथा संग्रह प्रकाशित छन्हि मैथिली अकादमी पटना सं। 'दिशांतर' कविता संग्रह आयल 1965 मे तं तकरा बाद कविता संग्रह आयल 'आवान्तर'। 'बिहारि पात पाथर' उपन्यास 1960 मे। 'मंत्रपुत्र' नाम उपन्यास पुरस्कृत भेल 1988 मे साहित्य अकादमी दिल्ली सं। खोता आ चिड़ै इहो 1988 मे आयल तं क्रमश: पुन: चारि गोट उपन्यास सेहो आयल यथा– 'प्रथम शैल पुत्री च' ई ऐतिहासिक उपन्यास थीक, दोसर 'पुरोहित', 'तेसर', 'स्त्रीधन' चारिम 'सूर्यास्त' नामक उपन्यास एहि उपन्यास मे अंग्रेज एवं भारतीयक बीच एकटा नवीन संबंध अंकुरित होइत अछि। एकटा अंग्रेजी कन्या भारतीय युवकक प्रेमपाश मे आबद्ध भ' जाइत अछि स्थिति एहने अछि जे शासक अंग्रेज आ शासित भारतीय के बीच मे अंग्रेजी शासनक अंत भ' रहल अछि एहि परिस्थितिकें प्रतीक रूप मे प्रस्तुत कयल गेल अछि आ तें एहि पोथीक नामकरण सूर्यास्तक राखल गेल अछि। ई उपन्यास एक अलग उपन्यास श्रेणी मे अबैत अछि। ई उपन्यास मैथिली उपन्यासक बीच कथानक ल' के एकटा उपलब्धि मानल जा सकैत अछि।

'अंकथकथा' नामक पोथी हिनक स्मरण थीक। तं पुन: मैथिली साहित्य अकादमी सं प्रकाशित पोथी 'मैथिली साहित्यक इतिहास' हिनका मरणोपरांत छपल जे मैथिली साहित्यक इतिहास मध्य एक विशिष्ट स्थान राखि रहल अछि।

तकरा बाद किछु अप्रकाशित अथवा प्रकाशनाधीन किछु पोथीक परिगणना सेहो करी जेना– 'माटिक लोक' एवं 'ठकनी' नाम पुस्तक इहो दोनो टा उपन्यास थीक। 'बुहक पुनरर्मुल्यांकन' ई अन्वेषण थीक। हिन्दी मे सेहो हिनक किछु पुस्तक प्रकाशित अछि जेना 'माटिक लोक: सोने की नैया' ई पोथी हिनक राजकमल प्रकाशन सं प्रकाशित अछि। एकटा अन्वेषण छनि पोथीक रूप मे हिन्दी मे भारतीय परम्परा की भूमिका एहि तरहे दू दर्जन सं ऊपर पोथीक प्रणेता प्रो. मायानन्द मिश्र एक अप्रतिम प्रतिभावान व्यक्तित्व छथि।

मैथिली नव कविताक उद्‌भव विकासक क्रम मे जतेक कवि भेलाह जाहि मे मायानन्द मिश्र अपन अक्षुण स्थान रखैत छथि। एहिठाम हिनक नव कविता कें उदाहरण रूप मे राखल जा सकैत अछि। यथा–

अहांक रोपल लताम आब फरय लागि गेल

पैघ–पैघ आ डम्हैल–डम्हैल,<br>
बाछीकें ता एकटा नेरुओ भेलै।<br>
मुदा नहि जानि विवशताक कोन<br>
सौतिन अहांकें घेरने अछि।

ई कविता अप्रैल 1961 मे मिथिला मिहिर मे छपल छलन्हि। युगक विषमता पर हिनक एकटा कविता द्रष्टव्य अछि–

कर्णक कबच कुण्डल जकां<br>
हम अपन सम्पूर्ण भोगाकांक्षा<br>
परिस्थिति–विप्रकें दान द' देल<br>
हमर बाप द्रोणाचार्य नहि रहथि<br>
तथापि हम अश्वस्थामा छी<br>
वंचना हमर माय थिकि<br>
जे कुण्ठाक दूध घोरि रहलि अछि

भोगल यथार्थक समक्ष प्राचीन धारण एकहि बेर तं नहि मुदा नहुए–नहुए गति सं ढनमनाय लागल। कारण, कवि कहैत छथि–

मुंह मे एखनहुं पड़ल छै अधचिवाओल हरित,

कोमल, आस्था केर शस्य, कानमे एखनहुं गुंजै छे तानसेनक गीत

कण्व दुहिताकप्रीत, ई कविता दिशांतर नामक पोथी मे अछि।

हिनक नव कविता पर फ्रायडीय विचारधारक प्रभाव सेहो बेश परल अछि। नवीन प्रेम काव्य मे हिनक यौन–भावनाक उद्धाम चित्रण देखू – बंगाल सं एक वर्षक बाद पति आयल छन्हि, तनिक दमित काम–भावनाकें सन्तुष्ट करबाक प्रवृति देखाओल गेल अछि यथा–

''चानक आ लहरिक मनोरथ<br>
ल' रहल अछि एखन भोगाकार<br>
वर्ष दिन पर बंगाल सं आयल पति सं<br>
इच्छित ललिचाय।<br>
आ' अकुलैत कामिनीक मोन सं।

आचार्य प्रो. रमानाथ झा हिनका लेल कहल जे मायानन्द मिश्र मैथिलीक सुप्रसिद्ध कवि छथि। मैथिलीक बहुविध सेवा क' रहल छथि मुदा हिनक ख्याति भेल नवीन गीत लए, जाहि मे ओ कल्पना, ललित्य एवं भाषाक माधुर्य सरस मणिकांचन संयोग देखौने छथि।

डॉ. भीमनाथ झा कहैत छथि हिनका विषयमे जे– ''हिनक कविता शिल्प–शैली आ भाव–बोधमे परिवर्तन अवश्य भ' गेल, किन्तु ताहि सं भाषाक कोमलता चित्त कें आह्लादित करबाक विशेषता तथा संप्रेषणक सहजता कतेको बाधित नहि भेल 1960 ई. मे अभिव्यंजनाक प्रकाशनक प्रश्चात् ई गीत रचनासं अंशत: बिमुख भ' प्रयोगवादी नव–कविताक प्रणयन मे प्रवृत्त ओ दत्तचित्त छलाह।

बहुमुखी प्रभावान मायाबाबूक अनेको कथा जे अनेको पुस्तक मे संग्रहित अछि, जकर कथानक मायाबाबूक विशाल साहित्य हृदयाकाश के देखि बर्तमानक लोक अचंभित होइत रहैत छथि। मैथिली अकादमी सं प्रकाशित कथा–सरिता मे हिनक एकटा शीर्षक अछि, ''रंग उड़ल मुरुत'' जकर पात्र परंपरागत माटिक खेलौना ल' वर्तमान बजार सं लौट पश्चात्य प्लास्टिक केर मूरुत लग हीन भावना सं ग्रसित भ' कोना दुखित छथि, तकर चित्रण सं हिनक कोमल हृदय मे अपन माटि–पानि, संस्कार–संस्कृति, अपन भाषा–व्यवहार लेल कतेक उच्च आदर्शवादी छलाह तकर परिचय दैत अछि।

अंतत: मायानन्द मिश्र स्थूल शरीर के संग अपन स्थाई कृति कें छोड़ि सूक्ष्म शरीर कें संस्कारक संग लौकिक लीला के पटाक्षेप करैत 13 अगस्त 2013 कें एहि संसार से विदा भ' गेलाह। ■

# अप्रतिम प्रतिभाक मातवर प्रवासीजी

✍ रमाकान्त राय 'रमा'



सेवानिवृत्त शिक्षक। मैथिली साहित्य संस्कृति विकास परिषद, समस्तीपुरक सचिव। पहिल कविता 1965 ई. मे 'बटुक' मे छपल। दू वर्षक अभ्यन्तरे ओही पत्रिकामे टालस्टायक अनुदित एकटा कथा 'तीनिटा बाबाजी' छपल। पांचटा मौलिक, तीनटा अनुदित आ दूटा सम्पादित कृति प्रकाशित। आधा दर्जनसं बेसी रचना प्रकाशन हेतु तैयार अछि, जाहिमे बाल-कथा संग्रहसं लऽकऽ गवेषणात्मक रचना सभ अछि।

**सम्पर्क:**

*श्री रमा निवास, मानाराय टोल, पोस्ट: नरहन, जिला: समस्तीपुर, पिन: 848211,*

*मो0 9430441706/8051788976,*

*ईमेल :* ramakantrama35@gmail.com

महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी (01.07.1942-13.06. 2010) पछिला शताब्दीक सातम दशकक प्रायः दोसर तेसर वर्षसं साहित्य जगतमे प्रवेश कयलनि। पहिने ओ राष्ट्रभाषा हिन्दीमे लिखैत छलाह। बादमे ओ अपन मातृभाषा मैथिली दिस उन्मुख भेलाह। हुनक प्रकाशित पहिल काव्यकृति 'शंखध्वनि' हिन्दीए कविताक संकलन अछि।

आरम्भेसं साहित्यिक अभिरूचि रहबाक कारण ओ आजीविकाक हेतु सेहो साहित्यिक क्षेत्रकें चुनलनि। सर्वप्रथम ओ 1964-65 ई.मे रांचीसं प्रकाशित एकटा हिन्दी साप्ताहिक पत्रिकाक सम्पादकक रूप में कार्य कयलनि। युवावस्थाक जोश आ समाजमे बढ़ैत भ्रष्टाचार, भाइ- भतीजाबाद आदिक विरोधमे 1967 ई.मे अपन गृह क्षेत्र समस्तीपुरसं बिहार विधान सभाक चुनाव सेहो भाजपाक पूर्व राजनेतिक एकांश, जनसंघ पार्टीसं लड़लनि मुदा पराजित भ' गेलाह। ओहिबेर पहिले-पहिल गठित गैरकॉग्रसी आ संयुक्त विधायक दलक सरकारक एकटा मंत्रीक निजी सहायकक रूपमे रहि पार्टी आ जनताक सेवा कयलनि। पश्चात् तत्कालीन बिहार (अखनुक झारखंड सहित) क सभसं प्रमुख हिन्दी दैनिक 'आर्यावर्त'क उपसंपादक नियुक्त भेलाह आ जखनहिं ओ आजीविका सम्बन्धी चिन्तासं मुक्त भेलाह, तखनहिंसं पूर्ण तत्परता आ मनोयोगसं मैथिली आ हिन्दी साहित्यक सेवामे दत्तचित् भ' गेलाह। शीघ्रे हुनका साहित्य- साधनामे गत्वरता आ प्रौढ़ता आयल। एहि अवधिमे मैथिली आ हिन्दीक सम्पूर्ण देश भरिक मंचक ओ एकटा सुकंठ कविक रूपमे अर्चित-चर्चित भ' गेलाह। स्फुट रचनाक अतिरिक्त ओ 'मैथिली अकादेमी, बिहार, पटनाक अनुबन्धपर अत्यन्त अल्पावधिमे 'अगस्त्यायनी' महाकाव्य लिखि अपन अप्रतिम-प्रतिभाक प्रदर्शन कयने छलाह। जेना कि सर्व विदित आ प्रायः सर्वमान्य अछि जे महाकाव्यक लेखन लेल उच्च प्रौढावस्था आ अधिक समयक अपेक्षा होइत छैक, जखन लोक जीवनक उतार-चढ़ाव, हानि-लाभ, हित-अहित, मित्र-शत्रु इत्यादिक संग-संग दुनियादारीक सभटा अनुभव प्राप्त क' चुकल रहैत अछि। मुदा प्रवासीजी अपन अल्पे वयस 36-37 वर्षक अवस्थामे 'अगस्त्यायनी' सन भरिगर आ गम्भीर महाकाव्य लिखिक' एकटा नव मानदण्ड स्थापित कयलनि जे एखन धरि विरले कोनो भारतीय भाषामे भेल होयत। कालान्तरमे ई महाकाव्य भारत सरकारक स्वायत्तशासी संस्था 'साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली'सं 1981 ई.मे पुरस्कृत भ' मैथिली काव्य साहित्यकें चमत्कृत कयलक।

एहूठाम हिनका संग एकटा अजगुत भेल। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष प्रायः 22 भाषाक सर्वश्रेष्ठ रचनाकेंपुरस्कृत कयल जाइत अछि। सन् 1981 धरि अकादेमीक इहिासमे प्रवासीजी पहिल पुरस्कृत साहित्यकार छलाह जे मात्र 39 वर्षक अवस्थामे ई पुरस्कार प्राप्तक' नव इतिहास रचलनि।

प्रवासीजीमे अप्रतिम प्रतिभा छलनि। ओ गद्य-पद्य, कथा ओ निबंध, हास्य-व्यंग्य आ गम्भीर विषय, सभ विधापर अपन लेखनीक तीक्ष्ण तीर चलौलनि आ लक्ष्य बेधिक' लोककें चमत्कृत करैत रहलाह। दैनिक 'आर्यावर्त'क अनमोल दैनिक हास्य-व्यंग्य स्तम्भ 'चुटकुलानन्द जी की चिट्ठी' एवं मैथिली साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क स्तम्भ 'झामलालक झामा' हिनके तरकसक वाण छल जाहिसं कोन नेता, अभिनेता, भ्रष्ट-रूष्ट, अफसर-कर्मचारीक कुकृत्यक विरूद्ध लक्ष्यवेध नहि भेल होयत!

ओ 'अभियान' शीर्षक उपन्यास लिखलनि, जे धारावाहिक रूपें 'मिथिला मिहिर'मे छपल छल। एहि उपन्यासमे वर्तमान समयक राष्ट्र आ राज्यक एकटा ज्वलंत समस्या 'भ्रष्टाचार'कें जाहि कुशलताक संग उठाक' ओकर सर्वमान्य समाधान कयलनि अछि, से उल्लेखनीय तँ अछिए, क्षण-प्रतिक्षणक बदलैत राजनैतिक आ सामाजिक परिवेशमे एहि प्रकारक रचनाक

महत्वपूर्ण सेहो असंदिग्ध रूपें सिद्ध अछि।

'हम कालिदास' हुनक उत्तम पुरुषमे लिखल उपन्यास अछि। इहो उपन्यास धारावाहिके रूपमे 'मिथिला मिहिर'मे छपल छनि। एकटा महाकवि अपन अतिवृद्ध अग्रजक मन:स्थितिकें नीक जकां अँजिक' ओकरा हुनक शब्दमे बान्हिक' जे मूर्तरूप देने छथि-से तँ अछिए, मुदा एहि मध्यक समय-साल, स्थिति-परिस्थिति, शासन-प्रशासन, प्रकृति-पुरुष, रीति- रेवाज, विध-व्यवहार आदिक जे एकटा पैघ अन्तराल प्रवासीजी आ कालिदासक मध्य रहल अछि, एकरा ओ जाहि मनोयोगसं सूक्ष्मसं अति सूक्ष्म अनुभूतिक माध्यमे अभिव्यक्त कयने छथि, जाहिसं लोककें एहि दूनू महाकविक मध्य कोनो विशेष अन्तराल दृष्टिगोचर नहि भ' पबैत अछि।

महाकवि मार्कण्डेय प्रवासीक अन्तिम प्रकाशित कृति थिक-'हम भेटब।' एकर प्रकाशन आइसं 14 -15 वर्ष पूर्व 2004 ई.मे भेल छल। 'अगस्त्यायनी' आ एहि काव्य-कृतिक प्रकाशनक मध्य प्राय: 20-22 वर्षक अवधिमे प्रवासीजी प्रणीत प्रमुख गीत रचना एहि पुस्तकमे संग्रहीत अछि। एहि पुस्तकक एक-एकटा गीतमे 'अगस्त्यायनी' जकां जीवनक अनुभूत सत्यक नीक जकां आरेखन भेल अछि। आ होउको कियेक नहि? 'प्रवसीक सन्यासी मन अपन रचना सभकें एकठाम लिपिबद्धक' तथा उतारिक' सुरक्षित राखब सेहो छोड़ि देलक आ एकटा कठिन प्रयोग करैत रहल जे हमर कृति अपन सामर्थ्यक बलपर जीबैछ कि अकाल मृत्युक शिकार भ' जाइछ।' (हम भेटब, भूमिका, पृष्ठ-7)।

कोनो नव कवि-कलाकार जड़ि पकड़बा, स्थापित होयबासं ठीक पूर्व किछु दिन इतस्तत: करैत अछि आ पुन: एकटा नीक स्थायी पथारूढ़ भ' जीवनमे आगां बढैत अछि। प्रवासीजी सेहो एकर अपवाद नहि छलाह। ओ किछु दिन धरि 'तदर्थवाद'क कविक रूपमे अपनाकें स्थापित करबाक प्रयत्न अवश्य कयने छलाह मुदा अन्तत: ओ अपनाकें गीतकार, नव गीतकारक रूपमे सुस्थापित कयलनि-'मिथिलामे आइयो कविक अर्थे होइछ गीतकार।' एतबे नहि, ओ तँ कहैत छथि-'गीतेटा भारतीय काव्यक मूल प्रवृत्ति अछि। गीतक साफ अर्थ होइछ गेय कविता। अर्थात् श्रुति एवं स्मृति योग्य कविता किंवा ऋचा।' (तत्रैव।)

महाकवि प्रवासीजीक अपन एकटा आर नव मान्यता छलनि जे अरबी-फारसी-उर्दूक गजल छन्दपर विद्यापतिक गीतक स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइत अछि। हुनक दृढ़ विश्वास छलनि जे 'ओ दिन शीघ्रे अयबाक चाही जहिया कोनो विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग अरबी-फारसी-उर्दूक गजल छन्दपर विद्यापतिक गीतक प्रभाव विषयपर शोधकार्य पी.एच.डी. अथवा डी.लिट् केर उपाधि हेतु कराओत।' (तत्रैव।)

प्रवासीजी सतत गीत काव्यक रचना आ उकयन हेतु तत्पर रहलाह। ओ अपन महाकाव्य 'अगस्तयायनी'मे सेहो गीतकाव्यक मर्यादाक सतत रक्षा करैत सन प्रतीत होइत छथि।

प्रवासीजीक गीत सभमे जीवनक विभिक आयामक एकटा नव स्वरूप, नव छवि-छटा भेटैत अछि। जत' फूलक रूप-लावण्य सम्पूर्ण संसारकें सम्मोहित-आकर्षित एवं मदमत्त करैत अछि ओतहिं ओ कांटोक चुभनमे सुरभिक अनुभव करैत छथि-

''नामपर अहांक बसातो किछु ठमकै छल-<br>फूल तँ फूले, कांटो किछु गमकै छल।।''<br>(तत्रैव।)

''सभठां छै कांट, खजूरबक्का छै सभठां,<br>तैयो हो चान कतहु बिलम' आ बैसख।।''<br>(तत्रैव।)

मार्कण्डेय प्रवासी माने एहन गीतकार जे आपाद-मस्तकके नहि, आधरती-आकाश गीतकार छलाह। गीते हुनक चास-वास, घर-दुआरि, दशा-दिशा, स्थिति-परिस्थिति सभ किछु छलनि। तें ओ निर्धोख भ' घोषणा कयने छथि-

''गीते अछि वास भूमि, चास भूमि हमर,<br>शेष किछु अछिए नहि, लाथ की करब?''<br>(तत्रैव।)

आर जे किछु होअय, मुदा हुनकामे अदम्य जिजीबिषा छलनि। हुनका अपन आत्मबल आ पौरुषपर दृढ विश्वास छलनि। हुनक दृढ़ आस्था छलनि अपन कर्मपर आ तें ओ मृत्युओकें टिटकारी दैत दूर खहेटैत कहि उठैत छथि-

''प्राणघटमे अछि अमृत रस शेष<br>मृत्यु ! दूर, सूदूर रहिहें रे।।''<br>(तत्रैव।)

एम्हा आबिक' हुनका सम्पूर्ण संसारसं वितृष्णा भ' गेल छलनि। पग-पगपर अविश्वास, स्वार्थ लिप्सा, मिथ्या भाषण इत्यादिसं त्रस्त छलाह। हुनका बुझाइत छलनि जेना कूपेमे भांग घोरा गेल होइक, दुनियांक सम्पूर्ण वातावरणे प्रदूषित भ' गेल होइक। एहने कुसमयकें अकानि ओ अपनाकें अपने धरि सीमित राख' चाहैत छलाह। मुदा ओ तँ सभ दिन दीन-दुनियांकें अपन गीत-लहरीसं जे आप्लावित करैत रहलाह, से ओ चुप कोना रहि सकैत छथि? आ तें कुंठित जकां कहि उठैत छथि-'की बाजू!'

''सौसे गाम बताह लगैए, की बाजू!<br>ओझा वैद कटाह लगैए, की बाजू!<br>भ' रहलैए कदाचार सगरो विजयी,<br>हारलसन उत्साह लगैए, की बाजू!!''<br>(तत्रैव।)

मुदा, हा हन्त! हन्त! क्रूर-काल हुनक आत्म विश्वासकें धोखा देलकनि! हुनक नियारल कर्म-धर्म, चास पूर्ण नहि होम' देलकनि! एहि एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक पूर्वाह्नेमे 13 मइ 20110 कें ओ अकालहिं कालकवलित भ' गेलाह!!

मुदा नहि, ओ तँ पहिनहिं कहि गेल छथि-हम भेटब! मुदा ओ भेटताह कतख? ई के कहि सकैत अछि? जे आजीवन प्रवासी रहलाह, हुनक पता-ठेकान कोना ज्ञात होयत? आन के कहि सकैत अछि हुनक भेटबाक स्थान? तें ओ अपनहिं पहिनहिं टीपि गेल छथि-'हम भेटब, तिलकोर जकां चतरल साहित्यक टाटपर!!'

जे जिनगी भरि साहित्यक चास-वासकें तामैत-कोड़ैत रहलाह, अपन शोणितसं गीतकें पटबैत रहलाह, ओ आनठाम कत' भेटताह!! ओ बड़ थोड़ शब्दमे अंतहीन व्यथाक अभिव्यक्ति दैत कहैत छथि-

''जहिया-जहिया हृदयहीनता<br>खटकत मोनक बाटपर!<br>हम भेटब, इतिहास नदीकेर<br>चिक्कन-चुनमुन घाटपर!!''<br>(तत्रैव।)

महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी आब 'इतिहास' भ' चुकल छथि, तें ओ आब सहज प्रवाहित काव्य - सुरसरिताक चिक्कन-चुनमुन घाटपर'क वासी छथि। सादर, वन्दन-नमन!! ■

# अध्ययन छलनि जिनक जीवन
# डॉ. नित्यानंद लाल दास

✍ कंचन कंठ



स्व. डॉ. नित्यानंद लाल दासक पुत्री कंचन कंठ मैथिलीमे नियमित रूप सं गद्य-पद्य लिखैत छथि। सिंधी कढ़ाई मे मिथिलाक्षरक प्रयोग कला क्षेत्र मे हिनक विशेष पहिचान थिक।



हुनका बारे मे कतेको गप अछि जे आश्चर्यचकित करैए हमरा! जीवन मे सभ काज समय पर करबाक हुनकर व्यक्तित्वक खासियत छलैन्ह। सभ दिन सूर्योदय सं पूर्व उठि योग-ध्यान,चिड़ियां सभके दाना देनाय, विद्यार्थी सभकें शिक्षा देब, लेखनी, डायरी, परिवारक संग समय पर भोजन, अतिथि सभक सत्कारमे जी-जान लगा देब, सांझमे टार्च ल के टहलै के संग शहरक गतिविधि सभक जानकारी रखनाय कखनो नहि बिसरैत छलैथ।

नौकरी अछैत अपन सभटा जिम्मेदारी पूर्ण क' सेवानिवृत्ति के सांझमे मांसाहार तियागि एकरुपसं वानप्रस्थ जीवनक ओर अग्रसर होयबाक संकेत द' देलैथ!

संगठन के ठाढ़ करबामे हुनकर कोनो सानी नहि छलैन्ह। किछु दिन शुरुआत मे ओ बाबूबरही कॉलेज मे पढ़ेलैन्ह। मुदा किछुए दिनमे हुनकर पोस्टिंग फारबिसगंज कॉलेज भ' गेलैन्ह। जखन ओ एतय एलाह त' सभ सुन्न-सपाट देखि किछु बुझबे नहि केलाह कि जखन शहर छै त', एहन मुर्दनी कियैक लागल अछि। कि कोनो दुर्घटना भ' गेल वा कोनो अनिष्टक आशंका अछि कि मरघट जेहेन शांति अछि! एकाध गोटेसं पुछलाह त' पता चलल कि एतय एखन मेला लागल अछि, जाहिमे संपूर्ण शहरक सभटा दर-दोकान उठिकय गेल अछि। जौं सुधीजन के ध्यान हेतैन्ह कि राजकपूर एकटा सिनेमा बनेने छलैथ "तीसरी कसम" जे एहि मेला पर आधारित सिनेमा छल।

पापा कॉलेज ज्वाइन केलाह त' ओ मात्र पांच साल पुरान कॉलेज छल; ने पूरा बिल्डिंग बनल छल, ने सभ विषयक प्राध्यापक छलैथ। एतेक तक कि कॉलेज के वास्ते जमीनो नहि भेटल छल। ओ पूरा जी-जान सं ओहि लेल जुटि गेलाह। ओतय के जमींदार सं भेंट कर हुनका आश्वस्त कयलनि कि ई जमीन ओ एकटा बरका उद्देश्य लेल द' रहल छथि; जे ओहि समाजक कल्याण लेल अतिआवश्यक अछि। नहि त' सरकारी उपेक्षाक शिकार बिहार आ ओहूमे सुदूर ई क्षेत्रक बच्चा सभ त' आगू कोना पढ़त!कतेक मां-बाप बच्चा सभके बाहर भेजि पढ़ा सकैत छथि?

आ बिना डिग्री के की करत अहांके भावी पीढ़ी; कोन सपना ओकर सभक आंखिमे रहत! त' ओ जमींदार कॉलेज लेल पर्याप्त जमीन देबा लेल तैयार भेलाह। आब ओतय कतेको लोकक बच्चा मैट्रिक क' क' दोकानदौरी पर बैसल करैथ, अधिकतर मारवाड़ी समाजक। ओहि समाजमे त' ऐहनो धारणा छल कि बेसी पढ़य के कोन जरुरत "जब गल्लो पर ही बैठनो है।"



**डॉ. एन एल दास**
(10.11.1938-23.6.2014)

**सम्पर्क:**
*कंचन अरविन्द कंठ, ए-201, श्रीजी एन्कलेव, ग्रीन फिंगर स्कूल क' सोझां शिप चौक, प्लॉट नं. एन-18, सेक्टर-13, खरहार, नवी मुंबई-410210*
*ईमेल : kanchank1092@gmail.com*

फेर हुनका सभके कॉलेज तक पहुंचेलैन्ह। आब समस्या छल कि मैथिली विषयके त' प्राध्यापक छथिये नहि, विद्यार्थी के कोना पढ़ायल जाय! तखन ओ ओहो जिम्मेदारी लेलनि आ कमालक' गप त' ई कि ओहि मैथिली विषय मे ओ बच्चा सभ डिस्टिंक्शन ल' पास भेल। एहि तरहे ओहि कॉलेज के स्थापित कयल।

एक बेरि पेपर करेक्शन लेल हिनका मातहत एकगोट प्राध्यापक के नियुक्त कयल गेल। ओ बेचारे के कॉपी चेक करबाक पहिल अवसर छलैन्ह। एकदम कपचि कय मार्क्स देलाह आ पापा के देखेलखिन्ह त' पापा समझेलखिन्ह कि "औ बाबू, अंग्रेजी पहिनहि ऑप्शनल लैंग्वेज भ' गेल अछि, तखन जे ग्रमैटिकली करेक्ट अछि ओहिमे मार्क्स कोना कम करब।'' ओ किछु आर लॉट ल' क' चल गेलाह। कनिये काल मे बड़ा बाबू दौड़ल एलाह, "सर अपने हुनका कि कहि देलियैन्ह, हुनका त' बीपी लो भ' गेलैन्ह।''

जखन महिला कॉलेज खोलल गेल त' ट्रस्टी सभ शिक्षक सबके अपील केलखिन्ह कि नव नियुक्ति होय ताबत अहां सभ सहयोग दिय त' सहर्ष तैयार भ' गेलाह। ओ सभ प्रस्ताव रखलखिन जे चुंकि एखन त' सभ काज शुरूये भेल अछि त' अहां सभके प्रतिदान त' नहि कय सकब मुदा कम-सं-कम आब'-जाए के पाई लेल जाऊ।'' ओ साफ कहि देलैथ कि हम पैदले अबैत छी आ मनाक' देलैन्ह। आ पूरा स्थापित होबय तक अपन सहयोग दैत रहलाह।

कतेको इंस्टीट्यूट सभ बजबैत रहनि कोचिंग मे पढ़ाऊ, मुदा हुनकर मान्यता छल कि "विद्याके ब्योपार'' नहि हेबाक चाही। प्राथमिक शिक्षा के दुर्दशा देखि मोन विगलित भ' गेलैन्ह त' "सरस्वती शिशु मंदिर'' के स्थापना कयलन्हि जे कालांतर मे हायर सेकंडरी "विद्या मंदिर'' तक बढ़ैत गेल आ ओहि क्षेत्र के बच्चा सभके मजबूत आधार प्रदान क' रहल अछि।

अपन नामक अनुरुपे विनोदप्रियता ओ प्रत्युतपन्नमतित्वक धनी छलाह। एकटा पड़ोसी प्रोफेसरक पुत्र के लेखन मे रूचि जागृत भेल त' ओ किछु-किछु लिख कय पापासं करेक्शन लेल आबि जायत छलाह। किछु दिन मे ओ नीक लिखल लागल छलाह। एक दिन ओ अपन कविता सुनबैत छल कि सायकोलॉजी के प्रोफेसर साहब भेंट करय पहुंचलाह, त' पापा ओकर परिचय करेलखिन्ह। प्रोफेसर साहब आश्चर्यसं बजलाह "ऐं तुम सिंह जी के लड़के हो!!'' एहिपर पापा हंसैत बजलाह ,"इतना आश्चर्य क्यूं, प्रह्लाद भी तो हिरण्यकश्यप के घर ही हुआ था।'' एहिना गाम गेल छलैथ विवाहमे, जून मासक विवाह एकदम सं सिंदूर दानक समय मे बिहाड़ि उठि गेल।

**जखन चारिम पुत्री के जन्म भेल छलन्हि त' एकटा मित्र बड्ड दुखी ओ परेशान भ' गेलाह, त' प्रिंसिपल हुनका बजाकय पुछलखिन्ह त' ओ अफसोस करय लगलाह त' प्रिंसिपल ठहाका लगबैत कहलखिन्ह, "अहां दुखी भेल छी आ ओ छठिहारक भोज क' रहल छथि।''**

बड्ड बरका आंगन छल त' मड़वा पर जते लोक छलाह ओतबे रहि गेलाह। आन लोकसभ घरमे शरण लेलैन्हि। अन्हरिया राति किछु सुझाय नहि,कहुनाकय एकटा पेट्रोमैक्सक इंतजाम भेल। आब मड़वा पर वर-वधूक अतिरिक्त मात्र दु - चारि गोटे रहि गेलाह। तखन भेल कि जल्दी-जल्दी सभ बिध करा देल जाय। सिंदूरदान त' भ' गेल रहै। आब घोघटक बारी छल। बरक पिसा बजलाह "जा-जा बैसक लेल कम्मल कहां अछि, बिना कम्मलके कोना बैसायल जायत घोघट लेल!'' पापा झट दय बजलाह, "नहि यौ हमरा सबके कम्मल नहि धारय छै, पीढ़िये पर बैसाकय घोघट होइत छैक।'' बराती त' चारु खाने चित्त, एहि के आगू कि बजताह! शुभ-शुभ क' विवाह संपन्न भेल। ई बात अलग अछि कि ओ पिसाजी बादोमे ओहि घटना के चर्च कय कहैत छलाह कि "नित्या बाबू हमरा ठकलाह ओ हम ठका गेलहुं।'' एहिना एकबेरि भैया पापा लेल टी-शर्ट ल' एलाह, त' पापा खुशी-खुशी पहिर क' बजार गेलाह। एकगोट मित्र कटाक्ष केलखिन्ह, "श्रीदेवी सं भेंट करय कहिया जा रहल छी!'' ओहो चट दय कहलाह, "नहि नहि श्रीदेवी कहलीह कि मैं आपसे छोटी हूं, तो मैं ही मिलने आऊंगी। एतीह त' अहांके अवश्य बजायब।''

जखन चारिम पुत्री के जन्म भेल छलन्हि त' एकटा मित्र बड्ड दुखी ओ परेशान भ' गेलाह, त' प्रिंसिपल हुनका बजाकय पुछलखिन्ह त' ओ अफसोस करय लगलाह त' प्रिंसिपल ठहाका लगबैत कहलखिन्ह, "अहां दुखी भेल छी आ ओ छठिहारक भोज क' रहल छथि।'' एतबे नहि जखन छोटकी बेटी के सिद्धांत क' बाद जखन वरपक्ष किछु मांग रखलन्हि त' ओ ओहि कथाके ठामहि तोड़ि दोसर ठाम विवाह क'-समाजके स्पष्ट संदेश देलैन्हि कि बेटीक पिता होई सं हम निरीह, निर्बल नहि भ' सकैत छी कि कियो हमरा किम्हरो हांकि दैत आ हम चलि जायब।''

संगहि हुनकर पत्रकारिता, सभा सभ के संबोधन, सामाजिक कार्य; जेना बाढ़ि-राहत, गरीब घरक बेटी सबके विवाह-दान करेनाय,कोनो तरहक समस्यापर किनको सलाह-मशवरा देनाय आदि चलैत रहैत छलन्हि। कहियो हुनका भाषण लिखके तैयारी करैत नहि देखल। जेपी आंदोलन मे जेलो गेलाह। हमर मां संदिखन परछांही जेना संग दैत छलीह। कहियो मुंह मलिन नहि करथि।

सन् 80-81 ई. क' गप अछि, अपन बिहार त' सीमांचल राज्य सेहो अछि; एकटा सीमा नेपाल, त' दोसर बांग्लादेश सं सटल अछि। त ओहि समय मे बांग्लादेशी घुसपैठसं किशनगंज आदि क्षेत्र त्रस्त छल। सरकारी नीति त' वैह ढुलमुल-ढुलमुल। एक त'

बिहार, ताहूमे सीमांचल के सुनत दुखदर्द! पत्र-पत्रिका के माध्यम सं ध्यानाकर्षणक अथक प्रयत्न कयल। तखन ई हालति छल कि हिंदू सभ सार्वजनिक रूपें के कहय; अपन घरोमे पूजा पाठ; शंखनाद करबा सं हदरैत छल। ओहि स्थिति सं उबारक लेल तखन विश्वहिंदू सम्मेलन के प्रस्ताव रखलन्हि भाजपाक प्रदेश अध्यक्षक सामने। जे सुझाव मानल गेल आ किशनगंज मे तीन दिन के महासम्मेलन भेल जाहिमे राजमाता सिंधिया, विजया राजे सिंधिया, लालकृष्ण आडवाणी, अटल बिहारी वाजपेईजी आदि सभाके संबोधित कयल। हम सभ त' छोटे रही। हमरो तीनू बहिनके हुनकर सभक सान्निध्य प्राप्त भेल। ओहि दिन सं क्षेत्रमे हिंदुसभमे बल आयल आ दोसर समुदाय कनि समटा गेल।

फारबिसगंज मे लोकके अपन इतिहासक प्रति जागरूकता आनय लेल "वीर कुंवर सिंह जयंती'' क' शुभारंभ केलैन्हि। ओतय जैन समाज के जोड़य लेल "महावीर जयंती'' के माध्यम सं स्कूल-कॉलेज मे तरह-तरहक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदिक शुरुआत मे प्रमुख भूमिका निभौलैन्हि।

जखन लोक रिटायरमेंट के बाद आराम करैके सोच रखै छथि, तखन ओ सरकारक ध्यान ओहि क्षेत्र के मेनस्ट्रीम सं जोड़यक लेल आकर्षित करबाक लेल धरना-प्रदर्शन केलैन्हि कि बड़ी लाइन माने ब्राडगेज के जोगबनी तक जोड़ल जाए-आ करबाबय के बाद दम धयलन्हि।

देशमे जे अलगाववादक स्थिति छल ताहिसं बड्ड खिन्न रहैत छलाह, आ अपन स्तरसं ओकरा दूर करबाक यथासंभव प्रयत्न करैत छलाह। कलमजीवी छलाह आ ओहि क्षेत्रमे अध्यापनक क्रममे अनुवाद करबामे सिद्धहस्त भ' गेल छलाह।

एकरो एकटा दिलचस्प घटना अछि: हमर सभक एकगोट पितियौत ओतहि सं ग्रेजुएशन केने छलाह, एकबेरि हुनक किछु संगी कहलकैन्ह "हम लोग दास सर की कंप्लेन करनेवाले हैं, तुम भतीजे हो उनके, तो बुरा ना लगे, इसलिए बता रहे हैं।'' भैया कहलखिन "बिल्कुल नहीं, चाचा-भतीजा घर तक हैं, पर शिकायत क्या है यह तो पता चले!'' "अरे, दास जी,तो हमें इंग्लिश टू इंग्लिश पढ़ाते ही नहीं; तो हम तो कमजोर हो जा रहे हैं ना, इंग्लिश में!'' भैया कहलखिन'' वह इंग्लिश टू हिंदी पढ़ाते हैं कि तुम सही से समझ सको, फिर भी इतने बच्चों के खराब मार्क्स होते हैं और तुम्हारी बात पे चलें तो कितने लोग पास होंगे!''

त' ओ कतेको प्रसिद्ध रचना सभके अनुवाद मैथिलीमे केलैन्ह, जाहिमे इंग्लिश टू मैथिली त' छन्हिये, तमिल संत और कवि श्री तिरुवल्लुवर लिखित "तिरुक्कुरल'' सेहो अछि जे ओतय घर-घरमे रामायण जेना पढ़ल जाइत अछि। सामान्यतया देखि त' लागत कि अनुवादक छलाह त' किछु त' अनुवादे करितथि; किंतु सूक्ष्मतासं देखयसं हुनक सोचके पता चलैत अछि कि ओ चाहैत छलाह कि हमर सभक भाषायी अज्ञानता दूर होय। हम सभ भारतेमे बिखरल उत्कृष्ट साहित्यके जानि-पढ़िकय सही मायने मे एकदोसरसं परिचित होई, आपसी सौहार्द्र बढ़य। हम त' पता नहि कतबो लिख ली हमरा त' अंते नहि बुझायत,तथापि सभक समयक ध्यान रखैत आब बस! ■



**पूर्व केंद्रीय मंत्री आ भारतीय जनता पार्टीक कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा संग चर्चा करैत अ.भा.मि. संघक मुख्य संरक्षक आ सांसद प्रभात झा, अध्यक्ष विजय चन्द्र झा, महासचिव विद्यानन्द ठाकुर**

# मिथिलाक विद्या-प्रकर्षक प्रतिमान
# पंडित आनन्द झा न्यायाचार्य

✍ डॉ. ललितेश मिश्र



**बनगांव, सहरसा निवासी ललितेश मिश्र बीएन मंडल विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष ओ संकायाध्यक्ष मानविकीक पद सँ सेवानिवृत्त। 1968 ई मे पहिल कथा प्रकाशित।**
**मैथिली कृतिः प्रस्तावना (समीक्षा संग्रह/2000), बीच वैतरणीमे (कथा-संग्रह/2018)**
**संपादनः आखर अनंत (निबंध संग्रह, मूल कृति ज्योतिषाचार्य पं. बलदेव मिश्र)**

***सम्पर्कः***
*ग्राम+पोस्टः बनगांव,*
*जिलाः सहरसा, बिहारः 852212*
*मोबाइलः 8877999177*
*ईमेल :*
*mishralalitesh@gmail.com*



प्राचीन कालहि सं मिथिला अपन विद्वत्परम्पराक लेल ख्यात् रहल अछि। जनक, याज्ञवल्क्य, मंडन, भवनाथ, वाचस्पति, गंगेश उपाध्याय ओ उदयनाचार्यक ई भूमि सदैव उर्जस्वल रहि न्याय, वैशेषिक दर्शन, ज्योतिष विद्या, गणित ओ साहित्य प्रकर्ष लेल देश-देशांतर ईर्ष्य बनल रहल अछि। ई हर्षक विषय अछि जे अर्वाचीनहु काल खंड मे ओ वैदुष्य परम्परा अनुवर्तमान अछि। सर्वतंत्र स्वतंत्र नैयायिक बच्चा झा, महामहोपाध्याय बालकृष्ण मिश्र, महोमहोपाध्याय चित्रधर मिश्र, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, महामहोपाध्याय जयदेव मिश्र, पंडित बबुआ जी मिश्र, महावैयाकरण दीनबंधु झा, डॉ. सर गंगानाथ झा, ज्योतिषाचार्य पंडित बलदेव मिश्र आदिक उपस्थिति ओ विशेष दृष्टि मंडित कृतित्व ओ व्यक्तित्व आइओ गौरव गाथा बनल अछि आ तनिक यशोगान मिथिला सं बाहरहु अनुगूंजित अछि।

एही गौरवशाली परम्पराक अधीत विद्वान, विद्या-प्रकर्षक प्रतिमान भेलाह अछि पंडित (प्रोफेसर) आनन्द झा, न्यायाचार्य जनिक विलक्षण कृतित्व ओ व्यक्तित्व सं संस्कृत, बंगला, मैथिली साहित्यक अतिरिक्त प्राच्य विद्या आलोकित भेल। मिथिलाक एही विभूतिक जन्म 22 दिसंबर 1914 ईशवीय मे भेल रहनि तथा चौहत्तरि वर्षक वयस मे 16 अगस्त 1988 ई. मे लखनऊ मे रहैत महाप्रयाण कएल। ओ मिथिलाक दरभंगा जिलान्तर्गत सिंहवाड़ा गामक एक गोट नैष्ठिक मैथिल ब्राह्मण परिवारक संतति छलाह।

संस्कृत शिक्षाक परम्परानुसार हुनक प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा गामहि मे भेलनि। पश्चात् ओ काशी जाए उच्च शिक्षा लेल उद्यत भेलाह। ओ शुरुआहि सं मेधावी छलाह आ काशी मे प्रसिद्ध विद्वान फणिभूषण तर्कवागीशक शिष्य बनि शास्त्रक ज्ञान अर्जित कएल। पुनः न्याय शास्त्रक अध्ययन दिस अभिमुख भए विख्यात नैयायिक वामाचरण भट्टाचार्य सं न्याय दर्शन क' शिक्षा प्राप्त कए न्यायाचार्यक उपाधि ग्रहण कएलनि। ई जखन राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, काशीक छात्र छलाह तखन अपन मेधाक आधार पर छात्रवृत्तिओ प्राप्त करैत रहलाह। बाद मे ओ पोस्टाचार्य (एम. फिल) क' डिग्री सेहो प्राप्त कएल।

यद्यपि ओ शुरू मे न्यायशास्त्रहि मुख्य रूपें अध्ययन कएलनि परन्तु तकर उपरान्त समस्त भारतीय दर्शन ओ संस्कृत साहित्य मे अभिनिवेश भए गेलनि तथा एहू विषय सभ मे विशिष्टता प्राप्त कएलनि। अनेक एतदजन्य पुरस्कार, सम्मानोपाधि सं समय-समय पर अलंकृतो कएल गेलाह।

पंडित आनन्द झा, न्यायाचार्य, यथार्थ मे भारतीय प्राच्य विद्याक जीवन्त प्रतिमूर्ति छलाह आ जहिना प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक एल्डस हक्सले कें ब्रिटिश विश्वकोष (इनसाइक्लोपीडिया)क चौबीसो अध्ययन खंडक ज्ञान जिह्वा पर रहैत छलनि तहिना अन्य भारतीय दर्शन ओ संस्कृत साहित्यक 'विश्वकोष'क रूप मे न्यायाचार्य जी जानल जाइत छलाह। 1984 ईशवीय स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर प्राच्य विद्यावेत्ता क' रूप मे देशक राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भेल छलाह। एतद्रिक्त हिनक तीन गोट बेस चर्चित प्रशंसित संस्कृत ग्रंथ- 'पदार्थ शास्त्र, चार्वाक दर्शन ओ आनंदमधुमन्दाकिनी' पृथक-पृथक समय मे सम्मानोपाधिक भागी बनल।

न्यायाचार्य जी विद्या–व्यसनी छलाह आ यावज्जीवन अध्ययन–अध्यापन वृत्तिअहि सं संबद्ध रहलाह। अध्यापन कार्य–सम्पादन हेतु ओ वाराणसी, गोरखपुर, नेपाल, लखनऊक क्रमशः महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालय मे कतोक वर्ष रहलाह आ प्रभूत यशार्जन कएलनि। लखनऊ विश्वविद्यालयक प्राच्य विद्या विभागक अध्यक्ष पद सं सेवानिवृत्तिक पश्चात् दरभंगा स्थित मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट मे अतिथि प्रोफेसरक रूप मे कार्य करए लगलाह। ओ तत्रस्थ अनुसंधान कार्य कें गुणवत्ता ओ गतिमयता प्रदानकए ख्यातिलब्ध भेलाह।

प्रोफेसर आनन्द झा, न्यायाचार्यक प्रतिभा सर्वतोमुखी छलनि। शास्त्राध्ययन ओ साहित्यक मनन केर अतिरिक्त ओ संस्कृत, बंगला, हिंदी, मैथिली भाषा मे कतेको ग्रंथक सम्पादन, अनुवाद ओ प्रणयन कएलनि, जाहि मे 'वेदांत परिभाषा', 'तर्क संग्रह दीपिका', 'चन्द्रावती चरितम्', 'ध्वनि कल्लोलिनी', 'न्याय मंजरी', 'पुनस्समागमः' प्रमुख रूपें उल्लेखनीय अछि।

मैथिली साहित्य मे हुनक 'सीता स्वयंवर' (नाटक) 'प्रबोध चन्द्रोदय नाटक' (अनुवाद), 'रस निर्झरिणी' (काव्य) पोथी प्रकाशित अछि। ओ मैथिली मे 'महर्षि गौतम' ओ 'हरिद्वारक कुंभ ओ परिभ्रमण' सेहो लिखने छथि, परन्तु, से तत्कालीन 'मिथिला मोद' नामक मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित तें भेल धारावाहिक रूपें, मुदा पुस्तकाकार रूप मे कदाचित् नहि आबि सकल। ओ दुई गोट उपन्यासहु लिखने छलाह– 'स्वर्णमंदिर', 'दुरवस्था' – जकर सूचना हुनक प्रकाशित पोथीक अंत मे सन्निहित अछि, मुदा अछि धरि ओ अनुपलब्ध। ओहि पोथी सत्रहिक अस्तित्व मे होएब सेहो आब संदिग्ध अछि।

मैथिली साहित्य मध्य न्यायाचार्य जी लिखित नाटक ओ काव्यग्रंथक विशेष महत्व अछि। हुनक 'सीता स्वयंवर' नाटक 1939–40 ईशवीय मे प्रकाशित भेल छलनि। ओहि काल मैथिली मे आंगुर पर गनबाक योग्य किछुए नाटकक प्रकाशन भेल छल। 'सीता स्वयंवर' यद्यपि वीर रस प्रधान नाटक अछि, परंच, एहि मे श्रृंगार रसहुक परिपूर्णता अछि। तथापि श्रृंगार मे सभतरि निर्मलता अछि। एहि नाटक मे जनक, सीता, राम, रावण, परशुराम ओ लक्ष्मणक चरित्रांकन अछि, मुदा, रामक मर्यादित रूप नहि परिलक्षित होइछ। वस्तुतः जेना कि मैथिलीक प्रसिद्ध रचनाकार, अनुसंधानी ओ आलोचक डॉ. (प्रो.) रामदेव झा विचार व्यक्त कएल अछि, न्यायाचार्य जीक ई नाट्य ग्रंथ छोट–छोट चरित्रहिक संग्रहपुस्तक थिक।

पंडित आनन्द झा, न्यायाचार्यक मैथिली काव्य–रचना 'रस निर्झरिणी' संग्रह स्वरूप मे 1949 ईशवीय मे प्रकाशित भेल छलैक। ताहि काल मे मुक्तक काव्य रचनाक परिपाटी मैथिली काव्य मध्य प्रशस्त छल। न्यायाचार्य जी ओही काव्य रचना–प्रवृत्तिक अनुधावन कएल आ तीन खंड मे वर्गीकृत, यथा, विरह, चेतना, महेश शतक, रत्नकण, 'रसनिर्झरिणी' काव्य संग्रह प्रस्तुत कएल जे बेस प्रशंसित भेल। हुनक एहि काव्य ग्रंथ मे महेश शतक खंड बहुत लोकप्रियता प्राप्त कएलक, कारण एहि मे भगवान शिवक विभिन्न स्वरूप मनोवेधक रूप मे वर्णित–चित्रित भेल अछि।

न्यायाचार्य जी राष्ट्रीय चेतनाजन्य काव्य रचना सेहो बेस परिमाण मे कएल, जे तत्कालीन पत्र–पत्रिका मे प्रकाशित भए चर्चा मे आएल। हुनक तत्समय उद्बोधनात्मक एक गोट काव्य खंड द्रष्टव्य थिकः

"देश उत्थानक बनू प्रतीक
बनि सत्यनिष्ठ ओ विनिर्भीक
फूकू नादक बल शंखनाद
छपि जाय जतय नाना विवाद
देशक गौरव पर राखि ध्यान
करू उदय हेतु नव नव विधान
निश्चय साहस नहि विफल हैत
मां नाथलोक गुण जगल गाओल।"

पंडित आनन्द झा, न्यायाचार्य, बहुविद्यावादी रचनाकार छलाह। उल्लेखनीय विषय इहो अछि जे सभ विद्या मे हुनक गति समाने छलनि। वैदुष्यक अतिरिक्त असाधारण कवित्व प्रतिभा सं समन्वित छलाह।

ओ नाटके अथवा काव्येक सृजन नहि कएलनि, अपितु प्रतिष्ठित गद्यकारो छलाह। मिथिला मोदक लेल निरंतर आलेख प्रस्तुत कएनिहार समादृत लेखक छलाह। हुनक दार्शनिक विषय पर अवलंबित निबंध, यात्रा–संस्मरण, प्रकीर्ण विषयाधारित अन्य लेख सभ हुनक वैदुष्य, ज्ञान गरिमा, परिमार्जित लेखन शैली, विषयक वैविध्य, गंभीर दृष्टिकोणक परिचायक अछि। जीवन पर्यन्त न्यायाचार्य जी मैथिली भाषाप्रेम, मैथिल संस्कृतिक अनुकूल आचार व्यवस्था सं आबद्ध रहलाह तथा स्वाध्याय कें अपन जीवनक परम लक्ष्य मानि वाग्देवीक अनन्य भक्त बनल रहलाह। ■

# अद्वितीय विभूति पंडित बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य

✍ प्रोफेसर आनन्द झा, न्यायाचार्य



**लेखक संस्कृत, मैथिली, बांग्ला आदि भाषाक साहित्य आ प्राच्य विद्याक प्रख्यात विद्वान छलाह। विशेषतः ओ न्यायविद् रूपें प्रसिद्ध भेलाह। हिनक निधन 1988 ई. मे भेल।**



महापंडित बलदेव मिश्र ज्योतिषाचार्य जी हमरा जनैत 'अनन्वय अलंकार'क एक मूर्त रूप छलाह। कारण, हुनक गुण-ग्राम दिस ध्यान गेलापर हुनका सन वैह दृष्टिगोचर होइत छथि। ओ गुरुमुखें प्राय: ज्योतिषशास्त्रेक विशिष्ट अध्ययन कयने छलाह। परंच, स्वाध्यायक बलें भारतीय आ पाश्चात्य दर्शनशास्त्र, भारतीय तंत्र आ भक्ति साहित्य, गणित, इतिहास आ अंग्रेजी साहित्योक सम्यक ज्ञान प्राप्त कयने छलाह। तें ओ आलंकारिक काव्यक स्रष्टा नहि होइतो कवि छलाह, काव्यशास्त्रक निविष्ट ज्ञाता छलाह, प्रतिभाक पूर्ण धनी छलाह।

समय-समय पर जखन ओ विभिन्न दर्शनगत विभिन्न साम्प्रदायिक मतभेदक चर्चा करैत छलाह, तखन हमरा आश्चर्य लगैत छल जे हिनका (पंडित बलदेव मिश्रकें) ईहो सभ विषय कोना एना स्पष्ट रूपें अवगत छनि। हुनक एहि प्रकारक ज्ञान-विस्तारक प्रबल कारण ई छल जे ओ बहुत पैघ स्वाध्यायी छलाह तथा पैघ चिंतक आ लेखक छलाह।

पंडित मिश्रजी अपन अधिकाधिक समयक उपयोग गंभीर शास्त्रीय विषयक मनन आ तकरा विभिन्न स्वायत्त सुंदर भाषामे सुंदर रूपें उपस्थित करबामे करैत छलाह। हमरा काशी मे अपन अध्ययन-कालसं ल' क' प्राथमिक अध्यापन-काल धरि हुनका निकटसं देखबाक सुअवसर प्राप्त भेल। परंच कहियो हुनका व्यर्थ बैसल अथवा अगम्भीर हास-परिहासरत नहि देखलियनि। मनस्वी आ गंभीर अध्ययनशील होयबाक कारणें ओ चाटुकारितासं सदा दूर छलाह। हमरा जनैत हुनक विशिष्ट विद्या आ ज्ञान-वैभवक अनुरूप कोनो विशिष्ट पद पर आसीनताक अवसर हुनका बड़ थोड़ भेटलनि। ताहि दृष्टिएं आजुक भाषामे हुनका एकटा अत्यन्त महान श्रमजीवी विद्वान कहल जायत। परंच तदयुक्त कनेको ग्लानि हुनक मुखमण्डलक पर ककरो कहियो देखबाक अवसर नहि प्राप्त भेल होयतनि। ओना, कैक सम्मानो जे सरकारी अथवा गैरसरकारी छल, समय-समय पर हुनका प्राप्त भेलनि। मुदा, तकरा भगवत्कृपा मानि कोनो टा रेखा अपन जाज्ज्वल्यमान व्यक्तित्वपर कहियो लक्षित नहि होबय देलनि। कतोक वर्ष पूर्व उज्जैन मे आयोजित विश्व संस्कृत साहित्य सम्मेलन मे हुनका 'कालिदास पुरस्कार' (जे संस्कृत साहित्यक सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार थिक) सं अलंकृत कयल गेल छल तथा ओहि सभाक एक दिन ओ सभापतित्वो कयने छलाह। एतबे नहि, ओहि सभामे चारि घंटाक हुनक भाषण कालिदास पर पढ़ल सौष्ठव, प्रांजल आ गरिमामंडित भेल छल, पंडित जवाहर लाल नेहरू तथा महामना पंडित मदन मोहन मालवीयक अतिरिक्त कतेक विशिष्ट व्यक्तित्व तकर भूरि-भूरि प्रशंसा कयने छलाह। इंदौर तथा विजयवाड़ा (मद्रास) मे सेहो जखन ओ भारतीय ज्योतिषक सिद्धांत-पक्षक प्रतिनिधित्व कर' गेल छलाह, तखनो हुनका एहने यश आ सम्मान प्राप्त भेल छलनि। गणित संबंधी ज्ञान-गरिमा तं हुनक एहने तीक्ष्ण विलक्षण छलनि जे जखन अंतरराष्ट्रीय सहयोगसं 'विश्व कैलेंडरक निर्माण भेल, तखन भारतक दिससं पंडित बलदेव मिश्रक गणनामूलक गणितीय योगदान 'स्पेशल रेफरेंस'क रूपमे पठाओल गेल, जे एखनो हमर देशमे सर्वमान्य अछि। ओ 'विश्व कैलेंडर' एखनो प्रकाशित रूपमे विद्यमान अछि।

मिथिला मिहिरक फरवरी 1976 केर प्रथम अंक मे प्रकाशित एही आलेखक पुनर्प्रकाशन पाठक लोकनिक हितमे कयल जा रहल अछि।
– संपादक

पंडितजी अपन बुद्धि परिश्रमे जतबे अर्थक अर्जन करैत छलाह, ताहीसं अपन सभ कार्यक निर्वाह प्रसन्नतासं करैत छलाह। अपन अनुरूप आत्मीय लोकनिकें सुयोग्य शिक्षित बनबैत अपन गामक भूमि सम्पतियोक वृद्धि नीक रूपें कयलनि। एहू सभ दृष्टिएं ओ एक आदर्श विद्वान छलाह। अवकाश प्राप्त कयलाक उपरान्तो भारत वर्षक संस्कृतक आठ महान विद्वानमे सं एक होयबाक कारणे ओ भारत सरकारसं सम्मान स्वरूप 150 टाकाक वित्तीय सहायता प्रति मास मृत्युपर्यंत पबैत रहलाह।

संस्कृतक विशेषतः भारतीय ज्योतिषक विशिष्ट विद्वान होयबाक संगे गणित ओ अंग्रेजी भाषा तथा आकर साहित्यक सेहो नीक ज्ञाता छलाह। तें ओ अतीत भारतीय विशिष्ट संस्कृत विद्वानक विशिष्ट जीवनीक संग विदेशी विशिष्ट विद्वानोक विशिष्ट जीवनीसं पूर्ण परिचित करवाक एतद्विषयक हुनक ज्ञान-परिचय नव-वर्षक अतिरिक्त लेख रूपमे विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल अछि। गणितक क्षेत्र मे हुनक विशद टीका 'भास्करीय बीजगणित' पर हमरालोकनिकें उपलब्ध अछि तथा फराकोसं सरल त्रिकोणमिति, चलन-कलन दीर्घवृत्त ओ आर्यभट्टीयम् सन विद्वत्तापूर्ण दुर्लभ पोथी हुनक लिखल प्राप्त अछि। सारांश ई जे अपन देशक अतिरिक्त विदेशी चिंतनधारासं सेहो ओ नीक जकां अवगत छलाह।

अपन ज्ञान-गरिमाक फलस्वरूप ओ नीक आलोचक तथा स्वस्थ सम्पादक सेहो छलाह। तें किछु दिन वर्णाश्रम स्वराज्य संघ, काशीक मुखपत्र दैनिक ब्राह्मण महासम्मेलन (हिन्दी)क योग्यतापूर्वक सम्पादन कयलनि। अध्यापन कुशलताक संग हुनक प्रशासनिक योग्यताक परिचय लोककें तखन भेटलैक, जखन ओ खुरखुरा संस्कृत महाविद्यालय, गया (बिहार)क प्रिंसिपल छलाह।

मैथिली तं पंडित बलदेव मिश्रजीक मातृभाषे छलनि। मुदा, एकर अतिरिक्तो अंग्रेजी तथा हिन्दियो भाषाक ऊपर हुनक नीक अधिकार छलनि। तें उक्त सभ भाषामे हुनक लेखनी समान रूपें गतिशील छल। हमरा जनैत हुनक सर्वाधिक रचना मैथिलीमे छनि। मैथिली भाषाक संग अपन मैथिल संस्कृतियोपर हुनक बड़ पैघ पकड़ छलनि। तें ताहूपर ओ स्वतंत्र पुस्तक 'संस्कृति' नाम सं रचलनि, जे प्रकाशित अछि।

केवल मिथिलामे चलनिहार पंजी प्रथा (हरिसिंह देवी)क प्रतियो पंडितजी बड़ श्रद्धालु छलाह, तें हुनका अपनो कुलक गौरव कम नहि छलनि। रजौरक राजा टंकनाथ चौधरीसं हिनका नीक संबंध छलनि। एहि प्रकारें कुलीनतासं सम्पृक्त रहबाक कारणें आनो कुलीन मैथिलीक प्रति हिनका आदर दृष्टि रहनि। मैथिल परम्पराक अनुसार अर्चना जगत मे पंडितजी पंचदेवक अर्चक होइतो शैव अधिक छलाह-शिवभक्त अधिक छलाह। प्रतिदिन प्रायः शालीग्राम नर्मदेश्वर आदिक पूजाक अन्तमे कविवर चन्दा झाक 'पूर्व कयल नहि दान आशा अवदानक' इत्यादि आ 'भावुक वकहुल फूल शिवक प्रिय आनिय' इत्यादि नचारी माहेश्वरी गुनगुनाक' गावथि।

उदारशील, विनीत, मितभाषी, सहृदय एवं कर्णप्रिय होयबाक कारणें हुनक व्यक्तित्व प्रखर छल आ अपन परिचितक मध्य आदर-श्रद्धाक पात्र छलाह। मित्रलोकनिक भंडारक अर्थमे ओ धनी छलाह। पंडित मदनमोहन मालवीय, आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ. राजाराम रस्तोगी, डॉ. म.म. गोपीनाथ कविराज, डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. मंगलदेव शास्त्री, प्रकाश, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. म.म. उमेश मिश्र, अमरनाथ झा, कमलापति त्रिपाठी, डॉ. एस.पी. सोहोनी, आइ.सी.एस. श्री एल.पी. सिंह, आईसीएस आदि सन-सन विद्वान, राजनीतिज्ञ, प्रतिष्ठित प्रशासकलोकनि हुनक अति निकट मित्रमेसं छलथिन।

पंडितजी पुस्तक-संग्रही सेहो छलाह। एहनो विभिन्न शास्त्रीय पुस्तक हुनका लग देखल जाइत छल, जकर हुनका लग होयबाक संभावना नहि कयल जा सकैत छल। साहित्यक कार्यमे लागल रहितो सामाजिक कार्यसं ओ विमुख नहि छलाह। अनेक दिन धरि ओ मैथिल विद्वज्जन समिति, काशीक मंत्री छलाह। जाहि समय सहरसा जिला भागलपुर जिलान्तर्गत छल, ताहि समय ओ डिस्ट्रिक्ट बोर्डक सदस्य छलाह। बहुतो दिन धरि संस्कृत कॉलेज पटनाक प्रबंध समितिक सदस्य, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक सिनेटक सदस्य, बिहार राष्ट्रभाषा, पटनाक सदस्य इत्यादिक अतिरिक्त अपन ग्राममे अवस्थित संस्कृतोच्च विद्यालय आ संस्कृत महाविद्यालयक सभापति मृत्युपर्यंत रहल छलाह। ओ जेहने सर्वतोभद्र छलाह, विज्ञ समाज मे हुनक प्रतिष्ठो तदनुरूपे छलनि। मैथिले नहि, मैथिलेत्तरो विद्वान हुनका पूर्ण आदरक दृष्टियें देखैत छलाह।

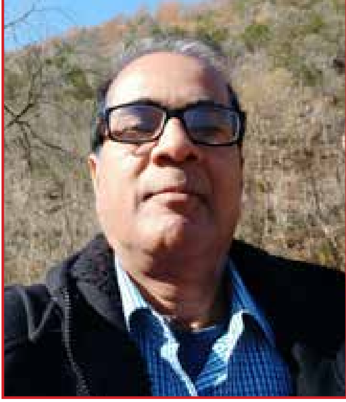
मिथिलाक जनसाधारणमे प्रसिद्ध रूपें प्रयुक्त भेनिहार 'जौतषी पंडित' एहि शब्दपर ध्यान देलासं किछु एहन सामाजिक मनोगतिक पता चलैछ जे मैथिल समाज जेना संस्कृत शिक्षित वर्गकें ज्योतिषी आ पंडित एहि रूपें फराक-फराक दू भागमे विभक्त मानैत आयल हो। सारांश ई जे मैथिल समाज जेना ई धारणा रखैत हो जे पंडित से ज्योतिषी नहि आ जे ज्योतिषी से पंडित नहि। परंच प्रातः संस्मरणीय विद्वान पंडित बलदेव मिश्र अपन विशिष्ट विद्यावैभवें सर्वथा तकर अपवाद छलाह। ओ उच्च कोटिक ज्योतिषी आ उच्च कोटिक विद्वान दुनू एक्के संग छलाह। हुनक संस्मरणकें वृहत रूप देने एकटा पैघ साहित्यक सृष्टि सुलभ भ' सकैछ।

हुनक जन्म 1 नवम्बर 1890 ई. मे सहरसा जिलाक प्रसिद्ध बनगांव ग्राम मे भेल छलनि जे हुनक मातृकुल छल। पटना स्थित काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इंस्टीट्यूट (बिहार रिसर्च सोसाइटी) सं 'डिसाइफरमेंट रिसर्च स्कॉलरक पद सं 1969 ई. मे अवकाश ग्रहण क' 1975 ई. क' 4 फरवरी कें परलोक गमन कयलनि।

संस्कृत ओ गणित विषयक कतोक ग्रंथक रचनाक अतिरिक्त, जाहि मे बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना द्वारा प्रकाशित 'आर्यभट्टीयम' सेहो अछि, ज्योतिषाचार्य पंडित बलदेव मिश्र मैथिली मे कविवर पंच चन्दा झा रामायण शिक्षा, संस्कृति, भारत शिक्षा, समाज, मैथिली सेलेक्टेड रिसर्च पेपर्स, आखर अनन्त ओ काल सारथी सेहो लिखल अछि, जे सभ प्रकाशित भेला उत्तर बेस प्रसिद्धि पौलक। ■

# मैथिलीक गांधी : डॉ. जयकांत मिश्र

✍ रेवतीरमण झा



पेशा-सेवा निवृत प्रबंधक (प्रशासन) एल आइ सी
शैक्षणिक योग्यता: बीएससी (आनर्स), एल एल बी, पीजी डिप्लोमा इन लाइब्रेरी साइंस।
अभिरुचि: अध्ययन, लेखन, संगीत आ यात्रा।
प्रकाशन: मैथिली आओर हिन्दी पत्रिका मे कविता, कथा, एकांकी, निबंध, संस्मरण आदि प्रकाशित। एक मैथिली नाटक प्रकाशित (1983 ई.)
अन्य गतिविधि: उपाध्यक्ष, मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति, मधुबनी।

**सम्पर्क:**
*जगतारणि (सदन), केनाल रोड, आदर्शनगर कोलोनी, मधुबनी-847211*
*ईमेल : rr.jha1958@gmail.com*

पछिला अस्सीक दशक के बात हेतै। गाम सं आयल रहि पटना, नौकरी खोजबाक लेल। ठहरल रही कंकड़बाग मे अपन एकटा संबंधिक ओहिठाम। एक दिन 'इंडियन नेशन' अखबार मे गणित-विज्ञान शिक्षक हेतु एक प्राइवेट स्कूलक विज्ञापन देखलहुं। बोरिंग रोड स्थित ओहि स्कूल मे जाकय साक्षात्कार द अयलहुं। स्कूलक निदेशक के आदेशानुसार दोसर दिन जाकय योगदान देलहुं। बड़ मोन लागय लागल। हमर पत्राचारक पता सेहो इएह रहल, जाधरि हम पटना मे रहलहुं।

स्कूल आ ट्यूशन के बाद स्वाध्याय करब स्वाभाविके छल। प्रतियोगी परीक्षाक सामग्रीक अध्ययन के बाद अपन मैथिली भाषाक पत्र-पत्रिका सेहो रूचि सं पढ़ी। मिथिला मिहिर (दैनिक), माटिपानि, कोशीकुसुम आदि के नियमित ग्राहक भ' गेलहुं। एक दिन मैथिली भाषाक पढ़ौनी आ मैथिलीक बाल पुस्तकालय विषय पर हम मिथिला मिहिर के संपादक के पत्र लिखलहुं। संपादक महोदय ओकरा "संपादक के नाम पत्र" के अन्तर्गत छापि देलनि। एकर किछु दिनक बाद मिथिला मिहिर मे केओ हमर एहि पत्र के संदर्भ दैत संपादक के नाम खूब नमहर पत्र लिखने रहथि। पहिने त' हम डेरा गेलहुं जे हमरा सं कोनो बात गलती ने लिखा गेल। डेराइते डेराइते पढ़ैत गेलहुं। पत्रांत मे जखन देखलहुं -श्री जयकांत मिश्र, इलाहाबाद त' नजरि पर विश्वासे नहि होअय। गौरवे छाती फुलि गेल, जे हमरा सन अदना युवकक पत्र कें एहन गंभीरता सं लेलनि। इएह छल हमर पहिल परिचय डा. जयकांत मिश्र सं। ओना हुनका विषय मे हुनक आलेख आ मैथिली साहित्यक इतिहास सं जनैत रहियनि। पटनाक विद्यापति समारोह मे हुनक लिखल मूल ग्रंथ। History of Maithili Literature कीनि क' सहेज क' रखने रही।

एक बेर एकटा बैंकक परीक्षा दैक लेल पटना सं बनारस गेल रही। संग मे छपराक एकटा संगी सेहो रहय। दुनू गोटे बड़ प्रयास कयलहुं, कतहु होटल खाली नहि रहय। ओ हमर संगी हाथ उठा देलक। तखन हम युक्ति तकलहुं। संग मे "बटुक" पत्रिका रहय। ओकर संपादक बनारसे मे रहथि। हुनका सं पत्राचार होइत रहय पटना सं, मुदा भेट नहि। हुनका डेरा पर जाकय परिचय देलियनि आ बड़ स्नेहपूर्वक बैसौलनि। हुनक सहयोग सं होटल भेटल। जाइत काल ओ कहने रहथि - "परीक्षा द क' घुरू, त' प्रयाग चलब। भाइ जी सं भेट करा देब। " ई सुनैत देरी हमरा बुझै मे कोनो संशय नहि रहि गेल जे हम डा. जयकांत मिश्रक अनुज डा. सुधाकांत मिश्रक समक्ष ठाढ़ छी। हम समयाभावक लाथे हुनक ई प्रस्ताव नहि स्वीकारल। मुदा भीतर-भीतर डरा गेलहुं, जे एहन पैघ विद्वान् लग ठाढ़ कोना भेल हैत।

पटना घुरलहुं। गाम रही त' एकटा नाटक लिखने रही - "मनोरथ"। ओकरा प्रकाशित करबाक मोन बनैलौं। शहादरा, दिल्ली मे कार्यरत गौंवा सभक सहयोग सं ओ पोथी छपि के पार्सल सं पटना पहुंचल। ओकरा विद्यापति लॉज मे रखलहुं। उत्साहवश बहुतो ठाम ई पोथी पठेलहुं। मिथिला मिहिर के संपादक के जखन एकर एक प्रति देलहुं त' ओ कहलनि - "एहि नाम सं त' नाटक पहिनहि छपि चुकल अछि।" मनोबल टुटि गेल आ अपन कचहौन लेखन के भान भेल। हिम्मत जुटा क' एक प्रति इलाहाबाद पठेलहुं। किछुए

दिनक बाद अन्तर्देशीय पत्र मे डा. जयकांत मिश्रक पोथी समीक्षा प्राप्त भेल। एहि सं अपन त्रुटिक ज्ञान भेल, मुदा मोन ततेक छोट भ' गेल जे लेखक बनबाक रास्ता के छोड़ि देलहुं। लागि गेलहुं अपन रोजी रोटीक हेतु नौकरीक खोज मे एकमात्र लक्ष्य बना क' किछुए दिनक बाद नौकरी लागल आ पटना छोड़य पड़ल।

देवघर मे पहिल पदस्थापन भेल। नौकरी मे रमि गेलहुं। चारि साल के बाद स्थानांतरण भ' के भागलपुर अयलहुं। साहित्यानुराग कम नहि भेल। अपन विभागीय राजभाषा पत्रिका लेल लिखय लगलहुं। रचनाक भाषा त' हिन्दी रहैत छल, मुदा ओकर प्राण मैथिलिये रहै छल। ओकर विषय वस्तु मिथिलेक गाम आ मैथिले चरित्र रहैत छल। एहि बीच एकटा पत्र भेटल लेपटौआ मैथिली मे इलाहाबाद सं। पत्र में डा. जयकांत मिश्र लिखने छलाह जे ओ एक अभियान मे भागलपुरक दौरा करताह। एहि लेल गोष्ठीक आयोजन करी। हमरा कोनो मैथिल आ मैथिलीक संस्था सं परिचय नहि छल। अपन नौकरी मे मगन छलहुं। एकाएक माथ पर ई भार आबि गेल।

जरूरत लोक के रास्ता ताकि दै छै। छुट्टी दिन स्कूटर दोड़बय लगलहुं। पता लागल जे भागलपुर मे एकटा संस्था "मिथिला परिषद्" के नाम सं चलै छै। ओकर पदाधिकारी सभक पता कय संपर्क कयलहुं आ कार्यक्रम निर्धारित कयलहुं। एहि मे टीएनबी कालेज आ भागलपुर विश्वविद्यालयक मैथिली विभाग सं सेहो सहयोग लेलहुं। भागलपुर रेलवे स्टेशन पर हमसभ हुनक स्वागत मे ठाढ़ रही। दूनू निकास द्वार पर मैथिलीक अनुरागी सभ एहि विद्वान् अभियानीक स्वागत लेल तत्पर। मुदा चिन्हैत केओ नहि। सभ एक दोसरा के मुंह तकैत, जे कि करब। तावत दू नंबर प्लेटफार्म पर विक्रमशिला आबि गेल। लाटरी जकां सब केओ जे किनका हाथ लगथिन ओ। हमहुं भीतरे-भीतर प्रबल दावेदार रही। हम सिर्फ सत्तरि सं ऊपरक एकसरुआ यात्री पर ध्यान देने रही। कनीकाल मे देखलहुं एकटा कुलीक माथ पर बेडिंग आ ओकरा पाछू डेग झारि के चलैत, मुदा झुकल सन एक शुभ्रशाभ्र बुढ़। हम तकलहुं आ बजलहुं -"इलाहाबाद?"। आकि तर्जनी सं इशारा करैत हमरा उतारा भेटल -"रेवतीरमण?"। हमरा सेकेंडो नहि लागल, हम पैर छुबि आशीष ग्रहण कयलहुं। तकर बाद त' धांय धांय सब पैर छुबय लागल। उत्साही मैथिल छात्र सभ जिंदाबादक नारा लगबय लगलाह।

अपना ओहिठामक ल' गेलियनि। आतिथ्य ग्रहण कयलनि। मुदा बाद मे त' घरक सदस्ये भ' गेलाह। भोरे चारि बजे उठि भोरका सैर बीस मिनट। फेर आबि क' स्नान आ पूजा। दुनू सांझक भोजन दही चूरा। तरकारी जोड़ि दीऔन त' नीक, नहि त' नोन मिरचाई। इएह भोजन छलनि बाहर कतहु। हमर डेराक केन्द्र बनल भागलपुर के अतिरिक्त सबौर दुर्गास्थान, सबौर कॉलेज, भ्रमरपुर, खड़हरा, मुंगेर आदि ठाम स्थानीय लोक संग गोष्ठी करथि। लोकक बड़ आदर आ सिनेह भेटनि। किछु लोक सभ चन्दो दैन। संग मे जागरण गीत आ मिथिलाक्षरक पोथी राखथि, आ गोष्ठी मे बांटथि। सांझ मे घुरि क' डेरा आबथि त' प्रेस विज्ञप्ति लिखाबथि आ कहथि प्रेस रिपोर्टर सभ के द अबियौ। एही बहाने हमरो प्रेस वला सभ सं परिचय भ' गेल।

**मिथिला राज्यक लेल ओ संकल्पित छलाह। एहि लेल ओ कतेको मैथिल राजनेता सभ सं गप्पो कयलनि। कैक टा सं त' जेलो जाकय भेट कयलनि। एक बेर राष्ट्रपति महोदय के एहि लेल एक शिष्टमंडलक जाकय स्मार पत्र देलनि। अहोभाग्य हमर जे एहि शिष्टमंडल मे हमरो रखने रहथि। मुदा, नौकरीक विवशताक कारणे हम एहि सं बंचित रहि गेलहुं, से अखनहु कचोटैत अछि।**

एकरा बाद त' कैकबेर एलाह। मुदा ठहरथि, मुदा हमरे ओहिठाम। बहुत रास गप्प-सप्प करथि। अपन अध्यापन, पीएचडी, सं ल' क' मैथिली पत्र-पत्रिका आ मिथिला राज्य के ल' क। एक बेर हम कहलियनि - "अपने मैथिली साहित्यक इतिहास लिखलियै। दक्षिण मिथिलाक इतिहास लिखितियै।" ओ तुरंत जबाव देलनि - "ई काज अहां पर छोड़ै छी।" हमरा फेर एकबेर अपन कान पर अविश्वास होमय लागल। ई कि सुनि रहल छी।

बड़ मानथि। एक बेर त' एतेक भावुक भ' गेला जे कहलनि जे मकान कतय बनाएब अहां? हम कहलियनि - "अखन पाइ कहां अछि हमरा, ओना मोन अछि अपन जिला मुख्यालय मे बनबितहुं।" कहलनि मोन अछि त' बनत। फेर कहलनि- "अपने जमीन ताकू, नहि भेटत त' हम अपन अयाचीनगर वला प्लॉट मे सं एक कट्ठा द देब। लेकिन शर्त अछि जे इलाहाबाद मे हमर गृह पुस्तकालय मे पच्चीस हजार किताब अछि, ओकर संरक्षक बनय पड़त। ओना हमरा पूरा विश्वास अछि, जे ई भार अहां सम्हारि लेब।"

ई बात 1993-94 के हेतै। ओकर बाद अस्वस्थ रहय लगलाह। अयाचीनगर जयनिवास भेट भेल रहथि। फेर एकबेर मुजफ्फरपुर सं मधुबनी अबैत रही, त' बस मे भेट गेलाह। ओ इलाहाबाद सं मधुबनी अबैत रहथि। ताबत हमरा जमीन आदर्शनगर कोलोनी मे भेट गेल रहय। गृह ऋण के लेल दौर-बरहा करैत रही। सूचित केलियनि जे मधुबनी मे मकान बना रहल छी। उत्तर देलनि- "बड़ नीक। मधुबनीक विकास मे अहुं योगदान क' रहल छी।" कतेक नीक बात कहलनि से अखनहुं सोचैत छी पैघ लोक बातो कोना पेघे होइत अछि।

मिथिला राज्यक लेल ओ संकल्पित छलाह। एहि लेल ओ कतेको मैथिल राजनेता सभ सं गप्पो कयलनि। कैक टा

सं त' जहल जाकय भेट कयलनि। एक बेर राष्ट्रपति महोदय के एहि लेल एक शिष्टमंडलक जाकय स्मार पत्र देलनि। अहोभाग्य हमर जे एहि शिष्टमंडल मे हमरो रखने रहथि। मुदा, नौकरीक विवशताक कारणे हम एहि सं बंचित रहि गेलहुं, से अखनहु कचोटैत अछि।

हुनका सान्निध्य मे रहि बुझायल जे एक विद्वाने नहि, एक सुच्चा अभिमानी छलाह जे लिखैत छलाह, बजैत छलाह आ समर्पित छलाह मात्र आ मात्र मिथिला आ मैथिली लेल। बिनु कोनो लोभ आ बिनु कोनो राजनीतिक लालसा के ओ जीवन पर्यंत सेवा करैत रहलाह अपन जन्मभूमि आ मातृभाषा के। हुनक सम्पूर्ण जीवन के आकलन करब त' लागत सत्य ओ मिथिला मैथिलीक गांधी छलाह, जनिक एक पैर सदिखन कर्मभूमि इलाहाबाद आ दोसर पैर गजहारा (मधुबनी) अपन मातृभूमि दिस रहैत छल।

डा. जयकांत मिश्र अंग्रेज़ी मे मैथिली साहित्यक इतिहास अपन गुरुदेव डा. अमरनाथ झाक आदेश पर लिखने छलाह। जयकांत बाबू अंग्रेज़ीक प्राध्यापक छलाह इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे। ओ कहलनि जे ओ पीएचडी करै चाहैत छलाह कोनो अंग्रेज़ीक स्थापित कवि आ नाटककार पर। मुदा गुरुदेवक आदेश छल जे ओ अपन मैथिली साहित्यक इतिहास पर शोधग्रंथ तैयार करथि। एहि लेल हुनका बड़ परिश्रम करय पड़ल। पैघ पैघ पुस्तकालय सभ सं संपर्क कयलनि। ओ एहि लेल दरभंगाक राज लाइब्रेरी आ नेपालक त्रिभुवन लाइब्रेरी मे कतेको मास धरि अध्ययन कयलनि। पूरा शोधग्रंथ पढ़लाक बाद संतुष्ट भेला उतर अमरनाथ बाबू अपन हस्ताक्षर कयलनि।

बहुत कम लोक के ज्ञात अछि जे ओ मैथिलीक वृहद शब्दकोश लिखने छथि। ई दू खंड मे अछि। एकर विशेषता अछि, जे मूल मैथिली शब्द तीन लिपि मे लिखलअछि-तिरहुता, देवनागरी आ रोमन। भागलपुर आयल रहथि त' झोरा मे दोसर खंडक मात्र एक प्रति बांचल रहनि। हम समूल्य तीन सै टका मे लेलियनि। दय मे कने असोकर्ज होइन। पहिल त' मूल्य आ दोसर जे ओकर पहिले पन्ना बटखर्चाक अचारक तेल सं भीज गेल रहै। हम हुनक दुविधा के दूर करैत कहलियनि जे ई हमर सौभाग्य अछि जे एहि किताब पर अपनेक हस्ताक्षरक संग माताजीक हाथ बनाओल अचारक तेल लागल पन्ना हमरा लग रहत। एहन प्रसाद हम कतय पाएब। एहि पर ओ मुस्कुरा देलनि आ किताब पर हस्ताक्षर क' हमरा द' देलनि।

ओ आजीवन अपन पेंशन के पाइ सं "मैथिली समाचार पत्र", इलाहाबाद सं बहार करैत रहलाह। संगहि अखिल भारतीय साहित्य समिति के तरफ सं कतेको पोथी आ पुस्तिका छपैत रहलाह। यात्री जीक पत्रहीन नग्न गाछ (कविता संग्रह) के ओएह छपने रहथि, जाहि पर साहित्य अकादमीक पुरस्कार भेटल छल। मिथिला राज्यक गठन हेतु आजीवन संघर्ष करैत रहलाह। एकर अतिरिक्त अखबार मे हुनक कतेक आलेख आयल जाहि मे ओ मिथिला राज्यक गठनक पक्ष स्पष्ट कयने छथि। ग्रियर्सनक भाषायी मानचित्र देखा कय सभके बुझाबथि जे मैथिली भाषी क्षेत्र मधुबनी सं मधुपुर धरि के क्षेत्र के मिलाक' अलग मिथिला राज्य बनत, तखने हमर समस्या पर ध्यान देल जाएत। रौदी, दाही, बाढ़ि, पलायन, मातृभाषाक उपेक्षा, कृषि आ उद्योगक पिछड़ापन, उच्च आ तकनीकी शिक्षाक अभाव, चिकित्सा व्यवस्थाक अभाव आदि सभ समस्याक एकहि निदान अछि अलग मिथिला राज्य।

जयकांत बाबू कें पत्र लिखबाक आदति छलनि। अपन मित्र आ नजदीकी कें खूब पत्र लिखैत छलाह। बेसी पत्र पोस्टकार्ड मे। आ ओहि सं बेसी लिखबाक भेल त' अन्तर्देशी में। पत्रक शुरू मे दाहिना भाग ऊपर मे तारीख आ स्थान दै छलाह आ अंत मे शुभाकांक्षी आदि लिख क' अपन नाम श्री जयकांत मिश्र। हम एक दिन पूछलिअनि - "कि अपन नामक पहिने श्री लगेबाक चाही, कहीं ई धृष्टता त' नहि?" ओ तुरंत कहलनि- "निश्चित लगेबाक चाही। श्री नीक चीज अछि। " अपन आचरण शुद्ध रखबा पर ओ बड़ जोर दैत छलाह। गायत्रीक उपासक छलाह। दोसरो के एकर उपासनाक महत्त्व बतबैत छलाह। ब्रह्म मुहूर्तक समय के लेखनक लेल सर्वथा उचित समय मानैत छलाह ओ। राजनीतिक कोनो पार्टी सं हुनका परहेज नहि छल। जे दल वा जे नेता मिथिला आ मैथिली लेल काज करत, ओकरा ओ अपन प्रिय मानैत छलाह। का. भोगेन्द्र झा के ओ अपन प्रिय नेता मानैत छलाह कियैक त' ओ सड़क सं संसद तक मिथिला आ मैथिली लेल आबाज दैत छलाह।

जयकांत बाबूक रहन-सहन एकदम सादगीपूर्ण छल। भोजनकाल गंजियो उतारि लैत छलाह। भ्रमण मे अपन बिस्तर तक ल' क' चलैत छलाह। धोती, कुर्ता, उजरा पाग, आ दोपटा संग रखिते छलाह। गोष्ठी कतहु क' लैत छलाह। मुदा सार्वजनिक स्थान के प्राथमिकता दै छलाह। यथा-दुर्गा स्थान, विद्यालय, महाविद्यालय, पंचायत भवन, सामुदायिक भवन आदि। कतहु जाए मे पैरे, नाव, तंगा, औटो सभ लेल तैयार। नहि त' स्कूटर के पांछो मे बैसि क' गोष्ठी मे पहुंच जाथि। हमरा संगे त' बेसी गोष्ठी मे ओ हमर स्कूटरक पांछे मे बैसि क' गेल रहथि। बस, ट्रेन आ तंगो स। जहाज सं गंगा पार कय क' सेहो गेल रहथि गोष्ठी मे।

विद्वान्, प्राध्यापक, लेखक आ पंडित कुलक रहितहुं, कनियो अहांग आ आसकति नहि देखलहुं हुनका में। मिथिला आ मैथिलीक काज लेल सतति तैयार। समय सं सुतब आ समय सं उठब, गांधीये जी जकां। ओहिना फुर्ती आ चलब। आब त' सशरीर हमरा बीच ओ नहि छथि, मुदा स्मृति मे ओ ओहिना संगे बुझाइत छथि। मधुबनीक अयाचीनगरक हुनक निजी घर जयनिवास मे अंतिम भेट स्मृति मे अखनहुं झलकि रहल अछि। मैथिलीक एहि गांधी कें शत् शत् नमन। ■

# दिल्ली विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पढ़ाइ पर एतेक हो-हल्ला कियैक?

✍ प्रवीण नारायण चौधरी



अपन भाषा आ संस्कृतिक प्रति असीम लगाव सँ लैस, दुनू राष्ट्र नेपाल आ भारत बीच मित्रताक मुख्य आधार एकरे मानि जनस्तर पर एकरा कायम रखैत मिथिला केर अस्तित्व दुनू सम्प्रभु राष्ट्र में हो से सदिच्छा सँ कार्य, सामाजिक कार्यकर्ता केर रूप मे कार्यरत। ऑनलाइन आ ऑफलाइन दुनू मीडिया मे मिथिला-मैथिलीक विषय पर सतत लेखन।

**संपर्क :**
*निर्यात प्रबंधक, एशियन थाई फूड्स प्रा. लि., पोस्ट बॉक्स 133, जानकी पथ, विराटनगर, नेपाल,*
*मो. +977-901722981*
*ईमेल: pravin112@hotmail.com*

भारतक एकटा प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान 'दिल्ली विश्वविद्यालय' मे मैथिली पढायल जाय एहि पर प्रशासन द्वारा गम्भीरतापूर्वक विचार कयल जा रहल अछि। एहि सन्दर्भ मे कइएक संस्था, समूह आ व्यक्तित्व द्वारा विश्वविद्यालयक समक्ष पक्ष मे तर्क राखल गेल अछि, ओत्तहि किछु सरोकारवाला विपक्ष मे सेहो तर्क-वितर्क मे लागल छथि। आधुनिक भारतीय भाषा विभाग (दिल्ली विश्वविद्यालय) द्वारा कुल 11 गोट भारतीय भाषाक पढाई करेबाक सुविधा उपलब्ध अछि। अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली सहित मैथिली साहित्य सम्मेलन (दिल्ली), चेतना समिति (पटना), मैथिली साहित्य संस्कृति समिति (मधुबनी), मैथिली लेखक संघ (पटना), मैथिली साहित्य संस्थान (पटना) आदि कतेक रास संस्था द्वारा उपरोक्त सन्दर्भ मे संबंधित निकाय व विश्वविद्यालयक कुलपति योगेश त्यागी कें मैथिली भाषा पढ़ाबैक लेल ज्ञापन पत्र देल गेल अछि। कतेक रास मैथिली भाषा-साहित्य अभियानीक प्रतिनिधिमंडल कुलपति त्यागी सं भेंट करैत मैथिली पढौनी आरम्भ करेबाक लेल अनुरोध सेहो कयलनि। कुलपति द्वारा समुचित आश्वासन उपरान्त मैथिलीक पढौनी लेल विश्वविद्यालयक वांछित प्रक्रिया अन्तर्गत डीयू शिक्षक संघ-समूह वा व्यक्तिगत तौर पर मैथिलीक पढाई करेबाक औचित्य कें स्थापित करबाक वास्ते काज कें आगू बढ़ाओल गेल अछि।

ई प्रक्रिया अपन गति सं चलि रहल अछि। मुदा शिक्षक समुदाय मे सं किछु गोटे मैथिलीक पढाई करेबाक आधारभूत तर्क सं सहमति नहि रखैत छथि आर हुनका लोकनि द्वारा सोशल मीडिया व ब्लॉगक संग ऑनलाइन समाचारपत्र, प्रिन्ट मीडिया आदि मे फराक विचार राखल जा रहल अछि। समग्र मे मैथिलीक पढाई सं हिन्दी पढनिहार घटत ई भाव राखि रहल देखाइत छथि बहुते लोक। यथार्थत: जे हिन्दी कइएक स्थानीय भाषा कें अपना मे समाहित बुझि एकटा माहौल दशकों-दशकों सं देश मे स्थापित कएने अछि आर जाहि तरहें भारतीय संविधानक अनुच्छेद 351 अनुसार 'सम्पर्क भाषा' केर रूप मे एकरा स्थापित करबाक एकटा स्वप्न देखल गेल छैक, ई समझ कतेको लोक कें भ्रम मे रखने अछि जे हिन्दीपट्टीक कइएक स्थानीय भाषाक स्वतंत्र रूप विकसित भेला सं हिन्दी संकुचित भ' जायत। एहि समझ केर आधार पर कइएक दशक धरि हिन्दी सं प्राचीन आ समृद्ध भाषा मैथिली कें संविधानक आठम अनुसूची मे स्थान नहि देल गेलैक। मैथिली सं जन्म लेल नेपाली भाषा कें 1992 ई. मे संविधानक आठम् अनुसूची मे स्थान भेटि गेलैक, धरि मैथिली (जननी भाषा) कें ओ सम्मान भ्रमक कारण नहि देल गेलैक। तथापि मैथिली अपन साहित्यिक भंडार आ पूर्णताक बदौलत अन्तत: भारतीय संविधानक अष्टम् अनुसूची मे स्थान प्राप्त कयलक। कथमपि एहि सं हिन्दी कें कोनो नोक्सान कतहु भेलैक तेकर कोनो तथ्य नहि भेटैछ। मैथिली संघ लोक सेवा आयोग केर परीक्षाक ऐच्छिक भाषा बनि बड पैघ अवसर देलकैक, लेकिन तैयो बहुल्यजन हिन्दी छोड़िकय मैथिली धेलक सेहो सच

नहि छैक। शासनानुशासनक भाषा हिन्दी निश्चित एकटा पैघ क्षेत्र बनौलक आर ओ प्रत्येक मैथिलीभाषी लेल सहृदयतापूर्वक ग्राह्य ओ व्यवहृत अछि। तखन हिन्दीक ओकालति करनिहार एना सन्देह आ भ्रम मे कियैक छथि, एहि सवालक जबाब ओ स्वयं तथ्यक आधार पर ताकथि।

नहि मात्र भारत या नेपालक मिथिला क्षेत्रक बल्कि समूचे विश्वक समस्त भाषा सं तुलनात्मक अध्ययन मे मैथिलीक स्थान संस्कृतक बाद दोसर प्राचीन भाषाक रूप मे स्थापित अछि। परञ्च राज्य द्वारा अवधारल गेल भाषा हिन्दी आ नेपाली सं क्रमशः अपनहि मूल स्थान मे ई दाबल-चापल अवस्था मे पहुंचि गेल अछि। मैथिली कें प्रारम्भिक शिक्षा तक मे स्थान नहि दय राज्य प्रायोजित उपेक्षा कतेक चरम पर रहल अछि ई कल्पना करैत देह सिहैर उठैत अछि, तथापि ई भाषा अपन सशक्त बुनियादक कारण स्वस्फूर्त जीबि रहल अछि, अल्पहि मात्रा मे सही लेकिन ई लिखा रहल अछि, पढा रहल अछि, गोटेके सही आईएएस सेहो बना रहल अछि, शिक्षाक जड़ि कमजोरो रहैत उच्च आ उच्चतर शिक्षा मे अपन रंग देखा रहल अछि। विडंबना ईहो छैक जे अहू भाषा कें संस्कृतहि जेकां जातिवादी राजनीति मे फंसायल गेल, एखनहुं कतेको कुतर्की आ भाषाक भ धरि नहि बुझनिहार बड़का-बड़का बात बना रहल अछि; तैयो मैथिली अपन सृजन सं स्वचालित जीवन बांचि रहल अछि। विश्वक लोपोन्मुख भाषा मे सूचीकृत एहि भाषा कें राज्यक उपेक्षा एहिना बनल रहत तं लोप होय सं शायद कियो नहि बचा सकय, धरि एकर जीवटपन वृत्ति-प्रवृत्ति एकरा जियौने राखत जेना संस्कृतक जीवन देखि सकैत छी। व्यवहार सं भले खत्म भ' जाय ई राज्यक कारण, अराजक राजनीति केर कारण, मुदा एकर स्थान मानसपटल पर बनले रहतैक।

दिल्ली विश्वविद्यालय देशक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान, विश्वक सर्वाधिक छात्र कें एक स्थान पर पढबयवला संस्थान, हजारोंक संख्या मे मैथिलीभाषाभाषी कें पढबयवला संस्थान – स्थानीयताक संवर्धन-प्रवर्धन लेल शिक्षा नीति अनुरूप जं मैथिली पढेबाक बात करैत अछि त एकरा सकारात्मक लेबाक चाही। शिक्षक समुदाय कें छात्रक अवस्था आ प्रगतिक एक-एक बात पता होइत छन्हि। मैथिली समान प्राचीन आ समृद्ध भाषा मे कतेक सामग्री छैक आर

**दिल्ली विश्वविद्यालय मे आधुनिक भारतीय भाषा विभाग केर स्थापना 1961 ई. में भेल आर हाल धरि एतय बंगाली, तुलनात्मक भारतीय साहित्य ओ तमिल भाषा केर स्नातकोत्तर पढ़ाई करेबाक संग बंगाली, आसामी, उड़िया, तमिल, मणिपुरी आदि कुल 11 गोट भारतीय भाषा केर स्नातक एवं अन्य डिग्री कोर्स पढ़बैत अछि। पीएचडी, एमफिल, एमए, पीजी डिप्लोमा अनुवाद, सर्टिफिकेट कोर्स, शोध आदि अनेकों सुविधा मैथिली समान समृद्ध साहित्य आ ऐतिहासिक महत्व केर भाषा कें संख्यात्मक समावेशकताक आधार पर सेहो देल जेबाक जरूरत अछि।**

ओकरा कोना जीवन्त राखल जाय, भाषाक शिक्षा नीति मे कोन-कोन तत्त्व विमर्श छैक, से सब बात सोचि एकर विरुद्ध कोनो विचार रखनाय कतहु सं उचित नहि प्रतीत होइत अछि।

दिल्ली विश्वविद्यालय मे आधुनिक भारतीय भाषा विभाग केर स्थापना 1961 ई. में भेल आर हाल धरि एतय बंगाली, तुलनात्मक भारतीय साहित्य ओ तमिल भाषा केर स्नातकोत्तर पढ़ाई करेबाक संग बंगाली, आसामी, उड़िया, तमिल, मणिपुरी आदि कुल 11 गोट भारतीय भाषा केर स्नातक एवं अन्य डिग्री कोर्स पढ़बैत अछि। पीएचडी, एमफिल, एमए, पीजी डिप्लोमा अनुवाद, सर्टिफिकेट कोर्स, शोध आदि अनेकों सुविधा मैथिली समान समृद्ध साहित्य आ ऐतिहासिक महत्व केर भाषा कें संख्यात्मक समावेशकताक आधार पर सेहो देल जेबाक जरूरत अछि। मणिपुरी भाषाभाषी केर संख्या कतेक? मणिपुरी भाषाक इतिहास की? परञ्च सांस्कृतिक विरासत रहल मणिपुरी यथोचित सम्मान पाबि दिल्ली विश्वविद्यालय में पढायल जा रहल अछि। मैथिली संग तुलनात्मक रूप सं अन्य कतेको भाषा पाछू अछि, मुदा राज्य पोषण ओ अन्य सामरिक महत्व सं ओ सब मैथिली सं बहुत आगू अछि। आवश्यकता ईहो अछि जे अन्य भाषा सं तुलनात्मक अध्ययन कय समुचित प्रतिवेदन प्रकाश में आनल जाय। नीतिगत बूंदा अनुसार शिक्षा केर अन्य भाषा मध्य मैथिली भाषा केर स्टेक्स पर विमर्श आ तर्क-मीमांसा कयल जाय। निचोड़ स्पष्ट अछि जे मैथिली भाषा केकरो सं पाछू नहि भेटत। एकर दावी सेहो सब आवश्यक कोरम पूरा करैत अछि।

दिल्ली विश्वविद्यालयान्तर्गतक ई आधुनिक भारतीय भाषा विभाग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC-युनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन) केर त्रिस्तरीय विशेष सहयोग कार्यक्रम (SAP - स्पेशल एसिस्टैन्स प्रोग्राम) केर एक प्रभाग विभागीय शोध सहयोग (DRS - डिपार्टमेन्टल रिसर्च सपोर्ट) लेल गेल अछि। एहि योजना मे भारतीय साहित्यक तुलनात्मक आ अनुवाद अध्ययन, भारतीय लोकगीत एवं आदिवासी संस्कृति सम्बन्धी शोध आदि अबैत अछि। राष्ट्रीय स्तरक सेमिनार केर कइएक श्रृंखला सम्पन्न करबाक संग विभिन्न भागक प्रकाशन सेहो कयल जेबाक अछि। दिल्ली विश्वविद्यालयक शिक्षक एवं

व्यवस्थापन समितिक सदस्य लोकनि लेल ई सोचय योग्य विषय अछि जाहि मैथिली भाषा-साहित्यक सन्दर्भ सामग्री पर हिन्दी भाषा-साहित्य पर्यन्त टिकल अछि, वगैर ज्योतिरिश्वर ठाकुर आ विद्यापतिक चर्चा कएने कोनो भारतीय साहित्य अपन स्वतंत्र बुनियाद पर्यन्त स्थापित नहि कय पबैत, से मैथिली जं पढाई मे आओत तऽ अन्य भाषा-साहित्य कें आर सहयोग होयत नहि कि कोनो तरहक नोकसान।

राजनीतिक स्तर पर मैथिली लेल मांग उठब आ कि राजनीतिक क्षेत्र सं मैथिली कें अधिकारसम्पन्न बनेबाक लेल आश्वासन भेटब कदापि एहि प्राचीन आ समृद्ध भाषा-साहित्य कें राजनीति केर विषय नहि बनबैत अछि। किछु समय पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालयक जानल-मानल आलोचक आ विद्वान् व्यक्तित्व - हिन्दी विभाग मे कार्यरत एसोशियेट प्रोफेसर अपूर्वानन्द द्वारा मैथिली केर पढाई करेबाक चर्चा पर एकटा लेख प्रकाशित भेल छल। "डीयू में मैथिली? राजनीति में इस्तेमाल की चीज रह गई है भाषा' शीर्षक केर लेख पढिकय निष्कर्ष राजनीतिक लक्ष्य सधबाक लेल "मैथिल" वोटर्स कें अपनेबाक दूरदर्शिता सं मात्र पढाई करेबाक घोषणाक बात कहने छथि। पढाई करेबाक मुख्य आधार 'स्थानीयता वा संस्कृतिक संरक्षण-संवर्धनक उद्देश्य' हिनका हिसाबे दिल्ली मे मैथिली लेल एकदम नहि अछि जे पूर्णरूप सं गलत आ भ्रमपूर्ण अछि। आइ मैथिलीभाषाभाषीक जनसंख्या मात्र दिल्ली आ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र मे करीब-करीब 50 लाख केर आसपास अछि। झुग्गी-झोपड़ी सं लैत बहुमंजिला इमारत धरि मे बसनिहार सब वर्गक मैथिलीभाषीक स्थानीय उपस्थिति भेटैत अछि। बिहार, नेपाल आ विभिन्न राज्य सं दिल्ली विश्वविद्यालय मे उच्च शिक्षा ग्रहण करबाक वास्ते सेहो बड पैघ संख्या मे छात्र सब प्रवेश लैत अछि। ओकरो सब कें अपन मातृभाषाक विषय पढबाक विकल्प दिल्ली विश्वविद्यालय मे आन-आन भाषा समान भेटतैक त एकर लाभ छात्रक सर्वाङ्गीण विकासक संग राष्ट्रक विकास मे सेहो हेतैक।

भाषाक अध्ययन मे दिल्ली विश्वविद्यालय मे अध्ययनरत हजारों मैथिली भाषाभाषी छात्रक रुचि आ संघ लोक सेवा आयोग मे मैथिली वैकल्पिक विषय केर माध्यम सं भारतक प्रशासनिक सेवा मे सफलता हासिल करबाक दर बढोत्तरी होयत। विश्वव्यापक शोध मातृभाषाक पढौनी सं मानव मस्तिष्कक समुचित आ उच्च विकास दर केर विन्दु पर सेहो व्यवस्था कें मैथिलीक पक्षहि मे रहय पड़तनि। तथापि, मैथिली पर गलत आरोप लगाकय एकरा आरो उपेक्षित नहि कयल जाय, बल्कि एकर क्लेम कें हर कसौटी पर जांचि-परखिकय एकरा बचेबाक आ बढेबाक दिशा मे काज कयल जाय। ■

## गजल


✍ **सदरे आलम गौहर**



**मैथिलिक प्रसिद्ध गजलकार ओ अनुवादक। साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार सं सम्मानित।**

***सम्पर्क:***
*ग्राम+पो.: पुरसोलिया, जिला: मधुबनी (बिहार)-847226*
*मो. 7715980144*
*ईमेल: gauhersadre@gmail.com*


जीबक लेल एहि दुनियां मे संघर्ष करै छी
जिनगा एकटा युद्ध है सभ दिन युद्ध लड़ै छी
जैह देखू सैह बाजू हम तं इएह पढ़ने छी
रातिकें दिन कह' लेल हमरा कियैक कहै छी
चमचागिरी चाटुकारिता नहि केलहुं हम
ताहि दूआरे फूसक घर मे हम रहै छी
मिथिला देशक बासी छी हम मैथिली बाजब
अपन ई पहचान नहि कहियो हम बिसरै छी
सभ दिन एके रंग नहि होइत छै कान धरू ई
कहियो नाह पर कहियो गाड़ी पर बाह देखै छी
कमला कोसी बागमती आ महानंदा
मिथिलाक पथर पखारइए सभ दिन देखैछी
सतयुग कलियुग मे नहिं हम मोनकें ओझराबी
दुनिया तं ठीके छे, जौं हम ठीक रहै छी
हंस' मे सभ हंसत कान' मे नहि कानत
कानिकें देखू तखन कहब जे ठीक कहै छी
शंकर जी उगना बनि जनिका घर मे एलाह
हम मैथिल ओहि विद्यापति कें नहि बिसरै छी।

# मणिपद्मक उपन्यासक विषयवस्तु

✍ डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा



लेखक दरभंगा स्थित सीएम साइंस कॉलेजमे सहायक प्राध्यापक छथि।
प्रकाशन : 2007 मे लघुकथा संग्रह - 'अहींकें कहै छी' आ 2018 मे कविता संग्रह -'स्वप्नमे इन्द्रधनुष' प्रकाशित।
मैथिली आ हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिका आ संग्रहमे अनेक रचना सभ प्रकाशित।

*संपर्क :*
*सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग,*
*सी.एम. साइंस कॉलेज,*
*दरभंगा-846 004*
*मो. 9835684869,*
*ईमेल: satyaprit69@gmail.com*



थिली साहित्यक युगपुरुष लोकनिक सूची बिनु मणिपद्मक पूर्ण नहि भ' सकैत अछि। मणिपद्म अपन नामानुरूप मैथिली साहित्यक मणि छला। हिनक जन्मक सम्बन्धमे यद्यपि मतैक्यक अभाव अछि आ किछु विद्वान हिनक जन्मवर्ष 1916 त' किछु 1918 मानैत छथि। हिनक पिताक नाम जुगलकिशोर दास छलनि आ ई वाउर, बिरौल, दरभंगाक निवासी छला। हिनक मातृक सहरसा जिलान्तर्गत जगतपुर गाम छलनि। ई 19 जून 1986 ई. कें चिरनिद्रामे निमग्न भ' गेला।

मणिपद्म, जिनक पूरा नाम डा. ब्रजकिशोर वर्मा छलनि, बहुविधावादी रचनाकार छला। नाटक, अनुवाद, महाकाव्य, संस्मरण आ उपन्यास विधामे ई पारंगत रहैत अनेक कथा, कविता, निबन्ध ओ एकांकीक रचना केलनि। मुदा हिनक सर्वाधिक प्रिय विधा उपन्यास छलनि आ तें हिनक रचना संसार मे उपन्यासक सर्वाधिक उपस्थिति रहल। ई कुल चौदह गोट उपन्यास लिखने छथि- अनलपथ, विद्यापति, लोरिक विजय, कोब्रागर्ल, कनकी, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, लवहरि कुशहरि, राय रणपाल, फुटपाथ, अर्द्धनारीश्वर, दुलरा दयाल, नागभूमि आ आदिम गुलाम। एहि चौदहो उपन्यासमे सं पांच गोट उपन्यास, लोरिक विजय, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, दुलरा दयाल ओ राय रणपालक आधार लोकगाथा अछि। ओना लवहरि कुशहरि कें सेहो लोकगाथाक अन्तर्गत गनल जाइत अछि। ओना हिनक पहिल उपन्यास 1952मे हिन्दीमे छपल छल, जकर नाम छल-'त्रिधारा'।

लोरिक विजय उपन्यासक नायक लोरिक छथि, जे लोकनायकक रूपमे प्रसिद्ध छथि आ सदति अबला आ गोरक्षार्थ संघर्षरत रहैत छथि। ओ लोक-कल्याणार्थ सदैव तत्पर रहैत छथि आ समाजक लेल अहितकर राजा मल्ल, ढोलिया आदिक संहार करैत छथि। एहि उपन्यासक एकगोट विशेषता इहो अछि जे एकर नायक सवर्णेतर छथि। एहि उपन्यास मध्य मिथिलाक सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आ आध्यात्मिक परिवेशक उत्कृष्ट वर्णन भेटैत अछि।

राजा सलहेसमे सेहो सवर्णेत्तरे नायक छथि आ एकर कथा नेपालक सप्तरी-सिरहा-मोरंगक क्षेत्रक अछि। ई उपन्यास एहि क्षेत्रक लोकजीवन आ लोक संस्कृति पर आधारित अछि। एहि उपन्यासमे शौर्य आ प्रेमक अद्‌भुत दर्शन भेटैत अछि। उपन्यास मध्य तंत्र-मंत्र आ चोरि विद्याक परिचय सेहो प्राप्त होइत अछि। राजा सलहेसमे राष्ट्रसेवा ओ देशभक्तिक स्वर प्रमुख अछि अर्थात् एहिमे वीरताक चित्रण प्रमुखतासं भेल अछि मुदा शृंगारक झलकि सेहो भेटैत अछि। दौना कुसुमाक राजा सलहेसक प्रति एकान्त प्रेमक दृश्य सेहो उपस्थित होइत अछि। मुदा प्रेमक अछैतो राजा सलहेस अपन वीरता लेल सेहो जानल जाइत छथि।

नैका-बनिजारा सेहो एकगोट ऐतिहासिक-सामाजिक उपन्यास थिक, जाहिमे मिथिलाक सुगंधि सर्वत्र पसरल अछि। एहिमे बौद्धकालीन समाज आ लोकजीवनक कलात्मक वर्णन भेटैत अछि। नायक हिनक आने उपन्यास जकां वीर आ साहसी छथि। लोक कल्याण हेतु सदैव तत्पर रहैत छथि। एहिमे नारी व्यापारक सेहो उल्लेख भेटैत अछि जे प्रमाणित करैत अछि जे तत्कालीन समाजमे महिलाक कतेक दयनीय स्थिति छल। एहि उपन्यासमे पुरुषक भीतर संचित असीम

ऊर्जाक दर्शनक संग-संग नारीक करुणा, त्याग आ उच्चादर्शक सेहो चित्रण कयल गेल अछि। कर्त्तव्य लेल प्रेमक उत्सर्गक सर्वोत्तम उदाहरण एत' प्रस्तुत कैल गेल अछि, जखन नायिका फुलेसरीक वियाह नायक नैका संग भ' जाइछ मुदा ओ दुनू एक-दोसरासं शीघ्रहि फराक भ' जाइत छथि किएक त' कर्त्तव्यक निर्वाहमे अपन प्रेमकें बाधक नहि बन' देबय चाहैत छथि। ई मणिपद्म द्वारा समाजक सोझां प्रस्तुत कयल एक आदर्श स्थिति अछि। एहि उपन्यासक एकगोट विशेषता इहो थिक जे एहिमे मानवेत्तर चेतना सम्पन्न पात्र, जेना कपिला गाय आ तिलंगा बाछा सन पात्र सेहो अछि जे अछि त' मानवसं इतर मुदा ओकरा भीतर मानवीय चेतना ओ संवेदना कोनो मानवे जकां अवस्थित छै।

राय रणपाल उपन्यास पालवंशक अंतिम शासक रणपालकें आधार बना लिखल गेल अछि। आपसी विग्रहक कारणें कोना मुस्लिम आक्रमणकारी आधिपत्य स्थापित करैत अछि, एहि उपन्यास मध्य एकर चर्च भेटैत अछि। एहिमे नारीक भीतरक शक्तिकें सोझां अनबाक प्रयास सेहो कयल गेल अछि आ नारीक सबला रूपक दर्शन सेहो होइत अछि। राय रणपाल अन्यायी आ दुराचारीक नाश करैबला आ समाजमे संस्कृति आ धर्मक रक्षा केनिहार नायक छला। मणिपद्मक अनुसारे राय रणपालक घटना काल दीनाभद्रीसं परवर्ती अछि। दीनाभद्रीक समयमे इस्लामक आगमन एहि क्षेत्रमे भ' चुकल छल। अर्थात् राय रणपालक समयमे सेहो एत' मुसलमानक आधिपत्य छल आ तें राय रणपालकें धर्मक रक्षार्थ संघर्ष कर' पड़लनि।

मणिपद्म दुलरा दयालकें मिथिलाक सभसं प्राचीन लोकगाथा मानैत छथि आ एकर काल तेसर शताब्दी निर्धारित करैत छथि। एकर नायक दयालक जन्म मधुबनी जिलान्तर्गत भरोड़ा गाममे भेल छलनि आ हिनक बियाह बखरी, जे समस्तीपुर जिलामे अछि, मे भेलनि। हुनक बरयातीमे बहुरागोढ़िन अपन तंत्रविद्यासं मरन ओ मारनक आतंक पसारि देलनि। मुदा दयाल स्वयं तंत्रविद्यामे प्रवीण छला आ ओ बहुरागोढ़िनक तंत्रविद्याकें कटैत अपन पत्नी अमरौतीकें अपन गाम ल' गेला। उपन्यासक भाषा कवित्वपूर्ण अछि आ वर्णनमे अद्भुत चमत्कार परिलक्षित होइत अछि।

अर्द्धनारीश्वर मनुष्यक सार्वभौमिक संवेदनाक खिस्सा कहैत एकगोट व्यापक परिवेशक कथा कहैत अछि। एहिमे मानवीय संवेदना,जे कोनो क्षेत्र विशेषक सीमामे आबद्ध नहि भ' सकैछ, तकर उत्कृष्ट अभिव्यक्ति भेटैत अछि आ संगहि संग ई

**विद्यापति मणिपद्म पहिल उपन्यास थिक, जे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल अछि। एहि उपन्यासमे विद्यापतिक विभिन्न पक्षक समुचित चित्रण कयल गेल अछि। एहि उपन्यासमे विभिन्न भाव, विभिन्न रूप, प्रेम, भक्ति, योग, श्रृंगार, जीवन-दर्शनादिक व्यापक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। उपन्यासक नायक विद्यापति छथि।**

संवेदना राष्ट्रीय संवेदना संग जुटि जाइत अछि। ई विश्व मानवताक रस्ता प्रशस्त करैत अछि।

अनलपथ मिथिला मिहिरमे आंशिके प्रकाशित हेबाक कारणें अपन वास्तविक स्वरूपमे नहि आबि सकल आ तें एकर विषयवस्तुक परिचय देब कठिन अछि।

विद्यापति मणिपद्म पहिल उपन्यास थिक, जे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल अछि। एहि उपन्यासमे विद्यापतिक विभिन्न पक्षक समुचित चित्रण कयल गेल अछि। एहि उपन्यासमे विभिन्न भाव, विभिन्न रूप, प्रेम, भक्ति, योग,श्रृंगार, जीवन-दर्शनादिक व्यापक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। उपन्यासक नायक विद्यापति छथि। मणिपद्म अपन सरल ओ सुगठित भाषामे कविवरक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक यात्रा करबैत छथि। मुदा डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश एहि उपन्यासक मादे कहैत छथि जे- 'ऐतिहासिक उपन्यासक जे गरिमा चाही, तकर एहिमे अभाव अछि। कथाक शृंखला सेहो सुगठित नहि अछि तथा चरित्रांकन सेहो उपन्यासोचित नहि कहल जा सकैत अछि।'

कोब्रागर्ल एकगोट जासूसी उपन्यास थिक आ जासूसी उपन्यासक क्षेत्रमे हिनक महत्वपूर्ण योगदान मानल जायत। एकर कलेवर लघु अछि। एहिमे चीनी जासूसक षड्यंत्रकें नष्ट क' शत्रुक चालिकें विफल करबाक कथा बहुत रोचक ढंगे कहल गेल अछि। एकर नायक संजय नामक युवक छथि। तिब्बतक लामा, चीनी युवती आ कोब्रागर्ल एहि उपन्यासक निरैंठ पात्र सभ छथि जे उपन्यासक रोचकता बनौने रहैत अछि।

कनकी 33 पृष्ठक एकगोट लघु उपन्यास अछि, जे आर्थिक विषमता आ ओहिसं जनमल व्यापक भिन्नताक खिस्सा कहैत अछि। ई भिन्नता सामाजिक रीति-रेवाज, विध-व्यवहार सं ल' क' सामाजिक स्तरीकरणक निर्धारण करैत अछि। जातिवादी व्यवस्थाक एकगोट बुनियादी कारक सेहो ई आर्थिक विषमता थिक। एतेकधरि जे नेनाक नामकरण पर्यन्तमे ई विषमता जगजियार होइत अछि। तें एकटा गरीब-गुरबाक ननकिरवीक नाम 'हकरी' राखि देल जाइत अछि। मुदा वैह हकरी सकारात्मक सोचक किछु व्यक्तिक प्रयासक बलें 'कनकी' बनि एकटा आदर्श चरित्रक रूपमे समाजक सोझां अबैत अछि। स्नेहमयी दीदीक ममतामयी हाथ ओकर माथ पर जखन पड़ैत छै त' ओकर प्रतिभा आ क्षमता पौतीमे बन्न नहि रहि जाइत छै। एहि उपन्यासक माध्यमसं लेखक दलित-शोषित समाजक नवतुरियामे अबैत आत्मविश्वास आ मुख्यधारामे प्रवेश करबाक उछाहक वर्णन करैत छथि, जे कोनो कल्पना नहि अपितु समाजक एकटा पैघ सत्य थिक।

लवहरि कुशहरि उपन्यास मणिपद्मक लोकगाथा आधारित उपन्यास अछि।

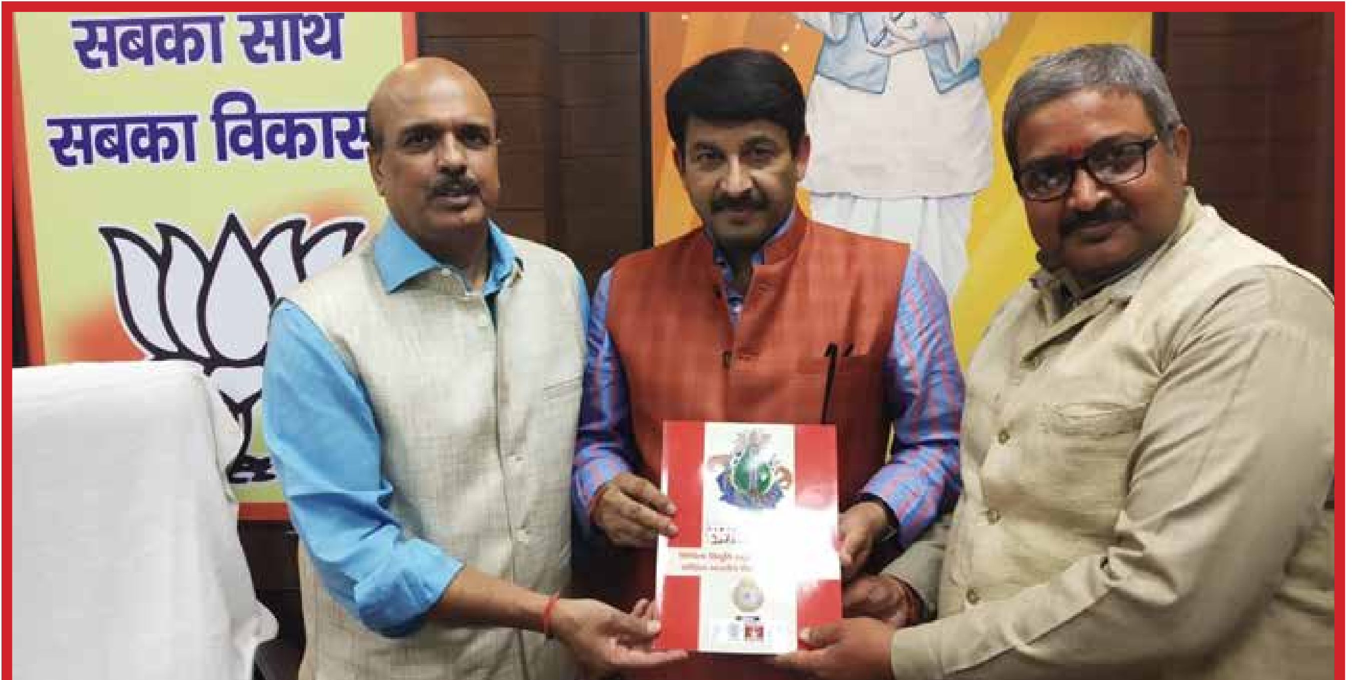
लोकगाथा आधारित आने-आने उपन्यास जकां एहि उपन्यासमे सेहो लोकनायकक चरित्रकें सजीव रीतिएं निरूपित कयल गेल अछि। एहि लोकगाथामे जे सीताक चरित्र अछि ओ लोक सीता छथि। एहि उपन्यासमे सीताक व्यक्तित्व बेसी जगजियार भेल अछि, राम गौण पात्रक रूपमे एत' अयला अछि। एहि उपन्यासमे मिथिलाक सांस्कृतिक गरिमाक सजीव चित्रण कयल गेल अछि।

मणिपद्मक फुटपाथ उपन्यास 1978 ई. मे प्रकाशित भेल। एहि उपन्यासक महत्व एहिलेल बेसी अछि जे ई सर्वथा एकटा नव विषय दिस तकलनि आ हमरा बुझने भिखमंगी व्यवस्था पर हिनक ई उपन्यास मैथिली साहित्य लेल नव विषयक संधान अछि। ई समाजक नग्न यथार्थ प्रस्तुत करैत अछि, जाहिमे कल्पनाशक्तिक सेहो प्रचुर उपयोग कयल गेल अछि। समाजमे सम्पूर्ण बदलावक ओकालति करैत ई उपन्यास यथार्थ आ कल्पनाक समन्वय संग लिखल गेल अछि। सत्ता आ समाजक नकारात्मकताक अनैतिक गठजोड़ एहि उपन्यास मध्य चित्रित कयल गेल अछि। मंत्री आ स्मगलरक अनैतिक सांठ-गांठ एकर उदाहरण अछि। संगहि संग उपन्यासमे किछु आदर्शवादी चरित्र सेहो छथि जे सदैव समाजक लेल अनुकरणीय होइत छथि। उपन्यासमे रहस्य, रोमांच आ रोचकता बनल अछि जे मणिपद्मक लेखनीकें परिभाषित करैत अछि।

नागभूमि मणिपद्मक आत्मकथात्मक शैलीमे रचित उपन्यास अछि। एहि उपन्यासमे नायक सुरक्षा सीमा इंस्टीच्यूट दिससं विदेशी षडयंत्रकें नष्ट करबा हेतु जाइत छथि आ अनेक तरहक बाधा सभकें नांघैत अंततः सीमाकें सुरक्षित बनबैत छथि। ई उपन्यास अपराध जगत पर आधारित अछि आ एहिमे रहस्य, रोमांच आ सस्पेंस अंतधरि बनल रहैत अछि। एहिमे तंत्र, मंत्र, यंत्रक संगहि मनुक्खक बुद्धि, विवेक ओ शक्ति तीनूक उपयोग भेल अछि। उपन्यास रोचकतासं भरल अछि।

आदिम गुलाममे खवासी प्रथाक चित्रण कयल गेल अछि। एहि संदर्भमे ओ जाहि तरहक ऐतिहासिक तथ्य सभ प्रस्तुत केलनि अछि जे मात्र भारतीय साहित्येटामे नहि अपितु विश्व साहित्यमे सेहो तकर उपलब्धता दुर्लभ अछि। सामन्ती व्यवस्थाक क्रूरतम चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि जे देह सिहराबयवला अछि। समाज अनेक स्तरमे बांटल छल आ प्रत्येक स्तरक लेल फराक-फराक नियम छल। एकगोटेक लेल जे क्षमायोग्य अपराध, दोसरक लेल वैह कठोर दंडक अपराध। समाज जाति आ वर्गमे विभाजित छल आ अपन निष्कृटतम स्वरूपक संग जीबैत छल।

एहितरहें मणिपद्मक उपन्यास विभिन्न भाव-भूमि, कथानक आ शिल्पक संग मैथिलीक दरबारमे उपस्थित अछि। एकदिसि लोकगाथा पर आधारित लोरिक विजय, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, दुलरा दयाल, लवहरि कुशहरि आ राय रणपाल त' दोसर दिस महाकवि पर आधारित विद्यापति आ संगहि रहस्य-रोमांचसं भरल जासूसी आ अपराधक खिस्सा कहैत फुटपाथ, कोब्रागर्ल आ नागभूमि आ दोसर दिसि गरीब-शोषितक कथा कनकी, आदिम गुलाम त' वैचारिक समन्वयक उद्घाटन करैत अर्द्धनारीश्वर जे प्रमाणित करैत अछि जे उपन्यास विधामे मणिपद्म मैथिली साहित्यक सरिपहुं मणि छला। ■




दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी संग भेटवार्ताक मध्य अ.भा.मि. संघक विद्यानंद ठाकुर आ सचिव कौशल झा

# ललितेश ललित आ पृथ्वीपुत्र

✍ नीलकमल चौधरी



सहरसा जिलान्तर्गत महिषी गामक निवासी। प्रख्यात साहित्यकार राजकमल चौधरीक सुपुत्र। ई-पत्रिका 'विदेह' मे 56 टा कविता एक संग प्रकाशित। मैथिली कविता संग्रह 'एव पर इतरैब' आ हिन्दी कविता संग्रह 'थका हुआ ठहराव' प्रकाशनाधीन।

*संपर्क :*
*के-962, सेक्टर-23, संजय नगर, गाजियाबाद, यूपी-201002,*
*मो. : 9818757445,*
*ईमेल :* nkc4967@gmail.com

जाड़क मलिन सांझ पसरल आबि रहल छल। बाधसं अबैत गाइक घंटी बाजि रहल छल। दालानक सोझां बांसक बहुत असगनी बनल रहैक। ओइ पर चन्नी पाट सुखाइत छल। ओकर दुर्गंध चारूकात भारी रहय। पछबा तेज रहय। बिजलीक देह भुलकि गेलै। दूनू हाथ घोकड़ी लगा लेलक।

– अन्हार भ' जेतउ फेर।

– हं जाइ छिअइ।

असगनी पर राखल सूती दोहरि खींचि कलपू बिजलीक देह पर फेकि देलथिन – बाटमे जाड़ हेतउ। ओढि ले।

नै नै हमरा नै जाड़-ताड़ होइए। रह' दैह। अपने की ओढबह? चारि डेगमे हम पहुंचि जायब। आ चौपेतल दोहरि मोड़ि क' टार' लागलि।

– ललित (पृथ्वीपुत्र)

जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे-से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद मे सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाये हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर महीनों से उसे नही मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यहीं है; और हल्कू की पवित्र आत्मा मे तो उसे कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक ना थी! अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। वह अपनी दीनता से आहत ना था, जिसने आज उसे इस दशा तक पहुंचा दिया! नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिए थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।

– प्रेमचंद (पूस की रात)

मैथिली पोथी सामान्यतया कम बिकाइत छैक से सर्वत्र चर्चित अछि। मुदा मैथिली अकादमी आइ फेर ललितक पृथ्वीपुत्र क' चारिम संस्करणक पुनर्मुद्रण करा गौरवान्वित अछि।

जं कोनो मैथिली पोथीक प्राक्कथन मे उपर्युक्त बात लिखल होय तं अय सं नीक बात मैथिलीक लेल की हेतैय। आ ओ पुस्तक कतेक लोकप्रिय आ ओ लेखक कतेक सौभाग्यशाली हेताह। ई सुखद संयोग जे ई सौभाग्य भेटल अछि हमर प्रिय पोथी "पृथ्वी पुत्र'' आ एकर लेखक छथि ललितेश भाय माने श्री ललितेश मिश्र, माने मैथिली साहित्यक महान शिल्पी कथाकार, उपन्यासकार ललित। एक समय मैथिली सहित्यकाश मे ललित, राजकमल मायानन्दक तूती बजैत छल, तीनुक मध्य कोनो ने कोनो तरहे पारिवारिक सम्बन्ध सेहो छल।

ललितक मूल नाम ललितेश मिश्र छलनि, छह अप्रैल उन्नीस सौ बत्तीस कें चानपुरा पछबाई टोल मधुबनी जिला मे जन्म भेलैन। पिता चंद्रशेखर मिश्र हरिअम्बे आहिल मूल के ब्राह्मण छलाह।

एकलौता पुत्र ललितक बालपन आनन्द सं बीतलनि। पिता बंगट मिसर चारि भाय छलाह सब सं ज्येष्ठ ललितक पिता, दोसर शशिशेखर मिश्र तेसर बैद्यनाथ मिश्र जे पोस्टमास्टर छलाह संगहि अंग्रेजीक नीक जानकार, चारिम गतिनाथ मिश्र सेहो पोस्टऑफिस मे कार्यरत छलाह। ललित अपन कैरियर के शुरुआत मास्टरी सं केने छलाह मुदा कार्य मे कनियो मोन नहि लागनि। ससुर चिंतित रहैत छलखिन। एक दिन ससुर किछु कहलखिन तं हिनकर जबाब छल- अपने चौबीस घंटा मे एक दू घंटा हमरा लेल सोचैत होयब। हम अपना लेल हरदम सोचैत रहैत छी। आ कोनो योग्य व्यक्ति अपना लेल जतेक नीक, बढ़िया सोचि सकैत अछि से आन नहि, तैं ई व्यर्थ चिंतित नहि होइथ। बाद मे बिहार पुलिस प्रशासनिक सेवा मे ज्वाइन केलैथ आ खूब नीक जकां पारिवारिक दायित्व के निर्वाह केलैथ। हिनक मृत्यु

चौदह अप्रैल उन्नीस सौ तेरासी मे भेलैन। ओहिना याद अछि पटना मे आई एस सी मे पढ़ैत रही। सांझक नौ के आसपास होइत हेतैय। राकेश भैयाक फोन आयल, नीलू ललित भाय नहि रहलाह, जकरा जकरा संभव होय फोन सं सूचित क' देबै। ताहि समय ककरो-ककरो ओहिठाम फोन होइत छल। चूंकि हमर मौसाजी टेलीफोन विभाग मे एस डी ओ छलैथ फ्री के फोन उपलब्ध छल। कतेक गोटे पटना डेरा पर फोन सुन' आ कर' अबैत छलाह। मुदा ई खबरि सुनि सन्न रहि गेलौं, तत्छन बड्ड तामस उठल छल फोन पर, ओकर की दोष होनी के रोकि सकैत अछि।

पहिल बेर जखन 'पृथ्वी पुत्र' पढ़नाय शुरू केलहुं तं लागल जेना प्रेमचंदक कोनो कथा पढ़ि रहल होय। ई तं निश्चिते जे रचना केहनो उत्कृष्ट किएक नहि होय, समसामयिक रहय तं पाठक के बुझबा मे सहजता होइ छै। प्रेमचंद के सहजता सं नहि पढ़ि पबैत छी, बेर बेर मोन तर्क ल' क' उपस्थित भ' जाइत अछि, मुदा ललितके पढबा काल से नहि। ललित अप्पन परम्परा रिवाज सं प्रेम तं करैत छैथ, मुदा नवताक स्वागत मे कमी नै।

जखन मैट्रिक मे पढ़ैत रही तखन पहिल बेर मौथिली सं सामना भेल। मैथिली बाज' तं खूब अबैत छल भने ई दरभंगिया मधुबनी वाला नहि होय, मुदा मैथिली बाज अबैत छलै मुदा लीखब कठिन बुझाइत छल, जे एखनो बुझाइत अछि। मुदा जखन कोर्स मे अछि तखन तं पढहि पड़त।

साहित्यक सब विधा मे सबसं बेसि रुचिगर कहानी होइत अछि। मैथिली कथा संग्रह, गल्प गुच्छ मे ललितक कहानी छल रमजानी। एकटा टमटम वाला अछि रमजानी जे टीशन सं सवारी उठबैत अछि, आ निकटस्थ गाम टोल पहुंचा गुजर बसर करैत अछि, मुदा इम्हर टेम्पूक बाढ़ि जकां आबि गेला सं ओकर धंधा चौपट भेल जा रहल छल। बड्ड नीक सं एहि कहानी मे सामयिक परिवर्तन आ ओकर नीक बेजाय प्रभावक वर्णन कैल गेल अछि, रमजानी विकास तं चाहैत छल मुदा कार्य पर प्रतिकूल असरि पड़य से कोना चाहत।

तकर बाद ललितक एहि पोथीक पढबाक अवसर भेटल। पृथ्वी पुत्र ग्रामीण खेतिहर परिवेश पर आधरित अछि।

जखन बिनोवा भावे के भूदान आंदोलन चलल छल तखन जमीन्दारक जमीन के निम्न तबकाक लोक के देल गेल छल, जे पूर्वक जमींदार सबके बर्दाश्त नहि। ताहि लेल जे मारि-काटि खून-खराबा भेल से सब तं अछिये, ताहि सं फराक कैक टा आर कथा अछि जाहि मे प्रेम, घृणा, दया करुणा समायल अछि एहि छोट छीन उपन्यास मे।

मूल कथा सं फराक एकटा त्रिकोण प्रणय प्रेम प्रसंग सेहो चलैत अछि। बिजली, आ कल्पनाथक। बिजली जे अपन सरकारी नौकरी वाला बर संग नहि रहि गामक जमींदार कलपु मिश्रक संग रंग रभस करैत रहैत अछि।

परपुरुषगामिनी पत्नीके हीरालाल जबरदस्ती अपना संग राख चाहैत अछि, मुदा एहेन कोनो बन्हन कहां बनल अछि, जे वासनाक आगि के रोकि लीअय। से बिजुरिया बेर-बेर सासुर सं भगि आबय। बर मारबो करइ, कसाई जकां मारै आखिर कोना बर्दाश्त हेतैय जे सात फेरा लेल कनिया दोसर संग सेज सजाबय।

उपन्यासक नायक अछि सरूप अछि जे घर परिवार, गांव समाज मे विशेष स्थान रखैत छल कारण दू अक्षरक बोध रहय, नवका-नबका नियम कानूनक ज्ञान। ताहि समय मे आ एखनो समर्थक आगू ककर कल्ला अलगते।

मुदा जमींदारी प्रथा गेलाक बाद सामन्तवादक प्रति विद्रोह तं शुरू भइये गेल रहय। लेखक ताहि समयके लोकक सामाजिक आर्थिक स्थितिक तर्कसंगत, बिना कोनो लागि लपेटि के अद्‌भुत रुपे विश्लेषण केने छथि।

यादव-बन्धु लोकनिक घर बेस ऊंच। बास-भूमि बेस अइल-फइल। सखुआक निस्सन मोट-मोट खाम्ह, बांसक सीटल जाफरी, मोट खढ़सं छारल। चौखरा दलान, बड़दक गोही, रहबाक पैघ-पैघ घर। बांसक जाफरीक एतेक विलक्षण कारीगरी अन्यत्र भेटनाइ कठिन। ई एतुक्का विशेषता थिक।

दुसाध लोकनिक घर खट हट। छोटे-छोटे मुदा चिक्कन-चुनमुन बाड़ी मे केरा, एक बीट बांस, कि एकाध-टा नवगछुली आम।

मुसहर लोकनिक घर एकदम बाओन। छोट छोट घर। बांसक फट्टक लागल। ने बाड़ीमे तर-तरकारी ने आंगनक टाट पर घेरा-सीम-झिमनीक लत्तीक हरियरी।

तखन सामंतवादक जड़ि ततेक ने गंहीर अछि जे आसान कहां अछि जे ई ख़त्म भ' जायत। सरकारक देल जमीन बचेबा मे सरूपक पैघ भाय गेनाके प्राण चलि जाइत अछि, सेहो सरूपे के बचाबय मे। दूनू भाय मे बड्ड प्रेम छल, भाउजि के सरूप माय जकां मानय छल, मुदा भाउजक उदास मुंह खाली सीथ देख मोन दुखित भ' जाइत छलैक। एक दिन बाड़ी मे काज करैत छल तं आंगन मे गप्प करैत माय, बहिनक गप्प कान मे पड़लैय, ओ सब भाउजि बेनीक ब्याह एकरा संग कराबय चाहैत छलै। सरूप के तं कोनो आपत्ति नै तखन भाउजि के मोन मे की छै के जाने।

बेनीयो के सरूप जानल गमल छलै। सहज स्वीकार कयलक। एहि तरहे कथाक सुखद समापन भेल।

जेना कि लेखक स्वयं कहने छथि जे हरबड़ी मे ई लीखल गेल अछि से कत्तो कत्तो बुझाइत अछि। उपन्यास के किछ पृष्ठक आर खगता छलैक, कलपु आ बिजुलीक बीच के प्रेम के हरियाली देबय मे किछ चुक भेल छै। लेखक ओकर दुनू के अनैतिक प्रेम के उचित ठहरेबाक प्रयास करैत छथि, जाहि मे असफल छथि।

बिजुलीक बर स्वस्थ छै, प्रसन्न छै, रेलवे मे नौकरी करैत छै, सरकारी मकान, अन्न वस्त्रक कमी नै, मुदा कनिया भागि जाइत छैक, सेहो एक बेर नै चारि-चारि बेर, सात गामक पंचक फैसला ओकरा न्याय नै दिया पबैत अछि। एतय किछु कड़ीक आवश्यकता छल जे कथानक के बान्हिक रखितय।

बांकी सब तरहे सशक्त उपन्यास अछि, अद्‌भुत भाषा शैली, खांटी मैथिल शब्द सं भरल-पुरल, सुन्दर कथानक आ शानदार अंत। ■

# कीर्ति नारायण मिश्रक काव्यक भाव-भंगिमा

✍ नारायण झा



**लेखक राजकीय मध्य विद्यालय रहुआ - संग्राम, जिला - मधुबनी ( बिहार ) मे शिक्षक छथि। एखन तक तीन गोट पोथी प्रकाशित छनि। पहिल पोथी "प्रतिवादी हम'' कविता संग्रह पर साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 प्राप्त छनि। दोसर पोथी 2017 ई 0 मे "अविरल-अविराम'' कविता संग्रह आ तेसर "मैथिली निबन्ध मालिका'' निबन्ध संग्रह 2018 ई0 मे प्रकाशित भेलनि अछि। निरंतर पत्र - पत्रिका सभ मे कविता, बाल कविता, निबन्ध, आलेख आदि प्रकाशित होइत रहै छनि। नालंदा ओपन यूनिवर्सिटी सं एम ए ( मैथिली ) मे गोल्ड मेडल प्राप्त। मैथिली सं यू जी सी नेट परीक्षा सेहो उत्तीर्ण।**

**सम्पर्क:**
*ग्राम-पोस्ट: रहुआ-संग्राम*
*प्रखंड: मधेपुर, जिला: मधुबनी*
*बिहार, पिन कोड: 847408*
*मो. 8051417051*
*ई मेल: narayanjha1980@gmail.com*

कहबामे कनियो संशय नहि जे आन भाषा साहित्यक कविता आ विश्व साहित्यक कवितासं जं तुलनात्मक रूपें मैथिली कविताकें देखै छी तं हमरा दुर्बल नहि बुझाएत अछि। मैथिली साहित्यक आन विधाक अपेक्षा काव्य विधा मुख्य स्वर अछि जे ठोस प्रमाण दए मैथिली साहित्यकें पुष्ट कए रहल अछि। एहि काव्य यात्रामे यात्री बनल अनेको कवि अपन विषय विविधता, शिल्पक नव प्रयोग, शैली परिपुष्टता, नवीन बिम्ब-प्रतीक योजना आदिसं विलक्षण काव्यक सृजन कए रहल छथि, जाहिमे कीर्ति नारायण मिश्र एक अप्रतिम नाम अछि। शोकहरा, बरौनीक धरासं मिथिला सहित देश-विदेशमे कीर्ति पसारै लेल हिनक जन्म 17 जुलाइ 1937 ई. कें भेल छनि। शिक्षा-दिक्षासं सुसम्पन्न मिश्रजी व्यावसायिक एडवोकेटशिप एवं प्रबंधन क्षेत्रमे अपन श्रम देबा लेल तत्पर रहैत मैथिली आओर हिन्दी भाषा साहित्य लेल समर्पित रहलाह अछि। हिनक रचना संसार पर दृष्टि दैत छी तं पबैत छी हिनक विपुल साहित्यक भंडार। हुनक मैथिली काव्य संकलन अछि - सीमांत(1967), महानगर(1968), हम स्तवन नहि लिखब(1979), ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप(1991), आदमीकें जोहैत(2004)। हिनक संस्मरणक संग्रह अछि - स्मृतियात्राक एकांतमे। आलोचनाक पोथी अछि - अर्थान्तर। तकर बाद बहुतो पोथीक संपादन आ बहुतो पोथीक अनुवाद कएलनि। हिन्दी साहित्यमे सेहो हिनक बहुत रास पोथी प्रकाशित छनि। हिनका विशिष्ट सम्मान आ पुरस्कार प्राप्त करबाक गौरव प्राप्त छनि - मैन ऑफ एचीवमेंट ( 1994), मैन ऑफ द ईयर (1996), दिनकर जनपदीय सम्मान (1996), साहित्य अकादेमी पुरस्कार - 1997 (ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप लेल), सहस्राब्दी सम्मान (2000), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थानक सौहार्द सम्मान (2015), प्रबोध साहित्य सम्मान (2018)। एखनहुं अध्ययन ओ लेखनमे सक्रिय छथि, से हमरा सभक लेल पैघ बात अछि।

अपन काव्य शिल्प सौष्ठव आ बिम्ब-प्रतीकसं अभिव्यक्तिकें उच्चता दैत निस्संदेह कीर्ति नारायण मिश्र अनुपम कवि रूपमे स्थापित छथि। हिनक दृष्टि मिथिला भरि नहि, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय चिंतनकें मैथिलक दृष्टिसं देखि-परेखि, कविताक नव आयाम रूपमे उद्घाटित करैत छनि। हिनक काव्य आधुनिक मिथिलाक हरेक जीवन-जंगकें स्पर्श करैत पाठककें जोड़बामे समर्थ छनि। स्वयं कीर्ति नारायण मिश्र ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप कविता संग्रहमे अपन रचना प्रक्रियाक सम्बन्धमे कहैत छथि (ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप - पृष्ठ संख्या-9) ''कल्पना आ भावनाक पांखि पर उड़ै काल प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति आ मानवीय आदर्शक वायुक स्पर्श भेल। पहिने कविताक संग-संग गीत सेहो लिखैत छलहुं। किन्तु भावक उन्मुक्त अभिव्यक्ति होइत छल कवितामे।''[1] पुन: कीर्ति नारायण मिश्र लिखैत छथि (ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप - पृष्ठ सं-10) ''अभिव्यक्ति हमरा लेल जतबे सहज अछि, अनुभव ततबे कष्ट-साध्य आ यंत्रणापूर्ण। प्रतीक गंभीर कविताक पाछां आत्मवेदनाक भावेतिहास अछि।''[2]

कीर्ति नारायण मिश्रक कविताक मूल स्वर अछि परम्परा भंजनक स्वर आ नवीन विश्व दृष्टि। जाहिसं ओ आडंबरी प्रवृत्ति, छल-प्रपंचक ढेरी, नाना प्रकारक षड्यंत्रकें अपना हिसाबे चित्त कए दैत छथि। कविकें परम्परासं एलर्जी नहि छनि

आ नहिये घृणा छनि, मुदा ओहोन परम्परा जे हमर विकासक पथकें बाधित करए, से नहि पसीन छनि। परम्पराक ओतबहि अंश स्वीकार छनि जे सामाजिकता आ राष्ट्रीयताक गतिशीलता लेल बाधित नहि हो। एहि बातसं यैह स्पष्ट होइत अछि जे नव पीढ़ीक स्वस्थ विकास लेल प्रेरणा बनए, मुदा चलैत बाटमे ओ परम्परा छिटकी नहि मारए। हुनक इहो कहब अछि जे नव कविता कोनो विरोधक परिणाम नहि थिक, मुदा नव कविता जखने अएलै तं स्वाभाविक छैक छै जे पूर्वक परिपाटीमे लिखल कवितासं अपनाकें फराक करैत छैक। कविताक अर्थ तं स्पष्टे छैक व्यवस्था, फूसिक महल आ सामंतवादक विरोधमे भावक अभिव्यक्ति। प्रतिरोध वा प्रतिवाद तं मूल स्वर छहिये, जाहिसं समाजक अन्तिम पांतिमे ठाढ़ भेल मानवता लेल आशाक बोल भए सकए। प्रथम कविता संग्रह सीमांत लए जखन अबैत छथि तं हुनक मूल भाव अछि - परम्पराक निषेध व्यवस्थाक अस्वीकार, वर्त्तमान जीवनक विकृति आ विडम्बनाक अभिव्यक्ति। सीमांत कविता संग्रहमे अपन पोथीक प्रति विचार रखबाक क्रममे, अकविताक सन्दर्भमे शीर्षकसं स्वयं ओ जे लिखलनि अछि, से हमरा कतहुं ने कतहुं चुकैत बुझाइत छथि। अकविता आ नवकवितामे घोर-मट्ठा सन हिनक उक्तिसं बुझाइत अछि। लिखने छथि सीमांतमे नवकविता मुदा ओ अकविता कहि कियैक सम्बोधित कएलनि, से द्वंद्वक स्थिति लगैए? अकविता आ नवकवितामे बहुत अंतर छैक, भए सकैए जे ओहि समय ई बात स्पष्ट रूपें सामने नहि आयल हो वा हुनक कहबाक ढंगे एहेन हो। आगां जखन कविता संग्रह अबैत छनि ''हम स्तवन नहि लिखब'', एहि ठाम कवि स्वयं लिखैत छथि (हम स्तवन नहि लिखब - पृष्ठ सं.-6) - ''नवकविता संवेदना आ अभिव्यक्तिक स्तर पर आन्दोलन छल, अकविता ओकर परिपाक। ओकरा वाद केर रूपमे विज्ञापित करबाक चेष्टा अथवा दावा कहियो नहि कएल। ओ नवीनता नव कविता केर ऐतिहासिक उर्ध्व विकासक एक गोट कड़ी छल, स्वतंत्र इकाई नहि।''[3] हिनक जं कविता देखै छी तं नवकविताक सभ पक्ष सामने अबैत अछि। कीर्ति नारायण मिश्रक सम्बन्धमे रमानन्द झा रमण विचार व्यक्त करैत छथि (मैथिली नव कविता - पृष्ठ सं.-153) ''कीर्ति नारायण मिश्रक कविताक पहिल विशेषता थिक परम्पराक भंजन।''[4] तहिना केदार कानन कहैत छथि ''आधुनिक मिथिलाक जीवनकें कवि कीर्ति नारायण मिश्र आत्मीय आ भावनात्मक स्पर्श दैत छथि आ तकरा काव्य प्रतिमानमे ढारि अभिव्यक्तिक सम्मोहक चित्र खिंचैत छथि।'' लोक भूमि मैथिली पत्रिका (अंक अज्ञात, पृष्ठ सं.-35) आलेख शीर्षक कविताक कीर्तिमानमे उदयचन्द्र झा विनोद लिखैत छथि - ''हिनक लेखन जगत मात्र मिथिले धरि सीमित नहि छनि, अस्तु मिथिलाकें भारतसं स्थानापन्न कए देल जाए। हं, एतबा अवश्य जे हिनक दृष्टि एक मैथिलक थिकनि, प्रबुद्ध मिथिलापुत्रक।''[5]

मैथिली कविताक वृद्धि आ विकासमे कीर्ति नारायण मिश्रक पैघ योगदान छनि। ग्राम्य जीवनसं महानगरीय जीवन, देशसं विदेश धरि यात्रामे कखनहुं हिनक लेखन एकभगाह नहि भेलनि। अपन ध्येयकें धएने उचित पथपर गतिमान रहलथि। हिनक रचनामे परम्पराक निषेध, व्यवस्थाक अस्वीकार, रंगभेद, जातीयता, संकीर्णता, साम्प्रदायिकताक विरुद्ध फरिछाएल स्वर भेटत। विदेशी डिशोमे हिनका अपन घरक सुअदगर तीमन, तरूआ, सकरौरी आदि चाही। रचनामे भेटैत अछि माटिपानिक सुगंधि, शोषित-पीड़ितक प्रति चिंता ओ प्रतिकार, अपन लोकसं वेद धरिक चिंता, वर्तमानकें बनाएब आ भविष्यक निर्माण करब। प्रायः लेखकक संग पारिवारिक दायित्व रहलैए, किएक त' लेखक सेहो ओहि परिवारक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग होइत छथि। लेखक अपन दायित्वसं जं छुटकारा लए लेखन करताह तं कतेक काल धरि हुनक साहित्य, समाजमे पढ़ल आ गूनल जएतनि। ताहि पारिवारिक सन्दर्भमे कीर्ति नारायण मिश्रकें पारिवारिक दायित्व कहैत छनि (ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप - पृष्ठ सं.-10) - ''गीत कवित बिसरि, हरक मूठि थामने रहू, बहैत रहू ओहि अपटी खेतमे, जा धरि बहि सकैत छी।''[6] कवि आ साहित्यकार सभ दिन सिखैत छथि, सभ दिन नवका तूर धुनैत छथि। कवि कीर्ति नारायण मिश्र कहैत छथि (ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप - पृष्ठ सं.-13) - ''कविताक कार्यशालामे कहियो नबसिखुआ रूपमे प्रवेश कएने छलहुं, एखनहुं नबसिखुआ बनल छी, आजीवन बनल रहब। एहि कार्यशालामे एप्रेंटिससिप कहियो समाप्त नहि होइत छैक।''[7]

सीमांत कविता संग्रहक शीर्षक "हमर विकलांग देश'' मे कहै छथि - (सीमांत कविता संग्रह - पृष्ठ सं. - 34)

ई सुलम्ब फुटपाथ पर
कूड़ा घरक दुनूकात
सूतल हजार-हजार नर-नारी
सैकड़ै कुकूर
एहि बातक साक्षी जे
हमर एकटा पएर
एक विकलांगक डांड़मे धसि गेल अछि
दोसर पएरसं त्रिभुवन नापबाक लेल
उद्यत छलहुं...[8]

एहेन सन स्थिति एखनहुं जाहि देशमे छैक, से ओहि देशक विकास पथक विफलता रूपमे परिगणित होइत अछि। अपन देशमे तं ओहि दिन सेहो ओहने छल जाहि समय ई कविता लिखल गेल, मुदा आइयो धरि एहेन सन स्थिति अछिये, से अति दुखद बात अछि। हम कतबो कोनो देशकें ऋण दए दी, मददि कए दी, बड़िया कहा ली, ई कोनो देशक लेल विफलताक प्रतीक रूपमे कहल जा सकैत अछि। कविक दृष्टि सत्यकें उद्घाटित करबामे सफल भेल अछि। कविता संग्रह हम स्तवन नहि लिखबमे शीर्षक "एक गोट प्रार्थनाक स्थिति'' संग्रहित अछि। (हम स्तवन नहि लिखब - पृष्ठ सं.-25)

जाहि मे कवि कहैत छथि
ठुट्ठ भए गेल अछि हाथ

श्रद्धा-ज्ञापनक लेल करजोड़ी करैत
पातर लक-लक भए जीह
मुंहक मटकूरीमे पड़ल अछि खसि
नत होमएवला माथ
झुकि-झुकिकए बना देलक सम्पूर्ण
शरीरकें कूबड़...[9]

एहि कविताक भाव स्पष्ट अछि जे आइ-काल्हि मनुक्ख अपन क्षमता ओ ज्ञानपर कम विश्वास कए श्रद्धा-ज्ञापनमे लागल रहैत अछि। मनुक्खकें अपन मेहनति आ ज्ञान-कौशल केर आधारपर जंग जीतक चाही, संभव नहि अछि। कियैक एहेन समय आबि गेलैए, जाहि ठाम चारूभर एहेन दृश्य दृष्टिगोचर भए रहलैए, क्षुब्ध छथि। सुन्दर बिम्ब ओ प्रतीकक संयोजनसं कविताक परिधि आओर व्यापक भए गेलैए। ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप कविता संग्रहक शीर्षक "रोलर"मे कहैत छथि (ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप - पृष्ठ सं.-75)

छोड़ह चिन्ता बौआ
हम मजदूर बिकौआ
बस चुनाव धरि कतिका कटतै
सुनिलह पूत कमौआ...[10]

इहो कविता सत्यकें उद्घाटित करैत, एखनहुं प्रासंगिक छैक जे चुनाव समयक आगु-पाछु खूब विकासक कार्यक शुरुआत होइत छैक, कार्य सम्पन्न होइक समय चुनावक बादे रहैत छैक। चुनावक समयमे देशभक्ति, जातीयता, धार्मिक उन्माद आदिक नारा खूब लागए लगैत छैक। एहि नारासं झर पड़ल कानमे सुतलहुंमे वैह सुनैत छैक, जे सत्ता सुनबए चाहैत छैक। कोनो सफल देशक लेल ई प्रणाली कतेक सफल छैक, से अहां बुझि सकैत छियैक। मनुक्खक राक्षसी प्रवृत्तिपर अपन स्वर बुलंदि करैत कविता संग्रह आदमीकें जोहैत शीर्षक "मरघट बनल मएदान मे" लिखैत छथि (आदमीकें जोहैत - पृष्ठ सं. - 52)

क्षत-विक्षत अंग प्रत्यंगकें
चुनि-बीछि-जोड़ि कए
देल जा रहल अछि शरीरक रूप
गनल जा रहल अछि लहास...[11]

कविक आत्मिक कष्ट होइत छनि ओहि राक्षसी प्रवृत्तिक राक्षससं जे मनुक्खकें सजमनि-खीड़ा बुझि टाकाक लोभमे एहेन हाल बना रहल अछि। आइ समाचार पत्र आ टेलीविजन एहेन खबरिसं भरल रहैत अछि जे एतेक लहास प्राप्त कएल गेल एहेन खराब हालतिमे। घृणा करैत छथि कवि ओहोन मनुक्खसं, जे ओकर आत्मा एहेन पाथर भए गेल छैक। सुन्दर सन दृष्टि छनि यथार्थकें देखेबा हेतु, एखनहुं हम सभ कुशल रहब से निस्तुकी नहि अछि। जे काज करए भोर निकलैत अछि, ओ सांझ धरि आपस आओताह की नहि, से शंका बनले रहैत छैक? ओ कविता विधामे अपन महत्त्वपूर्ण योगदान दए साहित्यक भंडारकें भरैत रहलनि। सफल कविताक सफलता तखने होइत छैक जखन ओहि कविताकें पढ़लाक बाद किछु सोचबाक लेल प्रेरित करए, से कीर्ति नारायण मिश्रक कविता सभ सोचबाक लेल, गुनबाक लेल प्रेरित करैत अछि। ■

**सन्दर्भ**


1. ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप: कीर्ति नारायण मिश्र, पारिजात प्रकाशन पटना, पृष्ठ सं.-9
2. ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप: कीर्ति नारायण मिश्र, पारिजात प्रकाशन पटना, पृष्ठ सं.-10
3. हम स्तवन नहि लिखब: कीर्ति नारायण मिश्र, किशुन संकल्प लोक सुपौल, पृष्ठ सं-7,
4. मैथिली नव कविता: डॉ रमानन्द झा रमण, पृष्ठ सं.-153
5. मैथिली पत्रिका लोक भूमि (कविताक कीर्तिमान: उदयचन्द्र झा विनोद): पृष्ठ सं.-35
6. ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप: कीर्ति नारायण मिश्र, पारिजात प्रकाशन पटना, पृष्ठ सं.-10
7. ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप: कीर्ति नारायण मिश्र, पारिजात प्रकाशन पटना, पृष्ठ सं.-13
8. सीमांत कविता संग्रह: कीर्ति नारायण मिश्र, भारती प्रकाशन बरौनी, पृष्ठ सं.-34
9. हम स्तवन नहि लिखब: कीर्ति नारायण मिश्र, किशुन संकल्प लोक सुपौल, पृष्ठ सं.-25
10. ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप: कीर्ति नारायण मिश्र, पारिजात प्रकाशन पटना, पृष्ठ सं.-75
11. आदमी कें जोहैत: कीर्ति नारायण मिश्र, किशुन संकल्प लोक सुपौल, पृष्ठ सं-52.




श्री अरुण कुमार, महानिदेशक, सीआरपीएफ सं भेटवार्ताक अवसर पर अ.भा.मि. संघक पदाधिकारीगण

# मिथिला चित्रकलाक उत्थानमे रांटी ग्रामक योगदान

✍ चंदना दत्त



लेखिका रांटी मध्य विद्यालय (मधुबनी) मे शिक्षिका छथि। मैथिलीक चर्चित युवा साहित्यकार छथि।
कृति : गंगा स्नान (मैथिली लघुकथा संग्रह)
लाल सोना (साझा संग्रह, हिन्दी)
पुरस्कार : डॉ. महेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार 2014
रक्तदान सृजन सम्मान, रोहतक।

**सम्पर्क:**
*ग्रा+पो: रांटी, थाना: राजनगर, जिला: मधुबनी (बिहार)-847211*
*ईमेल : duttchandana01@gmail.com*

मिथिलाक प्रत्येक गाम (नेपाल सहितमे) अनेक पावनि-तिहार वर्षभरि होइत रहैत अछि। समयावनि तिहारमे रंगबिरंगक पकवानक संग घरआंगन के निपाई-पोताइ आ देवाल आ आंगन मे रंगबिरंगक लिखियासं सजाएल जाएत अछि। एहि लिखियाके कालक्रमे मिथिला चित्रकला वा मधुबनी पेंटिंग्स कहल जाय लागल। एहि चित्रकलाक विकास कहियासं भेल से कहनाई कनि असंभव अछि। कहल जाएत अछि धनुष यज्ञकें सुअवसर पर महर्षि विश्वामित्रक संग युवराज राम आ लक्ष्मण जखन जनकपुर जाइत रहथि तं गामकेर घर-द्वारिकें चित्रित देखि विमोहित भ' गेल रहथि। एकर वर्णन करैत गोस्वामी तुलसीदास जी लिखैत छथि-

"मंगलमय मंदिर बस करे।
चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे। "

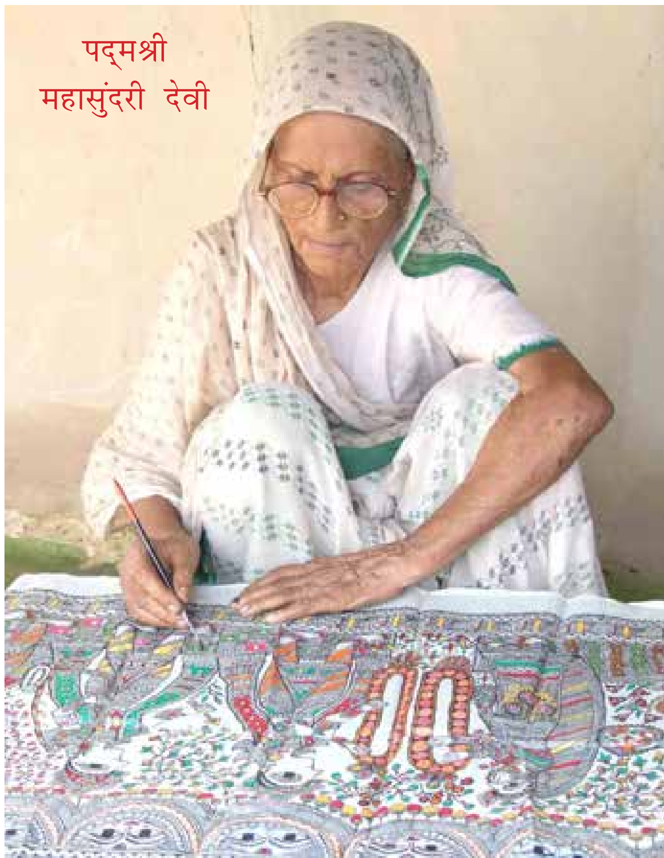
आब कहि सकैत छी, जे त्रेतायुगसं पूर्वहि मिथिलाक चित्रकला उन्नति केर शिखर पर विराजमान भ' चुकल छल।

ओहि स्वर्णयुग सं आइधरि मांगलिक सुअवसर पर सत्यनारायण पूजा, देवउत्थान एकादशी, गवहा संक्रांति सबमे विशिष्ट अरिपन मिथिलाकें क्षेत्रमे बनाओल जाइत अछि। भूमि चित्रांकन मे अरिपनक विशिष्ट स्थान अछि। मिथिला के बेटी के भरि कंठ गीत आ भरि हाथ अरिपन कें वरदान प्राप्त अछि।

डब्ल्यू जी आर्चर (आईसीएस) केर ढहल देवाल परहक 48 गोट चित्रकला अखनधरि ब्रिटिश संग्रहालय मे अछि। भूकंपग्रस्त मिथिला क्षेत्र कें।

पुनः बिहार मे 1966-67 ई. मे आयल भयानक दुख मिथिला मे अनाज लेल हाहाकार मचि गेल। एहि दुर्दशा केर चर्चा राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचल आ तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधीक विचारसं मिथिलाक खस्ता हालति कें सुधार करबाक हेतु भारतीय हस्तकला परिषद् केर अध्यक्ष पुपुल जयकर कें पठौलनि। पुपुल जयकर सांस्कृतिक विशेषज्ञ एवं मिथिला चित्रकलाक जानकार छलीह। ओ अपन विभागक वरिष्ठ डिजाइनर भाष्कर कुलकर्णी जीकें मधुबनी पठौलनि आ हुनका सं मिथिला पेंटिंगक संपूर्ण जानकारी लय एकटा रिपोर्ट बनाबय कहलखिन्ह। जाहिसं एहि क्षेत्र मे रोजगारक संभावना होइ। भाष्कर कुलकर्णी जे महाराष्ट्रीयन छलाह, हुनका एतुक्का स्थानीय भाषाक कोनो जानकारी नहि छलनि, ओ स्टेशन सं पूर्ब रांटी अयलाह त' जानकारी भेलनि जे मध्य विद्यालय रांटी के हेडमास्टर साहेब के अंगरेजी अबैत छन्हि। पातर-छितर, चोटी बन्हने कुलकर्णी महोदय हुनका अपन अयबाक उद्देश्य कहलखिन्ह।

रांटी गामक स्त्रीगणसं भेंट करबाक आ अपन मनतव्य बुझौल जाए तकर ब्योंत कयलाह मुदा पर्दा प्रथा कारणें मात्र किछु कायस्थ परिवार हुनका सं भेट कयलनि। श्रीमती महासुंदरी देवी (पद्मश्री आब स्वर्गीय), करपूरी देवी (नेशनल मेरिट सर्टिफिकेट, आब स्वर्गीय), पद्मश्री गोदाबरी दत्त सबसं ओ कहलन्हि अपन कलाकें कागज पर अंकित करय लेल, हिनका सब कें लड़का बियाह मे सिंदूर भरबाक कागज लिखबाक अभ्यास छलनि, मुदा पहिने त' प्राकृतिक रंग सं लिखय छलथि, तखन कनि टिप्स द' क' ओ कागज पर चित्र बनबौलनि। कायस्थक बेटा बिवाह मे पांच ताव कागज पर कोबर (2) दशावतार (1), बांस (1), कमलदह (1) आ पुनः पी रंग सं द्विरागमनक सिंदुरक कागज लिखल जायत अछि आ बियाह मे कोबर, लावा भूजयके दृश्य आ देवतापितर न्योतय केर



पद्मश्री
महासुंदरी देवी

दृश्य कागज पर वा देवाल पर बनाओल जाइत छल। संगहि कोबरक कोन पर नैना जोगिन लिखल जाइत छल। सबटा रिपोर्ट ल' आ आसपड़ोसक आनो गाम घूमि कुलकर्णी जी चलि गेलाह। पुन: किछु दिनक बाद आबि महासुंदरी देवी (रांटी) सीता देवी (जितवारपुर) जगदम्बा देवी (जितवारपुर) द्वारा बनाएल कागज लए दिल्ली गेलाह। ओतय ई चित्रसभ देखि कलाप्रेमी सभ मुग्ध भए गेलाह। एहि प्रकारें ई स्त्रीगण सभ अपन विरासत मे भेटल कलाकें रोजगारक साधन बनब' मे सफल भेलीह। मुदा घोघ सं बाहर निकलि अपन नामसं पहचान बनब मे सफलता प्राप्त करबाक संग समाजक आलोचनाक शिकार सेहो भेलीह।

रांटीक बाबू चन्द्रधारी सिंह सेहो एहि कलाकें विकासमे विशेष सहयोग देलनि। ओ आ हुनक पुत्र शशिधारी सिंह साहित्य अकादमीक कार्यक्रम आयोजित कय समस्त हस्तकलाक प्रदर्शन करबौलनि। कलाकार लोकनिकें आर्थिक प्रोत्साहन भेटलैन्ह ओ सभ धार्मिक कथा पर आधारित चित्र सभ बनब' लगलीह।

प्रसिद्ध चित्रकार उपेन्द्र महारथी सेहो हिनकर सबहक कलाकें प्रोत्साहन देलनि। हुनक प्रयाससं ई कला आओरो विकास दिस प्रवृत्त भेल। हुनके कल्पना सं बनल 'उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान' अखनो बिहारके सभ कला यथा मिथिला पेंटिंग, मंजुषा कला, एप्लीक, सुजनी, टेराकोटा, क्रोशिया, पेपरमैसी, सिक्की, लाह चुड़ी आदि सभ कला कें विकास आ विश्व मे पहचान बनि रहल अछि। उपेन्द्र महारथीक प्रयास सं अखनहुं प्रत्येक बरस अनेक कार्यक्रम आयोजित कयल जाइत अछि, पुरस्कार देल जायत अछि, कलाकार सबहक निबंधन कयल जायत अछि हुनका देश विदेशक बाजार उपलब्ध करओल जायत अछि। रांटी ग्राम मे कैकटा स्वयं सहायता समूह बनल अछि आ सबकें प्रशिक्षण, कलाकें प्रोत्साहन आ रोजगार देल जा रहल अछि उ.म.शि.अ. संस्थान दिस सं।

> **रांटीके पद्मश्री महासुंदरी देवी सर्वप्रथम 1961 ई. घरसं बाहर आबि मिथिला चित्रकला के व्यवसायीकरण करय लगलीह, 'मिथिला हस्तशिल्प कलाकार औद्योगिक सहयोग समिति' नामक एकटा सहकारी समिति बना गामक सब वर्गक महिला कलाकार सबकें रोजगारक अवसर देलनि।**

भूतपूर्व रेल मंत्री ललित बाबू, प्रसिद्ध कथाकार, समाजसेवी, स्वतंत्रता सेनानी, कला मर्मज्ञ मणिपद्मजी मिथिला चित्रकला लेल ठोस प्रयास कयलनि, मिथिला चित्रकला कें विदेश वाणिज्य विभाग सं सम्बद्ध करा देलनि। प्रो बाइवेस रिक्वाल्ड अपन टीम संगे मिथिला आबि डाक्युमेंट्री बनौलनि।

'ए डे इन मिथिला' विश्वभरि मे प्रदर्शित ई फिल्म कलाप्रेमी सभकें ध्यान आकृष्ट कयलक। घर आंगन मे कोबर अरिपन कें लिखिया करय बाली दाय-माय सब विदेश जा अपन कलाकें धूम मचा देलनि।

रांटीके पद्मश्री महासुंदरी देवी सर्वप्रथम 1961 ई. घरसं बाहर आबि मिथिला चित्रकला के व्यवसायीकरण करय लगलीह, 'मिथिला हस्तशिल्प कलाकार औद्योगिक सहयोग समिति' नामक एकटा सहकारी समिति बना गामक सब वर्गक महिला कलाकार सबकें रोजगारक अवसर देलनि। तुलसी सम्मान सं सम्मानित महासुंदरी आजीवन कलासेवा मे लागल रहलीह, जापान कें मिथिला म्युजियम मे कैक बार जाए अपन कलाके प्रदर्शन कयलीह। अखन हुनक पुत्रवधू राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता विभा दास, आभा दास, सभ कलासेवा मे लागल छथिन। शिल्पगुरु महासुंदरी देवीक निधन 14 जुलाई 2013 मे भेलनि।

**पद्मश्री गोदावरी देवी :** रांटी गाम केर गोदावरी दत्त जी कें 1980 ई. मे राष्ट्रपति पुरस्कार, 2007-08 ई. मे शिल्पगुरु सम्मान, 2019 ई. मे पद्मश्री भेटल छन्हि। आजीवन रांटीक विशिष्ट शैली रेखा शैली (लाल कारी लाइन पेंटिंग) मे चित्रकारी करैत विश्वप्रसिद्ध छथि। अपन गाम मे कतेक बेर प्रशिक्षण केंद्र मे गामक स्त्रीगण के प्रशिक्षित कए कलाक संग रोजगारक अवसर प्रदान कयने छथि। अनेक बेर जापान केर टोकियो हासेगावा केर 'मिथिला म्यूजियम' मे अपन चित्रकलाक प्रदर्शन कयने छथि। हिनकर बनाओल 'शिव धनुष' चक्र अद्भुत अछि। ई अपने आप मे मिथिला




चित्रकला क' 'इनसाइक्लोपीडिया' कहल जाइत छथि।

**स्व. कर्पूरी देवी :** रांटी गामक श्रीमती कर्पूरी देवी सुजनी आ मिथिला चित्रकलाकेर सिद्धहस्त कलाकार रहथि। बिहार राज्य पुरस्कार एवं मेरिट सर्टिफिकेट सं सम्मानित मधुर स्वभाव लेल सुविख्यात कर्पूरी देवी अनेक बेर जापान, जर्मनी के यात्रा करि अपन हस्तकलाक प्रदर्शन कयलनि। ई महासुंदरी देवीक छोट दियादिनी छलखिन्ह, हिनका दुनुके संपर्क सं हिनकर बहिकिरनी



दुल्ला मलाहिन मिथिला चित्रकलाक पर्याय बनि गेल। स्टेट अवार्डी दुलारी देवी अपन कलासं देश-विदेश मे सुप्रसिद्ध भ' गेल छथिन।

**बिमला दत्त :** अंतरराष्ट्रीय शिल्प पुरस्कार सं सम्मानित रांटी गाम कें बिमला दत्त 1970 ई. सं अपन कला साधनामे जुटल छथि। मधुर, मिलनसार स्वभावक बिमला दत्त भारतमे पहिल बेर अंतरराष्ट्रीय मास्टर क्राफ्ट अवार्ड सं सम्मानित कयल गेलीह 2017 मे। बिहार राज्य पुरस्कार (2019) चेतना समिति द्वारा ताम्र पत्र सं सम्मानित बिमला दत्त अनेक बेर अपना घर पर प्रशिक्षण केंद्र चलाए गामक असाक्षर, निस्सहाय, दिव्यांग, स्त्रीगणकें प्रशिक्षित कए रोजगारक अवसर द' चुकल छथि।



जापानक यात्राकए मिथिला म्यूजियम मे अपन कलाक प्रदर्शन कए चुकल छथि। अमेरिका, फ्रांस, जापान, जर्मनी आदि देशक प्रसिद्ध संग्रहालय मे हिनकर कलाकृति बेस प्रसिद्ध छन्हि। हिनकर पुतोह वीणा दत्त, बेटी शारदा बबली, नातिन प्रियंका दास, तूलिका दास, पोती श्रेयसी दत्त, माता मोहिनीश दत्त अपन विरासत मे भेटल कलाक साधना एवं प्रचार-प्रसार क' रहल छथि।

**संतोष दास :** रांटी ग्राम कें सुप्रसिद्ध कलाकार संतोष दास विश्वस्तर पर अपन कला साधना लेल जानल जायत छथि। हिनकर माता सावित्री देवी सेहो उत्कृष्ट कलाकार छलीह। हिनकर भातिज शांतनु दास आ पुतोह महालक्ष्मी कर्ण सिद्धहस्त कलाकार छथि आ देश-विदेश मे अपन कलाकें प्रदर्शन सं कलाप्रेमी सबकें मुग्ध क' रहल छथि।

**अरुण लाल दास :** बिहार राज्य पुरस्कार सं सम्मानित श्री अरुण लाल दास सिद्धहस्त कलाकार छथि। ओ सपरिवार मिथिला चित्रकलाक सेवा क' रहल छथि। पत्नी गंगादेवी, पुत्र वेद, भतीजी मुन्नी देवी (राज्य पुरस्कार प्राप्त) सब रांटीक प्रसिद्ध कचनी शैलीक लिखिया करैत छथि।

**स्व. रंजना देवी :** राज्य पुरस्कार सं सम्मानित रंजना देवी सुमधुर लोकगीतक संग मिथिला चित्रकलामे प्रसिद्धि प्राप्त कयने छलथि।

**स्व. सुमति दास :** रांटी गामक राज्य पुरस्कार प्राप्त कलाकार सुमति देवी बहुत नीक कलाकार छलथि।

एहि प्रकार हम कहि सकैत छी जे मिथिला चित्रकला कें जमीनसं आसमान तक कें ऊंचाई पर ल' जाए मे रांटीक कलाकारक अद्वितीय योगदान छन्हि। आदिकाल सं चलि अबैत ई कला जे पारंपरिक छल आब कलाक संग विस्तृत रोजगारक अपार संभावनासं भरल अछि। रांटी ग्राम मे शिल्प संघ (जीविका), ग्राम विकास परिषद् मे सेहो अनेक कलाकार के प्रशिक्षण एवं रोजगार देल जा रहल अछि।

मधुबनी स्टेशन के मिथिला पेंटिंग सं सजाबय मे रांटी, मधुबनीक अनिता देवी, रानी दत्त, ज्योति कुमारी, वन्दना कर्ण, अंजु दत्त, सुषमा मिश्रा, नर्मदा झा, नूतन बाला, रानी कुमारी, शम्भु जी, सुनीता देवी आदि कलाकारक सहयोग अछि।

उपेन्द्र महारथी शिल्प अनुसंधान संस्थान, पटना आब कलाकार सबके प्रशिक्षण एवं विस्तृत बाजार उपलब्ध करा रहल अछि। रांटी ग्रामक निबंधित 250 कलाकार कें समूह बना विभिन्न प्रकार कें प्रदर्शनी आदि मे जयबाक अवसर प्रदान करैत अछि। राष्ट्रीय पुरस्कृत विभा दास अखन उ.म. शि.अ.सं. मे एक वर्षक निशुल्क प्रशिक्षण दए रहल छथि। ■

# यात्रा मिथिलाधाम सं कश्मीर धरि ( 2015 )

✍ डॉ शेफालिका वर्मा



शेफालिका वर्मा मैथिली साहित्यक प्रख्यात नाम। साहित्य अकादेमी सम्मान, फर्स्ट वर्ल्ड वीमेन अवार्ड, लाइफटाइम वीमेन एक्सीलेंस अवार्ड, इन्डो यूरोपियन चैम्बर, भारत सरकार, यात्री चेतना सम्मान, मिथिला विभूति, स्वजन सम्मान, मिथिला रत्न, अटल मिथिला सम्मान, मैथिली की महादेवी, काव्य विनोदिनी, मुरलीधर शेखर सम्मान, मैथिली कि मीरा आदि अनेको सम्मानसं सम्मानित। हिन्दी आ मैथिलीमे एक दर्जन सं बेसी पोथी प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, मैथिली भोजपुरी अकादेमी, दिल्ली सरकार आओर बहुत रास संस्थामे से संबद्ध।

*संपर्क :*

*ए, 103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009*

*मोबाइल : 9311661847, ईमेल :* shefalika1943@gmail.com

अचक्के सुनील पवन केर फोन आयल हमरा अहांके किछु समय चाही ...हम अकचका गेलौं ...हमरा संग अफरात समय छल मुदा, आब हमरा ककरो सं मिलवाक मोन नै करैत अछि...पता नै किएक ...

की बात सुनील?

हम एकटा डॉक्यूमेंट्री फिल्म बना रहल छी। मिथिला धाम। ओकरे शूटिंग अछि...

मुदा हम ते 3-4 दिन मे कश्मीर जा रहल छी...एहि बेर माफ़ क' दिय...फेर देखल जेतैक...

कनि निराश भेलाह फेर कनि काल बाद हुनक फोन आयल...हम सब परसू शूटिंग करब नीलम स्टूडियो में...अहांके आबै परत... एहि सब विचार मे डूबल, स्टूडियो मे सभक प्रेम भाव, गंगेश गुंजन, मृदुला, अखिलेश झा सभक प्रेममय व्यवहार, ...

दादी मां, देखियो ने पहाड़ स्नो सं भरल कतेक नजदीक। अदितिक स्वर हमर तन्द्रा तोड़ि देलक, नीलम स्टूडियो सं कश्मीरक फ्लाइट मे आबि गेलौं, जा रहल छलौं कश्मीर आ मोन घुरिया रहल छल नीलम स्टूडियो मे - जहाज आस्ते आस्ते नीचा उतरि रहल छल, चारु दिसि हिमाच्छादित पर्वत श्रेणी।

श्रीनगर एअरपोर्ट पर जहाज़ उतरि रहल छल। जेना हिमालयक आंगन मे।

राजीव जया दिल्ली विश्वविद्यालय मे एसोसिएट प्रोफेसर छल इतिहास केर। अदिति वनस्थली मे इंजीनियरिंग केर अंतिम वर्ष मे छलीह। राजीव कॉलेज से भेटल एलटीसी पर कश्मीर केर पैकेज पहिनहि ल' नेने छल। टैक्सी ठाड़ छल, हमरा सब के होटल रिगल पैलेस ल' गेल। रस्ता भरि टूटल भांगल सड़क अपन गाम घर। बगल से झेलम नदी। ''एक मुसाफिर एक हसीना केर गीत मोन पड़ि गेल... हमको तुम्हारे इश्क ने क्या क्या बना दिया...कुछ न बन सके तो तमाशा बना दिया।'' हमर मोने चित्र सब आब' लागल एहि शिकारा मे जय मुखर्जी आ एहने कोनो दुमहला घर मे साधना पर्दा के अड़ मे नुकायल हेती। चूंकि हमर प्रिय फिल्म छल...एक मुसाफिर एक हसीना जाही मे 21 टा गीत छल... सम्पूर्ण फिल्म कश्मीर मे फिल्मायल गेल छल।

तावत राजीव ड्राइवर सं पुछलक जे बाढ़ि मे श्रीनगर केर की हाल छल। ''नै पुछू जतेक दुमहला देखैत छी सबटा डूबि गेल छल।'' पूरा श्रीनगर डूबि गेल छल। हमर तन्द्रा टूटल। तावत मुख्य मार्किट मे हम सब आबि गेलों ओहि ठामक सड़क सब दोकान सभक दृश्य भव्य छल, होटल रीगल पैलेस बड़का होटल छल मोन खुश भ' गेल। हम आ अदिति मोबाइल मे वाई फाई लेल पुछ्लों, ओ तुरते द' देलक। फेर ते अदिति चारु गोटे के मोबाइल मे वाई फाई लगा देलक। हम सब खुश भ' गेलों। आखिर ज़माना वाई फाई वालाक भ' गेल छैक ने।

करीब 12 बजे दिन मे तैयार भ' निशात आ शालीमार बाग़ देखवा ले निकललौं। निशात बाग़ डल झील के पूरब छल। कतेक गोटे शिकारा से सेहो एहि सब ठाम अवैत छथि। एहि बाग़ के सन् 1633 ई. मे हसन आसफ खान मुमताज महल केर पिता आ नूरजहांक भाई बनौने छलाह।

निशातक अर्थ खुशी होइत अछि। खुशीक बगीचा आ कि बाड़ी। बाड़ी छोट होइत अछि बगीचा पैघ। ई बगीचा यानी मुगल गार्डन एहि क्षेत्रक सभ सं पैघ सीढी बला उद्यान अछि, चीड़, चिनार देवदार...

सुन्दर ढंग सं बगीचा के सजौने छल। तरह तरह केर फूल विहुंसी रहल छल, सरिपहुं खुशी क' बगीचा छल। मोन उन्मत्त भ' जायत छल। ''ये वादिये कश्मीर जन्नत का नजारा''... यानी स्वर्ग कते त' एहि ठाम।

बगीचा मे चाकर-चाकर सीढ़ी जकां बनल छल, तैयो हम नै गेलौं ओतेक ऊपर...रस्ते मे सब कश्मीरी ड्रेस मे फोटो खिंचेवा लेल घेरि लेलक, सांच मोन मे हुल्की मार' लागल हम सोचि के गेल छलौं जे ई मौका कतौ भेटत ते हम मौका चूकब नै। जया आ अदिति तैयार नै भेल हम सब से पहिने तैयार भ' कश्मीरी ड्रेस पहिर' लागलौं। हमर उत्साह देखि जया, राजीव आ अदिति तीनू कश्मीरी ड्रेस मे फोटो खींचा लेलक। ओहि ठाम एक दुई टा बेंच छल। हम बैसि रहलौं तों सब जो घूम आ हम एहि फोटो वाला लग बैसैत छी।

ओहिठाम सब के देखैत रहलौं एकटा अद्भुत कश्मीरी बाला एलीह अपन संगी सभक संगे... ओहह ई अपरूप रूप गिरा अनयन, नयन बिनु बानी। हमर हाल छल। हमर लेखनी मे ओहि प्राकृतिक सुन्दरताक वर्णन करबाक क्षमता नै अछि। ओ जखन चलि गेलीह ते चेत आयल एकटा फोटो ओकरा संग किएक ने खींचा लेलौं। तखन अदिति सेहो बजलीह दादी मा अहुं देखलौं ओकरा। बाप रे कतेक सुन्दर छली बिन रुज लिपस्टिक के।

फोटो, फोटो, फोटो, राजीव खाली फोटो खिंचवाक पाछा छल।

हम सब आब कनि आगू शालीमार बाग़ गेलौं। एहि गार्डेन के जहांगीर अपन नूर बेगम लेल सन् 1619 ई. मे बनने छल। एकर सब सं पैघ सुन्दरता फूल के संगे फव्वारा छल, एकटा विचित्र आकर्षण मे बान्हि नेने छल हमरा सब के। कतेक सिनेमाक गीत सब मोन पड़ैत रहल। विचित्र बाग़ छल विशेष प्रयोजन लेल एहि बगीचा के तीन भाग मे बांटि देल गेल छल।

बाहरी बगीचा दीवाने आम आ बीच वाला दीवाने खास सम्राट लेल छल। चारू दिसि पाइनक फव्वारा। मोन उन्मन भ' रहल छल। स्कूलक बच्चा सब बस मे भरि भरि आयल छल, पुछ्लों गर्मी छुट्टी अछि की। छोट सन बच्चा बाजल हमरा सब के समर वेकेशन नै होइत अछि। तखन ज्ञात भेल जे कश्मीर मे विंटर वेकेशन होइत अछि। नवम्बर सं फ़रवरी धरि। किएक ते सौंसे श्रीनगर बर्फ से भरल रहैत छैक।

चश्मे शाही यानि राजकीय बसन्त सरिपहुं एकर भव्यता आ मनोहारी दृश्य जेना सौंसे कश्मीर के सुंदरता के एक ठाम राखि देल गेल होय। एक एकड़ जमीन मे एकरा सन् 1632 ईस्वी मे शाहजहां निर्माण केने छल बाद मे एहि चश्मेशाही के टूरिस्ट विभाग अपना मे ल' लेलक।

आब हम सब डल झील के शिकारा पर छलौं। स्वर्गक सुख। शिकारा हमरा सब के चार चिनार ल' गेल डल झील के ठीक बीच मे।

डल झील श्रीनगर के हृदय स्थल पर बसल अछि। टूरिस्ट विभाग एकरा कश्मीर के ताज मे जड़ल गहना मनैत अछि। साढ़ पन्द्रह किलोमीटर मे पसरल डल झील व्यावसायिक आ पर्यटक लेल बड़का सहारा थिक। शिकारा पर चार चिनार दिसि जायत रही सब अपन अपन कल्पना मे डूबल आ हम शशि कपूर के जेना गाबैत देखि रहल छलों। ''बागों मे जब जब फूल खिलेंगे, तब तब ये हरजाई मिलेंगे।'' परदेशियों से न अंखियां मिलाना। सरिपहुं बाहर के आदमी पहाड़क सरल सहज हृदय के कोना ठकि लैत छैक। चार चिनार डल झील के बीच मे बसल द्वीप। हम सब ओहिठाम से चारु कात प्राकृतिक सुषमा के आंखि सं हृदय मे आत्मसात क' रहल छलौं। जया ते खूब उछलि रहल छलीह एकटा बेदरा जकां कखनो राजीव संग ते कखनो अदिति संग हमर हाथ मे कैमरा। कखनो कैमरा राजीव के थमाय हमरा खिंची लैत छलीह, ओकर उछ्लनाय देखि बगल मे बैसल एकटा परिवार जे प्रकृतिक बदला हमरा सब के एंजोय क' रहल छल चुपचाप हमर कान मे पुछलक, बेटी छी अहांक...? हम खूब जोर से हंसी देलौं, फुस्फुसाय देलौं पुतोह छी हमर... आब ते समस्त परिवारक आंखि चाकर भ' गेल। एहनो होइत छैक बेटा-पुतौह-पोती एना नचैत होइत। ओहि बेचारी सब के बेसी देखबाक मौका नै भेटलैक...शिकारा वाला चीकरैत बाजल, जल्दी चलू, मेघ लगी गेल छय।

सभक खुशी खत्म। सब अपन अपन शिकारा दिसि दौड़ल। मेघ लागल छल शिकारा वाला बाजल, कश्मीर के मौसम आ बम्बई के फैशन कखन बदलि जाय केओ नै जनैत अछि। किनार पर टैक्सी ठाढ़ छल मुदा ट्राफिक एतेक जाम, पुछ्लों ते बजल शनि-रवि छै, दुई-तीन दिन बाद रोजा सुरु हेतैक, फेर एक दुई तारीख से अमरनाथ यात्रा सुरु भ' जायत। तखन टूरिस्ट कम भ' जायत छैक।

सांझ भ' गेल छल देह थाकि गेल मोन फूल सन विहुन्सल सभक। जाम मे फंसल रही कि बरखा शुरू। स्नो फॉल कनिक सेहो। मुसलाधार वृष्टि आ बगल मे पहाड़ पर सूर्य अपन सम्पूर्ण तेजक संग चमकि रहल छल। ड्राईवर बाजल इएह ते कश्मीर छियै। ओना बम्बई केर फैशन कश्मीर केर मौसम कखन बदली जाय केओ नै जनैत अछि। हम सभ भाभा के हंसि देलौं।

जिनगी मे कतेक बात सोचल रहि जायत छैक, कतेक बिन सोचल सामने आबि जायत छैक। हम नै जनैत छलौं जे हम कहियो कश्मीर जायब, जखन राजीव जया ओहि दिन बाजल मां तू ठीक से रह, तोरा कश्मीर जेबाक छौ। हम अकबकाय गेलौं, हरदम न्यूज़ मे रहय बला कश्मीर सब तरह से उठापटकक स्थिति में।

राति मे डायनिंग हाल मे कतेक गोटा सं भेंट भेल, सब बाल-बच्चा संग घुमय आयल छलाह, ककरो कोनो भय नै होइत छल जेना देशक आन भाग ओहिना ते कश्मीरो अछि। खेबा-पीबाक बाद हम आ राजीव बड्ड देर धरि यात्रा मिथिला धामक चर्च करैत रहलौं। राजीव बाजल

– जेना अपना सब डल झील देखलौं, ओहिना ते कोसी के धार अछि, ओकरा सेहो टूरिस्ट सभक आकर्षण क' केन्द्र बनाओल जा सकैत अछि। जखन नदी शांत रहय तं झिलहेर खेलवा लेल, बाढ़ि आबय ते मोटर बोट मे नदीक करेंट पर रैफ्टिंग करत सैलानी सब।

सरिपहुं सब टा खेल टूरिस्ट विभागक थीक। दरभंगा मे जतेक पोखरि अछि ओकरो टूरिस्टक आकर्षण बनाओल जा सकैत अछि। सहरसाक मत्स्यगंधा एकटा अनमोल दर्शनीय स्थान बनौलक टूरिस्ट विभाग, मुदा देखरेख के अभाव मे मत्स्यगंधा अप्पन हाल पर आठ आठ नोर खसा रहल अछि। कोनो चीज बना लेनाय एक बात थीक, मुदा ओकरा सम्हारि के रखनाय एक बात। राजा-महराजाक महल दोमहलाक कमी नै मिथिलांचल मे मुदा दु:ख ते ई अछि जे उत्तर बिहार केर दुर्दशा केकरो देखायल नै जायत छैक, दक्षिण बिहारक गौरवमय अतीत दर्शाय बिहार के गौरव बनि जायत अछि।

दोसर दिन जलखै कर' के बाद हम सब पहलगाम ले विदा भेलौं। रास्ता मे केसरक खेती देखि मोन उत्फुल्ल भ' गेल। एखन छोट छोट पौध छल। सड़कक कात मे बड़का बड़का दोकान केसर केर अहमद केसर वाला खान केसर वाला; हम सोच' लगलौं यदि मूंगक खेतक कात दोकान खुजि जाय झा मूंग वाला, रामजी मखान वाला, लाला मूंग, मिश्र मूंग, वर्मा मूंग, यादव मखान। ई हमर अप्पन परिकल्पना थीक, कारण जे गिरहथ बेचैत छथि ते कनि बिजिनेस के प्रकार बदलैत ओकरा बेचवाक, प्रचार करवाक एहेन ढंग होइ जे टूरिस्ट आकर्षित भ' जाय। मिथिलाक सनेस खजूर, पिड़किया, निमकी ई सब मिथिलाक विशेष पकवान थीक, जे मास मास धरि ख़राब नै होयत अछि। अपनों देश लेल आ विदेशो के पर्यटक लेल विशिष्ट सनेस भ' जायत। विकासक सोच विशिष्ट हेबाक चाही। टूरिस्ट विभागक सब टैक्सी ड्राइवर ट्रेंड छल। पर्यटक के गाइड जकां समझबैत छल।

ओना हम सब श्रीनगर मे देखने रही बड़का टूरिस्ट ऑफिस तखन सुनील पवन आ अखिलेश मोन पड़ि एलैथ जे यदि यात्रा मिथिलाधाम के टूरिस्ट ऑफिस रहय, जाहि मे मिथिला धामक तमाम सूचना रहैक; सभ ठामक पैम्पलेट, बुकलेट रहय।

केसर लेल ड्राइवर कह' लागल जे एहि ठामक एक किलो केसर जखन बहार जायत अछि ते ओहि ठामक व्यापारी ओकरा डेढ़ किलो दुइ किलो बना बेचैत अछि, कश्मीर मे केसरक बड़ महत्व

**चाह पीबा ले मोन छटपट क' रहल छल। ड्राइवर सेबक बगान के बीच गाड़ी ठाढ़ केलक, चाह जलखै भोजन सब चीजक छोट छोट दोकान, संगे कश्मीर इम्पोरियम केर बड़का दोकान। सभ टा टूरिस्ट विभागक कृपा छल जकर यात्रा मिथिला धाम के बड्ड आवश्यकता – अखरोटक बड़का गाछक छाहरि मे मेज कुर्सी लागल छल।**

अछि। चाह सं ल' क' खान पानक प्रत्येक चीज मे केसर देल जायत अछि, आगु सड़कक दुनू कात चिनारक गाछ बड्ड मनोरम दृश्य छल। आब आबि गेल सेबक बगीचा, सेब सितम्बर-अक्टूबर मे पकैत अछि एखन हरियर हरियर सेब लाल हेबा लेल उताहुल। ।

चाह पीबा ले मोन छटपट क' रहल छल। ड्राइवर सेबक बगान के बीच गाड़ी ठाढ़ केलक, चाह जलखै भोजन सब चीजक छोट छोट दोकान, संगे कश्मीर इम्पोरियम केर बड़का दोकान। सभ टा टूरिस्ट विभागक कृपा छल जकर यात्रा मिथिला धाम के बड्ड आवश्यकता – अखरोटक बड़का गाछक छाहरि मे मेज कुर्सी लागल छल – हम राजीव अदिति सेबक बगीचा मे घुमैत रहलौं, फोटो खिंचवैत रहलौं गाइडक संगे, जया इम्पोरियम मे खरीदारी करैत रहलीह।

कनिक काल मे चाह-ताह पीबी हम सब विदा भेलौं पहलगाम लेल। रवि हेबाक कारण एतेक ट्रैफिक छल जे अप्पन दिल्ली मोन पड़ि रहल छल। अंत मे पहलगाम बस्ती, मार्केट सब छोड़ैत हमर सभक टैक्सी काते कात परिस्तान रिसोर्ट लेल जायत गेल। परिस्तान चंदनबाड़ी रोड पर सबसं अंतिम रिसोर्ट छल पहाड़ पर बनाओल। परिस्तान पहाड़क कोर मे तीन ठाम उंच मे बनल छल। लगैत छल जेना कोनो चिड़ै पंख पसारि उड़वाक प्रक्रिया मे छल। चारु दिस बर्फ सं भरल पहाड़ सामने मे बेता नदी जोश खरोश सं बहि रहल छल। विचित्र स्वप्निल दृश्य छल। लकड़ीक बनल सम्पूर्ण रिसोर्ट अद्भुत। बेडक लग सिरोहना मे बड़का बड़का खिड़की बनल छल जाहि सं हुलकैत बर्फ भरल पहाड़ हमर सभक अभिनन्दन क' रहल छल कि हम सब प्रणाम क' रहल छलौं।

ओहि ठाम लोक सब कह' लागल जे किछु दिन पहिने अबितौं ते एहिठाम सलमान खान बजरंगी भाईजान केर शूटिंग क' रहल छलाह। मोन एहिना उमंग मे आबि गेल। राति ओहिठाम रुकबाक छल। बेता नदी साक्षात अमरनाथ जी सं एहिठाम बहैत छल।

ड्राइवर हमर सभक मोन देखि गाड़ी सं बेताक तट पर ल' गेल। तावत जोर से बरखा होम' लागल। फेर वैह जुमला बम्बई के फैशन आ कश्मीर केर मौसम के ठेकान नै कखनि बदलि जाय। करीब आधा-पौन घंटा गाड़ी मे बंद रहलौं, बरखा किछु कम भेल ते सब गोटा बिल सं जेना निकलि गेलौं। ओहि सुनसान स्थान पर बेताक स्वच्छ स्फटिक मुक्ता शिशु सन रजत हास मे जया राजीव अदिति खूब अनघोल मचेलक आ हमरो खिंची लेलक। ड्राईवर सब फोटो, वीडियो लैत रहल आ सामने सद्य: अमरनाथ पर्वत जेना हमरा सभ के आशीर्वाद द' रहल छलाह। हमहूं बेताक जल हाथ मे ल' समस्त परिवार,

समस्त अप्पन लोग सभक स्वास्थ्य लेल बर्फानी बाबा सं प्रार्थना केलौं।

राति मे जखन डाइनिंग हॉल खेबा लेल गेलौं त' सबटा भरल छल सैलानी सब सं अप्पन अप्पन परिवारक संग। एकटा जे दहशत छल कश्मीरक नाम से एक दम्मे तिरोहित भ' गेल। ओहि राति परिस्तान होटल मे सिढ़ौना मे बर्फक पहाड़ ठाढ़ छल। मनमोहक दृश्य।

दोसर दिन जलखई क' करीब साढ़े आठ बजे मे भोरे निकलि गेलौं चंदनबाड़ी लेल। ओहि ठाम फेर खाली बरफ केर बड़का बडका चट्टान, सब केओ स्केटिंग करैत छल, स्लेज गाड़ी सं जाइत छल। राजीव जिद्द क' देलक मम्मी अहूं चलू स्केटिंग लेल। बरफ पर चलबाक एको रत्ती मोन नै छल, मुदा बाल बच्चा केर जिद्द के आगू स्केटिंग वला जूता पहिरलौं, लाठी सेहो देत छल, राजू मना क' देलक लाठी लय मम्मी की करत। मुदा हमरा मोन छल इंग्लैंड सं पिंकी पाहून कहने छलाह जे पहाड़ पर चढबा मे लाठी लेब ते सब टा वजन देहक लाठी पर चलि जायत छैक। तखन हम जया दुनु गोटे लाठी ल' लेलों। कनि दूर ऊपर गेलौं, देह हाथ सं बेसी मोन सिहरि रहल छल। हम जेना पिछड़ि रहल छलौं। राजीव हमरा पकड़ि बरफक कात मे एकटा पत्थर पर बैसाय देलक। पाथर अदिति कत सं कत चलि गेल छल, राजू जया सेहो देखा नै पडैत छल। हम चुपचाप मोबाइल से फोटो मे देखैत रहलौं।

जया घुरि एलीह कनिक ठाढ़ रहैक बाद दुनु गोटे आस्ते-आस्ते ऊपर जमीन पर चलि एलों। बर्फक बड़का पहाड़, सामने मे अमरनाथ आ शेषनाग पहाड़ माथ उठोने शान सं जीवन जीवाक प्रेरणा देत छल।

बेता नदी पहाड़े जकां अमरनाथ सं निकलि जीवन जीवाक प्रेरणा दैत छल। कतबो राह मे पाथर आबय, कांटा आबय, रुकू नै चलैत चलू जाधरि मंजिल नै भेटय। मुदा, हमरा ते सब किछु भेटि गेल छल, तखन किएक ने मुक्ति भेटैत अछि। गाना मन पड़ि गेल वर्मा जी आ तरुणा दुनु बाप बेटी के गाओल। ''तुझे भुला के मैं एक पल कभी जीया तो नहीं।''

सब ठाम चाह के दोकान आ भुट्टा पकाबैत-मुदा हम सब रुकलहु नै बेताब वैली देखबा ले निकलि गेलौं। रास्ता मे ड्राइवर गाइड करैत रहल जे कोना बेताब के शूटिंग एहिठाम भेल छल, कोन घर मे शूटिंग भेल छल सब टा अछि। सब सं पैघ गप्प जे फिल्म के नाम बेता नदी क' पानि यानि आब इज्ज़त किछु एहिना ओ बखान केलक...बडका पार्क बेता नदीक कलकल-छलछल ठाम ठाम ओकरा बान्हि विलक्ष्ण रूप देने छल। हम ते थाकि गेल छलौं। कखनो अदिति घिचि क' ल' जायत छल ते कखनो ड्राइवर ''मम्मी कनिके दूर चलू नीक लागत'' कहैत बाहिं पकड़ी ल' जायत छल। कश्मीर मे सब ड्राईवर हमरा मम्मी कहैत छल। हंसी लागि जायत छल संस्कृति के गप्प मोन पड़ि दादी मां अहां के सब गोटे मम्मी किएक कहैत अछि। आय ओ कश्मीर मे रहितैक ते।

लड़का सभक झुण्ड पागल भ' डांस करैत छल जतेक गीत कश्मीर मे फिल्मायल गेल छल सब टा गीत गाबैत... तावत एकटा झुण्ड टहंकार सं गावैत। ''अई अई या करूं मैं क्या सुकू सुकू।'' हमरा खूब जोर के हंसी लागि गेल। भावना के घरक नाम सुकू छी। जंगली फ़िल्मक जे कश्मीरे मे शूटिंग भेल छल। सब टा थकान खत्म भ' गेल, बैसि चाह पिबलहूं, अदिति भुट्टा। चूंकि अमरनाथ यात्रा एक या दू जुलाई से शुरू होइक छल। रास्ता भरि कैंप लगाओल जा रहल छल, लंगर केर, रजिस्ट्री करेवाक, एहि ठाम से 35 किलोमीटर छल अमरनाथ।

दोसर दिन भोरे जलखै क' हमसब सोनमर्ग ले विदा भेलहुं। रास्ता भरि पहाड़, देवदारक गाछ। दोसर दिस खादि - ड्राइवर बाजल 'ई जे देवदारक गाछ अछि, इएह पहाड़ के थमने अछि। एकटा गाछ लगाऊ चारि पांच टा अपने जनमि जायत छैक। पहाड़क माटि, पाथर केकरो खिसक' नै दैत छैक। हमरा अपन मिथिलाक संयुक्त परिवार मोन पड़ि गेल, परिवारक मुखिया एकटा गाछक जड़ि होयत छैक। मुदा सब किछु बदलि गेल। परिवारक कन्सेप्शन बदलि गेल, हम दुइ हमर दुइ भ' गेल; आब ते सेहो नय रहल। न्यू क्लीयर परिवार भ' गेल। केकरो ककरो आवश्यकता नै।

देखू सिन्ध नदी कतेक करेंट मे बहि रहल अछ, सोनमर्ग आबि गेलौं - ड्राइवरक बोली सुनि हम चौंकि उठलौं, किदन कहां दन मोन मे घुरियाइत रहैत अछि।

सोनमर्ग मे फेर टैक्सी बदल' पड़ल। टैक्सी वाला सब घेरि लेलक कोन कोन पॉइंट पर जायब, प्रत्येक पॉइंट के अलग अलग चार्ज, अकास के छुबैत सोनमर्ग तहियो से आगु, बलतल से अमरनाथ मात्र पन्द्रह किलोमीटर छल, चंदनबाड़ी सं पैंतीस किलोमीटर। एहि ठाम टैक्सी बलाक मोल भाव बहुत छल जे हम ते कहियो नै तैयार हेतों। सोनमर्ग के होटल के पाछा सिंध नदी पूर्ण तेजी सं बहि रहल छल।

अंत मे राजीव मोल-भाव कय बालतल आ कोनो आर पॉइंट देखवा ले हम सब विदा भेलौं। बालतल जाहि ठाम सं हेलिपैड सं अमरनाथ जेवा लेल पहाड़ पर लैंडिंग स्थान बनल छल। तखन रास्ता मे राजीव ओहि टैक्सी वाला से गप्पे गप्प मे पुछलक जे टैक्सी के मालिक कतेक पाय ओकरा सं लैत अछि। गप्पे गप्प मे किछ पाय बढ़ाय राजीव ओकरा ज़ीरो पॉइंट, टाइगर हिल, एल ओ सी पता नै एके ठामक कतेक नाम छैक। ओहि ठाम खाली सीमेंटक रस्ता बनल छल आगू पाछू ओहिना जेना पहाड़क होइत छैक। गाड़ी से उतरिते जाड़ सं कंपकंपी छूट' लागल सब केओ गर्म कपड़ा पिन्हे छल। मोन पड़ि गेल - आहा दिल्लीक गर्मी।

ड्राइवर बाजल ओ जे सामने देखा पड़ैत अछि ओ अमरनाथ आ बगल मे शेषनाग पर्वत। फेर एक कात आंगुर उठवैत बाजल जे एहि पहाड़क लेफ्ट मे पाकिस्तान छै। ई बॉर्डर लाइन थीक। अमरनाथ बाबा के लग से देखि अभिभूत भ' गेल छलौं,

लगैत छल जेना आंगुर बढ़ाय स्पर्श क' लेब। तखन राजीव बुझेलक चंदनबाड़ी सं अमरनाथ 35 किलोमीटर आ एही ठाम सं मात्र 15 किलोमीटर अछि। कतेक देर धरि ओहि बर्फानी बाबा के नमन करैत रहलौं, गोहारि परैत रहलौं - शेषनाग झील अमरनाथ के रस्ते मे छैक। कहल जाइत छैक जे शिव अपन सबटा सांप के शेषनाग झील मे दय देलखिन आ सब आभूषण उतारि शेषनाग झील मे पार्वती क' संगे समां गेलाह। लोग लेल क्षिति जल पावक गगन समीर छोड़ि गेलाह।

बर्फक टाल यानि ग्लेशियर पर 15-20 टेंट मे दोकान चाहक बनल छल। हम ते बर्फ पर पिछड़ि जायत रही, हाथ पकड़ि जया आस्ते आस्ते टेन्ट मे लागल एकटा कुर्सी पर बैसा देलक। ओ सब चलि गेल स्केटिंग करबा लेल हम चाह पर चाह। 4-5 कप चाह पीबी गेलौं। छोटका-छोटका कप कागज़ बला 20 टाका मे एक कप चाह। पहाड़ पर ओकरा सभक गुजर बसर एहि सं चलैत छल। आमलेट केर बिक्री सब सं बेसी छल।

राजीव हमर पयर लग सं बर्फ उठाय फेक' लागल। ओम्हर सं जया दौड़ल एलीह मम्मी हमर हाथ जाड़ सं नील पड़ि गेल। हमरा हंसी लागि गेल। हाथ पियर भ' गेल ई ते जनैत छलौं, मुदा नील। जया के हाथ ठीके नीला भ' गेल छल। चाह पीबलाक बाद जया जबरदस्ती हमरा टेंट सं बहार ल' गेल आ हमरा पर बर्फ फेक' लागल। हमहुं जया पर। विश्वास नै होइत छल जेना सिनेमा देखि रहल होइ।

एहि सब मे करीब दू-तीन घंटा बीति गेल होयत, वापिस ऐबाक लेल अपन गाड़ी लग एलौं ते एक लाइन सं सेना भरल ट्रक कारगिल दिस जा रहल छल। हमरा सब से सटल ट्रक सब जा रहल छल। सब जवान हमरा सब दिसि ताकि रहल छल। सबटा नबका-नबका छौंड़ा सब। हम सब कखनो हाथ हिलाय, कखनो दुइ आंगुर सं विक्ट्री (विजय) केर चिन्ह बनबैत छलौं, बाद मे हम सब लगातार सैल्यूट करैत रहलौं, प्रत्युत्तर मे ओ सब हमरा सबके ओहिना जबाब दैत रहल, करीब सौ ट्रक सेनाक जवानक छल। जाधरि ओकर सभक ट्रक चलि नहि गेल सब गाड़ी अनुशासन मे ठाढ़े रहि गेल। आंखि सं दहो बहो नोर बहि रहल छल, ई बच्चा सब देशक रक्षा लेल जान प्राण देम' जा रहल छल, मुदा देशक भीतर की स्थिति छल - आखिर देश लेल सोचत के, कतेक मोसकिल सं ई देश अजाद भेल छल कतेक शोणितक वैतरणी बहि गेल, हमर सभक देश गंगा, जमुना, कोसी, चिनाब, सिंध, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा एहेन-एहेन कतेक नदी के अपन बाहुपाश मे समेटने अछि, ई प्रेमक

> **हमर सभक देश गंगा, जमुना, कोसी, चिनाब, सिंध, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा एहेन-एहेन कतेक नदी के अपन बाहुपाश मे समेटने अछि, ई प्रेमक भावभूमि थीक। जाहि मे मिथिलाक संस्कार संस्कृति सौंसे विश्व के प्रेमक संदेश देने अछि। तखन ते पर्यटन विभाग मिथिलाक संस्कारक भाषा अपनेलक 'अतिथि देवो भव'।**

भावभूमि थीक। जाहि मे मिथिलाक संस्कार संस्कृति संसे विश्व के प्रेमक संदेश देने अछि। तखन ते पर्यटन विभाग मिथिलाक संस्कारक भाषा अपनेलक 'अतिथि देवो भव'। सेनाक जवान सब के देखि मन किछु भारी भ' गेल।

वापिस जखन सोनमर्ग पहुंचलौं तं सांझ भ' गेल छल, सब गोटे बजैत छल जे किछु दिन पहिने सलमान खान "बजरंगी भाईजान" के शूटिंग एहिठाम केने छल। जे होटल मे ठहरल छल सलमान खान से होटल ओ देखेलक। सभक मुंह सं ओकर बड़ाई। रोज सांझ मे हमरा सब से भेंट करैत छल, बच्चा सभ के बड्ड मानैत छल, बजरंगी भाईजान के शुरू मे पहलगाम मे शूटिंग छल फ़िल्मक अन्त एहि ठाम सोनमर्ग मे भेल छल। यानि जतेक मुंह ततेक बड़ाई सलमान खान के।

अंतिम दिन हम सब गुलमर्ग लेल विदा भेलौं। सौंसे रस्ता चीड़, देवदार सं भरल। ड्राइवर बाजल एहिठाम गाछ के नै काटल जायत छैक तैं एहि ठाम कहियो गर्मी नै पड़ैत अछि, अहां सब दिस गाछ के काटल जायत छैक तैं एतेक गर्मी पड़ैत छैक। हमरा लागल जेना सबटा हवा मे झुलैत गाछक पात सब हमरा सब लग मुड़ी निहरौने ठाड़ अछि। हे अनचिन्हार लोग सब अहां सब नै ककरो सलाह देवैक हमरा सब के काटबा लेल। सरिपहुं संसे कश्मीर मे कतौ एसी नै छल, होटल मे पंखा छल ते सीरक ओढ़ि ओकरा एकदम कम क' कखनो काल चलवैत रही। ड्राईवर मात्र गाड़ी टा नै चलवैत छल, सब टा पक्का गाइड सेहो छल। चीड़ के लकड़ी सं घर बनाओल जायत छैक, चिनारक लकड़ी सं फर्नीचर आ अखरोट गाछक लकड़ी सं कला कृति।

गुलमर्ग पहुंचलौं तं किछु नै छल ओहि ठाम सौ बरख पुरना शिव मन्दिर आ घोड़ा सभक गन्ध। ओहिठाम सब घोड़े सं घुमैत छल। आकि रोपवे सं। ओहिठाम सलमान खान एहिठाम राजेश खन्ना। "जय जय शिवशंकर पियाला तेरे नाम का पीया।" एहि गीतक शूटिंग एही मन्दिर मे भेल छल। मनोरम दृश्य छल पहाड़ जकां उंच टीलाक बीच मे शिव मंदिर छल। चारु कात हरियर दूबि सं पाटल दूर दूर धरि हरिहरी, तकर बाद बर्फ भरल पहाड़। क़रीब सय सीढ़ी चढ़बाक बादे मन्दिर।

एहि उमिर मे स्पाइनक दर्द ल' एतेक घुमि रहल छलौं, चेहरा पर बच्चा सभक कारण कहियो मलिनता नै अनलौं - अदिति हमर उत्साह देखि बजैत छल। "दादीमां अहां तं लेडी अमिताभ बच्चन छी।" हंसी लागि गेल। हं सांचे हम ते एके बरस छोट छी अमिताभ सं।

***(शेष पृष्ठ 81 पर)***

# मैथिली भाषाक आदि ध्वनि

✍ डॉ. राम चैतन्य धीरज



लेखक राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे प्राध्यापक छथि।
प्रकाशित कृति : पहिल कृति मैथिली मे 'द्विपर्णा' (गीत-ग़ज़ल संकलन), भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य, अन्य कृति हिंदी मे 'जब आंखें खुली', 'तारा तंत्र दर्शन', 'रक्तकाली दर्शन', 'वीनेश्वरी', 'विज्ञानमक्षरम्' (मण्डन मिश्र का विज्ञानवाद), 'साक्षीलक्ष्मीनाथ', संस्कृत मे 'तारा स्तोत्रम्' एवं अंग्रेजी मे ओह, कारगिल (कविता)।
'मिथिला मिहिर', 'आरंभ', 'देशकोस', 'संकल्प', 'सूत्रधार', 'अंतिका' पूर्वोत्तर मैथिल आदि मैथिली पत्रिका मे प्रकाशित आलेख गीत-गजल एवं कविता।

**सम्पर्कः**
*मानस नगर, वार्ड नं.-32,*
*हटियागाछी, सहरसा*
*मो. 6203681693*

प्रश्न मैथिली आ संस्कृत भाषाक ध्वन्यात्मक संबंधक अछि। हम जनैत छी जे जीव मात्रक सम्पूर्ण मनोभाव भाषा मे प्रकट होइत अछि आ ई विचार तथा व्यवहार द्वारा व्यक्त होइत अछि। मानवेत्तर प्राणी अपन भाषा कें शारीरिक व्यवहार द्वारा व्यक्त करैत अछि जखन कि मानव विचार एवं व्यवहार मे भाषा के व्यक्त करैत अछि। हम इहो जनैत छी जे भाषा शब्दक सार्थक समूह होइत अछि, जे अभिव्यक्तिक वैचारिक स्वरूप आ माध्यम होइत अछि। तें प्रत्येक शब्द मे व्यापक भाव आ विचार तथा क्रिया-व्यवहार रहैत अछि। हमरा जनैत लोक प्रायः भावात्मक वा वैचारिक शब्दक बास्तुक प्रत्यक्षण नहि क' पबैत अछि, तें शब्दक ई परिचय ओकरा नहि भेटि पबैत अछि आ नहि ओ शब्दक अन्तःसाक्ष्य धरि पहुंचि पबैत अछि। यैह कारण होइछ जे लोक शब्दक बास्तुक वा भावपरक व्याख्या-विश्लेषण नहि क' पबैत अछि। जेना-तीनिटा शब्दक व्याख्या मैथिली मे शब्द प्रत्यक्षणक आधार पर एखन धरि नहि भेल अछि। पहिल बेर हम एहि शब्दक प्रकृति-प्रत्यक्षण पर आधारित व्याख्या विश्लेषण कयने छी। ई शब्द थिक मिथिला, मैथिल आ मैथिली। एहि तरहें प्रायः प्रत्येक भावात्मक शब्द अपन मूल व्याख्या आ विश्लेषणक अभाव मे मतिभ्रमक व्यवहार सं अंधास्था आ अंधविश्वास उत्पन्न करैत अछि। ज्ञानक तुलना मे लोकक मन पर अंधास्था आ अंधविश्वास साम्राज्य रहैत अछि, जाहि कारणें लोक न्याय वा विवेक सं वंचित रहि जाइत अछि। तें आवश्यक अछि जे शब्दक प्रत्यक्षण शब्दक भाव प्रकृति सं हेबाक चाही, जाहि सं शब्दक सत्ता सं मतिभ्रम नहि उत्पन्न होअए।

शब्द दर्शनक अर्थे होइत अछि, शब्दक भावात्मक आ बास्तुक साक्षात्कार, जाहि सं शब्दक विवेक परक छनि भ' सकए। हमरा जनैत शब्द अपन मूल अर्थ मे नहि तं तत्सम होइत अछि, नहि तदभव, नहि देशज आ नहि विदेशज अपितु व्याकरण एकटा अध्ययनक दृष्टिएं एहि चारो भाग मे बिभाजित करैत अछि, जखन कि शब्द वस्तु एवं भावक प्रतीक होइत अछि। जे अभिव्यक्तिक मनोप्रवाह मे व्यक्त होइत अछि। तें शब्द कें व्याकरणक संकीर्णता सं नहि बुझबाक चाही। जं हम भावती...... शब्दक उदाहरण ली तं स्पष्ट होयत जे मिथिला, मैथिल आ मैथिली अपन स्वरूप मे मैथिली शब्द थिक, मुदा एकटा धातु सा प्रत्यय सं संस्कार क' तत्सम बना देल गेल आ एहि प्रकृति सं ई कहब कठिन अछि जे ई मैथिलीक देशज शब्द थिक वा तत्सम, किएक तें एकर संस्कार धातु आ प्रत्यय सं कयल गेल अछि। मिथिला शब्द मे मिथ मे उर्जा प्रत्यय लागल अछि, संगहि एकटा मिथि मेला प्रत्यय सेहो कहल जा सकैछ। एहि तरहें मैथिल मे मथ मे इलच् प्रत्यय लागल अछि आ मैथिली तं मैथिल के स्वीलिंग स्वरूप थिकैह। अस्तु एकरा मैथिली कहब आ कि संस्कृत? वस्तुतः ई मैथिली भाषाक तत्सम शब्द थिक, जकरा प्रयोग संस्कृत मे सेहो कयल गेल अछि, तें एहि दृष्टि सं मैथिली शब्द कें चारि भाग मे विभाजित क' अध्ययन कयल जा सकैछ - मैथिली तत्सम, मैथिली तद्भव, मैथिली देशज तथा मैथिली विदेशज।

मैथिली तत्सम मे धातु, प्रत्यय तथा उपसर्गक प्रकृति होइत अछि। मैथिली तद्भव मे तत्समक देशज योग होइत अछि। मैथिली देशज मे तं एकर स्वतंत्र ध्वनि अस्मिता होइत अछि तथा मैथिली

विदेशज मे विदेशी ध्वनिक मैथिली ध्वनि मे संग्राह्यता होइत अछि। अस्तु, एहि तरहें मैथिली भाषाक ध्वनि मे प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, देशज वा विदेशज सभ मैथिली होइत अछि। तें जे मैथिली तत्सम कें मैथिली शब्द सं इतर रूप मे देखैत छथि, हुनका मैथिली सं संस्कृतक संबंध कें देखबाक चाही। प्रश्न उठैत अछि जे मैथिली भाषाक ध्वनि अन्य भारतीय भाषाक ध्वनिसं कोन अर्थ मे अलग अछि? हमरा जनैत ह्रस्व प्रयोगक बहुलताक कारणें मैथिली भाषा अन्य भारतीय भाषा सं अलग अछि। ह्रस्व मे 'अन' सूत्रक प्रमुखता होइछ। जे संस्कृत मे 'अण्' होइछ ओ मैथिली मे 'अन्' होइछ। संस्कृत अण् तथा मैथिलीक 'अन' ह्रस्व प्रायोजित ध्वनि होइत अछि। यैह ओ मूल वर्ण थिक, जाहि सं अन्य मात्रक वर्गक निर्माण होइत अछि। मैथिली मे अन्=अइउन् तथा संस्कृत मे अण= अइउण्। अ केर द्वित्व वा दीर्घ सं आ, इक द्वित्व वा दीर्घ सं ई, उके द्वित्व वा दीर्घ सं ऊ बनैत अछि तथा अइक मेल सं ए, एहिना ऐ आदि मात्रा वर्ण बनैत अछि।

संस्कृत आ मैथिली मे ध्वन्यात्मक वर्णगत अन्तर वा मात्रागत अन्तर की अछि, एहि प्रश्नक उत्तर उपर्युक्त अन् (अण्) सूत्रे सं देल जा सकैत अछि। हमरा जनैत एहि मे मात्र न् (ण्) कारक अन्तर अछि, जे कि मैथिली मे बहुलांश दत्त नक प्रयोग होइछ तं संस्कृत मे बहुलांश मूर्धन्य ण्क प्रयोग होइत अछि। तें दुनूक ध्वनि भेद एकहि तत्सम सं अछि। एहि अर्थ मे मैथिली तत्सम आ संस्कृत तत्समक भेद ध्वन्यात्मक भ' सकैछ, रूपात्मक नहि। अस्तु मैथिली ध्वनि आ संस्कृत ध्वनि मे मात्र बनकारक अंतर अछि, अन्य कोनो अंतर नहि। प्रयोगक दृष्टिएं ह्रस्व बहुलांश मैथिली ध्वनिक स्वभाव अछि। तें ई कहब सर्वथा उचित लगैत अछि जे मैथिली भाषाक तत्सम संस्कृतक तत्सम सदृश अछि। तत्सम शब्दक मौलिक विशेषता होइछ जे ईप्स्या-पक अर्थ विन्यास करैत अछि, तें एक शब्दक ज्ञान अपन समग्रता मे प्रकृति आ सामाजिक संबंधक भावार्थ वा विचारार्थ मे प्रवेश करा व्यापक अर्थवत्ता कें प्रस्तुत करैत अछि।

शब्दक बिना नहि तं भाषा भ' सकैत अछि आ नहि साहित्य वा अन्य विषय। जें कि शब्द ध्वनिक सार्थक निर्मिति होइत अछि, तें धातु, प्रत्यय आ उपसर्गात्मक ध्वनिक समावेश शब्द मे होइते अछि। प्रत्येक शब्द कोनो ने कोनो ज्ञान तथा मानवीय संबंध आ विज्ञान सं जुड़ल अछि, तें शब्द मे विज्ञान अछि, दर्शन अछि आ विचार अछि, जे प्रथमत:

> **संस्कृत आ मैथिली मे ध्वन्यात्मक वर्णगत अन्तर वा मात्रागत अन्तर की अछि, एहि प्रश्नक उत्तर उपर्युक्त अन् (अण्) सूत्रे सं देल जा सकैत अछि। हमरा जनैत एहि मे मात्र न् (ण्) कारक अन्तर अछि, जे कि मैथिली मे बहुलांश दत्त नक प्रयोग होइछ तं संस्कृत मे बहुलांश मूर्धन्य ण्क प्रयोग होइत अछि। तें दुनूक ध्वनि भेद एकहि तत्सम सं अछि।**

भेदक रूप मे देखाइतो अंतत: एके भ' जाइत अछि। संस्कृत मे एकटा व्याकरण अछि- 'त्र्यक्षर प्रस्ताव अक्षरं तत्समं' अर्थात् त्र्यक्षर अउम्क अनुकूले अन्य अक्षर होइत अछि, तें एकर दर्शनो अंतत: एकहि अर्थक विराटता मे होइत अछि। आनंद उत्तर मानस वा आकाश उत्तर महत् - यैह त्र्यक्षर प्रस्ताव ओम् होइत अछि आ प्रत्येक अक्षर मे मूल ध्वनि यैह होइत अछि। तें उपनिषद 'ओमिति ब्रह्म' कहैत अछि। अइउन् तथा अ उम् मे यैह अंतर अछि जे अश्वर, इश्वर, उश्वर तथा नश्वर मे अश्वर तथा नश्वर उत्पत्ति तथा नाशक परिचायक अछि, जखन कि इश्वर प्रवर्तक तथा ऊधवर शिवकल्याणक अर्थ मे व्यापक अछि। उत्पत्ति आ विनाश संसारक होइछ, मुदा शब्द ब्रह्म ईश्वर तथा शिवक कल्याण योग थिक, जे अविनाशी होइछ। अस्तु, उत्पत्ति तथा विनाश चक्रक नियंता ईश्वर कल्याणकारी होइत छथि - एहि ध्वनि मे शब्द दर्शन अछि। संगहि एकरे तंत्र दर्शन मे चतुष्वर्ण आ साढ़े तीन मात्रिक प्रकृति कहल गेल अछि- अनिति (अन्+इति) प्रकृति अर्थात् अइउन् मैथिली भाषाक तंत्र ध्वनि थिक, जकरा अथर्वशीर्षम् (दुर्गा सप्तशती) मे 'सुधात्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता, अर्द्ध मात्रा स्थिता यानुच्चार्या विशेषत:।' अर्थात् त्रिमात्रा तथा अर्द्धमात्रा नाशिक्य नित्य होइत अछि। एहि 'अनिति प्रकृति' कें ऋग्वेद मे 'अध अन्स्वनमरूतां' कहल गेल अछि। एहि दृष्टिएं जन्म-मृत्यु (उत्पत्ति-विनाश) क' कारण प्रकृति (ईश्वरी) कल्याणकारी होइत छथि - यैह दर्शन वा विज्ञान, जे अक्षराश्रित मात्रावर्ण मे अछि, हमर विचार कें पल्लवित-पुष्पित करैत अछि। अस्तु, शब्द ब्रह्म वा शब्द प्रकृति अविनाशी अछि विनाश तं चक्र गति मे संसारक होइत अछि। यैह दर्शन मैथिली मात्रा ध्वनिक मूल दर्शन थिक आ यैह विज्ञान मैथिली भाषाक मूल विज्ञान थिक तथा यैह विचार मैथिली भाषाक अस्मिता थिक।

तत्व दर्शनक आधार पर दुइयेटा ध्वनि सूत्र देखार दैत अछि - पहिल, 'ओमिति ब्रह्म' तथा दोसर 'अनिति प्रकृति' अर्थात् ओम ब्रह्म थिक तथा अन प्रकृति थिक। ब्रह्म आ प्रकृति मे संपूर्ण शब्द दर्शन अछि। मिथिलाक स्वन (ध्वनि) 'अध अन्स्वनमरूतां' (ऋग्वेद 1/138/10) अछि, मिथिलाक तंत्र विज्ञान एकरे पुष्ट करैत अछि। तें 'त्र्यक्षर प्रस्ताव अक्षर तत्समं' सूत्र सं 'ओमिति ब्रह्म' आ 'अनिति प्रकृति'क ज्ञान भ' जाइत अछि। अस्तु, मैथिली भाषाक आदि ध्वनि 'अनिति प्रकृति' रहल अछि। 'अनिति प्रकृति'क दृष्टि सं अश्वर=उत्पत्ति, इश्वर=इश्वरी,

***(शेष पृष्ठ 83 पर)***

# एकैसम शताब्दी आ मातृभाषा मैथिली

✍ डॉ. बिभा कुमारी



असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (तदर्थ), आई.पी. कॉलेज फॉर वुमेन, दिल्ली विश्वविद्यालय, बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) मे सेहो चयनित। एखन धरि कुल सात गोट पोथी प्रकाशित, जाहि मे दू टा मैथिली कविता संग्रह। हिन्दी साहित्यक आलोचनाक सशक्त हस्ताक्षर।

**संपर्क :**

*मकान नं.: 14, गली नं.: 1, भगवान पार्क, झरौदा, बुराड़ी, दिल्ली-110084*

*मोबाइल: 8800270718,*

*ई-मेल:* dr.bibha.kumari2904@gmail.com



एकैसम शताब्दी मे मातृभाषाक मादे मोन मे कतेको प्रश्न अभरैत अछि। ग्लोबलाइजेशनक कारण सं आइ संसे विश्व एकटा गाम बनि गेल जाहि सं संपर्क-सूत्र सभ मजगुत हुए लागल। एकर दू गोट परिणाम भेल - पहिल परिणाम ई जे जाहि भाषा सभक प्रयोग संपर्क भाषाक रूप मे होमए लागल, से मजगुत होइत चलि गेल आ दोसर परिणाम जे अप्पन मातृभाषाक प्रयोग समटैत जेबाक कारणे ओ दुबरबैत चलि गेल। जहन ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी इत्यादि क्षेत्र मे अध्ययन-कुशलता आ विशेषज्ञताक बेगरता भेल त' उक्त विषय-क्षेत्र सभमे अप्पन मातृभाषा मे शिक्षण उपलब्ध करेबाक प्रयास नहि भेल, अपितु अप्पन भाषा छोड़ि अंग्रेजी आदि विदेशी भाषा मे अध्ययन आरंभ कएल गेल। जे देश सभ अप्पन मातृभाषा के शिक्षाक माध्यम बनौलक आ ओहि मे सभ विषय आ सभ क्षेत्रक अध्ययन-अध्यापन उपलब्ध करौलक ओ सभटा देश बेशी उन्नति केलक। चीन आ जापान एकर सभ सं नीक उदाहरण अछि।

मैथिली भाषाक एकटा समृद्ध आ गौरवशाली अतीत अछि, मुदा नहु-नहु शिक्षा आ रोजगार लेल लोक अप्पन एहि समृद्ध मातृभाषाक संपन्नता सं फराक होइत चलि जाइ गेलथि, संगहि आधुनिकताक नाम पर आयल विदेशी-भाषा प्रेमक बाढि मे तेहेन क' भसिया जाइ गेलथि जे अप्पन भाषा कें अपनहि तियागि दै जाइ गेलथि। एहिठाम अप्पन तर्कक पुष्टि लेल समाज सं लेल गेल तीन-चारि गोट प्रसंगक चर्चा करब।

पहिल प्रसंग- पुतहु सासु के कहै छथिन्ह जे पोता-पोती के मैथिली खिस्सा जुनि सुनौथिन, जं सीख जेतै आ स्कूल मे केकरो सुनबैत मिस देख लेतै त' स्कूल मे पनिशमेंट भेटतै। सासु बुझलखिन जे पनिशमेंट माने ईनाम, किएक त' ओ त' कौनवेंट संस्कृति सं परिचित नहि रहथिन। कहलखिन- "ईनामे भेटतै ने" त' पुतहु कहलखिन- "नहि पीठ पर बैग टांगि क' बिल्डिंग्क चारु भाग दौग पड़तै मुन्हारि सांझ धरि, नहि त' बेंत सं संसे देहक चमड़ा बेंतक मारि सं सिसोहि लेल जेतै। सासु तेहेन क' डेरा गेलखिन जे पोता-पोतीक सोझा मे त' खिस्साक नाम नहिए लेलखिन, अपनो सभ खिस्सा बिसरि गेलखिन जे कहियो जं अनसुरता मे धिया-पुता के सुना देबै त' खिस्सा काल भ' जेतै। पुतहु के तैयो एकदिन धखाइते-धखाइते पुछलखिन - "नेना-भुटका सभ कें कन्वेंट मे पढ़ौनाई जरूरी छै? सरकारिए मे पढ़तै त' कोन बेजाय? पुतहु कहलखिन- "अप्पन ज़माना के बात जुनि करथिन, आइ-काल्हि धिया-पुता के कन्वेंट मे पढ़ौनाई बड्ड जरूरी छै।" आब पुतहु की करथु, ओ अप्पन धिया-पुताक भविष्य उज्ज्वल चाहैत छथि, चारू दिसक वातावरण सं हुनका बुझब मे अयलनि जे कन्वेंट स्कूल मे अंग्रेजी माध्यम सं पढ़ौनाई उज्जवल भविष्यक लेल अनिवार्य छै आ कन्वेंट स्कूलक त्रासदी ई छै जे मातृभाषाक प्रयोग केला पर बच्चा के सजा भेटै छै।

दोसर प्रसंग- बच्चाक पिता अप्पन कनियां के कहैत छथिन जे बौआ त' हमर माइए जेकां बाजब सीख जेतै, त' स्कूल मे दिक्कत हेतै। बौआक माय चौबीस घंटा नेना के सम्हारैत अफसियांत रहैत छथिन आ जं सासु कनी काल बच्चा के नहि लग मे बैसौथिन त' हुनका अनो खेनाई दुर्लभ भ' जेतैन्ह, पतिक टिप्पणी सं ओ आश्चर्यचकित भ' प्रश्न करैत छथिन - "अहां केकरा जेकां बाजब सीखने रहियई। हमरा जनैत त' अप्पन भाषा सर्वप्रथम

सीखब, सभ सं नीक।'' जं मिथिलाक सभ माय एहि बच्चा माय सन भ' जाथि त' मैथिलीक भविष्य अत्यंत उज्ज्वल अछि, मुदा पति बुझब' लगै छथिन – "भावुक भेने काज नहि चलत, बौआक अंग्रेजी पर एखनहि सं ध्यान देबाक छै। अहां एखनहि सं हुनका सं अंग्रेजी मे बजियौ, हमहू अंग्रेजीए मे बजबै। मां के हम बुझा दै छियनि, हुनका अरामक बेगरता छनि, ओ बच्चाक चिंता नहि करथि।

तेसर प्रसंग– भागिनक बियाह मे मामी डहकन उठौलनि आ लाबा भुजैवाली भगिनीक नाम लेलनि कि जेठकी भगिनपुतहु कहलकनि, "व्हाट नॉनसेन्स दीज़ ऑल। "

मोन भेलनि जे किछु कहियनि मुदा फेर ई सोचि कए चुप रहलीह जे कनिया के एखनि उमेरे की भेलैक अछि, कहिए देलखिन त' की हेतई कनी हमही बरदास क' ली, कि तावत छोटका भागिन जिनक लावा भुजल जाइत छलनि बाजि उठलाह– "मामी पढल-लिखल छथिन, शहर मे रहल छथिन मुदा रंग-ढंग असल देहाती छन्हि।'' आब त' मामी के त' बकारे बन्न भ' गेलनि। भरि घर लोक सं भरल छलै, शांते रहै मे भलाई बुझेलनि।

चारिम प्रसंग– विदेश सं नैहर आयल धिया रेडियो पर मैथिली लोक-गीतक प्रोग्राम सुनए बैसलीह, संयोग सं लगनी प्रसारित भ' रहल छलै, हरखित भए सुनए लगलीह। तावत भौजी आबि गेलखिन आ रेडियो बंद करैत कहलखिन– ''अमीरका मे रहै छी आ एखनि धरि ओएह लगनी आ खेलौना।''

एहि प्रसंग सभ सं जे बात सोझां आबि रहल अछि, ओ अछि अप्पन मातृभाषाक प्रति हीनताक बोध, जहन अप्पन भाषा आ संस्कृतिक प्रति हीनताक बोध आबि जाइत छैक, त' लोक ओकरा बिसरबाक यत्न आरंभ क' दै छै, बिसरै त' तैयो नहिए छै, मुदा अप्पन धिया-पुता के नहि सीखबै छै, एहिना-एहिना क' नहू-नहू भाषा मरि जाइत छैक। एक सर्वेक मोताबिक एकैसम सदीक अंत धरि विश्वक नब्बे प्रतिशत भाषा लुप्त भ' जेतै। मातृभाषा मनुक्ख के अप्पन जड़ि सं जोड़ैत छै संगहि अप्पन प्रति, परिवार आ समाजक प्रति एकटा सहज-स्वीकार्य भाव ओकरा मे भरैत छै। जं नान्हिए टा सं माय अंग्रेजी सीखेबाक दबाव मे अप्पन बच्चा सं अंग्रेजीए मे गप्प करैत छै त' ओकर अप्पन माय संग ओहेन प्रगाढ़ संबंध नहि भ' पबैत् छै, जेहेन अप्पन मातृभाषाक प्रयोग सं भ' सकैत छलैक। एकर कारण ई छै जे माय अप्पन मायक मुंह सं जे भाषा सीखने छै से ओकर चेतन मोनक संग अवचेतन मोन धरि समायल छै। मुदा अंग्रेजी त' ओ परिश्रम कए अर्जित केने छै। त' जाहि भाषा संग माय अपने सोलहन्नी सहज नहि छै से ओ अप्पन संतान धरि कोना सोलहन्नी प्रेषित क' सकतै। एहि कारण सभ सं धिया-पुताक भाषा-ज्ञान अर्जन मे किछु त्रुटि रहि जाइत छै। भाषा कोनो समाजक इतिहास, राजनीति, सभ्यता-संस्कृति, रीति-रिवाजक माध्यम छिएक ताहि सं एकर उपेक्षाक भयंकर दुष्परिणाम होयत अछि। मातृभाषाक उपेक्षा सं युवा पीढ़ीक वर्तमान आ भविष्य दुनू मारल जा रहल अछि।

**जहन एगो नेना संग मातृभाषा मे संवाद नहि कएल जायत अछि, तहन ओकर मोन सं अप्पन भाषाक प्रति सम्मान समाप्त भ' जायत छै। ओकरा बूझि परैत छै जे ओकर मातृभाषा कोनो जोगरक नहि छै, तें त' ओकरा दोसर भाषा सीखबा लेल जोर देल जा रहल छै आ समयक संगे नहु-नहु ओ नेना ओहि समूह मे मिज्झर भ' जायत अछि जे अप्पन भाषा के हीन बुझै छथि।**

जहन एगो नेना संग मातृभाषा मे संवाद नहि कएल जायत अछि, तहन ओकर मोन सं अप्पन भाषाक प्रति सम्मान समाप्त भ' जायत छै। ओकरा बूझि परैत छै जे ओकर मातृभाषा कोनो जोगरक नहि छै, तें त' ओकरा दोसर भाषा सीखबा लेल जोर देल जा रहल छै आ समयक संगे नहु-नहु ओ नेना ओहि समूह मे मिज्झर भ' जायत अछि जे अप्पन भाषा के हीन बुझै छथि। कालक्रम मे एहि मानसिकताक जे दुष्परिणाम सभ प्रकट होइत अछि से निस्संदेह आत्मा के दुख दैत अछि। एहने मानसिकताक कारण सं ई बच्चा सभ युवा भेला उपरांत अप्पन भाषाक संगहि अप्पन परिवार, समाज ओ सभ्यता-संस्कृति सं निट्ठाह फराक भ' जायत अछि।

इतिहास गवाह अछि जे सभदिन्ना सं विश्व मे जे भाषा वर्चस्वक भाषा रहैत अछि, सभटा देश आ समाज ओएह भाषा सीखबाक, बजबाक चेष्टा करैत अछि। कैक बेर एहि भागीरथ प्रयास मे ने ओ एम्हरक रहि जायत अछि ने ओम्हरक। एक टा बिंदु पर आबि ओ ततेक कठोर भ' जायत अछि जे संवेदनाक सोत ओकर हृदय सं निट्ठाहे सुखा जायत अछि। मातृभाषा मे जे कहबी, खिस्सा, फकरा, बुझौअलि, सूक्ति, लोकोक्ति आदि रहैत अछि, ओ मनुक्ख के कम शब्द मे बेशी बुझबाक कला विकसित करैत अछि, ओकर कल्पना शक्ति के विकास करैत अछि। मातृभाषा मे श्रम आ ओकर फल दुनुक लेल बहुतेक रास उदाहरण अछि, जे मनुक्ख के कर्मठ हेबा लेल प्रेरित करैत अछि। अर्जित भाषा मे जहन कोनो बात कहल जायत छै त' ओहि मे ओ भावना, संवेदना, मार्मिकता आओर प्रभाव नहि रहि जायत छै। मातृभाषाक केंद्र मे लोक अछि, ओकर जीवन-संघर्ष अछि, अनुभव अछि, अप्पन जड़ि, अप्पन समाज, अप्पन सभ्यता-संस्कृति लेल प्रेम अछि। मातृभाषा मे कोनो तरहक कृत्रिमता नहि, अपितु सहजता आ स्वाभाविकता अछि। हमरा सभक ई दायित्व अछि जे एकैसम शताब्दी मे अप्पन मातृभाषा मैथिलीक जड़ि मे एक-एक लोटा जल अवश्य चढ़ाबी, जतय धरि भ' सकै मैथिलीक लेल आ मैथिली मे बाजी, आ लिखी-पढ़ी। भाषा मजगुत हैत तखनहि हम सभ मजगुत भ' सकब। ■

# मैथिली-भाषा-उत्थान मे स्त्रीक भूमिका

✍ डॉ. आभा झा



लेखिका गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16 मे संस्कृत विषय के प्रवक्ता छथि। कविता, बीहनि कथा आदि पत्र-पत्रिका सभ मे नियमित प्रकाशित।

**सम्पर्क:**
*116-बी, अर्जुन नगर, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110029*
*मो. 9871053391*
*ईमेल : abhajha15@gmail.com*

स्त्री शक्तिस्रोतस्विनी छथि, एहि मे कोनो संशय नहि, स्त्री परम्परा -संवाहिका छथि आ सभ्यता तथा संस्कृतिक समाज मे प्रसारणक सुदृढ़ हेतु छथि, अहू मे कोनो दू मति नहि, मुदा की आइ स्त्रिगण अपन भूमिका नीक जकां निभा रहल छथि? की शिक्षाक प्रसारक संग, शिक्षाक उपयोगिता नीक नौकरी मे सिद्ध करबाक क्रम मे परंपरा आ सांस्कृतिक विरासतक निर्वहणक श्रमसाध्य दायित्व ओ निभा पाबि रहल छथि? हमर एहि प्रश्नक उत्तर मे कतेको नारीवादी संगठन आक्रामक भ' प्रतिप्रश्न क' सकैत छथि जे मात्र स्त्री सं प्रश्न कियैक? की पुरुख ई दायित्व निभा रहल अछि? जं नैं, त' हमहीं कियै एहि चिंतन मे पड़ी? प्रश्न कनेको असंगत नैं! सत्ते जं स्वस्थ दृष्टि सं सोचल जाय, त' भाषा-संस्कृतिक रक्षण, पोषण, संवर्द्धन मे समाजक प्रत्येक नागरिकक समान दायित्व होइत छै, होयबाको चाही। मुदा, जं कोनो वर्ग अपन भूमिका नीक जकां नै निभा रहल अछि, तैं हमहूं कर्तव्यविमुख भ' जाइ, ई कत' के न्याय अछि?

एखन हमर विवेच्य विषय अछि -मैथिली भाषाक उत्थान मे हम सभ की योगदान दय सकै छी? कोनो भाषा जखन बाजल जाइ छै, तखने ओ भाषा होइत छैक। "भाष्यते अनया इति भाषा"। त' अपन मातृभाषा बाजब, धियापुता सं संवाद करब, छोट छोट गीत, कहबी, सूक्ति आदि सं अपन संतानक मानस- विकास करब, बच्चाक मस्तिष्क मे अपन भाषाक प्रति गौरवबोधक आधान करब हमर सभक महत्त्वपूर्ण दायित्व अछि, जकरा हम सभ आसानी सं निभा सकै छी। मुदा आइ -काल्हि आधुनिकता प्रमाणित करबाक होड़ मे हिन्दी-अंग्रेजी सं बालमनक संस्कार होमय लागल अछि, जे अनुचित अछि। मनोविज्ञान कहै अछि जे अपन भाषा मे देल शिक्षा अधिक ग्राह्य होइत छै। बहुभाषिकताक सिद्धांत सं हमर कोनो विरोध नैं, पैघ भेला उत्तर ओ जतेक भाषा सीख' चाहै, सीखि सकै अछि, मुदा बच्चा सं ओकरा मातृभाषाक अपहरण क' अहां अपराध जुनि करू।

बालबच्चा संग अपन भाषा मे सभदिन गप करब एक दिस सहजता सं ओकरा मस्तिष्क मे भाषाक संस्कारक आधान करैत छैक, दोसर दिस अपन भाषा-संस्कृतिक प्रति गौरवबोध स्थायी रूप सं ओकरा मोन मे बैसि जाइ छै। तैं एकटा नीक संस्कारक बीजारोपणक अवसर सं स्त्रिगण वंचित नैं होथु। यथार्थतः भाषाक उन्नयनक दिशा मे ई मीलक पाथर साबित होयत।

एकर अतिरिक्त घर मे छोट-छोट कथा, गीत आदिक पोथी सं बच्चा सभक परिचय करायब, आकर्षक भाव-भंगिमाक संग ओकर प्रस्तुति करब सेहो भाषाक परिपुष्टिक हेतु बनै छै।

ई त' भेल भाषा कें पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित करबाक प्रक्रिया। एकर अतिरिक्त हम सभ स्वयं मैथिली गीतक परंपरा कें उन्नत कय, मैथिली साहित्यक पठन व लेखनक क्रम कें सुदृढ़ कय, अपन प्रत्येक क्रियाकलापक विषय मे गंभीर चिंतन कय, कोनो कार्यक्रमक सुचिंतित स्पष्ट उद्देश्य, सुनियोजित रूपरेखा आ समाजक लेल स्पष्ट सन्देश निर्धारित कय मैथिली भाषा -साहित्यक प्रसार करबा मे योगदान दय सकै छी। मैथिली संगीतक शास्त्रीय स्वरूपक रक्षार्थ हम साधना क' सकै छी। कतेको नवगीतक रचना कय सकै छी, मात्र पुरान गीतक पैरोडी मात्र मैथिली पारंपरिक गीत नहि अछि, एकरा

विस्तार देबाक दायित्व निभा सकै छी। मैथिली अध्येता कें सम्मानक संग उचित पारिश्रमिक भेटय, स्कूली शिक्षा मे मैथिली के स्थान भेटय, स्कूल धरि बच्चा पहुंचय, ओ शौक सं मैथिली पढ़य, ओकरा लेल ओकर स्तरानुरूप पोथीक उपलब्धता होइ, एहि संघर्ष मे सार्थक डेग बढ़ा सकै छी।

आइ काल्हि एहि दिशा मे अनेक प्रयत्न भ' रहल अछि, अनेक साहित्यानुरागी महिला मैथिली- लेखन दिश प्रवृत्त भेलीह अछि, गद्य आ पद्य दूनू विधा मे लेखनक क्रम अपन गति पकड़ने अछि, जे उत्साहवर्धक त' अवश्य अछि, मुदा औखन संतोषजनक नै अछि, ई स्वीकार कयले उत्तर एहि दिशा मे उत्तरोत्तर विकास संभव। स्तरीय साहित्यक सृजन भाषाप्रसारक संग भविष्यक अनुपम पाथेय होयत, ई मोन मे राखि धैर्यपूर्वक अपन गहन अध्ययनक आधार पर साहित्यिक कोश कें समृद्ध कयल जा सकै छै।

एकर अतिरिक्त संगीत -रचना, संगीत-साधना, संगीत-प्रस्तुतिक माध्यम सं सेहो मैथिलीक खोइंछ भरल जा सकै छै। आइ काल्हि अहु दिशा मे बहुत काज भ' रहल अछि, आ एहि प्रचार प्रसार मे सोशल मीडियाक उपयोग कयनिहारि स्त्रिगणक संख्या मे आशातीत वृद्धि भेल अछि, इहो एकटा शुभ संकेत। सुदूर अमेरिका सं, पार्श्ववर्ती नेपाल आ सिंगापुर सं भारतक मैथिली गीतक आ कविताक आनन्द लेल जा रहल अछि, हुनकर सभक लेखन आ गायनक रसास्वादन हम सभ कय रहल छी। मुदा एत्तहु परिश्रम करबाक आवश्यकता बांचल अछि। पुरान राग आ भास, पुरान विषयवस्तु कें समयानुसार परिवर्तित करबाक जरूरति अछि। सर्वत्र मौलिकताक रक्षा आवश्यक।

कोनो भाषाक भंडार कें समृद्ध बनयबा मे अनुवादोक महत्त्वपूर्ण योगदान होइत छैक। एखन प्राय: जाहि अंग्रेजी भाषा कें विश्व भाषाक दर्जा देल गेल छै, ओहि मे प्राय: संसारक समस्त भाषाक उत्तम साहित्य अनुवादक माध्यमे आबि गेल छै। अपनहुं सभ कें मौलिक रचनाक संग-संग संसारक आन-आन भाषाक उत्तम साहित्यक अनुवाद कय मैथिलीक भंडार कें समृद्धतर करबाक दिशा मे प्रयत्नशील होयबाक जरूरति अछि। एहि लेल तत्तद् भाषाक साहित्यक अध्ययन, ओहि सं आत्मीयता-स्थापन आ ओहि भाषाविशेषक प्रकृति कें गहनतापूर्वक बुझबाक आवश्यकता छै। एहि पुनीत यज्ञ मे स्त्रिगण अपन समय आ मेधाक संपूर्ण उपयोग कय वर्तमान आ भविष्यक कीर्तिस्तम्भ भय सकै छथि।

हमर कहब मात्र एतबहि जे अपना सभ मे शक्ति अछि, मां मैथिली क' आशीष अछि, अपन भविष्यनिर्माणक संग अपन भाषा-संस्कृतिक रक्षा करबाक सामर्थ्य अछि, समाज कें दिशा देबाक कौशल अछि, एकर सकारात्मक उपयोग कय भाषा उत्थानक यज्ञ मे अपन आहुति दय सकै छी-

माता, भाषा मायक दूहू अभिनन्दन
- वन्दनक जोग अछि।
आउ, करी कर्तव्य, बढ़ाबी डेग,
स्वप्न पुरबाक बेर अछि। ■

---

*(पृष्ठ 75 का शेष)*

## यात्रा मिथिलाधाम सं कश्मीर धरि (2015)

ओहिठाम जतेक भोला बाबाक चर्च नै छल ओतबे जय जय शिवशंकर के। एकटा हमउम्र बुजुर्ग बजलाह। "अरे एहि सीढ़ी पर ते मुमताज़ राजेश खन्ना के गरदनि मे हाथ दय गबैत छल, "मैं और तू।" एहि मनोरम वातावरण मे हम आ जया करीब दुइ घंटा से बेसी बैसल रहलौं। भोला बाबा के शरण मे, राजीव आ अदिति घोड़ा से चलि गेल छल महराजा गुलाब सिंह (1792 से 1857) केर किला देखबाक लेल आरो दर्शनीय स्थान सब - वापस अबैत सांझ भ' गेल। आय अंतिम दिन छल कश्मीर मे हमर सभक। आराम से गप्प सप्प करैत रहलौं सब सं।

भोरे ग्यारह बजे होटल छोड़ि देलौं, टैक्सी आबि गेल छल, सांझक पांच बजे फ्लाइट छल दिल्ली लेल। हम सब दुइ-तीन घंटा हाउस बोट मे आराम केलौं, बाकि समय शिकारा मे डल झील मे घुमैत रहलौं। झील मे लोग बिजनेस सेहो करैत छल बीच झील मे एकटा हाउस बोट पर कॉफी, चाह-बिस्कुट, मैगी सब बेचैत छल, शिकारा बला ल' गेल ओहिठाम। हम सब कश्मीर के नामी कहवा पिबलौं। शिकाराक संग-संग दोसर शिकारा पर केसर, कहवा, शिलाजीत सब बेचबा ले आयल। खेखनी काट' लागल, किछु किछु कीनी लेलौं। फेर दोसर शिकारा पर झुमका गला के डिजाइन डिजाइन के बेच' लेल आबि गेल। ओहिठामक निवासी सरल आ निर्दोष हृदय के छल, पाई केर बड्ड कमी छल, एहि सब सं हुनक रोजी रोटी चलैत छल।

हमरा खाली यात्रा मिथिला के मोन पड़ैत छल। हम आ राजीव यैह सब गप्प करैत छलौं जे अपन गाम डुमरा मे जहिना बरसा खत्म होइत छल कि आंगने सं हिमालय पहाड़ बर्फ से भरल जगजगार भ' जायत छल।

कतेक चीज अछि मिथिला मे। जौं मिथिला राज बनि जाय आ पर्यटन विभाग मिथिला लेल सचेत भ' जाय तं कश्मीर आ मिथिलांचल मे कोनो अंतर नै रहत, हं टैक्सी ड्राइवर सब के ट्रेनिंग देब' पड़त। जाहि सं मिथिला केर कला संस्कृति, देव स्थल आदि केर जानकारी रहबाक चाही।

टूरिस्ट विभाग मे पैम्पलेट, बुकलेट, सब ठामक रहबाक चाही, मैथिली आ अंग्रेजी हिन्दी भाषा मे सूचना रहय।

सोचैत-सोचैत फ्लाइट पर बैसलौं। हवाई जहाज उड़ल आ एकटा सांस जे छह दिन सं रुकल छल, जेना निसांस लेलक। ■

# मिथिला मे किएक नय भेल खेलक विकास

✍ रौशन कुमार झा



लेखक वरिष्ठ पत्रकार छथि। संप्रति नवभारत टाइम्स, दिल्लीमे वरिष्ठ खेल संवाददाता छथि। मैथिलीमे दूरदर्शन पटना सं प्रसारित धारावाहिक 'पाहुन' केर पटकथा लेखक रहलाह। हिनक अनूदित बहुत रास पोथी सेहो छपल अछि, जाहिमे तीन गोट पोथी भारत सरकारक प्रकाशन विभाग सं छपल अछि।



रियो ओलिंपिक 2016 मे जे सबसं युवा खिलाड़ी छलाह, हुनक नाम छल कनक झा। मुदा ओ भारतक नहि वरू अमेरिका के टेबल टेनिस टीम के हिस्सा छलाह। भले ही ओ अमेरिका सं खेलेला मुदा नाम देखि सहजहिं अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे ओ आर कतहु नै बरू मिथिले के हेताह। ई त' गप भेल अमेरिका के, अगर आई विभिन्न खेल स्पर्धामे अपन भारतीय टीम के देखी त' ओईमे कतेको खिलाड़ी अपन मिथिला के भेटि जेताह, मुदा हुनकर राज्य बिहार नै बल्कि कोनो आर होइत छनि। एनामे मिथिला त' की, बिहार के सेहो नाम नै होइत अछि। आखिर एना किएक होइत अछि, एकर आई छोटछिन पड़ताल करैत छी।

### पलायन अहम मसला

ई गप पूरा दुनिया बुझि रहल अछि जे जं सबसं बेसी पलायन कतहु सं भेलै अछि त' ओ मिथिला सं भेलै। एकर सबसं पैघ कारण मिथिला क्षेत्रमे रोजगार के कमी अछि। पलायन के चलते आब कतेको डीह आ दलान सुन्न भ' गेल अछि। जे जतय गेलाह, ओतुके भ' के रहि गेलाह, मुदा अपन सभ्यता आ संस्कार नै बिसरलाह। यैह कारण अछि जे भले ही ओ कोनो राज्य वा देशक प्रतिनिधित्व किएक नै करथि, हुनक नाम सं साफ बुझा जाइत अछि जे ओ मिथिला के छथि। सबसं पैघ खुशी के गप जे बच्चा के अभिभावक सेहो गर्व के संग ई गप स्वीकार करैत छथिन जे हं, हम मिथिला सं छी।

### बेटा-बेटीमे अंतर

क्षेत्रफल के हिसाब सं देखी त' बिहार सं हरियाणा बहुत छोट अछि। बिहार के पहचान जतय ब्यूरोक्रसी के ल' के होइत अछि त' हरियाणा के पहचान खेल प्रतिभा के ल' के होइत अछि। किछु समय पहिने तक हरियाणामे बेटी के घर सं निकलबा पर प्रतिबंध छल। मुदा आइ मामला बिल्कुल उलट अछि। हर माय-बाप के इच्छा रहैत अछि, जे ओकर बेटी खेलमे आगू बढ़य। यैह वजह अछि जे ओतय बेटा आ बेटी दुनू खेलमे बढ़िया क' रहल अछि। मुदा अगर बिहार के, खासकय अपन मिथिला के देखी त' ओतय एखनहु बेटी के खेलेनाई लोक उचित नहि बुझैत छथि। जखन कि शिक्षा के क्षेत्रमे देखी त' आई लड़का आ लड़की दुनू एक समान उपलब्धि

### पढ़ाइ एखनहु प्राथमिकता

अपन मिथिलांचल के धरती आदि काल सं शिक्षा के लेल विख्यात रहल अछि। आइ कोनो भी मंत्रालयमे वा कोनो भी प्राइवेट कंपनीमे चलि जाऊ, उच्चपदस्थ अधिकारी अपन मिथिले सं भेटताह। अपना ओतय एखनहु पढ़ाई के प्राथमिकता देल जाइत अछि। जे कियो मिथिला सं बाहर निकलि गेल छथि, ओ भले ही अपन बच्चा के पढ़ाई के संग-संग खेलमे सेहो आगू बढ़ा रहल छथि, मुदा जे एखनहु गाम-घरमे छथि हुनका लेल खेल-कूद विशेष मायने नहि राखैत छनि। ओ अपन नेना के शिक्षे के क्षेत्रमे आगू बढ़ाबय चाहैत छथि। ईहो एकटा मुख्य वजह अछि जे मिथिलामे आइ खेल के ओतेक विकास नहि भ' रहल अछि, जतेक आन राज्यमे भ' रहल अछि।

*संपर्क :*
*12/596, तीसरी मंजिल,*
*वेस्ट गुरु अंगद नगर, लक्ष्मी नगर,*
*नई दिल्ली-110092*
*मो. 9350216092*

## की अछि उपाय

जाबत धरि बिहार आ झारखंड एक छल, ताबत धरि खेल के क्षेत्रमे बिहार के सेहो नाम छल। मुदा झारखंड के अलग भेला सं बिहार के खेल के मामलामे काफी नुकसान उठाबय पड़लै। कोनो राज्य या देशमे खेल के क्षेत्रमे क्रांतिकारी बदलाव तखनहि आबैत छैक, जखन कि ओतय कोनो पैघ खेल आयोजन होइत छैक। बिहारमे एखन एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन त' सोचलो नै जा सकैत अछि, मुदा जं नैशनल गेम्स के भी आयोजन भ' जाइ त' क्रांतिकारी बदलाव आबि सकैत छैक। झारखंड के एकर मेजबानी किछु साल पहिने भेटल रहै, किएक नै एक बेर बिहार के आ ताहूमे दरभंगा वा मधुबनी के एकर मेजबानी देल जाय। निश्चित रूपेन अहि सं बहुत पैघ बदलाव खेल के क्षेत्रमे आबि सकैत अछि।

हासिल क' रहल छथि। तें अगर लड़की के सहयोग देल जाय त' निश्चित रूप सं ओहो खेलमे बढ़िया करती।

### मौका के कमी

झारखंड क्रिकेट टीम के अहम सदस्य ईशान किशन, शाहबाज नदीम, मनोज तिवारी, अनुकूल राय मुंबई टीम के धाकड़ बल्लेबाज पृथ्वी साव आ नै जानि कतेको क्रिकेटर आई विभिन्न राज्य के टीम के अहम सदस्य बनि गेल छथि। ई जतेक नाम कहल गेल अछि ओहिमे सं ईशान किशन आ अनुकूल राय के छोड़ि सब भारत के लेल खेला चुकल छथि। ई त' खाली क्रिकेटक बात भेल। आन खेल सबमे त' आर अपन मैथिल सबहक भरमार अछि। गर्वक बात जे ई सब मैथिल छथि, मुदा किनको नामक आगू राज्य बिहार नै लागल अछि। किएक त' जखन ई सब अपन करियर के शुरुआत करैत रहथि तखन बिहार के बीसीसीआई सं मान्यता नै भेटल छल। एनामे हुनका खेलेबाक मौका नै भेटि सकैत छल। तें ओ सब दोसर-दोसर राज्य केर रुख कयला।

### सुविधा के घोर अभाव

हरियाणा वा दिल्ली जे आइ खेलमे बढ़िया क' रहल अछि, ओकर मुख्य वजह अछि जे ओतय बच्चा के बहुत नीक सुविधा भेटैत अछि। अगर हम बिहार, खासकय मिथिला के बात करी त' ओतय एखनहु सुविधा के घोर अभाव अछि। छोट-छोट गांव घर त' छोड़ि दी, शहरमे सेहो कतहु कोनो नीक स्टेडियम नहि अछि। अहि साल अगस्तमे मधुबनी के एकटा चंदन झा के वीडियो फेसबुक पर वायरल भेल छल जाहिमे ओ 100 मीटर के रेस 11 सेकंडमे पूरा करैत देखा रहल छथि। चंदन सं बात भेल छल त' कहला जे पिच रोड पर ओ रोजाना भोर मे खाली पैर दौड़ैत छथि। बुझि सकैत छी जे पिच रोड पर दौड़बामे हुनका कतेक मुश्किल के सामना करय पड़ैत हेतैन। आन शहर के बच्चा जकां जं चंदन के सेहो बढ़िया ट्रैक भेटतनि त' ओ भले ही उसेन बोल्ट के रेकॉर्ड नै तोड़ि पाबैथ, मुदा देशमे त' अपन नाम रोशन कइये सकैत छथि। चंदने जकां आर कतेको बच्चा छथि जे सुविधा के कमी के चलते अपन प्रतिभा के सोझां नै आनि पाबैत छथि। ■

---

*(पृष्ठ 77 का शेष)*

## मैथिली भाषाक आदि ध्वनि

उश्वर=शिव तथा नश्वर=विनाश – यैह अक्षर मिथिलाक आदि दर्शन अक्षर थिक, जाहि अक्षर कें मूल स्वराक्षर कहल जाइत अछि। एही कारणें मिथिलाक आदि दर्शन प्रकृतिवादी रहल अछि, ब्रह्मवाद, तं मात्र सैद्धांतिक रूप मे स्वीकृत रहल। एकरा एहि रूपें कहल जा सकैत अछि जे व्यवहार मे मिथिला प्रकृतिवादी रहल अछि तथा विचार मे ब्रह्मवाद कें सेहो स्वीकृति देलक।

ओमिति ब्रह्म तथा अनिति प्रकृतिक ध्वनि दर्शने मैथिली आ संस्कृतक आधार दर्शन थिक। तें दुनू भाषाक अंतर एहि ध्वनि दर्शन मे स्पष्ट अछि। अस्तु, मिथिला शब्द मे लागल इला प्रत्यय बुद्धि, शक्ति तथा प्रकृतिक प्रतीक थिक। मिथ मे इला प्रत्यय कयला सं बुद्धि शक्ति प्रकृतिक अर्थ मीमांसा सिद्ध होइत अछि। अर्थात् बुद्धि, शक्ति वा प्रकृतिक प्रशंसा जतय होअए से मिथिला गेल। तें मिथिला शब्द अपन स्वरूप मे मैथिली तत्सम अछि। एही तरहक तत्सम जकर व्यवहार मिथिलाक लेल सेहो सिद्ध अछि से मैथिली तत्सम कहाओत।

अंततः ई कहब सर्वथा सार्थक लगैत अछि जे वर्ण मात्र स्वर थिक, स्वरे मात्रा बल होइत अछि, शेष स्वरक समान ओकर संतान। स्वर अ, उ, म् वा अ ई उ तथा न् होइत अछि। एही मात्रा बल सं व्यंजन सेहो वर्ण घोषित होइत अछि। जं व्यंजन मे अकार नहि लागल रहय तं व्यंजन वर्ण रूप मे घोषित नहि भ' सकैत अछि, अस्तु मैथिली मे वर्णाक्षरक प्राण ध्वनि (प्राण तत्व) अइउन् होइत अछि, नहि कि अउम। 'अर्निति प्रकृति' सूत्र मैथिलीक मूल ध्वनि वा प्राणाक्षर थिक। जे उत्पत्ति-विनाश, ईश्वरी तथा शिवक तात्विक अर्थ ग्रहण करैत अछि। अकारे-प्रवृति वाचक अछि तथा नकार निवृत्ति वाचक। एकर चक्र इकार तथा उकारक साक्ष्य मे चलैत अछि। तें अइउन् एकटा समग्र तत्व दर्शन प्रामाणित होइत अछि। ■

# छिरियाइल समाज लेल सोझरायल घटकैती

✍ स्वाती शाकम्भरी



मैथिली कविताक क्षितिज पर एकटा नवोदित पुंज। 'मैसाम युवा सम्मान 2018' सं सम्मानित। पहिल कविता संग्रह 'पूर्वागमन' 2017 मे साहित्य अकादेमी, दिल्लीसं प्रकाशित। काका साहेब कालेलकर साहित्य सम्मान-2017 सं सम्मानित।

मिथिलामे घटकैतीमे एकटा बहुप्रचलित उक्ति अछि : ''विवाह जन्म मरणश्च, यत्र भावी भविष्यति।'' आजुक समयमे जखन मैथिल ब्राह्मण समाजक वितान मिथिला सं बाहर देश-देशान्तरमे झमटगर बड़क ठाढ़ि सभ जकां चतरल अछि वा कतहु-कतहु अमरलत्ती जकां बस अपन उपस्थिति धरि जीवित राखने अछि, तेहन मे विवाह आ घटकैती एकटा पैघ चुनौती बनि गेल अछि। ताहि परसं चाकरी-कारोबारक अतीव व्यस्तता जीवन सं समय त' जेना चोरा लेने अछि। एहनमे घटकैती होय कोना।

दोसर दिश, भारतीय सामाजिक परम्परा कें शाश्वत रूपेण निर्वहन करब स्वयंमे एकटा तपस्या होएत अछि। तहिना दांपत्य जीवनक निर्वहन सेहो एकटा तपैत तपस्या थीक। एहि जीवन मे पारस्परिक उदारता, सहिष्णुता, कर्तव्यपरायणता आदि कसौटी जीवन कें अमरता प्रदान करैत अछि। एहन भारतीय वैवाहिक परम्परा कोनो कॉन्ट्रैक्ट मैरिज नहि थिक वरन् ई बंधन जन्म जन्मान्तरक बंधन मानल जाएत अछि, जाहीमे भिन्नताक कोनो बोध नै, ''एक प्राण कैल दुई देह'' के स्थिति होएत अछि। जिनक दांपत्य जीवन सफल होएत अछि, हुनक संतान सेहो संस्कारी होएत अछि आ संतान संस्कारी तें जीवन सफल बुझल जाएत अछि।

तं, एहि दु डारि केर मध्य संतुलन कोना बैसायल जाए। जाहि तरहक अपेक्षा-आकांक्षा वरागत आ कन्यागत दुनु दिशसं अछि, ताहिमे कोना नगरे-नगरे बारंबार यात्रा कएल जाए वर/कन्याक संबंधमे प्राथमिक जानकारी जुटाबय लेल। उपयुक्त वर/कन्याक सूचना भेटनाय धरि एकटा दुरूह काज भ' गेल अछि। पछिला किछु बर्षमे एहि दुरूह काजकें आसान करबाक लेल फेसबुक/व्हाट्सप आदि प्लेटफॉर्म पर तमाम प्रयोग किछेक संगठन/व्यक्ति दिशसं भेल अछि। एहि सबहक मध्य एकटा सफल आ जीवंत प्रयोग अछि 'जुरि-बंधन व्हाट्सप ग्रुप।'

समूह प्रशासक जितेन्द्र कुमार झा बताबैत छथि जे जुरि-बंधन व्हाट्सप समूहमे केवल मैथिल ब्राह्मण कन्यागत आ वरागत टा जोड़ल जाएत छथि। जाहि काजक पाछां मैथिलजन अनधुन धन आ संसाधन खर्च करैत छथि, ताहि उद्देश्यक पूर्तिक लेल बनाओल ई समूह पूर्णतः निशुल्क अछि। संप्रति, छौ टा व्हाट्सप समूह जुरि-बंधन एडमिन द्वारा संचालित अछि, अर्थात् एक हजार सं बेशी व्यक्ति घटकैती/संबंधक मादे एक दोसर सं नियमित संपर्कमे एहि प्लेटफार्मक माध्यमसं जुड़ल छथि। संगहि

*''हमर बेटा आ भातीज दुनुक विवाह जुरि-बंधन समूह सं तय भेल। बेटाक विवाह शीघ्रतामे करबाक छल। समूहमे जोरबाक बाद मात्र 2 मासक समय लागल। भातीजक विवाहमे 3-4 मास समय लागल, दुनु पक्षक सुविधाक देखैत समय कनि बेशी लागल।*

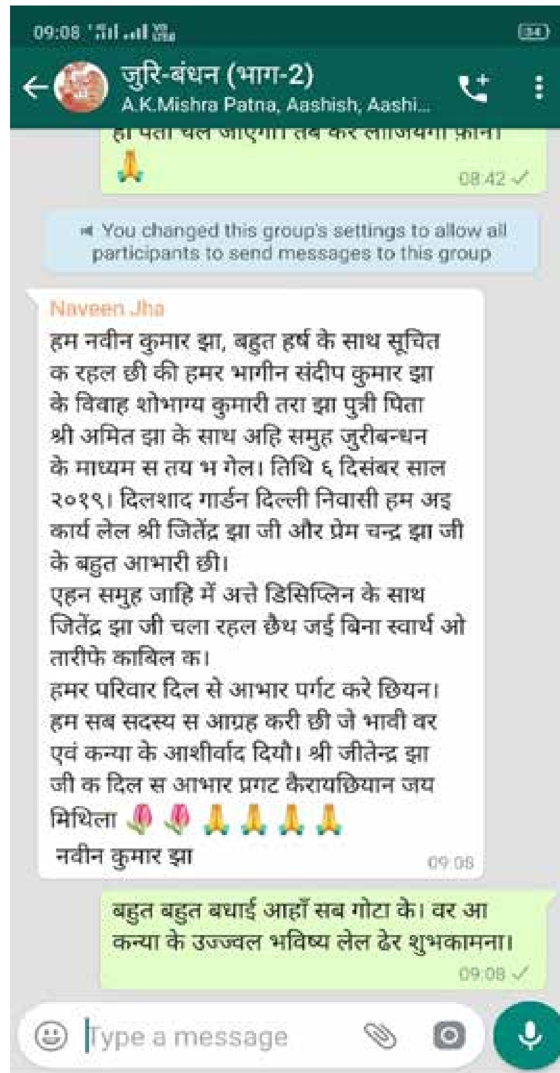
*कुल मिलाक ई एकटा नीक प्लेटफॉर्म अछि जे वरागत आ कन्यागत कें परिचय शीघ्र करबाक अवसर दैत अछि।''*

**-पूनम झा,**
इंदिरापुरम, गाजियाबाद

**सम्पर्क:**
*क्वार्टर नं. 2, टाइप-2, आकाशवाणी आवास परिसर, ट्रंक रोड, सिलचर, असम*
*मो. 9213152822*
*ईमेल :* shakambhariswati2016@gmail.com

कम सं कम एक हजार वरागत/कन्यागत संबंध तय भेलाक बाद समूह छोड़ि चुकल छथि।

सबटा समूह 'एडमिन ऑनली' राखबाक कारण समूहमे कोनो अनर्गल प्रलाप नहि होयत अछि। बायोडाटा आ फोटोग्राफ लगातार एडमिन द्वारा समूह मे पठाओल जाएत अछि। कोनो बायोडाटा पसंद होय पर प्रतिभागी स्वयं एक दोसर सं संपर्क करैत छथि आ अपना स्तर पर संतुष्टिक बाद संबंधक दिशामे आगु बढैत छथि। जुरि-बंधन समूहक दायित्व परिचय कराबै धरि रहैत अछि। एहिक बाद स्वयं प्रतिभागी पर। तलाकशुदा वा दिव्यांगजन एहन विशेष आवश्यकता वला लोकनिक लेल अलग सं समूह सृजित अछि। समूहक माध्यमसं अनेक लोकनिकें वैवाहिक संबंध शीघ्रतासं बनल।




जितेन्द्र झा स्वयं छत्तीसगढ़ केर रायपुरमे रहैत छथि। बिजली विभागक चाकरीक बाद शेष समयमे पारिवारिक जिम्मेदारीसं समय चोरा ओ सामाजिक जिम्मेदारीमे लागल रहैत छथि। समूहकें प्रति हुनक समर्पण केर अनुमान एना लगाओल जा सकैछ जे हालमे गंभीर रूपें बीमार भेला आ दिल्लीक सर गंगाराम अस्पतालमे गंभीर सर्जरीसं उबरला केर तुरंत बादे ओ समूह केर काज मे पुनः जुटि गेलाह। वर्ष 2018मे समूह सं हुनका जुरलाक बाद लगभग डेढ़ वर्षमे एकर छौ भाग भ' गेल अछि। एहिसं पूर्व तीन वर्षमे समूह दु भागमे संचालित छल।

समूहक स्थापना श्री प्रेमचंद्र झाजी द्वारा 05 मार्च 2015 कें कयल गेल छल, जे जितेन्द्र जीक श्वसुर सेहो छथि। ओ स्वयं झारखंडक राजधानी रांचीमे सरकारी नौकरीमे छथि। दुनु प्रवासी श्वसुर-दामाद अनेक नव श्वसुर-दामाद कें घर बैसल संबंध जोड़बाक मौका उपलब्ध करौलनि अछि। जुरि-बंधन नाम सं एकटा फेसबुक समूह सेहो बनल अछि मुदा सक्रियता व्हाट्सप पर बेशी अछि।

लगातार छौ समूह के संचालन आ समय समय पर प्रतिभागी सबकें जरूरी हिदायत दैत रहयमे आर्थिक अवदान सं बेशी मानसिक आ शारीरिक श्रम खपत भ' रहल अछि। समयाभाव आ अर्थाभाव केर बावजूद ई समूह एहन योजना ल' क' चलल अछि जाहि सं संस्कृति ओ संस्कारक संरक्षण करैत आधुनिक प्रगति कें प्राप्त करबा मे समाज सक्षम भ' रहल अछि। ■



**"जुरि- बंधन'' एक अभियान,**
**की समस्या अछि विवाह दान?**
**मिलीजुली करी एकर निदान,**
**दी सूचना होयत समाधान॥**

**निवेदन जे अपन वर/कन्याक परिचय एहि व्हाट्सएप नंबर पर पठावी:-**
**जितेंद्र झा- 7974661934**
**प्रेमचंद्र झा -9934096140**



# मिथिलाक समाज आ मिथिलानि

सांत्वना मिश्रा



ई आलेख लिखबा सं पूर्व बहुत रंगक संशय आ उत्सुकता मोन मे छल...।

पहिल त' घर, घर मे गोसांउनी घर, आ शक्ति पूजा, घरक स्त्रीक लक्ष्मी सं तुलना, मैथिलानिक महत्व अहि बात सं परिलक्षित होइत अछि...।

मिथिलाक दिनचर्या मे तंत्र विद्या पूर्ण रूपेण समाहित अछि, रंग बिरंगक चित्र अंकित क' भगवतीक उपासना प्राय: पुरुष करैत छला, परंच स्त्रीगण ओहि पवित्र चित्र के अंकित करे छलि, अपन गृहस्वामीक संग समान रूप सं सहभागी रहैत छलि, सब पूजा पाठ आ हवन, बिन स्त्री के पूर्ण नै मानल जाईत अछि।

संबंध कें स्त्री अपन विवेक आ कोमल मोन सं एक सुत मे बान्हने रखने रहैत छलि, आ अखनो स्त्रीये के जिम्मा छैने संबंध कें निर्वहन केनाय।

प्रारंभ सं मैथिल समाज पितृसत्तात्मक रहल, परंच, स्त्रीक समाजिक अवस्था खराब नहि कहि सकय छी।

शिक्षा सेहो समान रूप सं भ' रहल छल, ई हम ओहि समय के महिला के परिवेश सं अंदाजा लगा सकैत छी, गार्गी आ भारती सन विदुषी, जिनकर ज्ञानक लोहा आदि शंकराचार्य धरि माननलनि। स्त्री शिक्षा पर ध्यान देल जाईत छल। स्त्री सब गृहकार्य मे दक्ष रहैत छलि, पाक कला सं ल' क' गृह सज्जा, संतान के शिक्षा, दीक्षा पर पूर्ण ध्यान रहैत छल।

मध्य मे मैथिल स्त्रीक स्थिति मे किछु त' कमी आयल, हुंनकर उच्च शिक्षा लेल दूर जेनाइ पर पाबंदी लागय लागल। प्रारंभिक शिक्षा त' नीक सं होईन, मिडिल पास होईत विवाह कराओल जाय।

ताहि लेल हुंनकर शारीरिक आ मानसिक विकास पूर्ण रूप सं नै भ' पाबैन, ओ प्रतारित होईत गेली, समाज मे व्याप्त निर्धनता सेहो स्त्रीक लेल अभिशाप छल। निर्धनतावश माय-बाप बेटीक विवाह बाल्यावस्था मे क' दैत छला। बेमेल विवाह सेहो निर्धनताक कारण छल, बहुत बहुत अवस्था के पुरुष छोट, छोट कन्या सं विवाह क' लैत छला। ओहि एवज मे कन्या के पिता के टाका दय छला। मिला-जुलाक स्त्रीक स्थिति दयनीय भेल गेल, सब तरहें। कम अवस्था मे कन्याक विवाह ओहो माय बाप करय लगला जिनकर आर्थिक स्थिति ठीक रहैन।

एहि समय स्त्रीक घरेलू कार्य मे संलिपता बढ़लैयन, ओ अपन बुढ पुरान सं घरक काज सीखय लगली। सूत कतनाई, सिकी मोइनी, सिलाई, बुनाइ मे दक्ष भेल गेली।

जखन कोनो विपति आबैन त' कुशल गृहिणी सूत काति, खादी भंडार मे द' लगली आ ओई के हिसाब सं साड़ी या धोती भेट जायन या टाका।

ओहि सं निर्वाह करैत छलि।

मिथिला पेंटिंग सेहो बनबै लगली, ओंना मिथिला पेंटिंग के संबंध बहुत पुरान अछि, मिथिला सं कहल जैत छल, सीता विवाह के समय सं ई पेंटिंग बनायल जाईत छल।

परंच मिथिला पेंटिंग मिथिलानि लोकनि के स्वाबलंबी बनबै लागल, ई पेंटिंग बहुत लोकप्रिय भेल गेल, अपन भारते मे नहि विदेशो मे एहि पेंटिंग के मांग होबेय लागल।

मिथिलानी अपन रुचि के मुताबिक कार्य करथि, प्रारंभिक शिक्षा सं प्राथमिक शिक्षा पर स्त्री ध्यान देय लगलि, जे दुख ओ अपने सहने छलि, अपन कन्या के लेल ओहि जीवन के कल्पना नहि करे छलि।

आब स्त्रीक विवाह ओतेक छोट मे नहि होई, ओ पढ़य लगलि, समाज मे स्थिति सेहो बदलय लागल, सामजिक स्तर पर परिस्थित बदलें लागल, शिक्षा आ कार्यशीलता सं स्त्री समाज के ध्यान आकृष्ट करय लगलि, उच्च शिक्षा मे सेहो बढ़ोतरी भेल। संग, संग सरकारी योजना सब स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान देबय लागल।

मैथिल महिला कोनो विपरीत परिस्थिति मे अपन विवेक आ कार्यशीलता सं हरदम साबित केली। अपन संस्कार आ संस्कृतिक संरक्षण करेत रहलि, पुरान पीढ़ी अपन नव पीढ़ी के ओ संस्कारक आदान, प्रदान करेत रहलि। जाहि कारणवश मिथिलाक समृद्ध संस्कृतिक महत्व कम नै भ' पायल।

मिथिला मे दहेज प्रथा सनक कुप्रथा सुरसा सन मुंह बावि बैस गेल, अहि कुप्रथा के कारण सेहो बहुत तरहक प्रताड़ना सहि रहल छथि, मैथिल स्त्री। दहेज प्रथा मैथिल स्त्रीक बौद्धिक पतन के मुख्य कारण बनल। दहेज प्रथा मिथिला मे टा नै, समपूर्ण भारत मे अभिशाप बनल। एहि लेल बहुत किछ सोचल जा रहल अछि।

वर्तमान मे मैथिल स्त्रीक अवस्था बदलि रहल अछि, शिक्षा पर ध्यान देल जायत अछि। आजुक मैथिल स्त्री अपन नाम सं चिन्हल जायत छथि, समाजक कोनों काज मे डेग सं डेग बढ़ा क' काज क' रहलि। आई अपन हक लेल, अपना सम्मान लेल निरंतर लड़ि रहल छथि। बहुत हद तक सफलतो भेट रहल छनहि। आई महानगरो मे मैथिल स्त्री, अपन अस्तित्व के महल ठाढ क' रहलिए। कोनों एहेन क्षेत्र नै जत' मैथिल स्त्री अपन जगह नै बनेने होथि। मैथिल स्त्रीक स्थिति आ महत्व आर बढ़तनि जखन ओ आत्मनिभर हेती, त' अपन मिथिला के सर्वांगीण विकास मे महत्वपूर्ण योगदान क' सकती। ताहि लेल मैथिल स्त्रीक शिक्षित भेनाई आवश्यक अछि!! ■

*सम्पर्क: 24, राजपुर रोड, सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054, मो. 9717414976, ईमेल : mishrasantwana@gmail.com*

# परीक्षा

✍ मणि 'आमारुपी'



गणतंत्र दिवस पर आयोजित, मैथिली-भोजपुरी अकादेमी (दिल्ली) केर मंच स' काव्य पाठ, मैथिली साहित्य महासभा (दिल्ली), मलंगिया फाउंडेशन (दिल्ली), मैथिली लिट्रेचर फ़ेस्टिवल (दिल्ली), वैदेही फाउंडेशन (दिल्ली), विद्यापति पर्व समारोह (छठ पूजा समिति, कालकाजी, दिल्ली), साहित्यिक चौपाड़ि (दिल्ली) एवं दिल्ली एनसीआर केर आन-आन संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम मे काव्य पाठ आ' विचार गोष्ठी।
लेखन : मैथिली आ' हिन्दी भाषामे कविता, जीवनी , लेख- आलेख केर संगे संस्मरण।

**सम्पर्क:**
*'रतनोदय', फ्लैट नं.- एफ1बी-703, समृद्धि अपार्टमेंट , सेक्टर -18, पॉकेट-बी, द्वारका, दिल्ली -110078*
*मो. 9871131105*
*ईमेल : manikantj1970@gmail.com*

"अपन के?
आन के?
सब स' पैघ समांग के?"

आजुक परिप्रेक्ष्य मे हमर समाज कतेक खंड खंड मे बांटल जा रहल अछि।

"कखनो जातिकें नाम पर, त' कखनो धरमकें नाम पर।''

ओहो स' आगू बढिक' तुष्टिकरण केर राजनीतिक लाभक लेल फेर स' बंटैत जा रहल अछि, अगड़ा जाति, पिछड़ल जाति, अति पिछड़ल जाति, दलित, महा दलित, जहिना देश बांटलक अंग्रेज़ पाकिस्तान आ' हिन्दुस्तान बना क'।

"आओर कतेक खंड खंड होएब"

ई स्थिति बनल रहल त' सबहक अस्तित्व प्राय समाप्ते बूझू।

मुदा फड़िछिया नैं सकब, "के' छोट आ' के' नमहर"

"जं' मोन एके नैं त' विचार एके कोनाक'?"

सभ राजनीतिक दलक नजरि अपन वोट पर छैक।

"जनता गेलाह खन्ता मे
हुनका लेल हम अहां धैनसन"

हुनका नैं त' कोनो विशेष लगाव अहां- हमरा स' छनि,

हुनकर दरकार मात्र आ' मात्र वोटक राजनीति स' छनि। से सोचब-गुणब हमर सभहक काज अछि।

ओहो स' ज' हुनका लगैत छनि जे पूर्ण रुपेण हम अहां मतिभ्रम नैं भ' रहल छी,त' फेर आरक्षण सब स' धरगर औज़ार छैके।

"ओहि स' त' चारु खाना चित, अहि रामबाण स' त' बंटल समाज अवश्ये हुनके अधीन भ' जाएत।''

"मामा शकुनिकें सभ गोटी लाले लाल''

गांधारीकें प्रतिशोधक आगि मे जड़ैत ओ त' सप्पत लेने छल कुरु वंशक सर्वनाश करबाक।

''जे कौरव नैं बुझि सकल, वंश स्वाहा।''

"अहि मे शकुनिकें कोनो ग़लती नैं छलैक, ओ त' भागिनकें मोहरा बनौलक आ' महाभारत।''

"अठारहे दिन मे सभ किछु समाप्त''

"अहि मे जीत ककर आ' हारल के?''

महाभारत काल मे दोष मढ़ल गेल शकुनिकें माथे आ' आजुक समय मे दोष माथे मढ़ल जाएत अछि त' नेताकें नाम पर, मीडियाकें नाम पर, दुष्प्रचारकें नाम पर।

हम धृतराष्ट्र बनल सभकिछु बुझि रहल छी, पुत्र मोहक पट्टीकें कारणे चुप्पी।

"की' कहियो ई दोष अपनो माथे मढ़बाक दुसाहस क' सकै छी हम सभ?"

"की' हम अपन ईमान - धरमकें जगा सकै छी?"

"हम अपनाकें बुद्धिजीवी बुझितौ एतेक अबुझ कोनाक बनल छी?"

जे कियो लुत्ति लगा रहल अछि,हम ओकरा स' आगि मांगि, अपने हाथे अपन घरकें स्वाहा करबा मे कोनो कसरि नैं छोड़ि रहल छी।

"किंचित् विवेक स' अहि गहीरगर विषय पर धेयान देबाक कष्ट नैं करैत छी।''

"घर जखन जड़ि जाएत अछि,तत्पश्चात पश्चातापक उद्वेग उठला पर दोष लुत्ती देनिहारक माथे।''

"से कियैक?"

"की' ई उचित?''

"अहि पर आत्म मंथन परमावश्यक अछि।''

ई सभ किछु अपना माथ पर स'

कलंक हटाकें, दोसर पर माथे मढ़ब थिक। हम सभ टलमटोल मे पूर्ण रुपेण दक्ष छी।

“ओहि माटि-पानिक लोक जखन परदेश बसैत अछि त' सबक' सबस' समरसता देखबाक भेटैत अछि।''

मुदा गाम जाएते मात्र पता नैं, कोन कीड़ा कटैत छैक, जे सभगोटे फेर सं' फराक।

हमसभ अंग्रेज़क बिछाओल शतरंजक मोहरा बनि,अपने एक दोसरकें शह आ' मात देबा मे एना बझल छी, जहि स' निकलबाक कोनो सुगम रस्ता नैं बुझना जाएत छैक।

जेहिना कोनो नशेड़ी प्रति दिन नशा छोड़बाक सप्पत लैत अछि आ' भोर होएते मात्र रातिकें सभ गप बिसरि जाएत छैक।

“फेर पुरनके ढर्रा पर!''

“ठीक ओहिना हमसभ समाज बदलबाक लेल सप्पत त' लैत छी”

फेर निष्कर्ष “ढाककें तीन पाते बूझू”

“हमरा हिसाबे समांग माने समान जे अंग,ओ भेल समांग।''

“समांग ओ भेलाह,जे अहांकें कोनो परिस्थिति मे अहांकें संगे रहथि बिना कोनो लोभे। “

ई नैं कियो कहत कौआ कान लेने चलि गेल, ओहि परिस्थिति मे कौआकें खिहारब, नैं कि कान देखब।

“वास्तविकता स' मुंह मोड़ब, कोनाक उचित''

हम जं' दिल्ली मे छी आ' अपन सहोदर कतौअ आनठाम। आकस्मिक बिपैत आबि गेल,ओहि बेगरता पर हमर सहदरो नैं ठाढ़ भ' सकैत छथि।

“मुदा दोसर जे हमरा लेल ठाढ़ होथि, सही मानू त' ओ हमर असली समांग, सहोदरो स' बढ़िकें भेलाह।''

तखन जाति - धरमकें, अपन-आनकें मूल्यांकन हम “किछु आरो बिकट परिभाषाकें संगे करैत छी, से कियाक?”

पहिलुक लोक पोथीकें ज्ञान पर कतेक अधिकार रखने छलाह आ' की' नैं, अहि पर हमर कहब एतबे, जे सभ किछु पोथीकें रटल ज्ञाने नैं हौएत छैक। हुनकर सभहक मज़गूत पकड़ तर्क,बेबहारिक ज्ञानक गहींरगर इनार सन छलनि, ज' हुनकर तुलना नव पीढ़ीकें पढ़ल-लिखल विद्वान स' करी, आ' निष्पक्ष मूल्यांकन करी त' ओ सभ हमरा स' लत, आ' हम सभ पासंगोकें बरोबर नैं।

पुरान लोक सभ गाम-घरक मर्यादाकें अपन बुझैत छलाह, कोनो वर्गकें कियैक ने रहथि। ककरो बेटीके बियाह मे सभ एकठाम ठाढ़।

गामक पाहुन सबहक पाहुन। ककरो मोन मे कोनो बिषाद नैं। सभ संगे हंसी ठठ्ठा। ब्राह्मण रहथि की' कोनो वरण, लोक अपने पाहुन बुझि खूब गारि पढ़ैत छलाह, गामक सार आ' जमाय वर्ग खूब आनन्द ल' क' अपना पुरखाकें उकटैत सुनैत छलाह, कोनो प्रकारक मोन मे मलाल नैं।

**गामक पाहुन सबहक पाहुन। ककरो मोन मे कोनो बिषाद नैं। सभ संगे हंसी ठठ्ठा। ब्राह्मण रहथि की' कोनो वरण, लोक अपने पाहुन बुझि खूब गारि पढ़ैत छलाह, गामक सार आ' जमाय वर्ग खूब आनन्द ल' क' अपना पुरखाकें उकटैत सुनैत छलाह, कोनो प्रकारक मोन मे मलाल नैं।**

“समस्त गाम धी, बेटी, जमायकें अपन बुझैत छलाह।''

गाममे ककरो पर कोनो बिपैत त' सबहक मानल जाएत छलैक। मरनी-हरनी पर बारहों वरण अन्तिम संस्कार मे भाग लेबाक लेल कठियारी जाएत छल। पहिले ककरो ओहिठाम पूजा होएत छलै, त' ओहि लेल कोनो हकार नैं देल जाएत छलैक। पता चलितै सभ अपने अबैत छलाह। हमरा जनैत जे सभ गामक पुरनका रुपकें देखने होयब, त' अहि गप पर सभहक एके मत होयत, जे कम पढ़ल-लिखल समाज, मुदा गहींरगर विचार, समांग बनि ठाढ़ रहबाक मूल मंत्र कखनो नैं बिसरब।

मुदा आजुक पढ़ल-लिखल समाज मे रहनिहार हमरा अहां सन लोक पता नैं कतेक भाग मे समाजकें बांटि देलियैक, जे ओकरा फेविकॉल स' जोड़ब सेहो मोसकिल भ' गेल अछि।

हम अपन जीवनक किछु संस्मरण अपने लोकनिक समक्ष राखए चाहब।

गप 1984 क' अछि, हमर मांकें किछु कारणे ऑपरेशन भेलैक, डाक्टर छलीह श्रीमती के डी अरोड़ा, ओहि समयक सबस' नीक स्त्री रोग विशेषज्ञ। हम आइएसी मे रही। कालेज होयबाक कारणे मां कें आपरेशनक समय मे सेवा आ' देखरेख लेल हम बहुत कम द' पबैत रही।

डाक्टर अरोड़ाक कम्पाउंडर छलाह” जीतेन्द्र पासवान”, जिनका सभ सिनेह सं “जीतू” कहैत छल। बड़ हंसमुख, मिलनसार, मृदुभाषी, एक शब्द मे कही त' सबगुण सम्पन्न व्यक्तित्व।

हमरा लगैत छल, जे आधा बेमारी त' मरीज़क ओकरा देखते मातर ख़त्म भ' जायत छलैक,सब रोगी ओकरे तकैत रहैत छल।

समाजसेवी, संस्कारी, बड्ड सज्जन।

“ओ व्यक्ति एकटा अपन कर्तव्य कम्पाउंडर स' बेसी अपन कोख सं जन्म लेल संतान स' बेसी हमर मांकें सेवा सुश्रुखा मे सदिखन लागल रहैत छल।''

“ओकरा स' ज' हम अपन तुलना बेटाकें कर्तव्यक रुपे करी, त' बूझू जे हम नोइसो बरोबर नैं।''

हम ख़ाली नामे लेल बेटा। ओ सदिखन मांकें सेवा मे लागल। मां हमर एहन जे ओकरा हमरो स' बेसी बेटा रूप मे मानए लागल।

कखनो काल त' ओकरा स' हमरा इरखा होएत छल। जे हम त' कोखिकें बेटा आ' ओ त' अपन जातिकें सेहो नैं। फेर कोनाक एतेक सिनेह?

मां कहैत छलीह, “जीतेन्द्र त' हमर बेटो सबस' बढ़िक'। सरिपहूं कहूं त', ई

गपो सोलह आना सत्ते।

मां, पूर्ण रुपेण स्वस्थ भ' गेलीह, आब जीतू हमर डेरा पर आबए लागल। ओकर स्थान हमर मां लग, आ' हम सभ दूर।

हमर जतेक संगी छल, सबहक लेल जीतू, अपन भाय जकां। जखन कखनो बेता दिस जाएत छलहुं, ओ अगर केहुना देखि लेलक, त' बिना किछु खुएने आबए नैं दैत छल।

बरु हमरा संगे कतबो संगी कियैक नैं रहथि। एतेक सिनेह, जे अपनो नैं क' सकैछ।

हमर घर लेल एकटा विशिष्ठ व्यक्ति, जे कोनो घरक काज उद्येम मे तीमन-तरकारीकें नोन जकां।

अभिन्न समांग, हमर बिपैत, ओकर बिपैत, आ' हमर सुख बूझू त' ओकर सुख।

हम पढ़ैत रहलहुं, बढ़ैत रहलहुं, हमर सम्बन्ध मे कोनो बदलाव नैं। जेहेन पहिले, ओहने अखनो।

मुदा कखनो काल सबहक धैर्यक परीक्षा लैत छथि भगवानो, किछु बरख पहिले किछु बेमारीकें कारणे ओ परेशान भेल छल। हमरा सबहक कतेको बेर कहलाकें उपरान्त ओ दिल्ली आयल, एतय डाक्टर स' देखाएल गेलै। डाक्टर किछु गम्भीर बेमारी कहलकै। ओ अनठियाबह लागल, जे हम बाद मे आयब, ई कहि ओ दरभंगा चलि गेल।

मुदा हमर किछु आत्मीयकें दबाव मे ओ मुम्बई मे देखेबाक लेल तैयार भेल।

सही समय पर जांच भेलैक, टाटा मेमोरियलकें डाक्टर आपरेशन लेल विचार देलकै, ओहो अतिशीघ्र।

सभ त' भगवानेकें रचल लीला। पाय-कौड़ीकें बन्दोबस्त भेलै।

आपरेशनक दिन हम सभ बेसी चिन्तित रही, पूजा-पाठ मे लागल रही।

तखने मुम्बई स' फ़ोन आयल, आवाज ओकर छलै।

एतबे कहलक ओ, हौ'अ सभ स' पहिले तोरे फ़ोन केलियह।

घर पर बाद मे फ़ोन करबै।

आब हम जा रहल छियह, आपरेशनक लेल।

तोहर सबहक दबाव तें, ई आपरेशन। ओ बाजल।

हम बहुत भावुक भ' गेल रही। चुपचाप ओकर गप सुनैत रहलहुं। अपना पर हम केहुनाकें नियंत्रण केलहुं।

कहलियै, देख' तू त' कतेको क' आपरेशन केएने छहक।

तोरा स' कोनो गप नैं ने नुकायल छह।

तौं आइ धरि सबहक उपकारे टा केलहक।

तोरा लेल भगवान ओतए ठाढ़ छथुन।

कहबाक गप छल, ओ त' कहि

**मुदा कखनो काल सबहक धैर्यक परीक्षा लैत छथि भगवानो, किछु बरख पहिले किछु बेमारीकें कारणे ओ परेशान भेल छल। हमरा सबहक कतेको बेर कहलाकें उपरान्त ओ दिल्ली आयल, एतय डाक्टर स' देखाएल गेलै। डाक्टर किछु गम्भीर बेमारी कहलकै। ओ अनठियाबह लागल, जे हम बाद मे आयब, ई कहि ओ दरभंगा चलि गेल।**

देलियैक, मुदा सत्ते कहैत छी,हम सभ हितैषी बड्ड चिन्तित रही।

ककरो कोनो काज मे मोन नैं लगैत छल, सबहक मोन मुम्बईकें फ़ोन पर टांगल छल।

ओतए स' शुभ समाचार आयल, सफल आपरेशन।

तीन दिनकें बाद फेर ओ फ़ोन केलक, हंसैत बाजल, तू सभ हमरा बचा लेलह।

मुदा बचौनिहार हम सभ के?

ओ त' ईश्वर छथि आ'ओकर सतकर्म छलैक।

भगवतीकें कृपा स' ओ अखन पूर्ण रुपेण ठीक अछि। जखन फ़ोन पर गप होएत अछि त' एतबे गप स' गप शुरु होएत अछि हम तोरे सबहक कारणे।

अखनो जखन ओहि बिपैतकें सोचैत छी त' आंखि मे नोर आबि जाएत अछि।

आब अहीं कहू हमरा ओहि जीतेन्द्र पासवान (जीतू) स' केहेन सम्बन्ध?

ओ हमर समांग कोनाक?"

हम ब्राह्मण आ' ओ पासवान!

हम बड़का जाति आ' ओ दलित छोट जाति।

मुदा ओ हमर परिवारक सबसं' अभिन्न अंग अछि।

हमर मांकें ओ एकटा बेटा।

हमर ख़ुशी मे ओकर ख़ुशी, आ' ओकर ख़ुशी मे हमर ख़ुशी।

पता नहि अगिला जन्मकें विषय मे त' हम नैं जनैत छी, मुदा अहि जन्म मे सहोदर सं' ओ कनिको कम नैं।

अहि पर सभ सोचू, आत्म चिन्तन करु, समय पर जे अहां लेल ठाढ़ भेल, ओ अहांक समांग भेल।

फेर हम सब अपने मे कियैक माथा फुटा -फूटोबल करै छी?

फेर हम सब एतेक फराक कियैक?

जाति-धर्मक उन्माद मे कियैक फंसल छी।

सोचबै अवश्य, किछु परिवर्तनक आसक संगेहि

चललहुं जखन असगरे बाट पर
नैं छल कियो अपन समांग
बाट पर नैं छल कोनो बटोही
बाट छल एकदम सुनसान
डर लगैत छल मोनो हलकैस छल
तख्खने भेटल एगो बटोही अनजान
गप सप करैत चलैत रहलहुं बाट पर
पहुंच गेलहुं हम अपन गाम
दु:ख सुखक भागी बनल ओ हमर
कोनाक' बटोही बनल हमर समांग
आब हम कोनाक' रहबै बिन ओकरे
बिसरब कोना ओकर पहिचान
निहोरा बस एतबे अछि हमर
कनिक देबै अहां अहि पर धेयान। ■

✍ कैलाश झा 'किंकर'



वृत्तिः शिक्षक
संपादनः कौशिकी ( हिन्दी पत्रिका )
प्रकाशित कृति ( हिन्दी ):
कविता संग्रहः संदेश, दरकती जमीन, ज़िन्दगी के रंग हैं कई, ईमान बचाए रखते हैं
लघु खंडकाव्य : कोई-कोई औरत
गीत संग्रह : तीनों भुवन की स्वामिनी
ग़ज़ल संग्रहः हम नदी की धार में, मुझको अपना बना के लूटेगा, देखकर हैरान हैं सब, दूरी न रहेगी।
अंगिका कविता संग्रहः
जत्ते चलै चलैने जा ( ति. मा. विवि, भागलपुरक पाठ्यक्रम मे ), ओकरा कोय सनकैने छै, जानै जौ कि जानै जाता।

*सम्पर्कः*
*क्रांति भवन, कृष्णा नगर,*
*खगड़िया, बिहार-851204*
*मो. 9430042712*
*ईमेलः kailashjhakinkar@gmail.com*

# मिथिला गीत

मैथिली मिथिला पंथ सजाओल
सरस वसन्त सुधामय धाओल।

विद्यापति कवि भक्त-शिरोमणी
बिस्फी ग्राम्य-भूमि मनभावनी
टहल-टिकोरा हेतु महादेव
तजि कैलास कतेक दिन- यामिनी
उगना-उगना सबद सबद सौं-
वायु- तरंग तरंगित गाओल।

धन्य ई मिथिला जनक सुता सौं
मंडित मंडन ज्ञान सुधा सौं
माय कतानय देखू अहिल्या-
पाथर भेलि जखन दुविधा सौं
ब्रह्मा, विष्णु, महेश अचंभित
जुगति-जुगति करि राम पठाओल।

धन्य उमापति औघड़ दानी
भोलेनाथ महेश भवानी
भारत भूमि हृदय में राजत
भारत भारती हिन्दुस्तानी
प्रथम पुष्प निवेदित अहीं क-
हृदय सं निकसल गीत सुनाओल।

# दहेज गीत

हमर हालत छै खरीदल जमाय सन
मोन मारी के बैसल छी गाय सन

सार-सरहोज मारै छै ताना
अब ससुरजी बनल छै बेगाना
सास बूझै छै हमरा बलाय सन
मोन मारी के बैसल छी गाय सन

कनियां ताड़ै छै कुल-खानदान के
साइर टीक्की घीचै कखनो कान के
घर में दुबकल छी हम्में बिलाय सन
मोन मारी के बैसल छी गाय सन

हम दहेज के कारण बिलल्ला
रोज अंगना में होय छै हल्ला
दिन काटै छी हम्में सजाय सन
मोन मारी के बैसल छी गाय सन

घर मे आदर छै नै ससुराल में
हम नै जानी की ठोकल कपार में
बाप कैलकै हलाल कसाय सन
मोन मारि के बैसल छी गाय सन।

# सखि है स्नेह सरोवर सूखल

नेहक बन्धन नभ-घन, नभ-घन
मुखहुं न बाजत मूकहिं सदिखन
वैरन रतिया नागिन-नागिन-
भरिसक भाग्य विधाता रूसल।

जन-जन जनगण स्वारथ मंडित
जनहित जोग जुगति अछि कंपित
पदतल गुणीजन सिर अज्ञानी
तार सितार सदाशय टूटल।

घातक धुंध घटामय छायल
मानवता अछि घायल-घायल
व्याल बनल अछि पुरजन-परिजन
संगी साथी दुखक दिन छूटल।

✍ शेफालिका झा



युवा कवयित्रि। मुख्यत: हिन्दी मे रचना। ई मैथिली मे हिनक पहिल रचना थिक।

**सम्पर्क:**

*द्वारा: तृप्ति नारायण झा, आरसी नगर, एरौत (रोसड़ा), समस्तीपुर*

*मो. 8294690359*

*ईमेल: shephalika359@gmail.com*

# एना रुसि फुलि

एना रुसि फुलि हमरा सं दूर जाऊ नहि।
हमर कंगना बजावै ये चलि आउ ने।।

एलौं बारह बरिश, पर दलान धेने छी,
कनेको हंसलों नै बाजलौं, धरैन ताकै छी।
हुलकि खिड़की सौं...
हुलकि खिड़की सौं एना पिया आजमाउ नहि।
हमर बिंदिया...
यौ हमर बिंदिया बजाबै ये चलि आउ ने।
हमर काजर बजाबै ये चलि आउ ने।

हाथ कंगन गिनैत दिन काटलौं पिया,
आ तरेगन तकैत, राति बीतल पिया-2
छोड़ि मुस्की...
छोड़ि मुस्की पिया जियरा जराउ ने।
हमर झुमका...
यौ हमर झुमका बजाबै ये चलि आउ ने।
नाक बेसर बजाबै ये चलि आउ ने।

काज घरके करैत ओझरायल रहै छी,
अन्हा भानस घरे में भूतलायल रहै छी-2
दोष हमरा पर...
दोष हमरा पर मढ़ि अहां गाल बजाउ नहि
दरवज्जे पर...
दरवज्जे पर बैसल छी चलि आउ ने।

कनेक माइयो बहिन के बुझा दियौ ने
अपन भौजी के सेहो बता दियौ ने।
देतीह फुर्सत...
देतीह फुर्सत अन्हीं हुनका बुझाऊ ने।
होठ लाली...
यौ ठोड़ लाली बजाबै ये चलि आउ ने।
ठोड़ लाली बजाबै ये चलि आउ ने।

एना रूसि फुलि हमरा सं दूर जाऊ नहि
हमर कंगना बजाबै ये चलि आउ ने।

## कविता

✍ डॉ. स्वाती ठाकुर



बैंक ऑफ बड़ौदा मे राजभाषा अधिकारी। बहुभाषी कवयित्री। मैथिलीमे ई हिनक पहिल कविता थिक। पूर्वमे विष्णु प्रभाकर कृत सरल पंचतंत्रक मैथिली अनुवाद प्रकाशन विभाग (भारत सरकार)सं प्रकाशित।

**सम्पर्क:**

*बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय चंडीगढ़, एससीओ-185-187 सेक्टर-9सी, चंडीगढ़-160009*

*ईमेल : choti.mailme@gmail.com*

# परहेज

हां हमरा परहेज़ अछि,
गुलाबी रंग सं...

जी नय, हमरा प्रेम सं कनिको परहेज़ नय अछि
मुदा परहेज़ अछि
सीमित क देल गेल
प्रेमक परिभाषा सभ स

प्रेम
हमरा लेल कखनो आसमानी भ' जायत अछि,
त, कहियो जामुनी सेहो भ' जायत अछि
हमर प्रेम...

हां, हमरा प्रेम अछि सांवर रंग से ओतबेक,
जते कि मोहैत अछि क्रांति केर ललका रंग,
ओनाहु प्रेम क्रांति त छेबै करै...

ओहि दिन
जाहि दिन अहां गुलाबी कमीज़ पहिरने रही,
एकटा नवके रंगक जामा,
पहिनने रहे हमर प्रेम...

स्वीकार नय अछि
एकरा
कोनो तरहक सीमा सब...

अपनहि चुनैत अछि
अपनहि बुनैत अछि
रंग अपन
इह प्रेम...!!

✍ पूनम झा 'सुधा'



**सम्पर्क:**
*क्वार्टर नं. 917,*
*एनआईटी फरीदाबाद,*
*हरियाणा-121001*
*मो. 7982461218*
*ईमेल :*
*jhasudhakar72@gmail.com*

# जीवन

जीवन अछि क्षण भरि ते
अहि जीवन सं मोह कियैक,
मृत्यु एक सत्य अछि ते
मरै सं भय कियैक।

ई सुन्दर काया अछि सबके
ते कनि करु कल्पना,
माटि कें अई काया
आ माटि मे जाइत सना।

ककरो कियो संग नइ देलक
आ हृदय सं लगाओत कें,
बस एके टा कर्म करु
स्मृति टा रहि जैत सें।

त्यागू मोह ममता सब
फूसि अछि अई शरीर मे,
के ककर होईए कखन,
देखू अहि संसार मे।

माय-बाप भाय-बहिन सब
स्वार्थ के संगी अई
के ककर होइए कखन
के देलक मोन के सकून अई।

संगीये टा संग देत आ
फेर एक प्रेमी बूझी
जे चोट खेने अछि अई
पीड़ा सं अपनो से बूझी।

बड़ धन अछि हमरा ते
तैयौ भाग्य मे प्रेम कहां,
जीवन ते तैयौ लागयै
सपना जेना।

आई नइ ते काल्हि अछि
समाप्त ई जीनगी,
आ सत्य अई दिन के बाद
राति हैत से बूझी।

किया नइ त्याग देब
मोह माया अहि जग सं,
आ रोकि लेब पैर अपन
हमहूं अहि पथ सं
हमहूं अहि पथ सं।

# मिथिला हमर महान

मिथिला हमर महान
एक दोसरक करी
हम सभ सम्मान
बाबा विद्यापति जी केर
अहि ठाम गाम
कतेक सुंदर लगैए ---।

सुनयना केर कोर
धिया अएली भोर,
भ' गेल चहुंदिस शोर
कतेक सुंदर लगैए ---।

भोरे-भोर एतय गाबथि,
सभ पराती
सांझ खन तुलसी लग,
लेसी हम बाती,
एहि ठाम छथि
मां भारती
कतेक सुंदर लगैए ---।

अयोध्या सनक धाम
दशरथ जी केर पुत्र श्रीराम
एला जनकपुर धाम,
कतेक सुंदर लगैए ---।

जनक जी केर धिया
जनकपुर केर सिया,
श्रीराम जी हुनकर पिया
कतेक सुंदर लगैए ---।

# समयक हेराफेरी

जिनगी मे समय-समय पर,
आबैए छइ
निराशक क्षण,
तखन मनुख भ' जाइत अछि,
विकल्पहीन,
नय किछु सोहाइत छइ तखन,
आ सौसें अन्हार लागैए
छइ ओकरा तखन,

हताश निराश भ'
जाइत छई ओ अपन मोन सं,
दोष अवगुण आ क्षमा,
सम्मूख बैस सुनबैत छइ
ओ अपन ईश्वर सं,
आ तखने मनुख जाइत
माइन लैइत छथि,
ईश्वर के सर्वशक्तिमान,
आ अपना आप कें
बूझि जाइत छथि,
एकटा छोटछिन्ह इंसान,

नतमस्तक जा झुकबैत,
करैत छथि ईश्वर सं प्रार्थना,
आ तखने मोन मे ठानि
लैत छथि ईश्वर के प्रति साधना
ईश्वर के प्रति साधना।

✍ पं. कौशल झा




दरभंगा जिलान्तर्गत ठेंगहा निवासी पं. कौशल झा नई दिल्ली मे रहैत छैथ। दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर केर संस्थापक अध्यक्ष। बिरला समूह मे कार्यरत।
ओ व्हाट्सएप समूहक माध्यम सं घर बैसल मिथिलाक्षर प्रशिक्षण कोर्स सेहो संचालित करैत छथि।

# नहि भेंटता

एहि शहर मे सब जगह पर सब कियो खसेता।
मुदा दूर दूर तक उठाबै वाला कियो नहि भेंटता।।

ओ फेंक दैत छथि खाके खोंईचा पड़ोसिया डीह पर।
गिरल खोंईचा के ढ़ेर सं तरासै वला नहि भेंटता।।

मिलाबट केर जहर सं धनवान बनि जाए छथि।
जहर पीबि के ज़ियावे वला शंकर नहि भेंटता।।

कहै छथि आब ओ धनवान परिश्रम सं बनलनि जे।
जोखैत काल सुच्चा किरासन महाजन नहि भेंटता।।

पलायन बेरोजगारी पर सब कियो भाखे छथि।
मुदा साग पर जीवित अयाची आब नहि भेंटता।।

मरै पर आबि हुनका घर सब कियो फूसिके कनता।
मुदा जिबैत धरि हाल हुनका पूछै वला कहां भेंटता।।

# दूर्वाक्षत

की कहू मिथिला दूर्वाक्षत,
परम पवित्र गावथि विद्यापति।
दूर्वा दर्भ अमर वर करता,
वरकन्या पति पत्नी योनिक्षत भरता।।

ऋग्वेद मंत्र वाजथि विद्वदजन,
आव्रह्मण व्रह्मणोव्रह्मवर्चसि।
चूमान कालक आशीर्वचन,
वरकन्या पति पत्नी दूर्वाक्षत सन जीवन।।

मण्डन अयाचि शंकर भारती भवन,
जहिठाम दूर्वाक्षत तामा दधिचन्दन।
सदिखन संस्मरण अविते विह्वलमन,
अश्रुप्रवाहित सजल करुण क्रन्दन।।

**सम्पर्क:**
*डी-9, नन्हे पार्क, उत्तमनगर,*
*नई दिल्ली-110059*
*मोबाइल: 9999327551*

---

✍ मीना झा



शिक्षा : हिन्दी साहित्य मे स्नातकोत्तर।
'मुआवजा' हिन्दी कहानी लेल शैलेश मटियानी पुरस्कार सं सम्मानित। प्रकृतिक सुन्दरतम हस्ताक्षर (मैथिली कविता संग्रह) आ कविता-कहानी, लेख तथा अनुवाद चर्चित मैथिली पत्रिका सभ मे प्रकाशित।
संप्रति: हिन्दी एवं मैथिली मे स्वतंत्र लेखन, हिन्दी उपन्यास पर कार्य।

**सम्पर्क:**
*बी3ए-102, सुशांत एक्वापोलिस, डुंडाहेड़ा,*
*गाज़ियाबाद-201016 (उ.प्र.) मो. 9990018356*
*ईमेल: jmeena25@yahoo.co.in*

# धरतीक स्वतंत्र बेटी

एक विचारधारा की हमसब
नइं मानवी नइं, ने कोनो मूर्ति
नइं जल पर लिखल लेख छी,
पत्थर पर लिखल रेख छी
हम चिंतनक रूप विशेष छी।

अस्तित्व मेटाक विचार नइं
मेटा सकैत छै कखनहुं, बूझु
मतभेदक विमर्श होइत छै
भंजन-विसर्जन नइं, नवसृजन
सामंजस्यक मेलभाव होइत छै।

बहस करू, परामर्श करू विचारक
पुनः पुनः मंथन करू, खंडन करू,
पुनर्स्थापित चिंतन करू, की प्राप्त
होयत अहांक अस्तित्व हमर मेटा क'
हत्या क', की चिंतनक धार बिलायत!

अजगल बनि बैसल छी मुंह खोलने
गीड़' लेल सम्पूर्ण मानवता कें तैयार
कट्टरताक भयानक आंधी बनिक'
धोइ बहायब की पूरा स्वतंत्र संसार!

पर्दा उठैत अछि, होश उड़ैत अछि
अपराध ककरो, भोगैत अछि केओ,
युगक मंत्रणा, छै; खूनी तलवार नइं
स्वतंत्र जन-मन, स्वतंत्र देश-संदेश
प्रयासरत छलहुं, बचायब धरती
अपन धरतीक हमसब स्वतंत्र बेटी
कतेक प्रिय छल हमरा अपन देश,
धरती अखनो बजा रहल अछि सुनियौ
– गेलिजिया, तसलीमा, गौरी लंकेश!

✍ इरा मल्लिक



**सम्पर्क:**
*70-ई, सेक्टर-26, रिलायंस ग्रीन्स, मोतीखावड़ी, जामनगर, गुजरात (361142)*
*ईमेल : rani.mallick31@gmail.com*

# सेहन्ता

ब्याहक घर अछि। फुलकाकी एके टांगे पूरा घर के काजराज सम्हारने छलीहे। घर मे सबसं पैघ बेटी दीपा के आइ ब्याह छैन्ह! दीपा फुलकाकी के जैधी छथिन्ह। हुनकर भैंसुर आ बड़की दियादिनी के बेटी छलीहे दीपा। फुलकाकी के बड्ड दुलारू छलीहे दीपा। हुनका दीपा सं बड़ नेह, मोह, छोह छलैन। विवाहक सरंजाम मे कतहु त्रुटि नहिं रहि जाय, अहि लेल फूलकक्का आ फूलकाकी दुनु पूर्णत: सजग छलथि। सर - कुटुम्ब सं भरल घर! गीत नाद सं ध्वनित घर! रोशनी सं पूरा पूरा नहाओल जगमग घर! आइ बरियाती अउतैक। घर के वातावरण प्रसन्नता भरल छल। बरियाति अबैके समय भ' गेलैक। बरियात द्वार लागल। दीपा के मां बर के परिछि घर अनलैथ। दीपा के मां एको बेर फूलकाकी सं बर परिछन के बारे मे नहिं कहलखिन्ह, जे तहूं चल' आकि तोंहि बर परिछनि क' ले। अहि सब बातक कोनो चर्चा केनाय दीपा के माय जरूरी नहिं बुझलखिन। एकाएक सं फूलकाकी के हृदय जेना फाटि गेलैक। काज राजक घर अछि। अपना के बहुत समहारय के प्रयास केलैन फूलकाकी। मुदामोन एकदम गहीर खाधि मे जेना ससरल डूबय लागल। मोन हाहाकार क' उठल। अन्तर्तम क्रंदन क' उठल। एकटा दीर्घ नि:सांस छोड़ैत बाजि उठली;हे विधाता! आइ हमरो बुचिदाइ जीबैत रहितथिन्ह ते एतेक टाके रहितथि। हुनको ब्याह मे हम एतबे शौक मनोरथ पुरिबतहुं। पाहुन के परिछि घर अनितहु। मोन कोलाहल क' उठल। फूलकाकी! बुच्चीदाइ! दीपा!!!

हुनकर बुच्चीदाइ आ दीपा के जनम मे चारि दिन के अन्तर छलैन्ह। तेहेन निमोनिया धेलकै जे जनम के दूए मास बाद बुचिदाइ काल के ग्रास बनि गेली। फूलकाकी के दोसर सखा सन्तान नहिं भेलैन। तहिया सं ओ दीपा मे अपन बुच्चीदाइ देखय लगली। लेकिन आइ सबटा बात फरिछा गेल।

देवकी देवकी छैथ! यशोदा यशोदा!

---

# बुधियारि

मालती छलीह परफेक्ट गृहिणी। घर के सब बात ब्यवस्था पूर्णत: चाक चौबन्द! दुरूस्त!

बिन्नी हुनक बेटी! आब कॉलेज जा लागय छलखिन्ह! नीक संस्कार, नीक बात विचार सं भरल बुधियारि बेटी। मुदा छली ते उमिरक कांचे। पढ़य लिखय मे जतबे कुशाग्र, तीक्ष्ण बुद्धिवाली छात्रा छलीहे, गृहकार्य मे ओतबे अल्हड़। सब काज अपन ओरिया क' करतथि, तहियो हुनका संओ कोनो काज नहिं सम्हरय। किछु नहिं किछु भांगठ रहिये जाइन। आ मालती सेहो बाजिए उठैत। अहिना किछु काज व्यवस्थाक जानकारी किछु दुनियादारी के समझ बेटी के देनाइ नहिं बिसरैथ मालती। ई सब क्रम माए बेटी मे चलिते रहैत छलैन्ह। आने दिन जकां मालती अपन बेटी सं बाते करय के क्रम मे कहलखिन्ह; गे बाउ! आब अहां नम्हर भेलहुं। अपन काज धीरे-धीरे अपने सं करय के आदैत बना लिय। अपन हाथ मे लूरि रहत,मुंह मे नीक बोल रहत, आ सबके सम्मान करब त' सब यथोचित अहूंक सम्मान करत। जीवन जिनाय आसान लगत। जिनगी कठिन जरूर छैक मुदा बहुत सुंदर होयत छैक। बस जीवन जीबय लेल आबि जाना चाही। एतेक बात बजैत फेर मालती उठि क' भानस घर चलि गेली रातुका भोजन के सरंजाम मे। बहुत देर बाद जखन मालती भोजन तैयार क' लेली तखन हुनकर ध्यान बिन्नी दिस गेल। मालती के अपने पर तामस उठि रहल छलैन्ह। बिन्नी पर एतेक अनुशासन नीक नहिं। ओ बिन्नी के कमरा दिस गेली। ओतुका दृश्य देखि मालती के सुखद आश्चर्य भेलैन। हुनकर मोन खुशी सं गदगद भ' गेलैन। बिन्नी अपन कमरा के नीक सं व्यवस्थित क' साफ सुथड़ा क' लेने छलीह। अलमीरा मे सब किताब सजा चुकल छलिहे बिन्नी। आब अपन कपड़ा के आलमारी व्यवस्थित क' रहल छलीहे। मालती अपन बेटी के देख मुंहे मुंह मुस्का रहल छलीहे। सोचि रहल छलीहे जे कखन अबोध, अल्हड़ बालिका के जीवन के अर्थ बुझा जाएत छैन। संज्ञान आ सबके परिवाहि करय वाली नारीत्व आबि जाइत छैन। अपन मातृत्व पर आइ सहजहिं मालती गौरवान्वित छलीह।

# कला संग कविता

✍ ओम चौधरी

सुनै छी यै...
कतय गेलहुं
हे ऐ नीरजके मां......
कि भेल यौ...
कियेक अतेक गारा फारने छी ...

नीरजके मां बहिनदाई अंगना सं दौड़ति अएलीह

नीरजके पपा... चुचिअबैत बजै छथि

ए हें भगवान! हिनक पएर एकहुं घरी जेना अंगनामे नहि टिकए

भरि दिन एहि आंगनसं ओहि आंगनमे, ओहि आंगनसं ओहि आंगन

लोकक अंगने-अंगने बैन बांटति रहै छी, धौ!

जानि नहि हमर दिन कहिया उजियाएत।

एहिना हकारिक चिचियाएल छलहुं कि, किछु कहबो करब।

धौ! अहांके कि कहू कपार
चोरी भ' गेल...
कि... हिचक क'

कथि चोरि भ' गेल, कतय चोरी भ' गेलैक...

बाप रौ बाप... हमर बाबू जे हार देने छल सेहो चोरी भ' गेल हेतय।

आब हम नहि जीव, कोन मुंह लए नैहरि जाएब।

भाउज से एक ढाकीके मुंह फुलएतीह, आर टोल पड़ोसक लोक से ताना देत,

बाप रौ बाप... आब कोना जीव'
है है! रे बहिंके ई तं सगरो शोर करत
चूप रहु ने ऐना कहूं लोक कएलक
नहि बौराउ...घरक समान नहि चोरी भेल।

हमर लिखल कविता चोरी भ' गेल फेसबुक पर।

लिखलहुं हम आर पोस्ट कए देलक केओ आर अपन वॉलसं।

धूर जाउ लुती लागओ अहांक कविता मे। हमर त' करेजा उनटि गेल छल।

बड़ नीक भेल हमर सौतीन बनल छल हअ भगवान रक्ष रखलाह, लगैत छल आब दांति लागि जाएत।

कविता चोरा लेलक त' दोसर लिखी लेमए,
कि, कतहु एहिमे अहांक कला तं नहि।
तें एना ककरो हार्ट अटेक नए दियबियउ।

मो. 9958638604

# देवाल

✍ प्रमोद कुमार उर्फ नेहरू लाल दास

हे यौ ! बाउ! बाउ....! नहिं सुनै छी! अहीं के कहै छी!

माय गई! केदन बजै छै! मुदा एत्त त हमहीं टा छी। आर कहां क्यो छै!

बाऊ...! यौ बाऊ...! एमहर देखियौ ने!

कोम्हर? एम्हर त' आधा छिधा ढ़हल ढ़नमनैल देवाल छै! और कहां कोइ!

हं यौ बाऊ! हमहीं बजै छी। आधा ढ़हल-ढ़नमनैल देवाल।

अहांक नाम आशु.... याने आशुतोष छी ने!

हं यौ! मुदा अहां कोना जनै छियै? अहां त' देवाल....

बच्चा हम सब जनै छियै। माय अहां के कहलैथ जे जा क' अपन घरारी देख अबिहै। ठीक ने।

हं यौ। अहां त' सभटा जनै छियै। चचा के घर मे ठहरल छी ने! "हं"!!

बौवा मोबाइल अछि अहां के? हं यौ! एकदम मोडर्न। देखियौ।

त सुनू! नह सं हमर देह सं चून नहू नहू एक एक परत खोखरू। हं अहिना। "की देखै छियै? "लाल छड़ी बला के बच्चा सभ घेरने छै। "आशु बजलाह। के बनौलक ई चित्र?"

अहिंक पप्पा! ऐं वो चित्रो बनवै छलखिन। "हं बाऊ! बड़ नीक। बड्ड कोमल हुनकर हृदय! "वाप रे! हमसब त' बुझै छियै जे ओ बड्ड कठोर....!

फेर दोसर परत खोखरू! हां! खोखरै छी। "आब की देखलियै"?

एगो पालकी सं कनिञां के निकलैत चित्र। कात मे ढोल पिपही बजनियां सब। के बनौलक ई चित्र?

अहांक बाबा। वैह हमरो बनौलथि। अहां दादी के लवै के उपलक्ष मे।

बाऊ! अहिना अहां ठाढ़ रहू। हम अहां के अहांक खानदानक गौरवक कथा कहब। सुनि लिय'!

हम त' आब-तब मे छी। अहां जत्ते फोटो खींच' चाही खींच लिय'

अगला वेर त' कोदाइरे ल' क' आब' पड़त!

मो. 9443068901

# माटस्साब

✍ नीरज प्रताप सिंह

ई नुनुआ के नाम लिखी लेतिहो स्कूल मे
कोन किलास मे
देखो न कोन किलास लायक छै
एकर नाम पहिल किलास मे लिखैतों
लिखी लोहो
बच्चा के नाम
रवि कुमार
पिताजी के नाम
अर्जुन कुमार
जन्मतिथि

होली के तीन दिन बाद छौ सात साल पहले

धुरर ई की बात होले
पक्का याद नैय छौं
नैय

दु तीन साल कम करी दै छिहों नुनु के जन्मतिथि,जल्दी डेट एक्सपायर नैय होथों, नौकरी मिलने मे आसान होगा,,,

करी दोहो

फिर क्या था माटसाहेब ने अपने मन मे जो आया लिख दिया रवि बाबू का जन्मतिथी

तब से रवि बाबू आजतक उसी को अपना असली जन्मतिथि मान उस दिन केक काट रहे है। सरकार के नजर मे भी वे उसी दिन पैदा हुए थे इसलिये रिटायर भी उसी अनुसार होंगे।

ये कहानी एक रवि बाबू की नहीं उन करोड़ों लोगों की है जिनका जन्मतिथि स्कूल के मास्टर साहब ने तय किये... इसलिये वो शिक्षक की वैल्यू कैसे कम हो सकती है,जिसने आपकी जन्मतिथि को निश्चित किया... प्रणाम उन सभी गुरुओं को जिनसे कुछ न कुछ सीखने का मौका मिला...

– फील्ड कंट्रोलर
वाईएमआरबी इनसाइट्स प्रा. लि.
फरीदाबाद, हरियाणा,
मो. 9718388352

✍ कल्पना झा

# गामक सुख



लेखिका मैथिली संस्कृतिकर्मी, लेखिका आ कवयित्री छथि। अ.भा.मि. संघक मिथिलानी समूहक संयोजिका सेहो छथि।

*सम्पर्क: सी-43, पॉकेट-7, केंद्रीय विहार नोएडा, सेक्टर-82, उ.प्र. मो. 9873442999*

– हे यै सुनै छी? बहुत दिन भेल गाम छोड़ला, दू मास मे कार्यावकाश सेहो भेटि जाएत, एक मासक अवकाश बांकी अछि त' चलू ने गाम भए आबी।

– हं उचिते कहलहुं, अही बहाने भगवतीक पूजो भए जाएत आ चर-चित सेहो। फेर त' दू मासक बाद ओत्तहि रहबाक विचार मे छी किने!

राति खन सकुशल गाम पहुंचला फरीक सभ खूब मान आदर देलकैन्ह। भोर खन–

– हे यौ प्रात भए गेल उठू ने! सामान सभक सूची बना लिय। आ हे तरकारी सभ कहने छलहुं मणिगाछी मे कीनि लेबए, से त' सुनलहुं नहि आब की भानस करू से किछु नहिं फुरा रहल अछि!

लुटूर बाबू सामान की लौता! तेहन ने गप्प गोष्ठी मे ओझरौलाह जे सोझे भोजने बेर घरमूंहां भेलाह। मने-मन चिन्तो होन्हि जे कतेको दिनक ताला मारल घर-ऑंगन मे घरनी कोना की इंतजाम केने हेतीह! परंच थारी पर बैसिते मातरि हलसल-फुलसल घरैतिन नीक सचार लगा देलथिन्ह – भात, दालि, कचरी, बड़ी, मूरक बड़, झुंगनी भूजल, घेरा भूजल, तीसी सजमनि, साग, अरिकंचक चक्का, ओलक चोखा, खम्हौर तरल, तिलकोर, कन्ना, कौआॅ, कदीमा फूल आओर बहुत रंगक तरूआ – भुजुआ चटनी सहित।

अबकायले प्रश्नवाचक दृष्टिए घरैतिनक मूंह दिस तकलन्हि!

घरैतिन बकेन महिसक खूब औंटल सोन्हगर दूधक बट्टा आगू मे घुसकबैत कहलथिन्ह – मूंह की तकैत छी! ई डिल्लीक पॉश सोसाइटी थोड़बै छैक जे... ई अप्पन गाम छैक किने? रातिये एलहुं तें सभ गोतिया-भतिया बाड़ी-झाड़ीक सनेस पठौलन्हिं आ तेहेन सेहेन्तगर आ तजगर छलैक जे की बनाऊ आ की नहिं तें सचारे सही। आ दुनू प्राणीक ठोर विहुंसि उठलैन्ह!

# बरियातिये नहिं वरो कैंसिल

घुटूरबाबूक बियाह ठीक भेलैन्ह। माए-बाबूक एकलौता संतान, तें कनेक बेसिये उत्साहित छलाह सभ कियो। वरक बाबू बेस भलमानुष तें फरमान जारी केलैन्ह जे –

बिहार मे शराब बन्दी तें जे कियो व्यक्ति शराब पीताह हुनकर बरियाती जाएब कैंसिल। आब एहन फरमान नवतुरिया दोस-महीम के कोना पचतैन्ह! लागि गेलाह ब्योंत में।

– हे यौ चिंटू भाई, सुनलहुं जे कक्का मुगलीघुट्टी वला सभक बरियातिये जाएब कैंसिल कए देलैन्ह, तथापि अहां फुल टंच छी।

– आऊ – आऊ रविंदर भाई अहूं संग दिय' ने!

हौ तौं सभ जे करबह से करह हम त' बरियातिये जाएब तें...

– बरियाती त' हमहूं जाएब!

– से त' आब नहिं भेलह! फरमान नहिं सुनलह?

– से त' सुनलहुं मुदा...

– मुदा की?

– ओम्हर देखियौ ने कनेक!

ओम्हर घुटूरबाबू पहिनहिं सं टंच भए लुढ़कल छलाह।

रविन्दरबाबू अपनो ठिठियाइत ओोही मे मिझरा गेलाह।

---

## मातमपुर्सी

-की यौ भजार! आइकाल्हि कतए आंचर मे आंखि सेकै छी यौ? काल्हि छुट्टियो मे नहि देखलहुं?

-की कही भजार, पलखति कहां, कल्हिओ औफिस गेल छलहुं।

-कथी लेल? काल्हि त' छुट्टी रहै।

-एकटा मातमपुर्सी छलैए।

-किनकर? कतए?

-गांधीजीक, मधुबनी मे।

-एह! गांधीजीक जयंती मादे एना नहि बजियौ।

-कथी के जयंती भजार! अरे, हमर त' एकटा छुट्टी मारल गेल ने' एहि मातमपुर्सी मे।

## राग-विराग

आइ पत्नीक मोन खनहन छलन्हि। बेस अनुराग सं हम कहलियनि-प्रिये! गामक मेला कतेक मनलग्गू होएत छल ने। एहिबेर चलू न' रामनवमी मेला मे गाम, आनन्द अओतै।

-की जखन-तखन गाम ल' क' बैसि जाइत छी। एकटा साड़ी त' अनले नहि होइयै।

बनए छी इतिहासक शिक्षक, ताहू पर नियोजित आ बड़का साहित्यकार!!

हृदय मे उमड़ल-घुमड़ैत सभटा अनुराग राग विराग मे बहि गेल छल।

✍ महाकान्त प्रसाद

***सम्पर्क:*** *शिक्षक (+2), वाटसन इंटर कॉलेज, मधुबनी, बिहार, ईमेल: mahakantprasad@gmail.com*

✍ भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश'



लेखक आर.आर. टैक्नोमैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड मे कार्यरत छथि।
हिन्दी आ मैथिली लघुकथा विभिन्न पत्र-पत्रिका मे नियमित प्रकाशित।

# आईकार्ड

बुतरू काका सें बाजैत-काका यौ!

काका-कि यौ!

बुतरू-हे आय पचास टाका दियौ नें अहाँ!

काका-पचास टाका कि करब अहाँ!

बुतरू-यौ आई कार्डक फीस भरबै यौ!

ई कोन कार्ड भेल यौ? हम त' राशनकार्ड,भोटर कार्ड, पेन कार्ड आ आधारे कार्ड जानैत छलौं।

बुतरू काकाक समझाबैत पहिले त' खूब खिलखिलाक हंसल आ तै पीछूं बाजलक!

"हे भोर मे जब बुतरू सभ' ईसकूल जायत तखन बुतरूक गला मे बुलुआ पट्टी सें लटकल एकटा चौखूंटा किछु देखने हैव!"

काका बाजला - हं यौ!

आब काका फट सॅ बुतरूक साइठ टका देलनि!

बुतरू-काका ई दस टाका बेसी कियै!

काका-हे आय हमरा अहां आइ कार्ड केकरा कहै छै सें समझौलहुं ताहि खुशी मे!

बुतरू हंसैत बाजलक अंय कार्ड नै बाजब नैं त' लोक हंसत!

तब कि कहबै यौ? बुतरू-दू बेर कहियौ आई कार्ड

काका फेरू दू बेर बजलनि अंय कार्ड पीछूं सॅ काकी हंसि देलखिन त' काकाक' खींस बड्ल हे अहाँ ऐना खुश नै होऊ। तनि अहंय बाजू त' काकी बाजली स्पष्ट शब्द मे आईकार्ड।

# खूनक रिश्ता

'घरवाला' क' साथ बैइसल दोसर आदमीक देखैत जनानिक माथ ठनैक गेल।

"जनानिक देखैत पुरुष" 'हे, अहां दू कप चाय बनाबू त'

जनानि बेस कि।

"मुदा ई के भेला!

"पुरुष हे, हिनका संग हमर खूनक रिश्ता ये।

"जनानि से केना यौ!"

पुरुष- "हे पिछला बरिस प्रदेश मे छलौं त' तबियत बिगड़ल त' अस्पताल मे खूनक जरूरैत भ' गेल!

"तक्खन डाक्टर साहेब बाजलनि-खून नै ये देह में!"

"आब हमरा सामने कठिन स्थिति उत्पन्न भ' गेल ने जेबी मे एक्को पाय आ नै खून दान करबाक लेल आदमी।

"अस्पतालक दुआरि पर उदास बैइसल छलौं त' ई आदमी देवता बैन क' उपस्थित भेलाह।"

"हेयौ कि भ' गेल अहांक उदास कियै छी!

"तक्खन लागल जना साक्षात भगवान ठाढ़ भ' गेलाह।

सभ वृत्तांत कैह सुनौलाक बाद ई आदमी निस्वार्थ हमरा खून देलनि ताहि सॅ अहॉंक सामने ठाढ़ छी!

जनानि विस्मय दृष्टि सं देखैत-आह ई सचमुच देवता छथि।"

-हाथ जौड़ैत, हे अहाँ बैसू बतियाबू हिनका संगे!

-बस पॉंच मिनटक समय दियौ अहाँ!

चायक इंतजाम क' के उपस्थित होयत छी।

"पॉंच मिनट पीछू, तीन टा कप मे चाय लाबि जनानि नाश्ता साथ राखि देलौं। "

"उ आदमी-हैये एकर कि आवश्यकता छलै बेकार परेसान भेलौं अहाँ।"

-हम चाय नै पियैत छी।

"आब अतिथि देवता सामने छल मुदा लागल जना कोय हांथ बांयध देलक!"

घरवारी-हे कम सं कम जलखैय तें क' लिय।

मुदा अतिथि किछु नै बाद मे कहियो एब त'!

किछ देर बैसलाक पाछू अतिथि प्रस्थान कैयलक।

'उ' आदमी आ जनानि राहक एकटक निहारैत छल। कि उ अनजान आदमीक संग कोन रिश्ता अछि।

**सम्पर्क:**
*द्वारा - आर.आर. टैक्नोमैक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 5. के.एम. स्टोन, ओल्ड मानेसर रोड, ग्राम:-मोहम्मद पुर पोस्ट:-नरसिंग पुर, फैक्ट्री एरिया, जिला: गुरुग्राम, हरियाणा:-122004, फोन:-9910348176*
*ईमेल : bhunesh1976@gmail.com*

# 'फीस'

✍ प्रभाष अकिंचन



मां गे....काल्हि स्कूल मे मास्सैब कहैत छलखिन्ह जे विद्यार्थी मैट्रिक बोर्ड परीक्षाक फार्म आइधरि नहिं जमा करतै, ओकरा बोर्ड के इम्तिहान देबाक परमिशन नहिं भेटतै....

....अंई! आइये अंतिम दिन छै?

....हं गइ....तोरा कहिया स' कहैत छियौ त' तों सुनिते नहिं छीही ....आइ नहिं फीस जमा हेतैक त' फेर हमर सालभरि बर्बाद... राहुल हिचकि-हिचकिक' कानय लागल....

....रौ बौआ....नहिं कान... कोंढ़ त' हमरो फटैए...मुदा करू की... भरिगाम घूमि-घूमिक' थाकि गेलौं, केयो पैंच-उधार देबाक लेल तैयार नहिं होइ छै... कहै छै पहिलुका उधार देबे नञ करबै, त' के देत?....

अचानक माए के नजरि अपन हाथ मे बचल अपन अंतिम गहना ... चानीक कंगन(मठ्ठा) पर पड़ल... जे पतिक अंतिम निशानी छल....

ओ चट द' अंगना स' बाहर निकलि भवानीपुर वाली काकी सं कंगन बन्हकी राखि घर पहुंचलीह....

बौआ....बौआ रौ....कत' गेलैं....

....हईयै एलियौ मां....

....जो जल्दी तैयार भ'क' फीस जमा क' आ...

राहुल मायक हाथे फीस लैत कलाई सुन्न देखिते चौंकल....मां ई की तों अपन मठ्ठा....

....हं बौआ... आओर कोनों चारा नहिं छल...

तोरा सन सोना बेटाक सोझां ई चानीक मठ्ठाक कोन मोल....कहियो भगवान हमरो

सुनथिन....

राहुल के छाती स' लगाक' माय-बेटा भोकासी पाड़िक' कानय लागल....

---

# सिनेहक उपहास

✍ पूनम झा

मोबाइल क' घंटी सुनि काकी फोन के कान मे लगबैत- "हेलो! के बजै छी?"

"गोर लगै छियैन माय" काकी के पुतौहु ओम्हर सं जवाब देलखिन।

"खूब सुहागवती रहू। की समाचार? सब ठीक न? बौआ (काकी के बेटा) आ सोनमा (पोता) केना अछि?"

"आब हिनका की कहियैन माय, हिनके पोता के कालेज मे एडिशन करेबाक लेल परेशान छथीन हिनकर बौआ।"

"से कियै? की भेलै?" काकी पुछलखिन।

"फीस बड्ड छै ने तैं। ई त' बुझिते छथीन, बाहरक खर्चा। कत सं पैसा के एरेंज करथिन से नै बुझाई छैन्ह।"

"हमरा कियै नै कहलक?"

"अपन बेटा के त' चिन्हिते छथीन। ओ अपन कष्ट हिनका सबके बतबै छथीन? हम त' चोरा क' बाजि रहल छी।"

"कोनो बात नै। अहां निश्चिंत रहू। हम अहांक ससूर सं पुछै छियैन। कतेक के जरूरत अछि?"

"75 हजार। ओना माय ई रहे देथुन। कियै त' जौं हिनकर बेटा सुनथिन जे ई सब बात हम हिनका कहलियैन, तं हमर कोनो दशा नहि रखता।"

"चलू ओकरा नै कहबै। रुकू हम अहांक ससुर सं पूछि के फोन मिलबै छी।"

फोन रखिते काकी, कक्का सं, "सुनै छियै सोनमा के एडमिशन के लेल बौआ के पैसा के दिक्कत भ' रहल छै। से अहां पठा दितियै।"

''से कहां ओ कहलक?''

''नै ओ किछु कहै छै? कनियां कहलथि।''

"कते?"

"75 हजार।"

"एतेक पैसा कते सं आयत? बैंक मे जे रखने छी ओ त' रामेश्वरम् जाय के लेल अछि।" कक्का बजलाह।

"हे यौ, जखन बच्चा सब खुश रहत तखने न तीर्थो-प्रत मे मोन लागत। से सोनमे के ओ पैसा डीडी बना के पठा दियौ।"

"ठीक छै, जखन अहांके यैह इच्छा अछि त' ओम्हरे पठा दै छियै। मुदा आब एखन रामेश्वरम् गेनाई मुश्किल रहत।" कक्का विचारमग्न भ' गेलाह।

एम्हर काकी पुतौहु के फोन मिला के "अहांक ससुर सोनमा के नाम सं डीडी पठा देता। अहां बौआ के कहि देबै जे हम सोनमा के बोर्ड मे पास भेला पर गिफ्ट देलियै।"

"ठीक छै।" पुतौहु बजलीह।

फोन रखिते पुतौहु अपन बेटा के कहलखिन जे "दादाजी पैसा पठा रहल छथुन।"

"वाऊ! यू आर ग्रेट मॉम। एतबा मे त' मोटरसाइकिल आबिये जायत।" खुशी सं उछलैत सोनमा (पोता) बाजि उठल।

***सम्पर्क:*** *कोटा, राजस्थान, मो. 9414875654, ईमेल : poonamjha14869@gmail.com*

# बेटी

✍ विनीता ठाकुर



मीना कें पढ़'-लिख' मे बड्ड मोन लागैत छलै मुदा घर-गृहस्थी'क सभटा भार ओकरे माथ पर छल। ओकर माय बड्ड दिन सं बीमार छलथि आओर बाबू गाम मे लटगेना'क दुकान क' घर'क रोजी-रोटी चलबय।

मीना केर एगो छोट भाई छलै जेकर नाम छलै नीलाभ। नीलाभ इंजीनियरिंग केर तैयारी करैत छलै। मीना, डाक्टर बन' चाहैत छलीह। मुदा परिस्थितिवश मजबूर छली। घर मे जखने बेटी भ' जाईत अछि तखन माय-बाबू कें ओकर वियाह-दान केर चिन्ता खाइत रहैत छै। बेटीं'क शिक्षाक प्रति कोनो चिंता नहि।

विपरीत परिस्थिति मे मीना अपन पढ़ाई पर धियान देने रहल। ओ सिलाई-कढ़ाई क' अपन पढ़ाई' खर्चा निकालि...। सिविल कोर्ट मे किरानी केर नौकरी प्राप्त क' लेलक आओर नीलाभ अपन ईंजिनियरींग'क पढ़ाई क' विदेश मे नौकरी कर' लागल।

मीना केर वियाह भेलै ओ अपन सासुर मे बस' लगलीह, बेटा परदेश। बीमार माय आओर बूढ़ बाप। बेटा परदेश जा क' माय-बाप कें बिसरि गेलै। ने कोनो फोन ने कोनो चिट्ठी...। मुदा पुत्र जे छलै, घर'क गेट पर ओकर नाम'क नामपट्टी लागि गेल छलै।

समय बीतैत गेलै। माय'क बीमारी बढ़ैत गेलै, बाबू सेहो असक रह' लागल। बेटी कें त' सदिखन दोसर घर'क संपत्ति मानि क' दूरंगी नीति अपनौलैन्ह आओर पुत्र कें अपन प्राण सं बेसी सम्मान देलैन्ह। आई ओ विदेश बसि गेलै।

मीना कें अपन माय-बाबूक कष्ट नहि देखल गेलै, ओ हुनका सभकें अपना संग राख' लेल तैयार भ' गेलीह...। जखन माय-बाबू अपन समान ल' घर सं निकसैत छलथि, तखन गेट पर नामपट्टी पर नीलाभ'क नाम पढ़ि भोकारि पाड़ि क' कान' लगलीह।

की जानि, एखनो मीना केर माय-बाबू मे बेटा आओर बेटी मे फर्क मेटाओल वा नहि?

# बड़की पुतोहू

शीला घर के बड़की पुतोहू छलथिन्ह। घरक सबटा भार उठेने छलथिन्ह। सासू-ससुर के सेवा दियर ननैद सबके ध्यान रखैत छलथिन्ह। आइ शिला के दियर के विवाह छल। दियादनी आबय बाली छलथिन्ह। शीला बहुत खुश छलीह। आब दूनू दियादनी संग मिली घरक काज करब कनी भार हल्लुक होयत। जखन दियादनी एलथिन्ह हुनकर अलगे रूप छल। नहि कोनो लाज नहि कोनो विचार ककरो ध्यान की रखती। बड़की दियादनी धीरज संग हुनको सुनि लैत छलथिन्ह आ अपन कर्तव्य करैत छलथिन्ह। एक बेर हुनकर ससुर के बहुत मोन खराब भ' गेल, बचई के उम्मीद नहि छल। सासू मां कनैत अयलथिन्ह आ कहलथिन्ह, वौआसिन आब कतय सं एते रुपया अनबई अहां ससुर के इलाज लेल घरो के सैह हालत छै। शीला अपन दियादनी लग गेलीह आ कहलथिन्ह, सपना, बाबूजी के इलाज लेल कियैक नहि हम दूनु दियादनी गहना बहन्की राखि ली। दियादनी के बात सुनि सपना तुरत मना क' देलथिन्ह। कहलथिन्ह बूढ़बा लेल एतेक दया कियेक होइत छन्हि, छोड़ि देथुन ने। बड़की पुतोहू चुपचाप ओतय सं चलि अयलीह आ अपन गहना बन्हकी राखि ससुर के प्राण बचेलिह। सासू बड़की पुतोहू के भरि पांज पकड़ि कहलथिन्ह पुतोहू हुए त' एहन।

# बटवारा

हे आब बड़ उमैर भ' गेल गाम मे असगर नै रहल होयत, तोरे लग बाहरे रहब रामलखन अपन बेटा रामबचन सं कहला।

राम बचन -हे यै सुनै छी बाबूजी माय के अहि बेर अपने संग ल' चलबएन आब गाम मे रहै जोकर नै रहला।

राम बचन के कनियां - हां हां कियैक नहि! दू भाई छी, अहां सब पार बांटि लीय, छह महिना अपना लग रखियोन छह महीना आहां क' भाई रखथीन।

राम बचनक माय- एहन नै सुनलौ माय बाप के पार?

रामबचन- गै माय कोन बेजाय कहैत छथुन तूहूं त' दाई के पार बटनें छलीह।

माय चुप भ' गेली किछु जवाब नै आ मोने मोने आत्मग्लानि होबय लगलनि।

---

***सम्पर्क:*** *18/464, प्रथम तल, ओल्ड डीसी रोड सोनीपत, (हरियाणा) पिंकी केबुलक सोझां, पिन-131001*
*मो. 9818601848, ईमेल : abmssmarika@gmail.com*

# पाबनि - तिहार



✍ पं. रामानन्द ठाकुर

सा.धर्म. आचार्य, एम.ए. मैथिली
कर्मकाण्ड, ज्योतिष, पुराण,
प्रोविन्य कर्म एवं यज्ञानुष्ठान विशेषज्ञ

*सपर्क :*
*एच-292, पु. सीमापुरी*
*मो. 09871637565*

### अगहनक इजोरिया

| | |
|---|---|
| दृरिशोव्रत | - 27/11/2019 |
| नवान्नपार्वण | - 28/11/2019 |
| श्री गणेश चतुर्थी | - 30/11/2019 |
| विवाह पंचमी | - 01/12/2019 |
| रवि व्रतारंभ | - 01/12/2019 |
| स्कंध षष्ठी | - 02/12/2019 |
| मोक्षदा एकादशी | - 08/12/2019 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 09/12/2019 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 10/12/2019 |
| पूर्णिमा स्नान दान | - 12/12/2019 |

### पूसक अन्हरिया

| | |
|---|---|
| लम्बोदर चतुर्थी | - 15/12/2019 |
| सफला एकादशी | - 22/12/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 23/12/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 24/12/2020 |
| दशतारकारंभ | - 25/12/2020 |
| अमावश स्नान दान | - 26/12/2020 |

### पूसक इजोरिया

| | |
|---|---|
| श्री गणेश चतुर्थी | - 29/12/2019 |
| गुरु गोविन्द सिंह जयंती | - 02/01/2020 |
| दशतारकांत | - 05/01/2020 |
| पुत्रदा एकादशी | - 06/01/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 08/01/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 09/01/2020 |
| पूर्णिमा | - 10/01/2020 |

### माघक अन्हरिया

| | |
|---|---|
| कमला स्नान | - 11/01/2020 |
| भालचन्द्र चतुर्थी | - 13/01/2020 |
| तिल संक्रांति | - 15/01/2020 |
| रामानन्दाचार्य जयंती | - 17/01/2020 |
| षट्तिला एकादशी | - 20/01/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 22/02/2020 |
| नरक निवारण चतुर्दशी | - 23/02/2020 |
| मौनी अमावस | - 24/02/2020 |

### माघक इजोरिया

| | |
|---|---|
| शिशिर नवरात्रारंभ | - 25/01/2020 |
| श्रीगणेश चतुर्थी | - 28/01/2020 |
| सरस्वती पूजा | - 30/01/2020 |
| अचला सप्तमी | - 01/02/2020 |
| भौमी एकादशी | - 05/02/2020 |
| माधव द्वादशी प्रदोष त्र्यो. | - 06/02/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 07/02/2020 |
| पूर्णिमा स्नान दान | - 09/02/2020 |

### फागुनक अन्हरिया

| | |
|---|---|
| हेरम्ब चतुर्थी | - 12/02/2020 |
| कोकिला षष्ठी | - 14/02/2020 |
| विजया एकादशी | - 19/02/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 20/02/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 21/02/2020 |
| शिव दर्शन | - 22/02/2020 |
| गोसाहन्तिक अमावस | - 23/02/2020 |

### फागुनक इजोरिया

| | |
|---|---|
| जनकपुर परिक्रमारंभ | - 24/02/2020 |
| श्री गणेश चतुर्थी | - 27/02/2020 |
| आमलकी एकादशी | - 06/03/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 07/03/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 08/03/2020 |
| होलिका दाह | - 09/03/2020 |

### चैतक अन्हरिया

| | |
|---|---|
| सप्तडोरा होली | - 10/03/2020 |
| विकट चतुर्थी | - 12/03/2020 |
| पापमोचनी एकादशी | - 20/03/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 22/03/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 23/03/2020 |
| चैति अमावस | - 24/03/2020 |

### चैतक इजोरिया

| | |
|---|---|
| वसंत नवरात्रारंभ | - 25/03/2020 |
| गौरी तृतीया | - 27/03/2020 |
| गणेश चतुर्थी | - 28/03/2020 |
| सुर्य षष्ठी | - 30/03/2020 |
| अष्टमी निशा पूजा | - 31/03/2020 |
| विजया दशमी | - 03/04/2020 |
| कामदा एकादशी | - 04/04/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 05/04/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 06/04/2020 |
| पूर्णिमा स्नानदान | - 08/04/2020 |

### वैशाखक अन्हरिया

| | |
|---|---|
| वक्रतुण्ड चतुर्थी | - 11/04/2020 |
| जुड़ सितल | - 14/04/2020 |
| वरुथिनी एकादशी | - 18/04/2020 |
| प्रदोष त्रयोदशी | - 20/04/2020 |
| प्रदोष चतुर्दशी | - 21/04/2020 |
| अमावस स्नानदान | - 22/04/2020 |

### वैशाखक इजोरिया

| | |
|---|---|
| अक्षय तृतीया/गणेश चतुर्दशी | - 26/04/2020 |
| जान्हवी सप्तमी | - 30/04/2020 |
| जानकी नवमी | - 01/05/2020 |
| रवि व्रतांत | - 03/05/2020 |

मोहिनी एकादशी - 03/05/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 05/05/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 06/05/2020
पूर्णिमा - 07/05/2020

### जेठक अन्हरिया

आखुरथ चतुर्थी - 10/05/2020
अपरा एकादशी - 18/05/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 20/05/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 20/05/2020
वट सावित्री, अमावस - 22/05/2020

### जेठक इजोरिया

श्री गणेश चतुर्थी - 26/05/2020
गंगा दशहरा - 01/06/2020
निर्जला एकादशी - 02/06/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 03/06/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 04/06/2020
सौराठ सभारंभ, पूर्णिमा - 05/06/2020

### आषाढ़क अन्हरिया

विघ्नराज चतुर्थी - 09/06/2020
सौराठ सभाअंत - 11/06/2020
योगिनी एकादशी - 17/06/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 18/06/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 19/06/2020
भौमवती अमावस - 21/06/2020

### आषाढ़क इजोरिया

ग्रीष्म नवरात्रारंभ - 22/06/2020
श्री गणेश चतुर्थी - 24/06/2020
हरिशयन एकादशी - 01/07/2020
वासुदेव द्वादशी - 02/07/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 02/07/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 03/07/2020
गुरु पूर्णिमा - 05/07/2020

### साओनक अन्हरिया

सोम व्रतारंभ - 06/07/2020
गणघिप चतुर्थी - 08/07/2020
कामीका एकादशी - 16/07/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 18/07/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 19/07/2020
हरियाली अमावस - 20/08/2020

### साओनक इजोरिया

मधुश्रावणी - 23/07/2020
वरद चतुर्थी - 24/07/2020
पूत्रदा एकादशी - 30/07/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 01/08/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 02/08/2020
रक्षाबन्धन पूर्णिमा - 03/08/2020

### भादवक अन्हरिया

विनायक चतुर्थी - 07/08/2020
चन्द्र षष्ठी - 09/08/2020
कृष्ण जन्माष्टमी व्रत - 11/08/2020
कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव - 12/08/2020
अजा एकादशी - 15/08/2020
वत्स द्वादशी - 16/08/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 16/08/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 17/08/2020
कुशी अमावस - 19/08/2020

### भादवक इजोरिया

हरितालिका तीज - 21/08/2020
चौठ चन्द्र - 22/08/2020
ऋषि पंचमी - 23/08/2020
राधा अष्टमी - 26/08/2020
कर्माधर्मा एकादशी - 29/08/2020
वामन जयंती इन्द्रपूजा - 29/08/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 30/08/2020
अनन्त चतुर्दशी - 31/08/2020
पूर्णिमा अर्घदान - 02/09/2020

### पहिल आसिनक अन्हरिया

पितृपक्ष पहिल श्राद्ध - 03/09/2020
इन्द्रपूजा विसर्जन - 04/09/2020
गणेश चतुर्थी - 05/09/2020
जितिया अष्टमी व्रत - 10/09/2020
मातृ नवमी - 11/09/2020
इन्दिरा एकादशी - 13/09/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 15/09/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 16/09/2020
पितृ अमावस - 17/09/2020

### पहिल आसिनक इजोरिया

गणेश चतुर्थी - 20/09/2020
कमला एकादशी - 27/09/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 29/09/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 30/09/2020
आ. पूर्णिमा - 01/10/2020

### दोसर आसिनक अन्हरिया

गणेश चतुर्थी - 05/10/2020
परमा एकादशी - 13/10/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 14/10/2020
अनन्त चतुर्दशी - 15/10/2020
अमावस - 16/10/2020

### दोसर आसिनक इजोरिया

नवरात्रि आरंभ - 17/10/2020
श्री गणेश चतुर्थी - 19/10/2020
महाअष्टमी निसापुजा - 23/10/2020
विजया दशमी - 26/10/2020
पाशांकुशा एकादशी - 27/10/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 28/10/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 29/10/2020
कोजगरा पूर्णिमा - 31/10/2020

### कार्तिक अन्हरिया

करक चतुर्थी - 04/11/2020
रमा एकादशी - 11/11/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 13/11/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 13/11/2020
दीपावली अमावस - 14/11/2020
अन्नकुट गोवर्धन पूजा - 15/11/2020

### कार्तिक इजोरिया

भैया दुज - 16/11/2020
श्री गणेश चतुर्थी - 18/11/2020
नहाय खाय - 18/11/2020
खरना - 19/11/2020
छठि संध्या अर्घ्य - 20/11/2020
प्रात: अर्घ्यपारण - 21/11/2020
अक्षय नवमी - 23/11/2020
देवोत्थान एकादशी - 25/11/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 27/11/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 28/11/2020
कार्तिकी पूर्णिमा - 30/11/2020

### अगहनक अन्हरिया

श्री गजानन चतुर्थी - 03/12/2020
कालभैरव अष्टमी - 08/12/2020
उत्पन्ना एकादशी - 11/12/2020
प्रदोष त्रयोदशी - 12/12/2020
प्रदोष चतुर्दशी - 13/12/2020
मार्गी अमावस - 14/12/2020



''मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु संघर्षशील''

# अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी0)

रजिस्टर्ड अण्डर सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (21 of 1860)

रजिस्ट्रेशन नं. 10288


पत्राचार कार्यालय:
20,कॉपरनिकस लेन,मंडी हाउस,
नई दिल्ली- 110001
मो0: 9650461788, 9717539000

E-mail : akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com
Website : www.mithilasangh.com

प्रधान कार्यालय:
म.नं. 435/7 ए,
ई–ब्लॉक, संगम विहार
नई दिल्ली–110080


पत्रांक संख्या GS/PRA/89/2019-20

दिनांक 25 सितम्बर, 2019

सेवा में,

माननीय कुलपति महोदय
दिल्ली विश्व विद्यालय दिल्ली.

विषय : मैथिली भाषा को दिल्ली विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने के संबंध में।

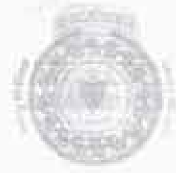
महोदय,

मैथिली भाषा को दिल्ली विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग कई वर्षों से लम्बित है। आप स्वयं भी अवगत होंगे ही कि ऐतिहासिक रूप में मैथिली भाषा के लिए प्राकृत, मागधी, अपभ्रंश, अवहट्ट, तिरहुता आदि नामों का संदर्भ मिलता है। मिथिला की भाषा 'मैथिली' मुख्यत: उत्तर – पूर्व बिहार और नेपाल की तराई क्षेत्र की मातृभाषा है। यह भाषा लगभग तीस हजार वर्ग मील में विस्तृत है। मैथिली भाषा की लिपि मिथिलाक्षर (तिरहुता), कैथी, देवनागरी एवं नेवाड़ी आदि रही है तथा यह इंडो – आर्यन भाषा समूह परिवार की भाषा रही है।

मैथिली भाषा का गौरवशाली इतिहास से भी आप परिचित होंगे ही। राजा जनक की भाषा मैथिली रही है। वेदों – पुराणों में भी इस भाषा की चर्चा प्रमुखता से है। कई आदि ग्रंथ संस्कृत-मैथिली मिश्रित भाषा में रचित हैं, जिसे मैथिली भाषा के आदि साहित्य की संज्ञा दी गई है।

तेरहवीं शताब्दी में ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्णरत्नाकर' एवं प्रथम नाट्यकृति 'धूर्त्तसमागम', मैथिली भाषा का अपूर्व ग्रंथ है। चौदहवीं शताब्दी में महाकवि विद्यापति ने 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' आदि रचना कर इस भाषा को 'देसिल बयना' से संबोधित किया है। आज 'महाकवि विद्यापति' देश के प्राय: सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी पाठ्यक्रम का मूल अध्याय है। आदि काल से अपने गौरवशाली इतिहास को समेटे हुए मैथिली साहित्यिक भाषा है, जो जन – जन में लोकप्रिय है। इस भाषा में साहित्यिक तत्वों से भरे सभी प्रकार के ग्रंथ उपलब्ध हैं तथा आज भी रचित हो रहे हैं। इस भाषा का साहित्यिक भंडर भरा पुरा है।

आपको ज्ञात होगा ही कि मैथिली भाषा बीसवीं शताब्दी में ही कोलकाता, बनारस और पटना में पढ़ाई जाने लगी थी। आज भी बिहार, झारखंड, नेपाल आदि के विभिन्न विश्वविद्यालयों में मैथिली भाषा पढ़ाई जाती है। जिससे हजारों छात्र लाभांवित हो रहे हैं। यहाँ तक कि बिहार सरकार, दिल्ली सरकार, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा मैथिली भाषा के लिए अलग से अकादमी भी सक्रिय है। प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर भी मैथिली भाषा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की घोषणा दिल्ली सरकार द्वारा हो चुकी है। इस भाषा में प्रढ़ने वाले छात्रों की संख्या में दिन – प्रति दिन वृद्धि हो रही है।



साहित्य अकादेमी, भारत सरकार द्वारा मैथिली भाषा को वर्षों पहले मान्यता मिली हुई है। बाबा नागार्जुन, रामधारी सिंह दिनकर, फनिश्वरनाथ रेणु जी की मातृभाषा मैथिली में प्रत्येक वर्ष किसी न किसी उत्कृष्ट रचना को 'साहित्य अकादेमी सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। संविधान की आठवीं अनुसूची में भी मैथिली भाषा को कई वर्ष पहले ही सम्मिलित कर लिया गया है। भारतीय लोक सेवा आयोग, बिहार लोक सेवा आयोग, झारखंड लोक सेवा आयोग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सहित कई अन्य संस्थानों में मैथिली भाषा को परीक्षा का माध्यम बनाया जा चुका है। आज मैथिली विषय से दूसरे प्रदेशों यथा राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के परीक्षार्थी भारतीय लोक सेवा आयोग में उतीर्ण हो रहे हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में भी लगभग 11 भाषाओं में सार्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा कोर्स, एडवांस डिप्लोमा कोर्स चल रहा है। कई भाषाओं में एम. ए., एम. फ़िल., पीएच.-डी तक की पढ़ाई भी हो रही है परंतु अभी तक यहाँ मैथिली भाषा पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है। दिल्ली में मैथिली भाषा-भाषियों की घनी आवादी है। आज दिल्ली विश्वविद्यालय में हजारों छात्र मिथिला क्षेत्र से शिक्षा ग्रहण करने के लिए दाखिला ले रहे हैं। यदि उन्हें अपनी मातृभाषा में भी दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने का अवसर मिलेगा तो वे निश्चित ही जीवन में और बेहतर कर सकेंगे। साथ ही युवाओं को रोजगार का एक नया माध्यम भी मिलेगा।

**आपसे विनम्र अनुरोध है कि मैथिली भाषा को भी दिल्ली विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में शामिल किया जाय। इससे दोनों की गरिमा बढ़ेगी। आपके इस सहयोग से सम्पूर्ण मैथिली भाषा – भाषी अपने आपको उपकृत महसूस करेगा।**

**विशेष शुभ;**

भवदीय

25/IX/19.

(डॉ. प्रकाश झा)

महासचिव

अखिल भारतीय मिथिला संघ

(9811774106)

akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com

M: 9650461788, 9717539000, 9811774106.

# AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

*435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110080*

*Income & Expenditure A/c For The Year Ending 31st March 2019*

| EXPENDITURE | Amount (Rs) | INCOME | Amount (Rs) |
|---|---|---|---|
| To Bank Charges | 2,071.00 | By Donation | 73,001.00 |
| To Depreciation | 213,662.00 | By Interest from FDR | 48,096.00 |
| To Conveyance | 83,300.00 | By Interest from Saving A/C | 1,822.00 |
| To Misc. Expenses | 11,000.00 | By Membership Fees | 40,707.00 |
| To Honorarium | 110,000.00 | By Received from Sovenior | 2,799,098.00 |
| To Tribhukti Publication | 131,868.00 | By Subscription (Tribhukti Magzine) | 24,300.00 |
| To Educational Scholarship | 11,000.00 | By Misc Reciepts | 4,650.00 |
| To Accounting Charges | 20,000.00 | | |
| To Web and Software Designing | 100,000.00 | | |
| To Binod Samman | 5,860.00 | | |
| To Samarika Publication | 376,226.00 | | |
| To Printing Statioanry | 25,832.00 | | |
| To Postage and Stamp | 18,320.00 | | |
| To Book Publication Mithila Sodh Sanchay | 33,848.00 | | |
| To Book Publication Rangmanch | 80,164.00 | | |
| To Vidyapati Parv Samaroh | 542,892.00 | | |
| To Shayma Chakeva | 18,232.00 | | |
| To Meeting & Seminar | 4,000.00 | | |
| To Audit Fees | 15,000.00 | | |
| To Mithila Bibhuti Parv Samaroh | 487,000.00 | | |
| To Holi Mahotsav | 17,560.00 | | |
| To Medical Camp | 55,000.00 | | |
| To Janki Mahotsav | 34,000.00 | | |
| To Madhushravni Parv | 4,500.00 | | |
| To Manas Vihari Samman | 40,160.00 | | |
| To Electricity Expenses | 740.00 | | |
| To Office Maintenance | 22,992.00 | | |
| To Tour & Travel | 26,876.00 | | |
| To Excess of Income Over Expenditure | 499,571.00 | | |
| | 2,991,674.00 | | 2,991,674.00 |

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]



CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-06-2019

AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

अखिल भारतीय मिथिला संघ
PRESIDENT
अध्यक्ष

TREASURER

अखिल भारतीय मिथिला संघ
GEN. SECRETARY महासचिव

# AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH

*435/7, E BLOCK, SANGAM VIHAR, DELHI - 110080*

## Balance Sheet As On 31st March 2019

| LIABILITIES | | Amounts (Rs) | ASSETS | | Amounts (Rs) |
|---|---|---|---|---|---|
| **CAPITAL FUNDS** | | | **FIXED ASSETS** | | |
| Opening Balance | 2,799,248.00 | | FURNITURE | 1,790.00 | |
| Add: Corpus Fund | 925,000.00 | | Less: Depreciation | 180.00 | 1,610.00 |
| Add : Excess income over expenses during the year | 499,571.00 | 4,223,819.00 | | | |
| | | | **COMPUTER** | 16,000.00 | |
| **CURRENT LIABILITIES** | | | Less: Depreciation | 4,800.00 | 11,200.00 |
| Expenses Payable | | 205,116.00 | | | |
| Sundry Crediitors | | 194,148.00 | **AIR CONDITIONER** | 37,650.00 | |
| | | | Less: Depreciation | 5,648.00 | 32,002.00 |
| | | | **LAND & BUILDING** | | |
| | | | Najafgarh (Janki Bhawan) | 494,814.00 | 494,814.00 |
| | | | Sangam Vihar (Mithila Bhawan) | 2,030,342.00 | |
| | | | Less: Depreciation | 203,034.00 | 1,827,308.00 |
| | | | **INVESTEMNTS** | | |
| | | | Fixed Deposit with Bank | 1,400,000.00 | |
| | | | Add: Interset Accrued | 77,201.00 | 1,477,201.00 |
| | | | SECURITY DEPOSIT | | 20,000.00 |
| | | | **CURRENT ASSETS** | | |
| | | | Cash- in- hand | | 12,464.00 |
| | | | SBI Current A/c | | 458,433.00 |
| | | | Syndicate Bank | | 66,757.00 |
| | | | Loans & Advances | | 109,162.00 |
| | | | TDS Receivable | | 112,132.00 |
| | | 4,623,083.00 | | | 4,623,083.00 |

As per our report of even date
For Rajiv Ranjan & Associates
[Chartered Accountant]
[FRN 007225C]



CA Ashutosh Kumar Jha
Partner
M.No.507229
Place: New Delhi
Date: 30-06-2019

*AKHIL BHARTIYA MITHILA SANGH*

अखिल भारतीय मिथिला संघ — PRESIDENT — अध्यक्ष

TREASURER

अखिल भारतीय मिथिला संघ — GEN. SECRETARY सचिव

ओएनजीसी
ONGC

# करोड़ों मुस्कान बनाए हमें ऊर्जावान

करोड़ों ज़िंदगियों को रौशन करना और ऊर्जावान बनाना ही हमारा मूलमंत्र है। जहाँ एक ओर हम देश को ऊर्जा प्रदान करते हैं, वहीं हमारे सामाजिक कल्याण के कार्यक्रम लोगों को सशक्त बनाते हैं। आखिरकार, इन लोगों की मुस्कान ही हमारी प्रेरणा है।

**ओएनजीसी** *सी एस आर*

ज़िन्दगी को छूने का प्रयास

www.ongcindia.com

शिक्षा ■ स्वास्थ्य देखरेख ■ आजीविका सृजन ■ दिव्यांग हेतु पहलें ■ पर्यावरण और धरोहर संरक्षण ■ खेल संवर्धन